बिखरे मोती

नजरसानी व तसहीहशुदा एडीशन

जिल्द
9

इंतिख़ाब व तरतीब
हजरत मौलाना मुहम्मद यूनुस
पालनपुरी

बिखरे मोती

नज़रसानी व तसहीहशुदा एडीशन
(जिल्द-9)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

किताब का नाम	:	बिखरे मोती, जिल्द-9
हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह	:	एस० ख़ालिद निज़ामी
तादाद	:	1100
पहली बार	:	2015

Published by

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off: 2158, M. P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N Delhi-2
Ph.: 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail : farid@ndf.vsnl.in Websites : faridexport.com, faridbook.com

Bikhre Moti, Part-9
Pages : 320 Size : 23x36/16
First Edition : 2015

Branches:

DELHI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

MUMBAI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
208, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan
Dongri, Mumbai - 400009 Ph.: 022-2373 1786, 2377 4786

Composed at : Uruf Enterprises
Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

क़ुरआन की फ़रयाद

ताक़ों में सजाया जाता हूँ आँखों से लगाया जाता हूँ
तावीज़ बनाया जाता हूँ धो धो के पिलाया जाता हूँ
जुज़दान हरीर व रेशम के और फूल सितारे चाँदी के
फिर इत्र की बारिश होती है ख़ुशबू में बसाया जाता हूँ
जिस तरह से तोता-मैना को कुछ बोल सिखाए जाते हैं
इस तरह पढ़ाया जाता हूँ इस तरह सिखाया जाता हूँ
जब क़ौल व क़सम लेने को तकरार की नौबत आती है
फिर मेरी ज़रूरत पड़ती है हाथों पे उठाया जाता हूँ
दिल सोज़ से ख़ाली रहते हैं आँखें हैं कि नम होती ही नहीं
कहने को एक-एक जलसे में पढ़-पढ़ के सुनाया जाता हूँ
नेकी पे बदी का ग़लबा है सच्चाई से बढ़ कर धोखा है
इक बार हँसाया जाता हूँ सौ बार रुलाया जाता हूँ
ये मुझसे अक़ीदत के दावे क़ानून पे राज़ी ग़ैरों के
यूँ भी मुझे रुसवा करते हैं ऐसे भी सताया जाता हूँ
किस बज़्म में मुझको बार नहीं किस उर्स में मेरी धूम नहीं
फिर भी मैं अकेला रहता हूँ मुझसा भी कोई मज़लूम नहीं

—अल्लामा माहिरुल क़ादरी (रह.)

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

पेशे-लफ़्ज़

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं और हुज़ूर (सल्ल.) पर देहतरीन दुरूद हो। अम्मा बाद।

अलहम्दुलिल्लाह बिखरे मोती जिल्द-9 आपके हाथों में है। इससे पहले की जिल्दों में तो मुतफ़र्रिक़ मज़ामीन थे, किसी भी जिल्द में मुकम्मल एक ही मज़मून नहीं था लेकिन अलहम्दुलिल्लाह इस नवीं जिल्द में मुकम्मल एक ही मज़मून है और वह यह है कि अल्लाह की अज़मत के सिलसिले में जो आयात हैं इन आयात को मअ तर्जमा व तशरीह यहाँ जमा किया गया है, और तशरीह मुकम्मल तफ़सीर इब्ने-कसीर से ली गई है। और इसकी तकमील पन्द्रहवीं शाबान रात दस बजे मरकज़ निज़ामुद्दीन दिल्ली में हुई। अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह इसे क़बूल फ़रमाए और ज़्यादा-से-ज़्यादा उम्मत को फ़ायदा पहुँचाए। (आमीन)

अल्लाह की रज़ा का तालिब
मुहम्मद यूनुस पालनपुरी
15 शाबान, 1423 हि.
मरकज़ निज़ामुद्दीन

﴾1﴿

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾

अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज़ फ़िराशंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल्-लकुम्, फ़ला तज्अलू लिल्लाहि अन्दादंव्-व अन्तुम् तअ्लमून। (22)

तर्जमा : जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी उतार कर उससे फल पैदा करके तुम्हें रोज़ी दी, ख़बरदार! बावुजूद जानने के अल्लाह के शरीक मुक़र्रर न करो। (पारा 1, अल-बक़रा 22)

तशरीह : अल्लाह अपने बन्दों को अदम से वुजूद में लाया, उसी ने हर तरह की ज़ाहिरी व बातिनी नेमतें अता फ़रमाईं, उसने ज़मीन का फ़र्श बनाया और उसमें मज़बूत पहाड़ों की मेख़ें गाड़ दीं और आसमान को छत बनाया, पानी आसमान से उतारने का मतलब बादल से नाज़िल फ़रमाना है। उस वक़्त जबकि लोग फ़ायदा उठाएँ और उनके जानवर भी, और इसी वजह से वही मुस्तहिक़ है हर क़िस्म की इबादतों का और शरीक न किए जाने का।

﴾2﴿

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۲۹﴾

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम्-मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअन्; सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन्-न सब्-अ समावात्, व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम। (29)

तर्जमा : वह अल्लाह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की तमाम चीज़ों को पैदा किया, फिर आसमान की तरफ़ क़सद किया और इनको ठीक-ठाक सात आसमान बनाया और वह हर चीज़ को जानता है।

(पारा-1, अल-बक़रा, आयत-29)

तशरीह : वह अल्लाह जिसने ज़मीन को सिर्फ़ दो दिन में पैदा किया, जो रब्बुल-आलमीन है, जिसने ज़मीन में मज़बूत पहाड़ ऊपर से गाड़ दिए हैं, जिसने इस ज़मीन में बरकतें और रोज़ियाँ रखीं और चार दिन में ज़मीन की सब चीज़ें दुरुस्त कर दीं।

फिर आसमान की तरफ़ मुतवज्जेह होकर जो धुएँ की शक्ल में थे फ़रमाया कि ऐ ज़मीनो और आसमानो! ख़ुशी या नाख़ुशी से आओ तो दोनों ने कहा बारी तआला हम तो ख़ुशी-ख़ुशी हाज़िर हैं, दो दिन में इन दोनों आसमानों को पूरा कर दिया और हर आसमान में इसका काम बाँट दिया और दुनिया के असमान को सितारों के साथ मुज़य्यन कर दिया और इन्हें शैतानों से बचाव बनाया, उसने पहले ज़मीन पैदा की फिर सातों आसमान को बनाया, अल्लाह तआला ने उसकी मोटाई बुलन्द करके उन्हें ठीक-ठाक किया और उनमें से रात-दिन पैदा किया, फिर उसके बाद ज़मीन फैलाई उससे पानी और चारा निकाला और पहाड़ों को गाड़ा।

इब्ने-मसऊद, इब्ने-अब्बास और दीगर सहाबा रज़िअल्लाहु अनहुम से मरवी है कि अल्लाह तआला का अर्श पानी पर था और किसी चीज़ को पैदा नहीं किया था, जब और मख़लूक़ को रचाना चाहा तो पानी से धुआँ बुलन्द किया वह ऊँचा चढ़ा और उससे आसमान बनाए फिर पानी ख़ुश्क हो गया और उससे ज़मीन बनाई फिर उसी को एक-एक करके सात ज़मीन बनाईं। इतवार और पीर के दो दिन में ये सातों ज़मीनें बन गईं, ज़मीन मछली पर है और मछली पानी में है और पानी सफ़ात पर और फ़रिश्ता पत्थर पर और पत्थर हवा पर है, मछली के हिलने से ज़मीन काँपने लगी तो अल्लाह तआला ने पहाड़ों को गाड़ दिया और वह ठहर गई, पहाड़

ज़मीन की पैदावार है, दरख़्त वग़ैरह ज़मीन की कुल चीज़ें मंगल और बुध के दो दिनों में पैदा कीं, फिर आसमान की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई जो धुआँ था, आसमान बनाया फिर उसी में से सात आसमान बनाए, जुमेरात और जुमा के दो दिनों में, हर आसमान में उसने फ़रिश्तों को पैदा किया और उन-उन चीज़ों को जिनका इल्म उसके सिवा किसी को नहीं।

आसमान को सितारों के साथ ज़ीनत दी और उन्हें शैतान से हिफ़ाज़त का सबब बनाया और छः दिन में आसमानों और ज़मीनों को पैदा करके फिर अर्श पर मुस्तवी हो गया और आसमान और ज़मीन दोनों धुआँ थे, हमने उन्हें पहाड़ और पानी से हर चीज़ की ज़िन्दगी की।

इब्ने-जरीर में है कि हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-सलाम रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इतवार से मख़लूक़ की पैदाइश शुरू हुई, दो दिन में ज़मीन पैदा हुई, दो दिन में उनकी तमाम चीज़ें पैदा कीं और दो दिन में आसमानों को पैदा किया, जुमा के दिन आख़िरी वक़्त उनकी पैदाइश ख़त्म हुई और उसी वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया उसी वक़्त में क़ियामत क़ायम होगी।

मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने ज़मीन को आसमान से पहले पैदा किया, उससे जो धुआँ ऊपर चढ़ा उसके आसमान बनाए जो एक-पर-एक इस तरह सात हैं, और ज़मीन एक के नीचे एक इस तरह सात हैं। सहीह बुख़ारी में बरिवायत हज़रत अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु मनक़ूल है कि ज़मीन की पैदावार आसमानों से पहले की गई लेकिन फैलाई गई बाद में और उसके बाद जो पानी, चारा, पहाड़ और जिन-जिन चीज़ों की नश्व-व-नुमा की क़ुव्वत इस ज़मीन में रखी थी उन सबको ज़ाहिर कर दिया और ज़मीन की पैदावार और तरह-तरह की मुख़्तलिफ़ शक्ल और मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की निकल आई इसी तरह आसमान में भी ठहरे रहनेवाले चलनेवाले सितारे वग़ैरह बनाए।

सहीह मुस्लिम और नसई में बरिवायत हज़रत अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु मन्क़ूल है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (सल्ल.) ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया, मिट्टी को अल्लाह तआला ने हफ़्तेवाले दिन पैदा किया और पहाड़ों को इतवार के दिन और दरख़्तों को पीर के दिन और बुराइयों को मंगल के दिन और नूर को बुध के दिन और जानवरों को जुमेरात के दिन और आदम अलैहिस्सलाम को जुमा के दिन असर के बाद (जुमा की आख़िरी साअत में असर के बाद से रात तक)।

﴾3﴿

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ
بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾

व अल्ल-म आ-दमल्-अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ-र-ज़हुम् अलल्-मलाइ-कति फ़क़ा-ल अम्बिऊनी बिअस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् सादिक़ीन। (31) क़ालू सुब्हा-न-क ला इल्-म लना इल्ला मा-अल्लम्तना, इन्न-क अन्तल्-अलीमुल्-हकीम। (32)

तर्जमा : और अल्लाह तआला ने आदम को तमाम नाम सिखाकर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश किया और फ़रमाया, अगर तुम सच्चे हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ, उन सबने कहा, ऐ अल्लाह, तेरी ज़ात पाक है, हमें तो सिर्फ़ उतना ही इल्म है जितना तूने हमें सिखा रखा है, पूरे इल्म और हिकमतवाला तू ही है।

(पारा-1, अल-बक़रा, आयत-31-32)

तशरीह : अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को एक ख़ास क़िस्म का इल्म देकर फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत दी, फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम को तमाम नाम बताए यानी उनकी तमाम औलाद के, सब जानवरों के, ज़मीन, आसमान, पहाड़, तरी, ख़ुश्की,

घोड़े, गधे, बरतन, भांडे, चरिन्द, परिन्द, फ़रिश्ते, तारे वग़ैरह तमाम छोटी-बड़ी चीज़ों के। हज़रत उबई-बिन-कअब रज़िअल्लाहु अन्हु की रिवायत में है तमाम चीज़ों के नाम सिखाए थे। ज़ाती नाम भी, सिफ़ाती नाम भी और कामों के नाम भी जैसे कि हज़रत इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि गोज़ का नाम भी बताया गया था।

﴾4﴿

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۞

अम्मन् .ख-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम्-मिनस्समा-इ मा-आ, फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जह्, मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाह्, बल् हुम् क़ौमुंय्-यअ़्दिलून। (60)

तर्जमा : भला बताओ कि आसमान को और ज़मीन को किसने पैदा किया? किसने आसमान से बारिश बरसाई, फिर उससे हरे-भरे बारौनक़ बाग़ात उगा दिए? उन बाग़ों के दरख़्तों को तुम हरगिज़ नहीं उगा सकते, क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद है? बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधी राह से)। (अन-नमल-60)

तशरीह : बयान हो रहा है कि कुल कायनात का रचानेवाला, सबका पैदा करनेवाला, सब को रोज़ियाँ देनेवाला, सबकी हिफ़ाज़त करनेवाला, तमाम जहाँ की तदबीर करनेवाला सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। इन बुलन्द आसमानों को, इन चमकते सितारों को उसी ने पैदा किया, इस भारी बोझल ज़मीन को उन बुलन्द चोटियोंवाले पहाड़ों को, इन फैले हुए मैदानों को उसी ने पैदा किया है, खेतियाँ, बाग़ात, फल, फूल, दरिया, समुन्द्र, हैवानात, जिन्नात, इनसान, ख़ुशकी और तरी के आम जानदार उसी के बनाए हुए हैं।

आसमानों से पानी उतारनेवाला वही है, अपनी मख़लूक़ की रोज़ी का ज़रिआ उसी ने बनाया है, बाग़ात खेत सब वही उगाता है जो अलावा ख़ुश मन्ज़र होने के बेहद मुफ़ीद होते हैं, अलावा ख़ुश ज़ायक़ा होने के ज़िन्दगी क़ायम रखनेवाले होते हैं। तुममें से या तुम्हारे माबूदाने-बातिल में से कोई भी न किसी चीज़ के पैदा करने की क़ुदरत रखता है न किसी दरख़्त के उगाने की, जिन्स वही ख़ालिस व अरज़ाँ है।

ज़मीन अल्लाह तआला ने ठहरी हुई और साकिन बनाई ताकि दुनिया बआराम अपनी ज़िन्दगी बसर कर सके, उसने ज़मीन पर पानी के दरिया बहा दिए जो इधर-उधर बहते रहते हैं और मुल्क-मुल्क पहुँचकर ज़मीन को सैराब करते हैं ताकि ज़मीन से खेत बाग़ वग़ैरह उगें। उसने ज़मीन की मज़बूती के लिए इस पर पहाड़ों की मीख़ें गाड़ दीं, ताकि वह तुम्हें हिला-डुला न सके, ठहरी रहे। उसकी क़ुदरत देखो कि एक खारी समुन्दर है, एक मीठा है दोनों बह रहे हैं, बीच में कोई रोक, आड़ परदा या हिजाब नहीं है लेकिन क़ुदरत ने एक को एक से अलग कर रखा है, न कड़वा मीठे में मिल सके न मीठा कड़वे में। खारी अपने फ़वाइद पहुँचाता रहे, मीठा अपने फ़ायदे देता रहे, उसका निथरा हुआ ख़ुश-ज़ायक़ा सहता-बचता पानी लोग पीएँ, अपने जानवरों को पिलाएँ, खेती-बाड़ियाँ, बाग़ात वग़ैरह में यह पानी पहुँचाए, नहाएँ-धोएँ वग़ैरह। खारी पानी अपने फ़वाइद से लोगों को सूदमन्द करे, यह हर तरफ़ से घेरे हुए हैं ताकि हवा ख़राब न हो, इन दोनों समुन्दरों का जारी करनेवाला है। और उसी ने इन दोनों के दरम्यान हदे-फ़ासिल रख दी है।

﴾5﴿

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

अम्-मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि व मंय्युर्सिलुर्-

रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिह्, अ-इलाहुम्-मअल्लाह्, तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून। (63)

तर्जमा : क्या वह जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में राह दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुशख़बरियाँ देनेवाली हवाएँ चलाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है जिन्हें ये शरीक करते हैं, इन सबसे अल्लाह बुलन्द व बालातर है।

(पारा-20, अन-नमल-63)

तशरीह : आसमान और ज़मीन में ख़ुदा तआला ने ऐसी निशानियाँ रख दी हैं कि ख़ुशकी और तरी में जो राह भूल जाए वह उन्हें देख कर राहे-रास्त इख़्तियार कर ले। जैसे फ़रमाया कि सितारों से लोग राह पाते हैं। समुन्दरों में और ख़ुश्की में उन्हें देखकर अपना रास्ता ठीक कर लेते हैं, बादल पानी भरे बरसें, इससे पहले ठन्डी और भीनी-भीनी हवाएँ वह चलाता है जिससे लोग समझ लेते हैं कि अब रब की रहमत बरसेगी, ख़ुदा के सिवा इन कामों का करनेवाला कोई नहीं, न कोई इन पर क़ादिर है, तमाम शरीकों से वह अलग है और पाक है सबसे बुलन्द है।

सख़्तियों और मुसीबतों के वक़्त पुकारे जाने के क़ाबिल उसी की ज़ात है, बेकस बेबस लोगों का सहारा वही है, गिरे-पड़े, भूले-भटके मुसीबत ज़दा उसी को पुकारते हैं उसी की तरफ़ लौ लगाते हैं। जैसे फ़रमाया कि तुम्हें जब समुन्दर के तूफ़ान ज़िन्दगी से मायूस कर देते हैं तो तुम उसी को पुकारते हो, उसी की तरफ़ गिरिया वज़ारी करते हो और सबको भूल जाते हो।

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) से पूछा कि हुज़ूर! आप किस चीज़ की तरफ़ हमें बुला रहे हैं? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया अल्लाह तआला की तरफ़, जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं, जो उस वक़्त तुझे काम आता जब तू किसी फँसावड़े में फँसा हो, वही है कि जब तू जंगलों में राह भूलकर उसे पुकारे तो वह तेरी रहनुमाई कर दे, तेरा कोई खो गया हो और तू उससे इल्तिजा करे तो वह तुझको मिला दे, क़हत साली हो गई हो और तू उससे दुआएँ करे तो वह

मूसलाधार मेंह तुझ पर बरसा दे। उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह! (सल्ल॰) मुझे कुछ नसीहत कीजिए आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, किसी को बुरा मत कह, नेकी के किसी काम को हल्का और बेवक़अत न समझ, गो अपने मुसलमान भाई से बकुशादा पेशानी मिलना ही हो, गो अपने डोल से किसी प्यासे को एक घूँट पानी का देना ही हो और अपने तहबन्द को आधी पिंडली तक रख, न मान तो ज़्यादा से ज़्यादा टख़ने तक, इससे नीचे लटकाने से बचता रह, इसलिए कि यह फ़ख़्र व ग़ुरूर है जिसे ख़ुदा तआला नापसन्द करता है।

वहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, मैंने अगली आसमानी किताबों में पढ़ा है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम जो शख़्स मुझ पर एतिमाद करे और मुझे थाम ले तो मैं उसे उसके मुख़ालिफ़ीन से बचा लूँगा और ज़रूर बचा लूँगा, चाहे आसमान और ज़मीन और कुल मख़लूक़ उसकी मुख़ालिफ़त पर और ईज़ादही पर तुल जाए। और जो मुझ पर एतिमाद न करे, मेरी पनाह में न आए तो मैं उसे अमन व अमान से चलता फिरता ही अगर चाहूँगा तो ज़मीन में धँसा दूँगा और उसकी कोई मदद न करूँगा।

एक बहुत-ही अजीब वाक़िआ हाफ़िज़ इब्ने-असाकिर रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी किताब में नक़ल किया है कि एक साहब फ़रमाते हैं कि मैं एक ख़च्चर पर लोगों को दमिश्क़ से ज़बदानी ले जाया करता था और उसी किराये पर मेरी गुज़र बसर थी, एक बार एक शख़्स ने ख़च्चर किराये पर लिया, मैंने उसे सवार कराया और ले चला, एक जगह दो रास्ते थे पहुँचे तो उसने कहा इस राह चलो मैंने कहा मैं इससे वाक़िफ़ नहीं हूँ, सीधी राह यही है, उसने कहा नहीं मैं पूरी तरह वाक़िफ़ हूँ, यह बहुत नज़दीक का रास्ता है, मैं उसके कहने से उसी की राह चला थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि एक लक़-दक़ बयाबान में हम आ गए हैं जहाँ कोई रास्ता नज़र नहीं आता, निहायत ख़तरनाक जंगल और बन है और हर तरफ़ लाशें पड़ी हुई हैं। मैं सहम गया, वह मुझसे कहने लगा ज़रा

लगाम थाम लो मुझे यहाँ उतरना है, मैंने लगाम थाम ली वह उतरा और अपना तहबन्द ऊँचा करके कपड़े ठीक करके छुरी निकालकर मुझ पर हमला किया, मैं वहाँ से सरपट भागा लेकिन उसने मेरा तआक़ुब किया और मुझे पकड़ लिया, मैं उसे क़स्में देने लगा लेकिन उसने ख़याल भी न किया, मैंने कहा अच्छा यह ख़च्चर और कुल सामान जो मेरे पास है तू ले ले और मुझे छोड़ दे। उसने कहा यह तो मेरा हो ही चुका लेकिन मैं तुझे ज़िन्दा छोड़ना चाहता ही नहीं, मैंने उसे ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और आख़िरत के अज़ाबों का ज़िक्र किया लेकिन उस चीज़ ने भी उस पर कोई असर न किया और वह मेरे क़त्ल पर तुला रहा, अब मैं मायूस हो गया और मरने के लिए तैयार हो गया और उससे बमिन्नत इल्तिजा की कि आप मुझे दो रकअत नमाज़ अदा कर लेने दीजिए उसने कहा, अच्छा जल्दी पढ़ ले। मैंने नमाज़ शुरू की लेकिन ख़ुदा की क़सम मेरी ज़बान से क़ुरआन का एक हरफ़ नहीं निकलता था, यूँ ही हाथ बाँधे दहशतज़दा खड़ा हुआ था और वह जल्दी मचा रहा था, उसी वक़्त यह आयत मेरी ज़बान पर आ गई कि—

> "ख़ुदा ही है जो बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ को सुनता और क़बूल फ़रमाता है और बेबसी, बेकसी को सख़्ती और मुसीबत को दूर करता है।"

पस इस आयत का ज़बान से जारी होना था जो मैंने देखा कि बीचों-बीच जंगल में से एक घोड़ा सवार तेज़ी से अपना घोड़ा भगाए नेज़ा ताने हमारी तरफ़ चला आ रहा है, और बग़ैर कुछ कहे उस डाकू के पेट में नेज़ा घुसेड़ दिया जो उसके जिगर के आर-पार हो गया, वह उसी वक़्त बेजान होकर गिर पड़ा, सवार ने बाग मोड़ी और जाना चाहा लेकिन मैं उसके क़दमों से लिपट गया और बिलहाह कहने लगा ख़ुदा के लिए यह तो बतलाओ कि तुम कौन हो? उसने कहा मैं उसका भेजा हुआ हूँ जो मजबूरों, बेकसों और बेबसों की दुआ क़बूल फ़रमाता है और मुसीबत व आफ़त को टाल

देता है। मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और वहाँ से अपना ख़च्चर और माल लेकर सही सालिम वापस लौटा, रहिमहुल्लाह।

इसी क़िस्म का एक और वाक़िआ भी है कि मुसलमानों के एक लश्कर ने जंग में काफ़िरों से शिकस्त खाई और वापस लौटे। उनमें एक मुसलमान जो बड़ी सख़ी और नेक थे, वे भी थे, उनका घोड़ा जो बहुत तेज़ रफ़तार था, रास्ते में अड़ गया, इस वलीअल्लाह ने बहुत कोशिश की लेकिन जानवर ने क़दम ही न उठाया। आख़िर आजिज़ आकर उसने कहा क्या बात है जो तू अड़ गया, ऐसे ही मौक़े के लिए तो मैं तेरी ख़िदमत की थी और तुझे प्यार से पाला था, घोड़े को ख़ुदा ने ज़बान दी, उसने जवाब दिया कि वजह यह है कि आप मेरा घास-दाना साईस को सौंप देते थे, वह उसमें से चुरा लेता था, मुझे बहुत कम खाने को देता था और मुझ पर ज़ुल्म करता था, ख़ुदा के इस नेक बन्दे ने कहा अब तू चल, मैं ख़ुदा को बीच में रख कर वादा करता हूँ कि अब से तुझे मैं हमेशा अपनी गोद ही खिलाया करूँगा, जानवर यह सुनते ही तेज़ी से लपका और उन्हें जाये-अमन तक पहुँचा दिया। हस्बे-वादा अब से ये बुज़ुर्ग अपने जानवर को अपने गोद ही में खिलाया करते थे, लोगों ने उनसे इसकी वजह पूछी, उन्होंने किसी से वाक़िआ कह दिया, जिसकी आम शोहरत हो गई और लोग इस वाक़िए को सुनने के लिए उनके पास दूर-दूर से आने लगे। शाहे-रूम को जब यह ख़बर पहुँची तो उसने चाहा कि किसी तरह अपने शहर में बुला ले, बहुत कोशिश की लेकिन बेसूद रही, आख़िर में उसने एक शख़्स को भेजा कि किसी तरह हीले-हवाले से उन्हें बादशाह तक पहुँचाए, यह शख़्स पहले मुसलमान फिर मुरतद हो गया था। यह बादशाह के पास से चला, यहाँ आकर उनसे मिला, अपना इस्लाम ज़ाहिर किया, तौबा की और निहायत नेक बनकर रहने लगा, यहाँ तक कि उस वली अल्लाह को उस पर पूरा एतिमाद हो गया और उसे सालेह और दीनदार समझ कर उन्होंने दोस्ती पैदा कर ली और साथ-साथ फिरने लगे। उसने अपना पूरा रसूख़ जमा कर अपनी ज़ाहिरी दीनदारी के

फ़रेब में उन्हें फंसा कर उधर बादशाह को इत्तिलाअ दी कि फ़लाँ वक़्त दरिया के किनारे एक मज़बूत जरी शख़्स को भेजो, मैं उन्हें लेकर वहाँ आ जाऊँगा और उस शख़्स की मदद से उन्हें गिरफ़्तार कर लूँगा।

यहाँ से उन्हें जुल देकर लेकर चला और उसी जगह पहुँचाया, दफ़अतन एक शख़्स नमूदार हुआ और उस बुज़ुर्ग पर हमला किया, इधर से उस मुरतद ने हमला किया, उस नेक दिल शख़्स ने उस वक़्त आसमान की तरफ़ निगाहें उठाईं और दुआ की कि ख़ुदाया इस शख़्स ने तेरे नाम से मुझे धोखा दिया है, मैं तुझसे इल्तिजा करता हूँ कि तू जिस तरह चाहे मुझे इन दोनों से बचा ले। वहीं जंगल से दो दरिन्दे भागते हुए आते दिखाई दिए और उन दोनों शख़्सों को उन्होंने दबोच लिया और टुकड़े-टुकड़े करके चल दिए और यह बन्दए-ख़ुदा वहाँ से अमन व अमान सही व सालिम तशरीफ़ ले आया। रहिमहुल्लाह

अपनी इस शाने-रहमत को बयान फ़रमाकर फिर जनाब बारी तआला की तरफ़ से इरशाद होता है कि वही तुम्हें ज़मीन का जानशीन बनाता है, एक-एक के पीछे चला आ रहा है और मुसलसल चला जा रहा है, उस ख़ुदा ने तुम्हें ज़मीनों का जानशीन बनाया है और तुममें से एक-को-एक पर दरजों में बढ़ा दिया है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को भी जो ख़लीफ़ा कहा गया, वह उसी एतिबार से कि उनकी औलाद एक दूसरे की जानशीन होगी 'वइज़ क़ाला रब्बु-क लिल-मलाइकति' वाली आयत के इस जुमले से भी यही मुराद है कि एक के बाद एक, एक ज़माने के बाद दूसरा ज़माना, एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम। पस यह ख़ुदा की क़ुदरत है वरना अगर वह चाहता तो सबको एक ही वक़्त एक साथ पैदा कर देता और एक साथ फ़ना कर देता। लेकिन अब उसने यह रखा कि एक मरे एक पैदा हो। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया, उनसे उनकी नसल फैलाई और दुनिया में एक ऐसा तरीक़ा रखा कि दुनियावालों की रोज़ियाँ और उनकी ज़िन्दगियाँ तंग न हों, वरना सारे

इनसान एक साथ शायद ज़मीन में तंगी से गुज़ारते और एक से एक को नुक़सानात पहुँचते, पस मौजूदा तर्ज़ ख़ुदा की हिकमत पर दलील है। सबकी पैदाइश का मौत का, आने-जाने का वक़्त उसके नज़दीक मुक़र्रर है। एक-एक उसके इल्म में है। उसकी निगाह से कोई ओझल नहीं, वह एक दिन ऐसा भी लानेवाला है कि उन सबको एक ही मैदान में जमा करे और उनके फ़ैसले करे, नेकी, बदी का बदला दे, अपनी क़ुदरतों को बयान फ़रमाकर फ़रमाता है कि : है कोई जो इन कामों को कर सकता है, ऐसी साफ़ दलीलें बहुत कम सोची जाती हैं और उनसे भी नसीहत बहुत कम लोग हासिल करते हैं।

﴾6﴿

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ
بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

व मिन् आयातिही अन् .ख-ल-क़ लकुम्-मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ-ल बैनकुम् मवद्द-तंव्-व रह्मह्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून। (21)

तर्जमा : अल्लाह की निशानियों में से है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर अब इनसान बनकर चलते-फिरते फैल रहे हो। और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जिंस से बीवियाँ पैदा कीं ताकि तुम उनसे आराम पाओ, उसने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और हमदर्दी क़ायम कर दी। यक़ीनन ग़ौर और फ़िक्र करनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं।

(सूरा-रूम आयत-21)

तशरीह : फ़रमाता है कि : ख़ुदा तआला की क़ुदरत की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि उसने तुम्हारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा किया, तुम सबको उसने बेवक़अत पानी के क़तरे से पैदा किया, फिर तुम्हारी बहुत अच्छी सूरतें बनाईं, नुत्फ़े से ख़ून बस्ते की शक्ल में फिर गोश्त के

लोथड़े की सूरत में करके फिर हड्डियाँ बनाईं और हड्डियों को गोश्त पहनाया फिर रूह फूँकी। आँख, कान, नाक पैदा किए, माँ के पेट से सलामती से निकाला, फिर कमज़ोरी को क़ुव्वत से बदला, दिन ब दिन ताक़तवर और मज़बूत क़द-आवर और ज़ोर-आवर किया, उमर दी, हरकत व सुकून की ताक़त दी। अस्बाब और आलात दिए और मख़लूक़ का सरदार बनाया, इधर से उधर पहुँचने के ज़राए दिए, समुन्दरों की और ज़मीन की मुख़्तलिफ़ सवारियाँ अता फ़रमाए, दुनियावी काम समझाए, रिज़्क़, इज़्ज़त हासिल करने के तरीक़े खोल दिए। साथ ही आख़िरत को सँवारने का इल्म और अमल भी सिखाया, पाक है वह ख़ुदा तआला जो हर चीज़ का सही अन्दाज़ा करता है। हर एक को एक मरतबे पर रखता है। शक्ल व सूरत में, बोल-चाल में, अमीरी और फ़क़ीरी में, अक़्ल व हुनर में, भलाई और बुराई में, सआदत व शक़ावत में हर एक को जुदागाना कर दिया ताकि हर शख़्स रब तआला की बहुत-सी निशानियाँ अपने में और दूसरे में देख ले। मुसनद इमाम अहमद में हदीस है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने तमाम ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी की लेकर उससे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया। पस ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों की तरह औलादे-आदम की मुख़्तलिफ़ रंगतें हुईं। कोई सफ़ेद, कोई सुर्ख़, कोई स्याह, कोई ख़बीस, कोई तैयिब, कोई ख़ुश-ख़ुल्क़, कोई बद-ख़ुल्क़ वग़ैरह। फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा तआला की एक निशानी क़ुदरत यह भी है कि उसने तुम्हारी ही जिंस से तुम्हारे जोड़े बनाए कि वे तुम्हारी बीवियाँ बनती हैं और तुम उनके ख़ाविंद होते हो, यह इसलिए कि तुम्हें उनसे सुकून व राहत, आराम व आसाइश हासिल हुआ। जैसे और आयत में है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें एक ही नफ़्स से पैदा किया और उसी से उसकी बीवी पैदा की ताकि वह उसकी तरफ़ से राहत हासिल करे। हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम, हज़रत आदम अलैहिस्सलम की बाईं पसली से जो सबसे ज़्यादा छोटी है पैदा हुई हैं, पस अगर इनसान का जोड़ा इनसान से न मिलता और किसी

और जिंस से उसका जोड़ा बन्धता तो मौजूदा उलफ़त व रहमत उसमें न हो सकती। यह प्यार व इख़्लास एक जिंस की वजह से है, उनमें आपस में मुहब्बत व मुवद्दत, रहमत व उलफ़त, प्यार व इख़्लास, रहम खाकर उसका ख़याल रखता है। इसलिए कि उससे औलाद हो चुकी है। उसकी परवरिश इन दोनों के मेल-मिलाप पर मौक़ूफ़ है। अलग़रज़ बहुत-सी वजहें रब्बुल-आलमीन ने रख दी हैं। जिनके बाइस इनसान बआराम अपने जोड़े के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है, यह भी रब तआला की महरबानी और उसकी क़ुदरते-कामिला की एक ज़बरदस्त निशानी है। अदना से ग़ौर से इनसान का ज़ेहन इस तक पहुँच जाता है।

﴾7﴿

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़ु अल्सि-नतिकुम् व अल्वानिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्-आलमीन (22) व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्तिग़ा-उकुम्-मिन् फ़ज़्लिह्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मऊन। (23)

तर्जमा : उसकी क़ुदरत की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़ (भी) है। दानिशमन्दों के लिए इसमें यक़ीनन बड़ी निशानियाँ हैं और भी उसकी क़ुदरत की निशानी तुम्हारी रातों और दिन की नींद में है और उसके फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) को तुम्हारा तलाश करना भी है। जो लोग कान लगाकर सुनने के आदी हैं उनके लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं। (सूरा-रूम, आयत-22, 23)

तशरीह : रब्बुल आलमीन अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत की एक

निशानी और बयान फ़रमाता है कि इस क़दर बुलन्द कुशादा आसमान की पैदाइश, इसमें सितारों का जड़ाव, उनकी चमक-दमक, उनमें से बाज़ का चलता-फिरता होना, बाज़ का एक जा साबित्त रहना, ज़मीन को एक ठोस शकल में बनाना, उसे कसीफ़ पैदा करना, उसमें पहाड़, मैदान, जंगल, दरिया, समुन्दर, टीले, पत्थर, दरख़्त वग़ैरह जमा देना, ख़ुद तुम्हारी ज़बानों में, रंगतों में इख़्तिलाफ़ रखना, अरब की ज़बान और तातारियों की और कुर्दों की और रूमियों की और फ़िरंगियों की और तकरूरियों की और बरबर की और हब्शियों की और हिन्दियों की और ईरानियों की और सक़ालबा की और अरमीनियों की और जज़रियों की और ख़ुदा जाने कितनी-कितनी ज़बानें ज़मीन पर बनू-आदम में बोली जाती हैं। इनसानी ज़बानों के इख़्तिलाफ़ के साथ ही उनकी रंगतों का इख़्तिलाफ़ भी शाने-ख़ुदा तआला का मज़हर है, ख़याल तो फ़रमाइए कि लाखों आदमी जमा हो जाएँ एक कुंबे क़बीले के, एक मुल्क एक ज़बान के हों लेकिन नामुमकिन है कि हर एक में कोई न कोई इख़्तिलाफ़ न हो हालाँकि आज़ाए बदन के एतिबार से कुल्ली मुवाफ़िक़त है, सबकी दो आँखें, दो पलकें, एक नाक, दो कान, एक पेशानी, एक मुँह, दो होंट, दो रुख़सार, वग़ैरह लेकिन ताहम एक से एक अलाहिदा है, कोई न कोई हैयित, आदत, ख़सलत, कलाम, बातचीत, तर्ज़े-अदा ऐसी ज़रूर होगी कि जिसमें एक-दूसरे का म्तियाज़ हो जाए, गो वह बाज़ मर्तबा पोशीदा सी और हल्की-सी चीज़ हो, गो ख़ूबसूरती और बद सूरती में कई एक यकसाँ नज़र आएँ लेकिन जब ग़ौर किया जाए तो हर एक को दूसरे से मुम्ताज़ करनेवाला कोई न कोई वस्फ़ ज़रूर नज़र आ जाएगा। हर जाननेवाला इतनी बड़ी ताक़तों और क़ुव्वतों के मालिक को पहचान सकता है। और इस सनअत से सानेअ को जान सकता है। नींद भी क़ुदरत की एक निशानी है। जिससे थकान दूर हो जाती है। राहत व सुकून हासिल होता है। इसके लिए क़ुदरत ने रात बना दी है। काम-काज के लिए, दुनिया हासिल करने के लिए, कमाई-धन्धे करने

के लिए, तलाशे-मआश के लिए उस ख़ुदा तआला ने दिन को पैदा कर दिया जो रात के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। यक़ीनन सुनने-समझनेवालों के लिए ये चीज़ें निशाने-क़ुदरत हैं।

﴿8﴾

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾

व मिन् आयातिही युरीकुमुल्-बर्-क़ .ख़ौफ़ंव्-व त-मअंव्-व युनज़्ज़िलु मिनस्-समा-इ मा-अन् फ़युह्यी बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून। (24) व मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समा-उ वल्अर्ज़ु बिअम्रिह्, सुम्-म इज़ा दआकुम् दअ्-वतम्-मिनल्अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून। (25)

तर्जमा : और उसकी निशानियों में से एक यह भी है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीदवार बनाने के लिए बिजलियाँ दिखाता है और आसमान से बारिश बरसाता है और उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है, इसमें भी अक़लमन्दों के लिए बहुत निशानियाँ हैं। उसकी एक निशानी यह भी है कि आसमान और ज़मीन के साथ ही तुम सब ज़मीन से निकल आओगे। (सूरा-रूम, आयत-24, 25)

तशरीह : अल्लाह तआला की अज़मत पर दलालत करनेवाली एक और निशानी बयान की जा रही है कि आसमानों पर उसके हुक्म से बिजली कोंधती है। जिसे देखकर कभी तुम्हें दहशत लगने लगती है कि कहीं ऐसा न हो कि कड़ाका किसी को हलाक कर दे, कहीं बिजली वग़ैरह और कभी तुम्हें उम्मीद बन्धती है कि अच्छा हुआ, अब बारिश बरसेगी, पानी की रेल-पेल होगी, तरसाली हो जाएगी वग़ैरह। वही है जो आसमान से पानी उतारता है और इस

ज़मीन को जो ख़ुश्क पड़ी हुई थी, जिस पर नाम-निशान को कोई हरियाली न थी, मिस्ल मुर्दे के बेकार थी, इस बारिश से वह जिन्दा कर देता है, लहलहाने लगती है। हरी-भरी हो जाती है। और तरह-तरह की पैदावार उगा देती है। अक़्लमन्दों के लिए अज़मते-ख़ुदावन्दी की यह एक जीती-जागती तस्वीर है। वह इस निशानी को देखकर यक़ीन कर लेते हैं कि इस ज़मीन को ज़िन्दा करनेवाला ख़ुदा तआला हमारी मौत के बाद हमें भी अज़सरे-नौ ज़िन्दा कर देने पर क़ादिर है। उसकी एक निशानी यह भी है कि ज़मीन और आसमान को थामे हुए और उन्हें ज़वाल से बचाए हुए है। हज़रत उमर-बिन-ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु जब कोई ताकीदी क़सम खाना चाहते तो फ़रमाते कि "उस ख़ुदा तआला की क़सम जिसके हुक्म से ज़मीन और आसमान ठहरे हुए हैं, फिर क़ियामत के दिन वह ज़मीन और आसमान को बदल देगा। मुर्दे अपनी क़बरों से ज़िन्दा करके निकाले जाएँगे। ख़ुद ख़ुदा तआला उन्हें आवाज़ देगा और यह सिर्फ़ एक आवाज़ पर ज़िन्दा होकर अपनी क़बरों से निकल खड़े होंगे। जैसे और आयत में है कि जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी हम्द करते हुए उसे जवाब दोगे, और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही कम रहे, और आयत में है

फ़ इन्नमा हि-य ज़जूरतुंव वाहिदतुन फ़-इज़ा हुम बिस्साहिरह।

सिर्फ़ एक ही आवाज़ से सारी मख़लूक़ मैदाने-हश्र में जमा हो जाएगी और आयत में 'इन कानत इल्ला सैहतवं वाहिदतन फ़-इज़ा हुम जमीउल्लदेना मुहज़रून' यानी वह तो सिर्फ़ एक आवाज़ होगी जिसे सुनते ही सबके सब हमारे सामने हाज़िर हो जाएँगे।

﴾9﴿

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهُ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهُ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़, कुल्लुल्-लहू क़ानितून।(26) व हुवल्लज़ी यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युओदुहू व हु-व अह्वनु अलैह, व लहुल्-म-सलुल्-अअ्ला फ़िस्समा-वाति वल्अर्ज़, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम। (27)

तर्जमा : और ज़मीन व आसमान की हर-हर चीज़ उसकी मिल्कीयत है और हर एक उसके फ़रमान के तहत है, वही है जो अव्वल बार मख़लूक़ को पैदा करता है फिर से दोबारा पैदा करेगा। और यह तो उस पर बहुत ही आसान है, उसकी बेहतरीन और आला सिफ़त है आसमानों में और ज़मीन में भी और वही ग़लबेवाला, हिकमतवाला है। (रूम 26-27)

तशरीह : फ़रमाता है कि तमाम आसमानों की और सारी ज़मीनों की मख़लूक़ अल्लाह तआला ही की है, सब उसके लौंडी ग़ुलाम हैं सब उसकी मिल्क में हैं, हर एक उसके सामने आजिज़ व लाचार, मजबूर व बेबस है। इब्तिदाई पैदाइश भी उसी ने की और वही इआदा भी करेगा और इआदा बनिस्बत इब्तिदा के आदतन आसान और हल्का होता है।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं जनाब बारी तआला का इरशाद है कि मुझे इब्ने-आदम झुटलाता है और उसे यह चाहिए नहीं था। वह मुझे बुरा कहता है और यह भी उसे लायक़ न था, उसका झुठलाना तो यह है कि कहता है कि जिस तरह इसने मुझे अव्वलन पैदा किया उस तरह दोबारह पैदा नहीं कर सकता हालांकि दूसरी मरतबा की पैदाइश पहली दफ़ा की पैदाइश से बिल्कुल ही आसान हुआ करती है। उसका मुझे बुरा कहना यह है कि कहता है कि ख़ुदा तआला की औलाद है हालाँकि मैं अहद व समद हूँ, जिसकी न औलाद है न माँ-बाप और जिसका कोई हमसर नहीं। अल-ग़रज़ दोनों पैदाइशें उस मालिक की क़ुदरत में हैं, न उस पर कोई काम भारी न बोझिल, बाज़ अहले-ज़ौक़ ने कहा है कि जब साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी का सुथरा पाक-साफ़ हौज़ ठहरा हुआ हो और बादे-सबा के थपेड़े उसे हिलाते जुलाते न हों, उस वक़्त उसमें

आसमान साफ़ नज़र आता है सूरज और चाँद सितारे बिल्कुल दिखाई देते हैं, उसी तरह बुज़ुर्गों के दिल हैं जिनमें वे ख़ुदा तआला की अज़मत व जलाल को हमेशा देखते रहते हैं। वह ग़ालिब है जिसपर किसी का बस नहीं, न उसके सामने किसी की चल सके, हर चीज़ उसकी मातहती में और उसके सामने पस्त व लाचार, आजिज़ व बेबस हैं। उसकी क़ुदरत, सतवत, सल्तनत हर चीज़ पर मुहीत है, वह हकीम है अपने अक़वाल में, अफ़आल में, शरीअत में, तक़दीर में, ग़रज़ हर-हर अम्र में।

﴾10﴿

وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ یُّرْسِلَ الرِّیَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِیُذِیْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِیَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ۝

व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर्-रिया-ह मुबश्शिरातिंव्- व लियुज़ी-क़कुम्-मिर्रह्मतिही व लितज्रि-यल्फ़ुल्कु-बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअल्लकुम् तश्कुरून। (46)

तर्जमा : उसकी निशानियों में से ख़ुशख़बरियाँ देनेवाली हवाओं को चलाना भी है इसलिए कि तुम्हें अपनी रहमत से लुत्फ़-अन्दोज़ करे और इसलिए कि उसके हुक्म से कश्तियाँ चलें और इसलिए कि उसके फ़ज़्ल को तुम ढूंढो और इसलिए कि शुक्रगुज़ारी करो।

(रूम, आयत-46)

तशरीह : बारिश के आने से पहले भीनी-भीनी हवाओं का चलना और लोगों को बारिश की उम्मीद दिलाना, उसके बाद मेंह बरसाना ताकि बस्तियाँ आबाद रहें, जानदार रहें, समुन्दरों में, दरियाओं में, जहाज़ और कश्तियाँ चलें, क्योंकि कश्तियों का चलना भी हवा पर मौक़ूफ़ है, अब तुम अपनी तिजारत और कमाई-धंधे के लिए इधर से उधर और उधर से इधर जा सको। पस तुम्हें चाहिए कि ख़ुदा तआला की इन बेशुमार अनगिनत नेमतों पर उसका शुक्र अदा करो।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾

अल्लाहुल्लज़ी युरसिलुर्-रिया-ह फ़तुसीरु सहाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समा-इ कै-फ़ यशा-उ व यज्-अलुहू कि-सफ़न् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही, फ़-इज़ा असा-ब बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून।(48) व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अलैहिम्-मिन् क़ब्लिही लमुब्लिसीन। (49) फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न ज़ालि-क लमुह्यिल्-मौता, व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (50) व ल-इन् अरसल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्फ़र्रल् लज़ल्लू मिम्-बअ्दिही यक्फ़ुरून। (51)

तर्जमा : अल्लाह तआला हवाएँ चलाता है, वे अब्र को उठाती हैं, फिर अल्लाह तआला अपनी मंशा के मुताबिक़ उसे आसमान में फैला देता है और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर आप देखते हैं कि उसके अन्दर से क़तरे निकलते हैं और जिन्हें अल्लाह तआला चाहता है उन बन्दों पर वह पानी बरसाता है तो वे ख़ुश हो जाते हैं, यक़ीन मानना कि बारिश उन पर बरसने से पहले-पहले तो वे नाउम्मीद हो रहे थे, पस आप रहमते-इलाही के आसार देखें कि ज़मीन की मौत के बाद किस तरह अल्लाह तआला उसे ज़िन्दा करता है? कुछ शक नहीं कि वही मुर्दों को ज़िन्दा करनेवाला है और

वह हर-हर चीज़ पर क़ादिर है, और अगर हम बादे-तुन्द चला दें और ये लोग खेतों को मुरझाई हुई, ज़र्द पड़ी हुई देख लें तो फिर उसके बाद नाशुक्री करने लगें। (रूम, आयत-48 से 51)

तशरीह : अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि वह हवाएँ भेजता है जो बादलों को उठाती हैं या तो समुन्दरों पर से या जिस तरह और जहाँ से ख़ुदा तआला का हुक्म हो, फिर रब्बुलआलमीन अब्र को आसमान पर फैला देता है, तुमने अकसर देखा होगा कि बालिश्त दो बालिश्त का अब्र उठा फिर वह जो फैला तो आसमान के किनारे ढाँप लिए और कभी यह भी देखा होगा कि समुन्दरों से पानी भरे अब्र उठते हैं, इसी मज़मून को 'वहुवल्लज़ी युरसिलुर्रियाह' में बयान फ़रमाया है फिर उसे टुकड़े-टुकड़े और तह-ब-तह कर देता है। वे पानी से स्याह हो जाते हैं। ज़मीन के क़रीब हो जाते हैं। फिर बारिश उन बादलों के दरम्यान से बरसने लगती है। जहाँ बरसी वहीं के लोगों की बाछें खिल गईं। फिर फ़रमाता है यही लोग बारिश से नाउम्मीद हो चुके थे, और पूरी नाउम्मीदी के वक़्त बल्कि नाउम्मीदी के बाद उन पर बारिशें बरसीं और जल-थल हो गए, यानी बारिश होने से पहले ये उसके मुहताज थे, और वह हाजत पूरी हो उससे पहले वक़्त के ख़त्म हो जाने के क़रीब बारिश न होने की वजह से ये मायूस हो चुके थे, फिर इस नाउम्मीदी के बाद दफ़अतन अब्र उठता है और बरस जाता है और रेल-पेल कर देता है और उनकी ख़ुश्क ज़मीन तर हो जाती है। क़हतसाली तरसाली से बदल जाती है या तो ज़मीन साफ़ चटियल मैदान थी या हर तरह हरियाली दिखाई देने लगती है। देख लो कि जिस रब तआला की यह क़ुदरत देख रहे हो वह एक दिन मुर्दों को उनकी क़ब्रों से भी निकालने वाला है, जबकि उनके जिस्म गल सड़ गए होंगे, समझ लो कि ख़ुदा तआला हर चीज़ पर क़ादिर है, पज़मुर्दा हो जाएँ तो वे फिर से कुफ़्र करने लग जाते हैं, चुनांचे सूरा वाक़िआ में भी यही बयान हुआ है, 'अफ़राइतुम मा तुहरिसून से मुजरिमून' तक।

हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

हवाएँ आठ क़िस्म की हैं। चार रहमत की चार ज़हमत की। नाशिरात, मुबश्शिरात, मुरसिलात और ज़ारियात तो रहमत की हैं, और अक़ीम, सरसर, आसिफ़ और क़ासिफ़ अज़ाब की। इनमें पहली दो ख़ुशकियों की और आख़िरी दो तरी की। हुज़ूर (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि हवाएँ दूसरी से मुसख़्ख़र हैं यानी दूसरी ज़मीन से, जब अल्लाह तआला ने आदियों की हलाकत का इरादा किया तो हवाओं के दारोग़ा को यह हुक्म दिया, उसने दरयाफ़्त किया कि जनाब बारी तआला क्या मैं हवाओं के ख़ज़ाने में इतना सूराख़ कर दूँ जितना बैल का नथुना होता है? तो फ़रमाने-ख़ुदा हुआ कि नहीं-नहीं अगर ऐसा हुआ तो कुल ज़मीन और ज़मीन की कुल चीज़ें अलट-पलट हो जाएँगी, इतना नहीं बल्कि वज़न करो कि जितना अंगूठी में होता। अब सिर्फ़ इतने से सूराख़ से हवा चली, जहाँ पहुँची वहाँ भुस उड़ा दिया, जिस चीज़ पर से गुज़री उसे बेनिशान कर दिया।

﴾12﴿

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ؀

अल्लाहुल्लज़ी .ख़-ल-क़कुम्-मिन् ज़ुअ़्फ़िन् सुम्-म ज-अ-ल मिम्बअ़्दि ज़ुअ़्फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ-ल मिम्-बअ़्दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ़्फ़ंव्-व शै-बह्, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, व हुवल्-अलीमुल्-क़दीर। (54)

तर्जमा : अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया, फिर इस कमज़ोरी के बाद तवानाई दी, फिर इस तवानाई के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया जो चाहता है पैदा करता है, वह सबसे पूरा वाक़िफ़ और सब पर पूरा क़ादिर है।

(सूरा-रूम, आयत-54)

तशरीह : इनसान की तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुल पर नज़र डालो, उसकी असल तो मिट्टी से है फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून बस्ता से फिर गोश्त के लोथड़े से फिर उसे हड्डियाँ पहनाई जाती हैं, फिर हड्डियों

पर गोश्त-पोस्त पहनाया जाता है, फिर रूह फूँकी जाती है फिर माँ के पेट से ज़ईफ़ व नहीफ़ होकर निकलता है फिर थोड़ा-थोड़ा बढ़ता जाता है, और मज़बूत हो जाता है, फिर बचपन के ज़माने की बहारें देखता है, फिर जवानी के क़रीब पहुँचता है, फिर जवान होता है, आख़िर नश्व व नुमा मौक़ूफ़ हो जाती है, अब क़ुवा फिर मुज़महिल होने शुरू होते हैं, ताक़तें घटने लगती हैं, अधेड़ उमर को पहुँचता है, फिर बुड्ढा होता है, फिर बुड्ढा फूस हो जाता है, ताक़त के बाद की ये नाताक़ती भी क़ाबिले-इबरत होती है कि हिम्मत पस्त है, देखना, सुनना, चलना, फिरना, उठाना, उचकना, पकड़ना ग़रज़ हर ताक़त घट जाती है, बदन पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रुख़सार पिचक जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, यह है क़ुव्वत के बाद की ज़ईफ़ी और बुढ़ापा। वह जो चाहता है करता है, बनाना बिगाड़ना उसकी क़ुदरत के अदना करिश्मे हैं। सारी मख़लूक़ उसकी ग़ुलाम, वह सबका मालिक, वह आलिम वह क़ादिर, न उसका-सा किसी का इल्म न उसकी जैसी किसी की क़ुदरत।

﴾13﴿

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

.ख़-लक़स्समावाति बिग़ैरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन्, व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम। (10) हाज़ा .ख़ल्क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा .ख़-लक़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही, बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन। (11)

तर्जमा : उसी ने आसमानों को बग़ैर सुतून के पैदा किया है तुम

इन्हें देख रहे हो और उसने ज़मीन में पहाड़ों को डाल दिया ताकि वह तुम्हें जुंबिश न दे सके और हर तरह के जानदार ज़मीन में फैला दिए और हमने आसमान से पानी बरसा कर ज़मीन में हर क़िस्म के नफ़ीस जोड़े उगा दिए, यह है अल्लाह की मख़लूक़। अब तुम मुझे उसके सिवा दूसरे किसी को कोई मख़लूक़ तो दिखाओ (कुछ नहीं) बल्कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (लुक़मान : 10-11)

तशरीह : अल्लाह सुब्हानहु व तआला अपनी क़ुदरते-कामिला का बयान फ़रमाता है कि ज़मीन व आसमान और सारी मख़लूक़ का ख़ालिक़ सिर्फ़ वही है। आसमान को उसने बे-सूतून ऊँचा रखा है। वाक़ेअ में कोई सुतून है ही नहीं, ज़मीन को मज़बूत करने के लिए और हिलने-जुलने से बचाने के लिए उसने उसमें पहाड़ की मीख़ें गाड़ दीं कि वह तुम्हें ज़लज़ले और जुंबिश से बचा ले, इस क़दर क़िस्म-क़िस्म के भांत-भांत के जानदार उस ख़ालिक़े-हक़ीक़ी ने पैदा किए कि आज तक उनका कोई हिस्र नहीं कर सका। अपना ख़ालिक़ और ख़ल्लाक़ होना बयान फ़रमा कर अब राज़िक़ और रज़्ज़ाक़ होना बयान फ़रमा रहा है कि आसमान से बारिश उतार कर ज़मीन में से तरह-तरह की पैदावार उगा दी जो देखने में ख़ुशमंज़र, खाने में बेज़रर, नफ़े में बहुत बेहतर। शअबी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि इनसान भी ज़मीन की पैदावार है, जन्नती करीम हैं और दोज़ख़ी लईम हैं। अल्लाह तआला की ये सारी मख़लूक़ तो तुम्हारे सामने है अब जिन्हें तुम इनके सिवा पूजते हो ज़रा बताओ तो उनकी मख़लूक़ कहाँ है? जब नहीं तो वे ख़ालिक़ नहीं और जब ख़ालिक़ नहीं तो माबूद नहीं, फिर उनकी इबादत निरा ज़ुल्म और सख़्त नाइनसाफ़ी है। फ़िलवाक़ेअ् ख़ुदा तआला के साथ शिर्क करनेवालों से ज़्यादा अन्धा, बहरा, बेअक़ल, बेइल्म, बेसमझ, बेवक़ूफ़ और कौन होगा?

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۞

अलम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम्-मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अलैकुम् नि-अ-महू ज़ाहि-रतंव्-व बाति-नतू, व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर। (20)

तर्जमा : क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान की हर चीज़ को तुम्हारे काम में लगा रखा है और तुम्हें अपनी ज़ाहिरी व बातिनी नेमतें भरपूर दे रखी हैं, बाज़ लोग अल्लाह के बारे में बग़ैर इल्म के और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर रौशन किताब के झगड़ा करते हैं। (लुक़मान, आयत-20)

तशरीह : अल्लाह तबारक व तआला अपनी नेमतों का इज़हार फ़रमा रहा है कि देखो आसमान के सितारे तुम्हारे लिए काम में मशग़ूल हैं, चमक-चमक कर तुम्हें रौशनी पहुँचा रहे हैं। बादल, बारिश, ओले, ख़ुशकी, सब तुम्हारे नफ़े की चीज़ें हैं, ख़ुद आसमान से तुम्हारे लिए महफ़ूज़ और मज़बूत छत है, ज़मीन की नहरें, चश्मे, दरिया, समुन्दर, दरख़्त, खेती, फल, फूल ये सब नेमतें भी उसी ने दे रखी हैं। मसलन रसूलों का भेजना, किताबों का नाज़िल फ़रमाना, शक-शुब्ह। वग़ैरह दिलों से दूर करना वग़ैरह इतनी बड़ी और इतनी सारी नेमतें जिसने दे रखी हैं हक़ यह था कि उसकी ज़ात पर सबके सब ईमान लाते लेकिन अफ़सोस कि बहुत-से लोग अब तक ख़ुदा तआला के बारे में ही उलझ रहे हैं, और महज़ जिहालत से ज़लालत से बग़ैर किसी सनद और दलील के अड़े हुए हैं।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾

व ल-इन् स-अल्तहुम्-मन् .ख-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाह, क़ुलिल्हम्दु लिल्लाह, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून। (25) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़, इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद। (26)

तर्जमा : अगर आप इनसे दरयाफ़्त करें कि आसमान और ज़मीन का ख़ालिक़ कौन है? तो ये ज़रूर जवाब देंगे कि अल्लाह, तो कह दीजिए कि सब तारीफ़ों के लायक़ अल्लाह ही है, लेकिन इनमें के अक्सर बे-इल्म हैं। आसमानों में ज़मीन में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है, यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बड़ा बेनियाज़ और सज़ावारे-हम्द व सना है। (सूरा-लुक़मान, आयत-25-26)

तशरीह : अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि ये मुशरिक इस बात को मानते हुए कि सबका ख़ालिक़ अकेला एक अल्लाह तआला ही है फिर भी दूसरों की इबादत करते हैं हालाँकि उनकी निस्बत ख़ुद जानते हैं कि यह ख़ुदा तआला के पैदा किए हुए और उसके मातहत हैं, इनसे पूछा जाए अगर कि ख़ालिक़ कौन है? तो इनका जवाब बिल्कुल सच्चा होता है कि अल्लाह तआला। तो कह कि ख़ुदा तआला का शुक्र है, इतना तो तुम्हें इक़रार है, बात यह है कि अक्सर मुशरिक बे इल्म होते हैं, ज़मीन और आसमान की हर छोटी-बड़ी छिपी-खुली चीज़ ख़ुदा तआला की पैदा करदा और उसकी मिल्कियत है। वह सबसे बेनियाज़ है और सब उसके मुहताज हैं, वही सज़ावारे-हम्द है। वही ख़ूबियोंवाला है, पैदा करने में भी, अहकाम मुक़र्रर करने में भी वह क़ाबिले-तारीफ़ है।

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾ مَّا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक्लामुंव्-वल्बह्रु यमुद्दुहू मिम्बअ्दिही सब्अतु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाह्, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम। (27) मा .ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ्सुकुम् इल्ला क-नफ्सिंव्-वाहि-दह्, इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर। (28)

तर्जमा : रूए-ज़मीन के तमाम दरख़्तों की अगर क़लमें हो जाएँ और तमाम समुन्दरों की स्याही हो और उनके बाद सात समुन्दर और हों ताहम अल्लाह के कलिमात ख़त्म नहीं हो सकते, बेशक अल्लाह तआला ग़ालिब और बाहिकमत है।

(सूरा-लुक़मान, आयत-27-28)

तशरीह : अल्लाह रब्बुलआलमीन अपनी इज़्ज़त, किबरियाई, बड़ाई, बुज़ुर्गी, जलालत, और शान बयान फ़रमा रहा है, अपनी पाक सिफ़तें, अपने बुलन्दतरीन और अपने बेशुमार कलिमात का ज़िक्र फ़रमा रहा है, जिन्हें न कोई गिन सके, न शुमार कर सके, न उन पर किसी का इहाता हो, न उनकी हक़ीक़त को कोई पा सके। सैयदुलबशर ख़ातिमुन नबीयीन (सल्ल॰) फ़रमाया करते थे, 'ला उहसी सनाअ अलै-क अन्ता कमा असनै-त अला नफ़सि-क' ख़ुदाया मैं तेरी नेम्तों का शुमार भी नहीं कर सकता। जितनी सना तूने अपनी आप बयान फ़रमाई है, पस यहाँ जनाबे-बारी तआला इरशाद फ़रमाता है कि अगर रूए-ज़मीन के तमाम तर दरख़्त क़लमें बन जाएँ और तमाम समुन्दरों के पानी स्याही बन जाएँ और उनके साथ ही सात समुन्दर और भी मिला लिए जाएँ और अल्लाह तआला की अज़मत व सिफ़ात, जलालत व बुज़ुर्गी के कलिमात लिखने शुरू किए

जाएँ तो ये तमाम क़लम घिस जाएँ, ख़त्म हो जाएँ, सब स्याही पूरी ख़त्म हो जाएँ लेकिन ख़ुदाए तआला वहदहु ला शरीक की 'ला' की तारीफ़ें ख़त्म न होंगी, यह न समझा जाए कि सात से ज़्यादा समुन्दर हों तो फिर ख़ुदा तआला के पूरे कलिमात लिखने के लिए काफ़ी हो जाएँ। नहीं, यह गिनती तो ज़्यादती के लिए है और यह भी न समझा जाए कि सात समुन्दर मौजूद हैं और वे आलम को घेरे हुए हैं। अलबत्ता बनी-इसराईल की इन सात समुन्दरों की बाबत ऐसी रिवायतें हैं लेकिन न तो उन्हें सच कहा जा सकता है और न झुटलाया जा सकता है। हाँ जो हमने बयान की है उसकी ताईद इस आयत से भी होती है 'कुल लौ कानल बहरू मिदाद. . . .' यानी अगर समुन्दर स्याही बन जाएँ और रब तआला के कलिमात का लिखना शुरू हो तो कलिमाते-ख़ुदावन्दी के ख़त्म होने से पहले ही समुन्दर ख़त्म हो जाए अगरचे ऐसा ही और समुन्दर उसकी मदद में लाएँ, पस यहाँ भी मुराद सिर्फ़ उसी जैसा एक ही समन्दर लाना नहीं बल्कि वैसा एक फिर एक और भी फिर वैसा ही फिर वैसा ही, अलग़रज़ ख़्वाह कितने ही आ जाएँ लेकिन ख़ुदा तआला की बातें ख़त्म नहीं हो सकतीं।

हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआला लिखवाना शुरू करे कि मेरा यह अम्र और यह अम्र तो तमाम क़लमें टूट जाएँ और तमाम समुन्दरों के पानी ख़त्म हो जाएँ, मुशरिकीन कहते थे कि यह कलाम अब ख़त्म हो जाएगा जिसका रद इस आयत में हो रहा है किन रब तआला के अजायबात ख़त्म हों, न उसकी हिकमत की इन्तिहा, न उसकी सिफ़त और उसके इल्म का आख़िर। तमाम बन्दों के इल्म ख़ुदा तआला के इल्म के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे समुन्दर के मुक़ाबले में एक क़तरा। अल्लाह तआला की बातें फ़ना नहीं होतीं। न उसे कोई इदराक कर सकता है। हम जो कुछ उसकी तारीफ़ें करें वे इसके सिवा है।

यहूद के उलमा ने मदीना तैयिबा में रसूलुल्लाह (सल्ल.) से कहा था कि यह जो आप क़ुरआन में पढ़ते हैं 'वमा उतीतुम मिनलइल्मि

इल्ला क़लीलन' यानी तुम्हें बहुत ही कम इल्म दिया गया है। इससे क्या मुराद है? हम या आपकी क़ौम? आपने फ़रमाया, हाँ सब। उन्होंने कहा फिर आप कलामुल्लाह शरीफ़ की इस आयत का क्या करेंगे जहाँ फ़रमान है कि तौरात में हर चीज़ का बयान है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सुनो! वह और तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह सब अल्लाह तआला के कलिमात के मुक़ाबले में बहुत कम है। तुम्हें जो किफ़ायत हो इतना अल्लाह ने नाज़िल फ़रमा दिया है। इस पर यह आयत उतरी, लेकिन इससे मालूम होता है कि आयत मदनी होनी चाहिए। हालाँकि मशहूर यह है कि आयत मक्की है। वल्लाहु तआला अअ़लम

अल्लाह तआला हर चीज़ पर ग़ालिब है, तमाम अशया उसके सामने पस्त व आजिज़ हैं, कोई उसके इरादे के ख़िलाफ़ नहीं जा सकता, वह अपने अफ़आल, अक़वाल, शरीअत, हिकमत और तमाम सिफ़तों में सबसे आला और सब पर ग़ालिब व क़ह्हार है। फिर फ़रमाता है कि तमाम लोगों का पैदा करना और उन्हें मार डालने के बाद जिला देना मुझ पर ऐसा ही आसान है जैसे शख़्से-वाहिद का, इसका तो किसी बात का हुक्म फ़रमा देना काफ़ी है, एक आँख झपकाते जितनी देर नहीं लगती, न दोबारा कहना पड़े न अस्बाब और माद्दे की ज़रूरत। एक फ़रमान में क़ियामत क़ायम हो जाएगी और एक ही आवाज़ में सब जी उठेंगे, अल्लाह तआला तमाम बातों का सुननेवाला है, सबके कामों का जाननेवाला है, एक शख़्स की बातें और उसके काम जैसे इस पर मख़फ़ी नहीं इसी तरह तमाम जहाँ के काम भी इस पर मख़फ़ी नहीं है। अल्लाहु-अकबर

﴾17﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख्खरश्शम्-स वल्क़-म-र; कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ्मलू-न .खबीर। (29) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक्कु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिहिल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल् अलिय्युल्-कबीर। (30)

तर्जमा : क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में खपा देता है, सूरज, चाँद को उसी ने फ़रमाँ-बरदार कर रखा है कि हर एक मुक़र्ररह वक़्त तक चलता रहे, अल्लाह तआला हर उस चीज़ से जो तुम करते हो ख़बरदार है, ये सब इन्तिज़ामात इस वजह से हैं कि अल्लाह तआला हक़ है, और उसके सिवा जिन-जिन को लोग पुकारते हैं सब बातिल हैं, और यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बुलन्दियों वाला है और बड़ी शानवाला है।

(लुक़मान : 29-30)

तशरीह : रात को कुछ घटा कर दिन को कुछ बढ़ाने वाला और दिन को कुछ घटाकर रात को कुछ बढ़ानेवाला अल्लाह तआला ही है। जाड़ों के दिन छोटे और रातें बड़ी, गर्मियों के दिन बड़े और रातें छोटी उसी की क़ुदरत का ज़हूर है। सूरज, चाँद उसके तहत फ़रमान हैं, जो जगह मुक़र्रर है वहीं चलते हैं, क़ियामत तक बराबर उसी चाल चलते रहेंगे, अपनी जगह से इधर-उधर नहीं हो सकते।

सहीहैन में है कि हुज़ूर (सल्ल.) ने हज़रत अबू-ज़र रज़िअल्लाहु अन्हु से दरयाफ़्त फ़रमाया कि जानते हो कि यह सूरज कहाँ जाता है? जवाब दिया कि अल्लाह तआला और उसका रसूल जानता है। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया कि यह जाकर ख़ुदा तआला के अर्श के नीचे सजदे में गिर पड़ता है। और अपने रब तआला से इजाज़त चाहता है। क़रीब है एक दिन उससे कह दिया जाए जहाँ से आया था वहीं को लौट जा। इब्ने-अब्बास रज़ियअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि सूरज बमंज़िलए-साक़िया के है। दिन को अपने दौरान में जारी रहता है, ग़ुरूब होकर रात को फिर ज़मीन के नीचे गरदिश में रहता

है यहाँ तक कि अपनी मशरिक़ से ही तुलूअ हो, उसी तरह चाँद भी। अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से ख़बरदार है, जैसे फ़रमान है कि क्या तू नहीं जानता कि ज़मीन आसमान में जो कुछ है सबका इल्म अल्लाह तआला को है, सबका ख़ालिक़ सबका आलिम अल्लाह तआला ही है। जैसे इरशाद है अल्लाह तआला नें सात आसमान पैदा किए और उन्हीं के मिसाल में ज़मीन बनाईं। ये निशानियाँ परवरदिगारे-आलम इसलिए ज़ाहिर फ़रमाता है कि तुमसे बेनियाज़ और सबसे बेपरवाह है। सब के सब उसके मोहताज और उसके दर के फ़क़ीर हैं, सब उसकी मख़लूक़ और उसके ग़ुलाम हैं, किसी को एक ज़र्रे के हरकत में लाने की क़ुदरत नहीं, गो सारी मख़लूक़ मिलकर इरादा कर ले कि एक मक्खी पैदा करें। सब आजिज़ आ जाएँगे और हरगिज़ इतनी क़ुदरत भी न पाएँगे, वह सबसे बुलन्द है जिस पर कोई चीज़ नहीं, वह सबसे बड़ा है जिसके सामने किसी को कोई बड़ाई नहीं। हर चीज़ उसके सामने हक़ीर और पस्त है। सुब्हानल्लाह!

﴾18﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُم مِّنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣١﴾ وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٢﴾

अलम् त-र अन्नल्-फुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिनिअ्-मतिल्लाहि लियुरि-यकुम्-मिन् आयातिह्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर। (31) व इज़ा ग़शि-यहुम्-मौजुन् कज़्ज़ुलि द-अवुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसिद्, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर। (32)

तर्जमा : क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं करते कि दरया में कश्तियाँ

अल्लाह के फ़ज़्ल से चल रही हैं इसलिए कि वे तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाबे, यक़ीनन इसमें हर एक सब्र व शुक्र करनेवाले के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और जब इन पर मौजें सायबानों की तरह छा जाती हैं तो वह (निहायत) ख़ुलूस के साथ एतिक़ाद करके अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, फिर जब ये (बारी तआला) उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ पहुँचाता है तो कुछ उनमें से एतिदाल पर रहते हैं और हमारी आयतों का इनकार सिर्फ़ वही करते हैं जो बद अहद, नाशुक्रे हों। (लुक़मान : 31-32)

तशरीह : अल्लाह तआला के हुक्म से समुन्दरों में जहाज़रानी हो रही है, अगर वह पानी में कश्ती को थामने और कश्ती में पानी को काटने की क़ुव्वत न रखता तो पानी में कश्तियाँ कैसे चलतीं? वह तुम्हें अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखा रहा है, मुसीबत में सब्र और राहत में शुक्र करनेवाले इनसे बहुत कुछ इबरतें हासिल कर सकते हैं। जब इन कुफ़्फ़ार को समुन्दरों में मौजें घेर लेती हैं और उनकी कश्ती डगमगाने लगती है और मौजें पहाड़ों की तरह इधर से उधर और उधर से इधर कश्तियों के साथ अठखेलियाँ करने लगती हैं तो अपना शिर्क व कुफ़्र सब भूल जाते हैं और गिरया वज़ारी से एक ख़ुदा को पुकारने लगते हैं जैसे और जगह है कि ''व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िलबहरि . . . ' दरिया में जब तुम्हें ज़रर पहुँचता है तो बजुज़ अल्लाह तआला के सबको खो बैठते हो। और आयत में है 'फ़-इज़ा रकिबू फ़िल-फ़ुल्कि . . . . ' इनकी इस वक़्त लजाजत पर अगर हमें रहम आ गया और इन्हें समुन्दर से पार कर दिया तो सिवाए चन्द के सब काफ़िर हो जाते हैं। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह ने यही तफ़सीर की है। जैसे फ़रमान है 'इज़ा हुम युशरिकून।' लफ़्ज़ी मानी यह है कि इनमें से बाज़ मुतवस्सित दर्जे के होते हैं, इब्ने-ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि यही कहते हैं जैसे फ़रमान है कि 'फ़मिनहुम ज़ालिमु लिनफ़्सही' इनमें के बाज़ ज़ालिम हैं, बाज़ म्याना रौ हैं। और यह भी हो सकता है कि दोनों ही मुराद हो तो मतलब यह हुआ कि जिसने ऐसी हालत देखी हो जो इस मुसीबत से निकला

हो उसे तो चाहिए कि नेकियों में पूरी तरह कोशिश करे। लेकिन ताहम यह बीच में ही रह जाते हैं और कुछ तो फिर कुफ़्र पर चले जाते हैं।

﴾19﴿

إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

इन्नल्ला-ह अिन्दहू अिल्मुस्सा-अह, व युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स, व यअ्लमु मा फ़िल्-अर्हाम्, व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु .ग़दा, व मा तद्री नफ़्सुम् बिअय्यि अर्ज़िन् तमूत, इन्नल्ला-ह अलीमुन् .ख़बीर। (34)

तर्जमा : बेशक अल्लाह तआला ही के पास क़ियामत का इल्म है, वही बारिश नाज़िल फ़रमाता है, और माँ के पेट में जो है उसे जानता है, कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या (कुछ) करेगा? न किसी को यह मालूम है कि किस ज़मीन में मरेगा। याद रखो, अल्लाह तआला ही पूरे इल्मवाला और सही ख़बरोंवाला है।

(लुक़मान : 34)

तशरीह : ये ग़ैब की वे कुंजियाँ हैं जिनका इल्म बजुज़ ख़ुदा तआला के किसी को नहीं, मगर इसके बाद कि अल्लाह तआला उसे मालूम कराए। क़ियामत आने का सही वक़्त न तो कोई नबी मुरसल जाने न कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता, इसका वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है। इसी तरह बारिश कब, कहाँ और कितनी बरसेगी, इसका इल्म भी किसी को नहीं, हाँ जब इन फ़रिश्तों को हुक्म होता है जो इस पर मुक़र्रर हैं तब वे जानते हैं। इसी तरह हामला के पेट में क्या है? इसे भी सिर्फ़ ख़ुदा तआला ही जानता है। हाँ जब जनाब बारी तआला की तरफ़ से फ़रिश्तों को हुक्म होता है जो उसी काम पर मुक़र्रर हैं तब इन्हें पता चलता है कि नर होगा या मादा, लड़का

होगा या लड़की, नेक होगा या बद? इसी तरह किसी को यह भी मालूम नहीं कि कल वह क्या करेगा? न किसी को यह इल्म है कि वह कहाँ मरेगा? और आयत में है 'व इन्दहु मफ़ातिहुल-ग़ैबि ला यअलमुआ इल्ला हुवा' ग़ैब की कुंजियाँ ख़ुदा तआला ही के पास हैं बजुज़ उसके और कोई नहीं जानता। और हदीस में है कि ग़ैब की कुंजियाँ यही पाँच चीज़ें हैं।

मुसनद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि पाँच बातें हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, फिर आप (सल्ल०) ने इसी आयत मज़्कूरा की तिलावत फ़रमाई।

बुख़ारी की हदीस के अलफ़ाज़ तो यह हैं कि ये पाँच ग़ैब की कुंजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता।

मुसनद अहमद में हुज़ूर (सल्ल०) का फ़रमान है कि मुझे हर चीज़ की कुंजियाँ दी गई हैं मगर पाँच, फिर यही आयत आप (सल्ल०) ने पढ़ी।

हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) हमारी मजलिस में बैठे हुए थे तो एक साहब तशरीफ़ लाए। पूछने लगे या रसूलल्लाह! (सल्ल०) ईमान क्या चीज़ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआला को, फ़रिश्तों को, किताबों को रसूलों को, आख़िरत को, मरने के बाद जी उठने को मान लेना।

उसने पूछा इस्लाम क्या चीज़ है?

फ़रमाया कि एक अल्लाह की इबादत करना, उसके साथ किसी को शरीक न करना, नमाज़ें पढ़ना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना।

उसने दरयाफ़्त किया एहसान क्या चीज़ है?

फ़रमाया : तेरा इस तरह ख़ुदा तआला की इबादत करना गोया तू उसे देख रहा है, अगर तू उसे नहीं देखता तो वह तुझे देख रहा है।

उसने कहा हुज़ूर (सल्ल०) क़ियामत कब है?

फ़रमाया : इसका इल्म न मुझे है न तुझे, हाँ मैं इसकी

निशानियाँ बतलाता हूँ। जब लौंडी अपने मियाँ को जने और जब नंगे पैरों और नंगे बदनोंवाले लोगों के सरदार बन जाएँ, इल्मे-क़ियामत इन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, फिर आप (सल्ल॰) ने इसी आयत की तिलावत की। वह शख़्स वापस चला गया। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया जाओ इसे लौटा लाओ लोग दौड़ पड़े, लेकिन वह कहीं भी नज़र न आया। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया ये जिबरील अलैहिस्सलाम थे, लोगों को दीन सिखाने आए थे। (बुख़ारी)

मुसनद अहमद में है कि हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने अपनी हथेलियाँ हुज़ूर (सल्ल॰) के घुटनों पर, हाथ रख कर ये सवालात किए थे कि इस्लाम क्या है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि तू अपना चेहरा ख़ुदा तआला की तरफ़ मुतवज्जेह कर दे और अल्लाह तआला के वहदहु ला शरी-क लहु होने की गवाही दे और मुहम्मद के अब्दुहु व रसूल होने की। जब तू यह कर ले तो मुसलमान हो गया। पूछा अच्छा ईमान किस का नाम है? फ़रमाया अल्लाह तआला पर, आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, किताब पर, नबियों पर अक़ीदा रखना, मौत और मौत के बाद की ज़िन्दगी को मानना, जन्नत, दोज़ख़, हिसाब, मीज़ान और तक़दीर की भलाई बुराई पर ईमान रखना। पूछा जब मैं ऐसा कर लूँ तो क्या मोमिन हो जाउँगा? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया हाँ। फिर एहसान का पूछा और जवाब पाया जो ऊपर मज़कूर हुआ, फिर क़ियामत का पूछा। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! यह उन चीज़ों में से है जिन्हें सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है, फिर आप (सल्ल॰) ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। फिर निशानियों में यह यह भी ज़िक्र है कि लोग लम्बी-चौड़ी इमारतें बनाने लगेंगे।

बनू-आमिर क़बीले का एक शख़्स आँहज़रत (सल्ल॰) के पास आया कहने लगा, मैं आऊँ? आप (सल्ल॰) ने अपने ख़ादिम को भेजा कि जाकर उन्हें अदब सिखाओ। यह इजाज़त माँगना नहीं जानते। इनसे कहो कि पहले सलाम करो, फिर दरयाफ़्त करो कि मैं

आ सकता हूँ? उनहोंने सुन लिया और इसी तरह सलाम किया और इजाज़त चाही। ये गए और जाकर कहा कि आप हमारे लिए क्या लेकर आए हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, भलाई। सुनो! तुम एक अल्लाह तआला की इबादत करो। लात व उज़्ज़ा को छोड़ दो। दिन रात में पाँच नमाज़ें पढ़ा करो। साल भर में एक महीने के रोज़े रखो। अपने मालदारों से ज़कात वुसूल करके अपने फ़क़ीरों पर तक़सीम कर दो। उन्होंने दरयाफ़्त किया, या रसूलल्लाह! (सल्ल०) क्या इल्म में से कुछ ऐसा भी बाक़ी है जिसे आप न जानते हों? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हाँ, ऐसा इल्म भी है जिसे बजुज़ अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता। फिर आप (सल्ल०) ने यही आयत पढ़ी।

मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि गाँव के रहनेवाले एक शख़्स ने आकर हुज़ूर (सल्ल०) से दरयाफ़्त किया था कि मेरी औरत हमल से है, बतलाइए क्या बच्चा होगा? हमारे शहर में क़हते है, फ़रमाइए बारिश कब होगी? यह तो मैं जानता हूँ कि मैं कब पैदा हुआ, अब यह आप मालूम करा दीजिए कि मैं कब मरूँगा? इसके जवाब में यह आयत उतरी कि मुझे इन चीज़ों का मुतलक़ इल्म नहीं। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि यही ग़ैब की कुंजियाँ हैं जिनकी निस्बत फ़रमाने-बारी तआला है कि ग़ैब की कुंजियाँ अल्लाह तआला ही के पास हैं। हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं जो तुमसे कहे कि रसूल (सल्ल०) कल की बात जानते थे तो समझ लेना कि वह बड़ा झूठा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा?

क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि बहुत-सी चीज़ें हैं जिनका इल्म अल्लाह तआला ने किसी को नहीं कराया, न नबी को, न फ़रिश्ते को, अल्लाह तआला ही के पास क़ियामत का इल्म है, कोई नहीं जानता कि किस साल किस महीने किस दिन या किस रात में वह आएगी। इसी तरह बारिश का इल्म भी उसके सिवा किसी को नहीं कि कब आए? और कोई नहीं जानता कि हामला के

पेट का बच्चा नर होगा या मादा, सुर्ख़ होगा या स्याह, और कोई नहीं जानता कि कल वह नेकी करेगा या बदी, मरेगा या जिएगा, बहुत मुमकिन है कल मौत या आफ़त आ जाए। न किसी को यह ख़बर है कि किस ज़मीन में वह दबाया जाएगा या समुन्दर में बहाया जाएगा या जंगल में मरेगा या नरम या सख़्त ज़मीन में वह दबा दिया जाएगा। हदीस शरीफ़ में है कि जब किसी की मौत दूसरी ज़मीन में होती है तो उसका वहीं को कोई काम निकल आता है और वहीं मौत आ जाती है, और रिवायत में है कि यह फ़रमाकर रसूले-अकरम (सल्ल॰) ने यही आयत पढ़ी। एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन ज़मीन अल्लाह तआला से कहेगी कि ये हैं तेरी अमानतें जो तूने मुझे सौंप रखी थीं, तबरानी वग़ैरह में यह हदीस है।

﴾20﴿

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا شَفِیْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۞ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَی الْاَرْضِ ثُمَّ یَعْرُجُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۞ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۞

अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्श, मा लकुम्-मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-वला शफ़ीअ़, अ-फ़ला त-तज़क्करून। (4) युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समा-इ इलल्-अर्ज़ि सुम्-म यअ़रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्-मिम्मा तअ़ुद्दून। (5) ज़ालि-क आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल् अज़ीज़ुर्-रहीम। (6)

तर्जमा : अल्लाह तआला वह है जिसने आसमान व ज़मीन को और जो कुछ उनके दरम्यान है सबको छः दिन में पैदा कर दिया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ, तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मददगार

और सिफ़ारिशी नहीं किया, फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते, वह आसमान से लेकर ज़मीन तक हर काम की तदबीर करता है फिर वह काम एक ऐसे दिन में उसकी तरफ़ चढ़ जाता है जिसका अन्दाज़ा तुम्हारी गिनती के एक हज़ार साल के बराबर है।

(अस-सजदा : 4-6)

तशरीह : तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ अल्लाह तआला ही है। उसने छः दिन में ज़मीन व आसमान बनाए। फिर अर्श पर क़रार पकड़ा। मालिक-ख़ालिक़ वही है हर चीज़ की नकेल उसी के हाथ है। तदबीरें सब कामों की वही करता है, हर चीज़ पर ग़लबा उसी का है। उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो, दूसरों पर भरोसा करते हो क्या तुम नहीं समझ सकते कि इतनी बड़ी क़ुदरतों वाला क्यों किसी को अपना शरीके-कार बनाने लगा। वह बराबरी से, वह वज़ीर व मुशीर से, वह शरीक व सहीम से पाक व मुनज़्ज़ा और मुबर्रा है। उसके सिवा कोई माबूद है न उसके अलावा कोई पालनहार है।

नसाई में है हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरा हाथ पकड़ कर रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान और उनके दरम्यान की तमाम चीज़ें पैदा करके सातवें दिन अर्श पर क़ियाम किया। मिट्टी हफ़्ते के दिन बनी, पहाड़ इतवार के दिन, दरख़्त पीर के दिन, बुराइयाँ मंगल के दिन, नूर बुध के दिन, जानवर जुमेरात के दिन, आदम अलैहिस्सलाम को जुमा के दिन असर के बाद दिन के आख़िरी घड़ी में, उसे तमाम रूए ज़मीन की मिट्टी से पैदा किया जिसमें सुर्ख़, स्याह, अच्छी, बुरी, हर तरह की थी। इसी बाइस औलादे-आदम भली बुरी हुई। अल्लाह तआला का हुक्म सातों आसमानों के ऊपर से उतरता है और सातों ज़मीनों के नीचे तक पहुँचता है जैसे और आयत में है "अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़ सबअ समावाति व मिनल अर्ज़ि मिसलुहुन-न यतनज़्ज़लुल अम्रु बैनहुन्न, अल्लाह तआला ने सात आसमान बनाए और उन्हीं के मिस्ल ज़मीन, उसका हुक्म उन सबके दरम्यान उतरता

है, आमाल अपने दीवान की तरफ़ उठाए और चढ़ाए जाते हैं जो आसमाने-दुनिया के ऊपर है। ज़मीन से आसमाने-अव्वल पाँच सौ साल के फ़ासले पर है और इतना ही उसका दिल है। उतना उतरना-चढ़ना ख़ुदा तआला की क़ुदरत से फ़रिश्ता एक आँख झपकने में कर लेता है। इसी लिए फ़रमाया एक दिन में जिसकी मिक़दार तुम्हारी गिनती के एतिबार से एक हज़ार साल की है। इन उमूर का मुदब्बिर ख़ुदा तआला है। वह अपने बन्दों के आमाल से बाख़बर है, सब छोटे बड़े अमल उसकी तरफ़ चढ़ते हैं, वह ग़ालिब है जिसने हर चीज़ को अपना मातहत कर रखा है, कुल बन्दे और कुल गर्दनें उसके सामने झुकी हुई हैं, वह अपने मोमिन बन्दों पर बहुत ही महरबान है, अज़ीज़ है अपनी रहमत में और रहीम है अपनी इज़्ज़त में।

﴾21﴿

الَّذِیٓ اَحۡسَنَ کُلَّ شَیۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ الۡاِنۡسَانِ مِنۡ طِیۡنٍ ۝۷ ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهٗ مِنۡ سُلٰلَةٍ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِیۡنٍ ۝۸ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِیۡهِ مِنۡ رُّوۡحِهٖ وَجَعَلَ لَکُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تَشۡکُرُوۡنَ ۝۹

अल्लज़ी अह्स-न कुल्-ल शैइन् .ख़-ल-क़हू व ब-द-अ .ख़ल्क़ल्-इन्सानि मिन् तीन। (7) सुम्-म ज-अ-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम्-मिम्मा-इम्-महीन। (8) सुम्-म-सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ-ल लकुमुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-दह्, क़लीलम्-मा तश्कुरून। (9)

तर्जमा : जिसने निहायत ख़ूब बनाई जो चीज़ भी बनाई और इनसान की बनावट मिट्टी से शुरू की, फिर उसकी नसल एक बेवक़अत पानी के निचोड़ से चलाई, जिसे ठीक-ठाक करके उसमें अपनी रूह फूँकी, उसने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाए (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ा एहसान मानते हो।

(अलिफ़-लाम-मीम सजदा : 7-9)

तशरीह : फ़रमाया कि ख़ुदा तबारक व तआला ने हर चीज़ क़रीने से बेहतरीन तौर से बेहतरीन तरकीब पर ख़ूबसूरत बनाई है। हर चीज़ की पैदाइश के साथ ही ख़ुद इनसान की पैदाइश पर ग़ौर करो, उसका शुरू देखो कि मिट्टी से पैदा हुआ है। अबुल-बशर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए, फिर उनकी नसल नुत्फ़े से जारी रखी जो मर्द की पीठ और औरत के सीने से निकलता है। फिर उसे यानी आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा करने के बाद ठीक-ठाक और दुरुस्त किया और उसमें अपने पास की रूह फूँकी, तुम्हें कान, आँख, समझ अता फ़रमाई, अफ़सोस कि फिर भी तुम शुक्र-गुज़ारी में कसरत नहीं करते, नेक अंजाम और ख़ुश-फ़रजाम वह शख़्स है जो ख़ुदा तआला की दी हुई ताक़तों को उसी की राह में ख़र्च करता है, जल्ले-शानुहू।

﴾22﴿

وَقَالُوٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝

व क़ालू अ-इज़ा ज़लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्किन् जदीद्, बल् हुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् काफ़िरून। (10) क़ुल् य-तवफ़्फ़ाकुम्-म-लकुल्-मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून। (11)

तर्जमा : और उन्होंने कहा, क्या जब हम ज़मीन में रल-मिल जाएँगे, क्या फिर नई पैदाइश में आ जाएँगे? बल्कि (बात यह है) कि वे लोग अपने परवरदिगार की मुलाक़ात के मुनकिर हैं, कह दीजिए! कि तुम्हें मौत का फ़रिश्ता फ़ौत करेगा जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम सब अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाए जाओगे। (अलम सजदा : 10-11)

तशरीह : काफ़िरों का अक़ीदा बयान हो रहा है कि वे मरने के

बाद जीने के क़ायल नहीं और उसे वे महाल जानते हैं और कहते हैं कि जब हमारे रेज़े-रेज़े जुदा हो जाएँगे और मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाएँगे फिर भी हम नए सिरे से बनाए जा सकते हैं? अफ़सोस ये लोग अपने ऊपर ख़ुदा तआला को क़ियास करते हैं और अपनी महदूद क़ुदरत पर ख़ुदा तआला ने अव्वल बार पैदा किया है, तअज्जुब है कि फिर दोबारा पैदा करने पर उसे क़ादिर क्यों नहीं मानते? हालाँकि उसका तो सिर्फ़ फ़रमान चलता है। जहाँ कहा यूँ हो जा वहीं यूँ हो गया, इसी लिए फ़रमा दिया कि उन्हें अपने परवरदिगार की मुलाक़ात से इनकार है, उसके बाद की आयत में फ़रमाया कि मलकुलमौत जो तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं तुम्हें फ़ौत कर देंगे। हाँ, उनके साथी और उनके साथ काम करनेवाले और फ़रिश्ते भी हैं जो जिस्म से रूह को निकालते हैं और नरख़रे तक पहुँच जाने के बाद मलकुलमौत उसे ले लेते हैं। उनके लिए ज़मीन समेट दी गई है और ऐसी है जैसे हमारे सामने कोई सीनी रखी हुई हो कि जो चाहा उठा लिया।

एक मुरसल हदीस भी है और इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु का मक़ूला भी है। इब्ने-अबी हातिम में है कि एक अंसारी के सिरहाने मलकुल मौत को देख कर रसूलल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मलकुल मौत! मेरे सहाबी के साथ आसानी कीजिए। उन्होंने ने जवाब दिया कि ऐ नबी अल्लाह! तसकीने-ख़ातिर रखिए और दिल ख़ुश कीजिए, वल्लाह मैं ख़ुद बाईमान के साथ निहायत ही नरमी करनेवाला हूँ। सुनो या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क़सम है ख़ुदा तआला की, तमाम दुनिया के हर कच्चे-पक्के घर में ख़ाह ख़ुश्की में हो या तरी में हर दिन में मेरे पाँच फेरे होते हैं। हर छोटे-बड़े को मैं इससे भी ज़्यादा जानता हूँ जितना वह ख़ुद अपने आपको जानता है। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यक़ीन मानिए कि ख़ुदा तआला की क़सम मैं तो एक मच्छर की जान क़ब्ज़ करने की क़ुदरत नहीं रखता जब तक कि मुझे ख़ुदा तआला का हुक्म न हो जाए।

हज़रत जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि का बयान है कि मलकुलमौत अलैहिस्सलाम का दिन में पाँच वक़्त एक-एक शख़्स की ढूँढ-भाल करना यही है कि आप अलैहिस्सलाम पाँचों नमाज़ों के वक़्त देख लिया करते हैं कि अगर वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनेवाला है तो फ़रिश्ते उसके क़रीब रहते हैं और शैतान उससे दूर रहता है और उसके आख़िरी वक़्त फ़रिश्ता उसे ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह (सल्ल॰) की तलक़ीन करता है।

मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हर दिन हर घर पर मलकुलमौत दो दफ़ा आते हैं। कअ़्ब अहबार उसके साथ ही यह भी फ़रमाते हैं कि हर दरवाज़े पर ठहर कर दिन भर में सात मर्तबा नज़र मारते हैं कि इसमें कोई वह तो नहीं जिसकी रूह निकालने का हुक्म हो चुका हो, फिर क़ियामत के दिन सबका लौटना अल्लाह तआला की तरफ़ है। क़ब्रों से निकल कर मैदाने-हश्र में ख़ुदा तआला के सामने हाज़िर होकर अपनी-अपनी करनी का फल पाएँगे।

﴾23﴿

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ۝

अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़नुख़्रिजु बिही ज़र्अ़न् तअ्कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फ़ुसुहुम्, अ-फ़ला युब्सिरून। (27)

तर्जमा : क्या ये नहीं देखते कि हम पानी को बंजर और ग़ैरआबाद ज़मीन की तरफ़ बहा कर ले जाते हैं फिर उससे हम खेतियाँ निकालते हैं कि जिसे उनके चौपाये और ये ख़ुद खाते हैं, क्या फिर भी ये नहीं देखते। (अलिफ़-लाम-मीम सजदा : 27)

तशरीह : जनाब बारी तआला अपने लुत्फ़ व करम को, एहसान व इनाम को बयान फ़रमा रहा है कि आसमान से पानी उतारता है, पहाड़ों से, ऊँची जगहों से सिमट कर नालों के, नदियों के, दरियाओं के ज़रिए वह इधर-उधर फैल जाता है। बंजर और ग़ैर

आबाद ज़मीन इससे हरियावल वाली हो जाती है। ख़ुशकी-तरी से मौत, ज़ीस्त से बदल जाती है। आयत में तमाम वे हिस्से हैं जो सूख गए हों, जो पानी के मुहताज हों, सख़्त हो गए हों, ज़मीन पेवस्त के मारे फटने लगी हो, बेशक मिस्र की ज़मीन भी ऐसी है, दरियाए-नील से सैराब की जाती है। हबश की बारिशों का पानी अपने साथ सुर्ख़ रंग की मिट्टी को कभी घसीटता जाता है और मिस्र की ज़मीन जो शोर और रेतीली है वह इस पानी और इस मिट्टी से खेती के क़ाबिल बन जाती है और हर साल हर फ़सूल का ग़ल्ला ताज़ा पानी से इन्हें मयस्सर आता है जो इधर-उधर का होता है, उस हकीम व करीम, मन्नान व रहीम की ये सब मेहरबानियाँ हैं, उसी की ज़ात क़ाबिले-तारीफ़ है।

रिवायत है कि जब मिस्र फ़तह हुआ तो मिस्र वाले बोओना महीने में हज़रत अम्र-बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और कहने लगे कि हमारी क़दीमी आदत है कि इस महीने में दरियाए-नील की भेंट चढ़ाते हैं और अगर न चढ़ाएँ तो दरिया में पानी नहीं आता, हम ऐसा करते हैं कि इस महीने की बारहवीं तारीख़ को हम एक बाकरह लड़की को लेते हैं, जो अपने माँ-बाप की इकलौती हो, उसके वालिदेन को दे-दिला कर रज़ामन्द कर लेते हैं और उसे बहुत उम्दा कपड़े और बहुत क़ीमती ज़ेवर पहना कर, बना-सँवारकर इस नील में डाल देते हैं तो बहाव चढ़ता है वरना पानी चढ़ता नहीं। सिपहसालारे-इस्लाम हज़रत अम्र-बिन आस रज़िअल्लाहु अन्हु फ़ात्हे मिस्र ने जवाब दिया कि यह एक जाहिलाना और अहमक़ाना रस्म है, इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता। इस्लाम तो ऐसी आदतों को मिटाने के लिए आया है, तुम ऐसा नहीं कर सकते, वे बाज़ रहे।

दरयाए-नील का पानी न चढ़ा, मेंह पूरा निकल गया लेकिन दरिया ख़ुश्क पड़ा हुआ है लोग तंग आकर इरादे करने लगे कि मिस्र को छोड़ दें, यहाँ की बूद व बाश तर्क कर दें, अब फ़ातेह-मिस्र को ख़याल गुज़रता है और बारगाहे-ख़िलाफ़त को उससे मुत्तलअ फ़रमाते

हैं, उसी वक़्त ख़लीफ़तुल मुसलिमीन अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर-बिन-ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु की तरफ़ से जवाब मिलता है कि आपने जो किया अच्छा किया, अब मैं अपने इस ख़त में एक परचा दरियाए-नील के नाम भेज रहा हूँ, तुम इसे लेकर नील के दरिया में डाल दो। हज़रत अम्र-बिन-आस रज़िअल्लाहु अन्हु ने इस परचे को निकाल कर पढ़ा तो उसमें तहरीर था कि यह ख़त ख़ुदा तआला के बन्दे अमीरुलमोमिनीन उमर की तरफ़ से अहले-मिस्र के दरियाए-नील की तरफ़, बाद हम्द व सलात के। मतलब यह है कि अगर तू अपनी तरफ़ से और अपनी मर्ज़ी से चल रहा है तो ख़ैर, चल और अगर अल्लाह तआला वाहिद व क़ह्हार तुझे जारी रखता है तो हम अल्लाह तआला से दुआ माँगते हैं कि वह तुझे रवाँ कर दे, यह परचा लेकर हज़रत अमीरे-अस्कर ने दरियाए-नील में डाल दिया, अभी एक रात भी गुज़रने नहीं पाई थी कि दरियाए-नील में सोलह हाथ गहरा पानी चलने लगा और उसी वक़्त मिस्र की ख़ुश्क-साली तर-साली से, गिरान, अरज़ानी से बदल गई, ख़त के साथ ही ख़ित्ते का ख़ित्ता सरसब्ज़ हो गया और दरिया पूरी रवानी से बहता रहा, उसके बाद से हर साल जो जान चढ़ाई जाती थी वह बच गई। इसी आयत के मज़मून की आयत यह भी 'फ़लयन्ज़ुरुल इनसानु इला तआमिही' (आख़िर तक) यानी इनसान अपनी ग़िज़ा को देखे कि हमने बारिश उतारी और ज़मीन फाड़ कर अनाज और फल पैदा किए, उसी तरह यहाँ भी फ़रमाया, क्या ये लोग इसे नहीं देखते? हज़रत इब्ने-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह वह ज़मीन है जिस पर बारिश नाकाफ़ी बरसी है फिर नालों और नहरों के पानी से वह सैराब होती है। इब्ने-ज़ैद रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल है कि यह वह ज़मीन है जिसमें पैदावार न हो और ग़ुबार आलूद हो। इसी को इस आयत में बयान फ़रमाया है 'व आयतल-लहुमुल-अर्ज़ुल मै-त' उनके लिए मुर्दा ज़मीन में भी एक निशानी है जिसे हम ज़िन्दा कर देते हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युओदुहू, इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर। (19) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-दअल्- ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन्-नश्-अतल्-आख़ि-रह्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (20)

तर्जमा : कह दीजिए कि ज़मीन में चल-फिर कर देखो तो सही कि किस तरह अल्लाह तआला ने इब्तिदाअन पैदाइश की। फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई पैदाइश करेगा, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (अनकबूत : आयत 19-20)

तशरीह : देखते हैं कि वे कुछ न थे फिर अल्लाह तआला ने पैदा कर दिया लेकिन ताहम मर कर जीने के क़ायल नहीं, हालाँकि उस पर किसी दलील की ज़रूरत नहीं, जो इब्तिदाअन पैदा कर सकता है उस पर दोबारा पैदा करना बहुत ही आसान है। फिर उन्हें हिदायत करते हैं कि तुम ज़मीन की और निशानियों पर ग़ौर करो। आसमानों को, सितारों को, ज़मीनों को, पहाड़ों को, दरख़्तों को, जंगलों को, नहरों को, दरियाओं को, समुन्दरों को, फलों को, खेतियों को देखो तो सही कि यह सब कुछ न था फिर ख़ुदा तआला ने सब कुछ कर दिया। क्या तमाम निशानियाँ ख़ुदा तआला की क़ुदरत को तुम पर ज़ाहिर नहीं करतीं? तुम नहीं देखते कि इतना बड़ा सानेअ क़दीर ख़ुदा क्या कुछ नहीं कर सकता? वह तो सिर्फ़ 'हो जा' के कहने से तमाम को रचा देता है। वह ख़ुद-मुख़तार है, उसे अस्बाब और सामान की ज़रूरत नहीं, इसी मज़मून को और जगह फ़रमाया कि वही नई पैदाइश में पैदा करता है, वही दोबारा पैदा करेगा. और

यह तो इस पर आसान है। फिर फ़रमाया, ज़मीन में चल-फिर कर देखो अल्लाह तआला ने इब्तिदाई पैदाइश किस तरह की तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि क़ियामत के दिन की दूसरी पैदाइश की क्या कैफ़ियत होगी, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। जैसे फ़रमाया, हम इन्हें दुनिया के हर हिस्से में और ख़ुद उनकी अपनी जानों में अपनी निशानियाँ इस क़दर दिखाएँगे कि उन पर हक़ ज़ाहिर हो जाएगा और एक जगह इरशाद है 'अम ख़ुलिक़ू मिन ग़ैरि शैइन' क्या वे बग़ैर किसी चीज़ के पैदा किए गए या वही अपने ख़ालिक़ हैं? कुछ नहीं, बेयक़ीन लोग हैं। ये ख़ुदा तआला की शान है कि जिसे चाहे अज़ाब करे जिस पर चाहे रहम करे, वह हाकिम है। क़ब्ज़ेवाला है, जो चाहता है, जो इरादा करता है जारी कर देता है, कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता है। कोई उसके इरादे को बदल नहीं सकता। कोई उससे चूँ-चरा कर नहीं सकता और कोई उससे सवाल कर ही नहीं सकता और वह सब पर ग़ालिब है, जिससे चाहे पूछ बैठे, सब उसके क़ब्ज़े में हैं, उसकी मातहती में हैं, ख़ल्क़ का ख़ालिक़, अम्र का मालिक वही है। उसने जो कुछ किया सरासर अद्ल है, इसलिए वही मालिक है, वह ज़ुल्म से पाक है।

हदीस शरीफ़ में है कि अगर अल्लाह तआला सातों आसमानवालों और सातों ज़मीनवालों को अज़ाब करे तब भी वह ज़ालिम नहीं, अज़ाब व रहम सब उसकी चीज़ें हैं। सब के सब क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ लौटाए जाएँगे, उसी के सामने हाज़िर होकर पेश होंगे। ज़मीनवालों में से और आसमानवालों में से कोई उसे हरा नहीं सकता। बल्कि सब पर वही ग़ालिब है। हर एक उससे काँप रहा है, सब उसके दर के फ़क़ीर हैं और वह सबसे ग़नी है। तुम्हारा कोई वाली और मददगार उसके सिवा नहीं।

﴿25﴾

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ
بَيْتًا وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ

اللهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

म-सलुल्लज़ीनत्-तख़ज़ू मिन्-दूनिल्लाहिऔलिया-अ क-म-स-लिल्-अन्कबूत, इत्त-ख़ज़त् बैता। व इन्-न औ-हनल्-बुयूति लबैतुल्-अन्कबूत लौ कानू यअ्लमून। (41) इन्नल्ला-ह यअ्लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन् शैइ, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम। (42) व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल्-आलिमून। (43)

तर्जमा : जिन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवा और कारसाज़ मुक़र्रर कर रखे हैं उनकी मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक घर बना लेती है, हालाँकि तमाम घरों से ज़्यादा बोदा घर मकड़ी का घर है, काश वे जान लेते, अल्लाह तआला उन तमाम चीज़ों को जानता है, जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। उन्हें सिर्फ़ इल्मवाले ही समझते हैं। (अनकबूत : आयत-41-43)

तशरीह : जो लोग अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन के सिवा औरों की परस्तिश और पूजा-पाट करते हैं उनकी कमज़ोरी और बेइल्मी का बयान हो रहा है। ये उनसे मदद के, रोज़ी के, सख़्ती में काम आने के उम्मीदवार रहते हैं। उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई मकड़ी के जाले में बारिश और धूप और सर्दी से पनाह चाहे, अगर उनमें इल्म होता तो ये ख़ालिक़ को छोड़कर मख़लूक़ से उम्मीदें वाबस्ता न करते, पस उनका हाल ईमानदार के हाल के बिल्कुल बरअक्स है। वह एक मज़बूत कड़े को थामे हुए हैं और ये मकड़ी के जाले में अपना सिर छिपाए हुए हैं। उसका दिल ख़ुदा तआला की तरफ़, उसका जिस्म आमाले-सालिहा की तरफ़ मशग़ूल है और उसका दिल मख़लूक़ की तरफ़ और जिस्म उसकी परस्तिश की तरफ़ झुका हुआ है। फिर अल्लाह तआला मुशरिकों को डरा रहा है कि वह उनसे उनके शिर्क से और उनके झूठे माबूदों से ख़ूब आगाह है।

उन्हें उनकी शरारत का वह मज़ा चखाएगा कि ये याद करें। उन्हें ढील देने में भी उसकी मसलिहत व हिकमत है, न यह कि वह अलीम ख़ुदा तआला उनसे बेख़बर हो। लेकिन उनके सोचने-समझने का माद्दा, उनमें ग़ौर व फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ सिर्फ़ बा अमल उलमा को होती है जो अपने इल्म में पूरे हैं। इस आयत से साबित हुआ कि ख़ुदा तआला की बयान-करदा मिसालों को समझ लेना सच्चे इल्म की दलील है।

हज़रत अम्र-बिन-आस रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने एक हज़ार मिसालें रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सीखी-समझी हैं (मुसनद अहमद)। उससे आपकी फ़ज़ीलत और आपकी इल्मीयत ज़ाहिर है।

हज़रत अम्र-बिन-मरहा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि कलामुल्लाह शरीफ़ की जो आयत मेरी तिलावत में आए और उसका तफ़सीली मानी और मतलब मेरी समझ में न आए तो मेरा दिल दुखता है, मुझे सख़्त तकलीफ़ होती है और मैं डरने लगता हूँ कि कहीं ख़ुदा तआला के नज़दीक मेरी गिनती जाहिलों में तो नहीं हो गई क्योंकि फ़रमाने-ख़ुदा तआला यही है कि हम उन मिसालों को लोगों के सामने पेश कर रहे हैं लेकिन सिवाय आलिमों के उन्हें दूसरे समझ नहीं सकते।

﴾26﴿

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन। (44)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को मसलिहत और हक़ के साथ पैदा किया है, ईमानवालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी दलील है। (अनकबूत : आयत-44)

तशरीह : अल्लाह तआला की बहुत बड़ी क़ुदरत का बयान हो रहा है कि वही आसमानों का और ज़मीनों का ख़ालिक़ है। उसने उन्हें खेल तमाशे के तौर पर या लग़्व और बेकार नहीं बनाया बल्कि

इसलिए कि यहाँ लोगों को बसाए, फिर उनकी नेकियाँ-बदियाँ देखे और क़ियामत के दिन उनके आमाल के मुताबिक़ उनहें जज़ा-सज़ा दे। बुरों को उनकी बद-आमालियों पर सज़ा और नेकों को उनकी नेकियों पर बेहतर बदला।

﴾27﴿

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

कुल् कफ़ा बिल्लाही बैनी व बैनकुम् शहीदा, यअ्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़, वल्लज़ी-न आमनू बिल्बातिलि व क-फ़रू बिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून। (52)

तर्जमा : कह दीजिए कि मुझमें और तुममें अल्लाह तआला का गवाह होना काफ़ी है, वह आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का आलिम है, जो लोग बातिल के माननेवाले और अल्लाह तआला से कुफ़्र करनेवाले हैं वह ज़बरदस्त नुक़्सान और घाटे में हैं।

(अनकबूत : आयत-52)

तशरीह : काफ़िरों की ज़िद, तकब्बुर और हटधर्मी बयान हो रही है कि उन्होंने अल्लाह तआला के रसूल से ऐसी ही निशानी तलब की जैसी कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से उनकी क़ौम ने माँगी थी। फिर अपने नबी को हुक्म देता है कि उन्हें जवाब दीजिए कि आयतें, मोजिज़े और निशानात बताना मेरे बस की बात नहीं, यह ख़ुदा तआला के हाथ है। अगर उसने तुम्हारी नेक नीयतें मालूम कर लीं तो वह मोजिज़े दिखाएगा और अगर तुम अपनी ज़िद और इनकार से बढ़कर बातें ही बना रहे हो तो वह ख़ुदा तआला से दबा हुआ नहीं कि उसकी चाहत तुम्हारी चाहत के ताबेह हो जाए, जो तुम माँगो वह ख़ाह-मख़ाह कर दिखाए। जैसे और आयत में है कि आयतें भेजने से हमें कोई मानेअ नहीं बजुज़ उसके कि अगले भी बराबर इनकार ही करते रहे, समूदियों को देखो, हमारी निशानी ऊँटनी जो उनके पास आई उन्होंने उस पर ज़ुल्म ढा दिया। कह दो,

मैं तो सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ हूँ, पैग़ाम्बर हूँ, क़ासिद हूँ, मेरा काम तुम्हारे कानों तक आवाज़े-ख़ुदावन्दी को पहुँचा देना है। मैंने तो तुम्हें तुम्हारा बुरा-भला समझा दिया, नेक-बद समझा दिया, अब तुम जानो तुम्हारा काम। हिदायत और ज़लालत ख़ुदा तआला की तरफ़ से है, वह अगर किसी को गुमराह कर दे तो उसकी रहबरी कोई नहीं कर सकता, चुनांचे और जगह है, तुझपर उनकी हिदायत का ज़िम्मा नहीं। यह ख़ुदा तआला का काम है और उसकी चाहत पर मौक़ूफ़ है, भला इस फ़ुज़ूल गोई को देखो कि किताबे-अज़ीज़ उनके पास आ चुकी जिसके किसी तरफ़ से बातिल इसके पास भी नहीं फटक सकता और उन्हें अब तक निशान की तलब है। हालाँकि यह तो तमाम मोजिज़ात से बढ़कर मोजिज़ा है, तमाम दुनिया के फ़सीह व बलीग़ उसके मुआरिज़े से और इस जैसा कलाम पेश करने से आजिज़ आ गए, पूरे क़ुरआन का तो मुआरिज़ा क्या करते? दस सूरतों का बल्कि एक सूरत का मुआरिज़ा भी बावजूद चैलेंज के न कर सके। तो क्या इतना बड़ा और भारी मोजिज़ा उन्हें काफ़ी नहीं जो और मोजिज़ा तलब करने बैठे हैं, यह तो वह पाक किताब है जिसमें गुज़िश्ता बातों की ख़बर है और होनेवाली बातों की पेशन-गोई है और झगड़ों का फ़ैसला है और यह उसकी ज़बान से पढ़ी जाती है जो महज़ उम्मी है, जिसने किसी से अलिफ़ बा भी नहीं पढ़ा, जो एक हरफ़ लिखना नहीं जानता बल्कि जो अहले-इल्म की सुहबत में भी कभी नहीं बैठा और वह किताब पढ़ता है जिससे अगली किताबों की भी सिहत व अदम सिहत मालूम होती है, जिसके अल्फ़ाज़ में हलावत, जिसकी नज़्म में मलाहत, जिसके अन्दाज़ में फ़साहत, जिसके बयान में बलाग़त, जिसका तर्ज़ दिलरुबा जिस का सबक़ दिलचस्प, जिसमें दुनिया भर की ख़ूबियाँ मौजूद। ख़ुद बनी-इसराईल के उलमा भी उसकी तसदीक़ पर मजबूर। अगली किताबें जिस पर शाहिद भले लोग, जिसके मदाह और क़ायल आमिल, इस इतने बड़े मोजिज़े की मौजूदगी में किसी और मोजिज़े की तलब महज़ गुरेज़ है। फिर फ़रमाता है कि इसमें ईमानवालों के

लिए रहमत व नसीहत है। यह क़ुरआन हक़ को ज़ाहिर करनेवाला, बातिल को बरबाद करनेवाला, अगलों के वाक़िआत तुम्हारे सामने रख कर तुम्हें नसीहत व इबरत का मौक़ा देता है, गुनहगारों के अंजाम दिखाकर तुम्हें गुनाहों से रोकता है। कह दो कि मुझमें और तुममें ख़ुदा तआला गवाह है और उसकी गवाही काफ़ी है। वह तुम्हारी तकज़ीब व सरकशी को और मेरी सच्चाई और ख़ैरख़ाही को बख़ूबी जानता है। अगर मैं इसपर झूठ बाँधता तो वह ज़रूर मुझसे इन्तिक़ाम ले लेता, वह ऐसे लोगों को बे-इन्तिक़ाम नहीं छोड़ता जैसे ख़ुद उसका फ़रमान है कि अगर यह रसूल मुझपर एक बात भी घड़ लेता तो मैं उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसकी रगे-जान काट लेता और कोई न होता जो उसे मेरे हाथ से छुड़ा सके। चूँकि इस पर मेरी सच्चाई रौशन है और मैं उसी का भेजा हुआ हूँ और उसका नाम लेकर उसकी कही हुई तुमसे कहता हूँ, इसलिए वह मेरी ताईद करता है और मुझे रोज़ बरोज़ ग़लबा देता है और मुझसे मोजिज़ात पर मोजिज़ात ज़ाहिर कराता जाता है। वह ज़मीन और आसमान के ग़ैब का जाननेवाला है। उस पर एक ज़र्रा भी पोशीदा नहीं, बातिल को माननेवाले और ख़ुदा तआला को न माननेवाले ही नुक़सान-याफ़ता और ज़लील हैं। क़ियामत के दिन उन्हें उनकी बद आमाली का नतीजा भुगतना पड़ेगा और जो सरकशियाँ यहाँ की हैं सबका मज़ा चखना पड़ेगा, भला ख़ुदा तआला को न मानना और बुतों को मानना उससे बढ़कर और ज़ुल्म क्या होगा? वह अलीम व हकीम ख़ुदा तआला उसका बदला दिए बग़ैर हरगिज़ न रहेगा।

﴾28﴿

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

व क-अय्यिम् मिन् दाब्बतिल्-ला तह्मिलु रिज़्-क़हा, अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम् व हुवस्-समीअुल्-अलीम। (60)

तर्जमा : और बहुत-से जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं

फिरते, उन सबको और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रोज़ी देता है, वह बड़ा ही जाननेवाला है। (अनकबूत : 60)

तशरीह : मुहाजिरीन के रिज़्क़ में हिजरत के बाद ख़ुदा तआला ने वे बरकतें दीं कि ये दुनिया के किनारों के मालिक हो गए। तो फ़रमाया कि बहुत-से जानवर हैं जो न अपने रिज़्क़ को जमा करने की ताक़त रखते हैं न उसे हासिल करने की, न वे कल के लिए कोई उठा कर रखते हैं, अल्लाह तआला के ज़िम्मे उनकी रोज़ियाँ हैं, परवरदिगार उन्हें उनके रिज़्क़ पहुँचा देता है, तुम्हारा राज़िक़ भी वही है। वह किसी मख़लूक़ को किसी हालत में किसी वक़्त नहीं भूलता। चींटियों को उनके सूराख़ों में, परिन्दों को आसमान व ज़मीन की ख़ला में, मछलियों को पानी में वही रिज़्क़ पहुँचाता है जैसे फ़रमाया 'वमा मिन दाब्बतिन फ़िल अर्ज़ि . . . .' यानी कोई जानवर रूए-ज़मीन पर ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो। वही उनके ठहरने और रहने-सहने की जगह को बख़ूबी जानता है। यह सब उसकी रौशन किताब में मौजूद है।

इब्ने-अबी हातिम में है कि इब्ने-उमर रज़िअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूल (सल्ल॰) के साथ चला, मदीने के बाग़ात में एक बाग़ में आप (सल्ल॰) गए और गिरी पड़ी रद्दी खजूरें खोल-खोलकर साफ़ कर कर के खाने लगे, मुझसे खाने को फ़रमाया, मैंने कहा कि हुज़ूर मुझसे तो ये रद्दी खजूरें नहीं खाई जाएंगी। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, लेकिन मुझे तो ये बहुत अच्छी मालूम होती हैं इसलिए कि चौथे दिन की सुब्ह है कि मैं ने खाना नहीं खाया और न खाने की वजह यह कि मिला ही नहीं। सुनो! अगर मैं चाहता तो ख़ुदा तआला से दुआ करता और अल्लाह तआला मुझे क़ैसर व किसरा का मुल्क दे देता। ऐ इब्ने-उमर! तेरा क्या हाल होगा जबकि तू ऐसे लोगों में होगा जो साल भर के ग़ल्ले वग़ैरा जमा कर लिया करेंगे और उनका यक़ीन और तवक्कुल बिल्कुल बोदा हो जाएगा। हम अभी तो वहीं उसी हालत में थे जो यह आयत 'वकाइयन . . . .' नाज़िल हुई। पस रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अल्लाह अज़्ज़ व

जल्ल ने मुझे दुनिया के ख़ज़ाने जमा करने का और ख़ाहिशों के पीछे लग जाने का हुक्म नहीं किया, जो शख़्स दुनिया के ख़ज़ाने जमा कर ले और उसे बाक़ी वाली ज़िन्दगी चाहे वह समझ ले कि हयात बाक़ी वाली तो ख़ुदा तआला के हाथ है। देखो, मैं तो न दीनार व दरहम जमा करूँगा न कल के लिए आज रोज़ी जमा करके रखूँ।

यह मशहूर है कि कव्वे के बच्चे जब निकलते हैं तो उनके पर व बाल सफ़ेद होते हैं, यह देख कर कव्वा उनसे नफ़रत करके भाग जाता है, कुछ दिनों बाद उन परों की रंगत स्याह पड़ जाती है, तब उनके माँ-बाप आते हैं और उन्हें दाना-वग़ैरा भराते हैं। इब्तिदाई अयाम में जब कि माँ-बाप उन छोटे बच्चों से मुतनफ़्फ़र होकर भाग जाते हैं और उनके पास भी नहीं आते उस वक़्त अल्लाह तआला छोटे-छोटे मच्छर उनके पास भेज देता है, वही उनकी ग़िज़ा बन जाते हैं। अरब के शायरों ने इसे नज़्म भी किया है। हुज़ूर (सल्ल॰) का फ़रमान है, सफ़र करो ताकि सिहत और रोज़ी पाओ और रिवायत में है कि सफ़र करो, ताकि सिहत व ग़नीमत मिले और हदीस में है कि सफ़र करो नफ़ा उठाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त रहोगे, जिहाद करो ग़नीमत मिलेगी। और रिवायत में है कि जिदवालों और आसानीवालों के साथ सफ़र करो। फिर फ़रमाया अल्लाह तआला अपने बन्दों की बातें सुननेवाला और उनकी हरकात व सकनात को जाननेवाला है।

﴾29﴿

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

व ल-इन् स-अल्तहुम्-मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ल-यक़ूलुन्नल्लाह, फ़-अन्ना

युअ्फ़कून। (61) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अिबादिही व यक्दिरु लहू, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम। (62) व ल-इन् स-अल्तहुम्-मन् नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ मिम्बअ्दि मौतिहा ल-यकूलुन्नल्लाहु, कुलिल्-हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून। (63)

तर्जमा : और अगर आप इनसे दरयाफ़्त करें कि ज़मीन और आसमान का ख़ालिक़ और सूरज-चाँद को काम में लगानेवाला कौन है? तो इनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला, फिर किधर उल्टे जा रहे हैं? अल्लाह तआला अपने बन्दों का जाननेवाला है, और अगर आप उनसे सवाल करें कि आसमान से पानी उतारकर ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा किसने किया? तो यक़ीनन उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला ने। आप कह दीजिए कि हर तारीफ़ अल्लाह ही के लिए सज़ावार है, बल्कि उनमें से अक्सर बेअक़्ल हैं। (अनकबूत : आयत-61-63)

तशरीह : अल्लाह तआला साबित करता है कि माबूदे-बरहक़ सिर्फ़ वही है। ख़ुद मुशरिकीन भी इस बात के क़ायल हैं कि आसमान व ज़मीन का पैदा करनेवाला, सूरज-चाँद को मुसख़्ख़र करनेवाला, दिन रात को पै-दर-पै लानेवाला, ख़ालिक़, राज़िक़, मौत व हयात पर क़ादिर सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। वह ख़ूब जानता है कि ग़िना के लायक़ कौन है? और फ़क़्र के लायक़ कौन है? अपने बन्दों की मसलिहतें उसको पूरी तरह मालूम हैं। पस जबकि मुशरिकीन ख़ुद मानते हैं कि तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ सिर्फ़ ख़ुदा तआला है, सब पर क़ाबिज़ सिर्फ़ वही है, फिर उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यों करते हैं और उसके सिवा दूसरों पर तवक्कुल क्यों करते हैं? जबकि मुल्क का मालिक वह तन्हा है तो इबादतों के लायक़ भी वह अकेला ही है। तौहीदे-रुबूबियत को मानकर फिर तौहिदे-उलूहियत से इनहिराफ़ अजीब चीज़ है। क़ुरआन करीम में तौहीदे-रुबूबियत के साथ ही तौहीदे-उलूहियत का ज़िक्र बकसरत है।

इसलिए कि तौहीदे-रुबूबियत के क़ायल मुशरिकीने-मक्का थे तो उन्हें क़ायल माक़ूल करके फिर तौहीदे-उलूहियत की तरफ़ दावत दी जाती है। मुशरिकीन हज व उमरे में लब्बै-क पुकारते हुए भी ख़ुदा तआला के शरीक होने का इक़रार करते हैं। कहते थे लब्बैक ला शरीक ल-क ———यानी ख़ुदाया! हम हाज़िर हुए, तेरा कोई शरीक नहीं मगर ऐसे शरीक कि जिनका मालिक और जिनके मुल्क का मालिक भी तू ही है।

﴾30﴿

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِم ۗ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ﴿٨﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

अ-व लम् य-तफ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम्; मा ख़-लक़ल्लाहुस-समावाति वल्अर्-ज व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मा, व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् लकाफ़िरून। (8) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व असारुल्-अर्-ज़ व अ-मरूहा अक्स-र मिम्मा अ-मरूहा व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनात्, फ़मा कानल्लाहु लियज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून। (9)

तर्जमा : क्या उन लोगों ने अपने दिल में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन और उनके दरम्यान जो कुछ है सबको बेहतरीन क़रीने से मुक़र्रर वक़्त तक के

लिए ही पैदा किया है, हाँ अक्सर लोग यक़ीनन अपने रब की मुलाक़ात के मुनकिर हैं, क्या उन्होंने ज़मीन में चल-फिर कर यह नहीं देखा कि उनसे पहले लोगों का अंजाम कैसा बुरा हुआ, वह उनसे बहुत ज़्यादा तवाना और ताक़तवर थे, और उन्होंने भी ज़मीन बोई-जोती थी, और उनसे ज़्यादा आबाद की थी, और उनके पास उनके रसूल रौशन दलायल लेकर आए थे। यह तो नामुमकिन था कि अल्लाह तआला उन पर ज़ुल्म करता लेकिन दर अस्ल वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (रूम 8-9)

तशरीह : चूँकि कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा हक़ जल्ल व अला की क़ुदरत का निशान है और उसकी तौहीद और रुबूबियत पर दलालत करनेवाला है, इसलिए इरशाद होता है कि मौजूदात में ग़ौर व फ़िक्र किया करो और क़ुदरते-ख़ुदा तआला की इन निशानियों से इस मालिक को पहचानों और उसकी क़द्रो-ताज़ीम करो। कभी आलमे-अलवी को देखो, कभी आलमे-सिफ़ली पर नज़र डालो, कभी और मख़लूक़ात की पैदाइश को सोचो और समझो कि ये चीज़ें अबस और बेकार पैदा नहीं की गईं। बल्कि रब तआला ने इन्हें कारआमद और निशाने-क़ुदरत बनाई हैं। हर एक का एक वक़्त मुक़र्रर है यानी क़ियामत का दिन, जिसे अक्सर लोग मानते ही नहीं। उसके बाद नबियों की सदाक़त को इस तरह ज़ाहिर फ़रमाता है कि देख लो उनके मुख़ालिफ़ीन का किस क़द्र इबरतनाक अंजाम हुआ? और उनके माननेवालों को किस तरह दोनों जहाँ की इज़्ज़त मिली? तुम चल-फिर कर अगले वाक़िआत मालूम करो कि गुज़िश्ता उम्मतें जो तुमसे ज़्यादा ज़ोर आवर थीं, तुमसे ज़्यादा माल व ज़रवाली थीं, तुमसे ज़्यादा कुंबे क़बीले और बेटे पोते वाली थीं, तुम तो उनके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे, वे तो तुमसे ज़्यादा उमर वाले थे, तुम से ज़्यादा आबादियाँ उन्होंने कीं, तुमसे ज़्यादा खेतियाँ और बाग़ात उनके थे, बावुजूद इसके जब उनके पास उस ज़माने के रसूल आए, उन्होंने दलीलें और मोजिज़े दिखाए और फिर भी उस

ज़माने के उन बदनसीबों ने उनकी न मानी और अपने ख़यालात में मुस्तग़रक़ रहे और सियाहकारियों में मशग़ूल रहे तो बिलआख़िर अज़ाबे-ख़ुदा तआला उन पर बरस पड़ा। उस वक़्त कोई न था जो उन्हें बचा सके या किसी अज़ाब को उन पर से हटा सके। अल्लाह तआला की ज़ात इससे पाक है कि वह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करे। यह अज़ाब तो उनके अपने करतूतों का वबाल था। ख़ुदा तआला की आयतों को ये झुठलाते थे, रब तआला की बातों का मज़ाक़ ये उड़ाते थे, जैसे और आयत में है कि उनकी बेईमानी की वजह से हमने उनके दिलों को, उनकी निगाहों को फेर दिया और उन्हें उनकी सरकशी में ही हैरान छोड़ दिया है, और आयत में है कि उनकी कजी (टेढ़) की वजह से अल्लाह तआला ने उनके दिल भी टेढ़े कर दिए। और आयत में है कि अगर अब भी मुँह मोड़ें तो समझ लें कि ख़ुदा तआला उनके बाज़ गुनाहों पर उनकी पकड़ करने का इरादा कर चुका है।

﴾31﴿

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۞ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۞ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۞

फ़सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून। (17) व लहुल्-हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून। (18) युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, व कज़ालि-क तुख़्रजून। (19)

तर्जमा : पस अल्लाह तआला की तस्बीह पढ़ा करो जब कि तुम शाम करो और जब सुब्ह करो। तमाम तारीफ़ों के लायक़ आसमान व ज़मीन में सिर्फ़ वही हैं। तीसरे पहर को और ज़ुहर के वक़्त भी (उसकी पाकीज़गी बयान करो), (वही) ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा

को ज़िन्दा से निकालता है। और वही ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा करता है। उसी तरह तुम भी निकाले जाओगे।

(रूम 17-19)

तशरीह : उस रब तबारक व तआला की कमाल क़ुदरत और अज़मत व सल्तनत पर दलालत उसकी तस्बीह और उसकी हम्द से है जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला अपने बन्दों की रहबरी करता है, और अपना पाक होना और क़ाबिले-हम्द होना भी बयान फ़रमाता रहा है। शाम के वक़्त जब कि दिन अपनी रौशनियों को लेकर आता है इतना बयान फ़रमा कर उसके बाद का जुमला बयान फ़रमाने से पहले ही यह भी ज़ाहिर कर दिया कि ज़मीन व आसमान में क़ाबिले-हम्द व सना वही है, उनकी पैदाइश ख़ुद उनकी बुज़ुर्गी पर दलील है। फिर सुब्ह व शाम के वक़्तों की तस्बीह का बयान जो पहले गुज़रा था उसके साथ इशा और ज़ुहर का वक़्त मिला लिया, जो पूरी अन्धेरी और कामिल उजाले का वक़्त होता है। बेशक तमाम तर पाकीज़गी उसी को सज़ावार है जो रात के अन्धेरों को और दिन के उजालों को पैदा करनेवाला है। सुब्ह को ज़ाहिर करनेवाला रात को सुकूनवाली बनानेवाला वही है।

मुसनद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल.) ने फ़रमाया मैं तुम्हें बताऊँ कि ख़ुदा तआला ने (हज़रत) इबराहीम (अलैहिस्सलाम) का नाम ख़लील वफ़ादार क्यों रखा? इसलिए कि वे सुब्ह शाम इन कलिमात को पढ़ा करते थे। फिर आपने फ़सुब्हानल्लाहि से तज़हरून तक की दोनों आयतें तिलावत फ़रमाईं। तबरानी की हदीस में उन दोनों आयतों की निस्बत है कि जिसने सुब्ह शाम ये पढ़ लीं उसने दिन रात में जो उससे फ़ौत हुआ हो उसे पा लिया। फिर बयान फ़रमाया कि मौत व ज़ीस्त का ख़ालिक़ मुर्दों से ज़िन्दों को और ज़िन्दों से मुर्दों को निकालनेवाला वही है। हर शै पर और उसकी ज़िद पर वह क़ादिर है। दाने से दरख़्त, दरख़्त से दाने, मुर्ग़ी से अण्डा, अण्डे से मुर्ग़ी, नुत्फ़े से इनसान, इनसान से नुत्फ़ा, मोमिन से

काफ़िर, काफ़िर से मोमिन, ग़रज़ हर चीज़ और उसके मुक़ाबले की चीज़ पर उसे क़ुदरत हासिल है, ख़ुश्क ज़मीन को वही तर कर देता है, बजुज़ ज़मीन से वही ज़राअत पैदा कर देता है, जैसे सूरा यासीन में फ़रमाया कि ख़ुश्क ज़मीन का तरोताज़ा होकर तरह-तरह के अनाज व फल पैदा करना भी मेरी क़ुदरत का एक कामिल निशान है। और आयत में है कि तुम्हारे देखते हुए इस ज़मीन को जिसमें से धुआँ उठता हो दो बूँद से तर करके मैं लहलहा देता हूँ और हर क़िस्म की पैदावार से उसे सरसब्ज़ कर देता हूँ। यहाँ बयान फ़रमाया उसी तरह तुम सब भी मरने के बाद क़ब्रों में से ज़िन्दा करके खड़े कर दिए जाओगे।

﴾32﴿

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

अ-व लम् यारौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़- लिमंय्यशा-उ व यक़्दिर्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून। (37)

तर्जमा : क्या इन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह तआला जिसे चाहे कुशादा रोज़ी देता है और जिसे चाहे तंग, इसमें भी इन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं निशानियाँ हैं। (पारा-21 रूम-37)

तशरीह : सहीह हदीस में है कि मोमिन पर ताज्जुब है, उसके लिए ख़ुदा तआला की हर क़ज़ा बेहतरी ही होती है, राहत पर शुक्र करता है तो यह भी उसके लिए बेहतर होता है और मुसीबत पर सब्र करता है तो यह भी उसके लिए बेहतर होता है। अल्लाह तआला ही मुतसर्रिफ़ और मालिक है। वह अपनी हिकमत के मुताबिक़ जहा न जाहन रचाए हुए है, किसी को कम देता है किसी को ज़्यादा देता है। कोई तंगी-तुर्शी में है, कोई वुसअत और फ़राख़ी में। इसमें मोमिनों के लिए निशानी हैं।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

अल्लाहुल्लज़ी .ख-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्, हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ्अलु मिन् ज़ालिकुम्-मिन् शैइ, सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून (40)

तर्जमा : अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर रोज़ी दी, फिर मार डालेगा फिर ज़िन्दा करेगा, बताओ तुम्हारे शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो उनमें से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह तआला के लिए पाकी और बरतरी है। हर उस शरीक से जो ये लोग मुक़र्रर करते हैं। (पारा-21, रूम-40)

तशरीह :- इनसान अपनी माँ के पेट से नंगा, बे-इल्म, बे-कान, बे-आँख, बे-ताक़त निकलता है। फिर ख़ुदा तआला उसे सब चीज़ें अता फ़रमाता है। माल भी, मिल्कियत भी, कमाई भी, तिजारत भी, ग़रज़ बेशुमार नेमतें अता फ़रमाता है। दो सहाबियों का बयान है कि हम हुज़ूर (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त आप (सल्ल॰) किसी काम में मशग़ूल थे, हमने भी आप (सल्ल॰) का हाथ बटाया। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, देखो सिर हिलने लगे तब तक भी रोज़ी से कोई महरूम नहीं रहता। इनसान नंगा भूखा दुनिया में आता है, एक छिलका भी उसके बदन पर नहीं होता, फिर रब तआला ही उसे रोज़ियाँ देता है, वह इस हयात के बाद तुम्हें मार डालेगा, फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा कर देगा। ख़ुदा तआला के सिवा तुम जिन-जिन की इबादत कर रहे हो उनमें से एक भी उन बातों में से किसी एक पर क़ाबू नहीं रखता, उन कामों में से एक भी कोई नहीं कर सकता, अल्लाह सुब्हानुहू व तआला ही तन्हा

ख़ालिक़, राज़िक़ और मौत-ज़िन्दगी का मालिक है। वही क़ियामत के दिन तमाम मख़लूक़ को जिला देगा। उसकी मुक़द्दस, मनुज़्ज़ह, मुअज़्ज़म और इज़्ज़त व जलाल वाली ज़ात उससे पाक है कि कोई उसका शरीक हो या उस जैसा हो या उसके बराबर हो या उसकी औलाद हो या माँ-बाप हों। वह अहद है, समद है, फ़र्द है, माँ-बाप से, औलाद से पाक है, उसकी कुफ़ु का कोई नहीं।

﴾34﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ① یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ②

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरह्, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (1) यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हुवर्रहीमुल्-ग़फ़ूर। (2)

तर्जमा : तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए सज़ावार हैं जिसकी मिल्कियत में वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है, आख़िरत में भी तारीफ़ उसी के लिए है, वह बड़ी हिकमतों वाला और पूरा ख़बरदार है। जो ज़मीन में जाए और जो उससे निकले, जो आसमान से उतरे, और जो चढ़ कर उसमें जाए, वह सबसे बाख़बर है। और वह मेहरबान निहायत बख़शिश वाला है।

(पारा 22 सबा 1-2)

तशरीह : चूँकि दुनिया और आख़िरत की सब नेमतें ख़ुदा ही की तरफ़ से हैं, सारी हुकूमतों का हाकिम वही एक है, इसलिए हर क़िस्म की हर एक तारीफ़ व सना का मुस्तहिक़ भी वही है। वही माबूद है जिसके सिवा कोई लायक़े-इबादत नहीं, उसी लिए दुनिया और आख़िरत की हम्द व सना सज़ावार है, उसी की हुकूमत है और

उसी की तरफ़ सब लौटाए जाते हैं। ज़मीन व आसमान में जो कुछ है सब उसकी मातहती में है, जितने भी हैं सब उसके ग़ुलाम हैं, उसके क़ब्ज़े में हैं, सब पर तसर्रुफ़ उसी का है, जैसे और आयत है कि 'वइन्ना लना लल आख़िर-त वल ऊला' आख़िरत में उसी की तारीफ़ें होंगी वह अपने अक़वाल व अफ़आल और तक़दीर पर सबमें हुकूमतों वाला है और ऐसा ख़बरदार है जिस पर कोई चीज़ मख़फ़ी नहीं, जिससे कोई ज़र्रा पोशीदा नहीं, जो अपने अहकाम में हकीम, जो अपनी मख़लूक़ से बाख़बर। जितने क़तरे बारिश के ज़मीन में जाते हैं, जितने दाने इसमें बोए जाते हैं, इसके इल्म से बाहर नहीं, जो ज़मीन से निकलता है और उगता है उसे भी वह जानता है। उसके मुहीत और वसीअ और बेपायाँ इल्म से कोई चीज़ दूर नहीं। हर चीज़ की गिनती कैफ़ियत और सिफ़त उसे मालूम है। आसमान से जो बारिश बरसती है उसके क़तरों की गिनती भी उसके इल्म में महफ़ूज़ है, जो रिज़्क़ वहाँ से उतरता है, उसके इल्म से नेक आमाल वग़ैरह जो आसमान पर चढ़ते हैं वे भी उसके इल्म में हैं, वह अपने बन्दों पर ख़ुद उससे भी ज़्यादा महरबान है इसी वजह से उनके गुनाहों पर इत्तिलाअ रखते हुए उन्हें जल्दी से सज़ा नहीं देता बल्कि मुहलत देता है कि वे तौबा कर लें और बुराइयाँ छोड़ दें, रब की तरफ़ रुजूअ कर लें। फिर ग़फ़ूर है, इधर बन्दा झुका, रोया-पीटा, उधर उसने बख़्श दिया, माफ़ कर फ़रमा दिया, दरगुज़र कर लिया। तौबा करनेवाला धुतकारा नहीं जाता तो कल करनेवाला नुक़सान नहीं उठाता।

{35}

اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنْ
نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٩

अ-फ़लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा .ख़ल्फ़हुम्

मिनस्-समा-इ वलअर्ज़, इन्न-शअ् नख़्सिफ़ बिहिमुल्-अर्-ज़ औ नुस्क़ित् अलैहिम् कि-सफ़म्-मिनस्समा-इ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिकुल्लि अब्दिम्-मुनीब। (9)

तर्जमा : क्या पस वे अपने आगे पीछे आसमान व ज़मीन को देख नहीं रहे हैं? अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें, यक़ीनन उसमें पूरी दलील है हर उस बन्दे के लिए जो (दिल से) मुतवज्जेह हो। (पारा 22, सबा 9)

तशरीह : जिसने मुहीत आसमान और बसीत ज़मीन पैदा कर दी। जहाँ जाओ न आसमान का साया छूटे न ज़मीन का फ़र्श। जैसे फ़रमान है 'वस्समाआ बनैनाहा बिअय्दिंव व इन्ना लमूसिऊ-न व-अर-ज़ फ़-रशनाहा फ़निअ्मलमाहिदून' हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम कुशादगीवाले हैं, ज़मीन को हम ने ही बिछाया और हम बहुत अच्छे बिछानेवाले हैं। यहाँ भी फ़रमाया कि आगे देखो तो, और पीछे देखो तो, उसी तरह दाएँ नज़र डालो तो और बाएँ तरफ़ नज़रे-इल्तिफ़ात करो तो वसीअ आसमान और बसीत ज़मीन नज़र आएगी। इतनी बड़ी मख़लूक़ का ख़ालिक़, इतनी ज़बरदस्त क़ुदरतों पर क़ादिर, क्या तुम जैसी छोटी-सी मख़लूक़ को फ़ना करके फिर पैदा करने पर क़ुदरत खो बैठा? वह तो क़ादिर है कि अगर चाहे तुम्हें ज़मीन में धंसा दे या आसमान तुम पर तोड़ दे। यक़ीनन तुम्हारे ज़ुल्म और गुनाह इसी क़ाबिल हैं। लेकिन ख़ुदा तआला का हुक्म और अफ़्व है कि वह तुम्हें मुहलत दिए हुए है। जिसमें अक़्ल हो, जिसमें दूर बीनी का माद्दा हो, जिसमें ग़ौर व फ़िक्र की आदत हो, जिसमें ख़ुदा तआला की तरफ़ झुकनेवाली तबीअत हो, जिसके सीने में दिल, दिल में हिकमत और हिकमत में नूर हो वह तो उन ज़बरदस्त निशानात को देखने के बाद उस क़ादिर व ख़ालिक़ ख़ुदा की इस क़ुदरत में शक कर ही नहीं सकता कि मरने के बाद फिर जीना है। आसमानों जैसे शामयाने और ज़मीनों जैसे फ़र्श जिसने पैदा कर दिए उस पर इनसान की पैदाइश क्या मुश्किल है? जिसने हड्डियों, गोश्त और खाल को इब्तिदाअन पैदा

किया, उसे उनके सड़-गल जाने और रेज़ा-रेज़ा होकर झड़ जाने के बाद इकट्ठा करके उठाना, बिठाना क्या भारी है। इसी को और आयत में फ़रमाया 'अवलै-सल्लज़ी ....' यानी जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा कर दिया वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं, बेशक क़ादिर है, और आयत में है 'लख़लक़ुस्समावाति वल-अर्ज़ि अकबरु मिन ख़लक़िन्ना-स वलाकि-न-न अक्सरन्नासि ला यालमून।' यानी इनसानों की पैदाइश से बहुत ज़्यादा मुश्किल तो आसमान और ज़मीन की पैदाइश है लेकिन अक्सर लोग बेइल्मी बरतते हैं।

﴾36﴿

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम्-मिनस्समावाति वल्अर्ज़, क़ुलिल्लाहु व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन।(24)

तर्जमा : पूछिए कि तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी कौन पहुँचाता है? (ख़ुद) जवाब दीजिए कि अल्लाह तआला। (सुनो) हम या तुम। या तो यक़ीनन हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में हैं।

(पारा 22, सबा 24)

तशरीहः अल्लाह तआला इस बात को साबित कर रहा है कि सिर्फ़ वही ख़ालिक़ व राज़िक़ है और सिर्फ़ वही उलूहियतवाला है, जैसे इन लोगों को इसका इक़रार है कि आसमान से बारिशें बरसानेवाला और ज़मीनों से अनाज उगानेवाला सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है, ऐसे ही उन्हें यह भी मान लेना चाहिए कि इबादत के लायक़ भी फ़क़त वही है। फिर फ़रमाता है कि जब हमतुम में इतना बड़ा इख़्तिलाफ़ है तो ला मुहाला एक हिदायत पर और दूसरा ज़लालत पर है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ جَاعِلِ الۡمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِیۡۤ اَجۡنِحَةٍ مَّثۡنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ یَزِیۡدُ فِی الۡخَلۡقِ مَا یَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ①

अल्हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्स-मावाति वल्अर्जि जाअिलिल्-मलाइ-कति रुसुलन् उली अज्नि-हतिम्-मस्ना व सुला-स व रुबा-अ, यज़ीदु फ़िल्-ख़ल्क़ि मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (1)

तर्जमा : उस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें सज़ावार हैं जो (इब्तिदाअन) आसमानों और ज़मीन का पैदा करनेवाला और दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परोंवाले फ़रिश्तों को अपना पैग़म्बर बनानेवाला है। मख़लूक़ में जो चाहे ज़्यादती करता है, अल्लाह तआला यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है। (पारा 22, फ़ातिर 1)

तशरीह : इब्तिदाअन बे-नमूना सिर्फ़ अपनी क़ुदरते-कामिला से अल्लाह तबारक व तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया।

ज़ह्हाक रहमतुल्लाहि अलैहि से मरवी है कि फ़ातिर के मानी ख़ालिक़ के हैं। अपने और अपने नबियों के दरमियान क़ासिद उसने अपने फ़रिश्तों को बनाया है जो परोंवाले हैं, उड़ते हैं ताकि जल्दी से ख़ुदा का पैग़ाम उसके रसूलों तक पहुँचा दें, उनमें से बाज़ दो परों वाले हैं, बाज़ के तीन-तीन पर हैं, बाज के चार-चार पर हैं, बाज़ के उनसे भी ज़्यादा हैं। चुनांचे हदीस में है कि रसूलल्लाह (सल्ल॰) ने लैलतुल-मेराज में हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम को देखा, उनके छः सौ पर थे और हर दो पर के दरमियान मशरिक़ व मग़रिब जितना फ़ासिला था। यहाँ भी फ़रमाता है, रब जो चाहे अपनी मख़लूक़ में ज़्यादती करे, जिसके चाहता है उससे भी ज़्यादा पर कर देता है और कायनात में जो चाहे रचाता है।

﴾38﴿

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢

मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्मतिन् फ़ला मुम्सि-क लहा व मा युम्सिक् फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ्दिही, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम। (2)

तर्जमा : अल्लाह तआला जो रहमत लोगों के लिए खोल दे, सो उसका कोई बन्द करनेवाला नहीं, और जिसको बन्द कर दे सो उसके बाद उसका कोई जारी करनेवाला नहीं और वही ग़ालिब हिकमत वाला है। (पारा 22, फ़ातिर 2)

तशरीह : अल्लाह तआला का चाहा हुआ सब कुछ होकर रहता है। बिना उसकी चाहत के कुछ भी नहीं होता। जो वह दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं और जिसे वह रोक ले उसे कोई देनेवाला नहीं।

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बारिश बरसती तो हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते, हम पर फ़तह के तारे से बारिश बरसाई गई। फिर उसी आयत की तिलावत करते। (इब्ने-अबी हातिम)

﴾39﴿

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝٩

वल्लाहुल्लज़ी अर्-सलर्-रिया-ह फ़-तुसीरु सहाबन् फ़-सुक्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह्यैना बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, कज़ालिकन्-नुशूर। (9)

तर्जमा : और अल्लाह ही हवाएँ चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, और उससे उस ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देते हैं।

इसी तरह दोबारा जी उठना (भी) है। (पारा 22, फ़ातिर आयत-9)

तशरीह : मौत के बाद ज़िन्दगी पर क़ुरआन करीम में उमूमन ख़ुश्क ज़मीन के हरा होने से इस्तिदलाल किया गया है जैसे सूरा हज वग़ैरह में है, बन्दों के लिए इसमें पूरी इबरत और मुर्दों के ज़िन्दा होने की पूरी दलील उसमें मौजूद है कि ज़मीन बिल्कुल सूखी पड़ी है, कोई तरी-ताज़गी से और इसकी मौत ज़िन्दगी से बदल जाती है। इसी तरह बनू आदम के अजज़ा क़बरों वग़ैरह में बिखरे पड़े होंगे, एक से एक अलग होगा, लेकिन अर्श के नीचे से पानी बरसते ही तमाम जिस्म क़बरों में से उगने लगेंगे, जैसे ज़मीन से दाने उग आते हैं।

चुनांचे सही हदीस में है! इब्ने-आदम तमाम का तमाम गल-सड़ जाता है लेकिन रीढ़ की हड्डी नहीं सड़ती, उसी से पैदा किया गया है और उसी से तरकीब दिया जाएगा। यहाँ भी निशान बताकर फ़रमाया, उसी तरह मौत के बाद की ज़ीस्त है। सूरा हज की तफ़सीर में यह हदीस गुज़र चुकी है कि अबू-रज़ीन ने रसूलल्लाह (सल्ल॰) से पूछा कि हुज़ूर! अल्लाह तआला मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा? और उसकी मख़लूक़ में इस बात की क्या दलील है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ऐ अबू-रज़ीन! क्या तुम अपनी बस्ती के आस-पास की ज़मीन के पास से इस हालत में नहीं गुज़रे कि वह ख़ुश्क बंजर पड़ी होती है, फिर जो तुम गुज़रते हो तो देखते हो कि वह सब्ज़ा-ज़ार बनी हुई है और ताज़गी के साथ लहलहा रही है। हज़रत अबू-रज़ीन ने जवाब दिया, हाँ हुज़ूर! यह तो अक्सर देखने में आया है। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, बस उसी तरह अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा। जो शख़्स दुनिया और आख़िरत में बाइज़्ज़त रहना चाहता हो, उसे अल्लाह तआला की इताअत-गुज़ारी करनी चाहिए, वही इस मक़सद का पूरा करनेवाला है, दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है, सारी इज़्ज़तें उसकी मिल्कियत में हैं। चुनांचे और आयत में है कि जो लोग मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों से दोस्तियाँ करते हैं कि उनके पास हमारी इज़्ज़त हो, वे इज़्ज़त से

हाथ धो रखें। इज़्ज़तें तो ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में हैं। और जगह फ़रमाने-आली शान है, तुझे उनकी बातें ग़मनाक न करें। तमाम तर इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिए हैं, और आयत आयत में अल्लाह जल्ले-जलालुहू का फ़रमान है 'वलिल्लाहिल इज़्ज़तु वलिर्रसूलिही वलिल मोमिनीन वला किन्नल मुनाफ़िक़ीन ला यालमून' यानी इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिए हैं और उसके रसूल के लिए और ईमानवालों के लिए लेकिन मुनाफ़िक़ लोग बे-इल्म हैं।

﴾40﴿

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑪

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम्-मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन्-नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ-लकुम् अज़्वाजा, व मा तह़्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला-बिअिल्मिह्, व मा युअम्म-रु मिम्-मुअम्म-रिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अुमुरिही इल्ला फ़ी किताब्, इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर। (11)

तर्जमा : लोगो! अल्लाह तआला ने तुम्हें मिट्टी से, फिर नुत्फ़े से पैदा किया, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (मर्द व औरत) बना दिया है, औरतों का हामिला होना और बच्चों का तवल्लुद होना सब उसके इल्म से ही है और जो बड़ी उमरवाला उमर दिया जाए और जिस किसी की उमर घटे वह सब किताब में लिखा हुआ है। अल्लाह तआला पर यह बात बिल्कुल आसान है। (पारा 22, फ़ातिर, आयत-11)

तशरीह : अल्लाह तआला ने तुम्हारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा किया और उनकी नसल को एक ज़लील पानी से जारी रखा, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया यानी मर्द और औरत। यह भी उसका लुत्फ़ व करम व इनाम व एहसान है कि मर्दों के लिए बीवियाँ बनाईं, जो उनके सुकून व राहत का सबब

हैं, हर हामिला के हमल की और हर बच्चे के तवल्लुद होने की उसे ख़बर है बल्कि हर पत्ते के ठहरने से और अन्धेरे में पड़े हुए दाने से और हर तर व ख़ुश्क चीज़ से वह बाइल्म है बल्कि उसकी किताब में वह लिखा हुआ है। इसी आयत जैसी 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिल कुल्लु उनसा ' वाली आयत भी है और वहीं उसकी पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है, इसी तरह अल्लाह आलिमुल-ग़ैब को यह भी इल्म है कि किस नुत्फ़े को लम्बी उमर मिलनेवाली है, यह भी उसके पास लिखा हुआ है। हज़रत इब्ने-अब्बास से मरवी है कि जिस शख़्स के लिए मैंने तूल उम्र मुक़द्दर की है, वह उसे पूरी करके ही रहेगा लेकिन वह लम्बी उमर मेरी किताब में लिखी हुई है वहीं तक पहुँचेगी और जिसके लिए मैंने कम उम्र मुक़र्रर की है उसकी हयात उसी उम्र तक पहुँचेगी, यह सब कुछ ख़ुदा तआला की पहली किताब में लिखी हुई मौजूद है, और रब पर यह सब कुछ आसान है। उम्र के नाक़िस होने का एक मतलब यह भी हो सकता है कि जो नुत्फ़ा तमाम होने से पहले ही गिर जाता है वह भी अल्लाह के इल्म में है, बाज़ इनसान सौ-सौ साल की उम्र पाते हैं। और बाज़ पैदा होते ही मर जाते हैं। साठ साल से कम उम्र में मरनेवाला भी नाक़िस उम्रवाला है, यह भी कहा गया है कि माँ के पेट में उमर की लम्बाई या कमी लिख ली जाती है, सारी मख़लूक़ की यकसाँ उम्र नहीं होती, कोई लम्बी उम्रवाला, कोई कम उम्रवाला, यह सब ख़ुदा के वहाँ लिखा हुआ है और उसी के मुताबिक़ ज़हूर में आ रहा है। बाज़ कहते हैं कि इसके मानी ये हैं कि जो अजल लिखी गई है और उसमें जो गुज़र रही है सब अल्लाह तआला के इल्म में है और उसकी किताब में लिखी हुई है।

﴾41﴿

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ
اُجَاجٌ ۖ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ
وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

व मा यस्तविल्-बह्‌रानि; हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुन् सा-इगुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाज्, व मिन् कुल्लिन् तअ्कुलू-न लह्‌मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू-न हिल्य-तन् तल्बसूनहा, व तरल्-फ़ुल्-क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून। (12)

तर्जमा : और बराबर नहीं दो दरिया, यह मीठा है प्यास बुझाता है, पीने में ख़ुशगवार और यह दूसरा खारी है, कड़वा है, तुम दोनों में से ताज़ा गोश्त खाते हो और वे ज़ेवरात निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो। और तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी कश्तियाँ पानी को चीरने-फाड़ने वाली इन दरियाओं में हैं। ताकि तुम उसका फ़ज़्ल ढूँढो और ताकि तुम उसका शुक्र करो। (पारा 22, फ़ातिर, आयत-12)

तशरीह : मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ों की पैदाइश को बयान फ़रमा कर अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत को साबित कर रहा है। दो क़िस्म के दरिया पैदा कर दिए, एक का तो साफ़-सुथरा मीठा और उम्दा पानी जो आबादियों में, जंगलों में बराबर बह रहा है ओर दूसरे साकिन दरिया जिनका पानी खारी और कड़वा है जिसमें बड़ी-बड़ी कश्तियाँ और जहाज़ चल रहे हैं और दोनों क़िस्म के दरिया में से क़िस्म-क़िस्म की मछलियाँ तुम निकालते हो और तरो-ताज़ा गोश्त तुम खाते रहते हो, फिर उनमें से ज़ेवर निकालते हो, यानी लूʼलू और मरजान, ये कश्तियाँ बराबर पानी को काटती रहती हैं। हवाओं का मुक़ाबला करके चलती रहती हैं ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश कर लो। तिजारती सफ़र उन पर तय करो। एक मुल्क से दूसरे मुल्क में पहुँच सको। और ताकि तुम अपने रब का शुक्र करो कि ये सब चीज़ें तुम्हारे ताबेअ फ़रमान बना दें। तुम समुन्दर से, दरियाओं से, कश्तियों से नफ़ा हासिल करते हो, जहाँ जाना चाहो पहुँच जाते हो, उस क़ुदरतवाले ख़ुदा ने आसमान व ज़मीन की चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है, यह सिर्फ़ उसका फ़ज़्ल व करम है।

يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۝

यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मा, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही मा यम्लिकू-न मिन् क़ित्मीर। (13)

तर्जमा : वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और आफ़ताब व माहताब को उसी ने काम में लगा दिया है। हर एक मीआदे मुअय्यन पर चल रहा है। यही है अल्लाह तुम सबका पालनेवाला, उसी की सल्तनत है। जिन्हें तुम उसके सिवा पुकार रहे हो वे तो खजूर की घुटली के छिलके के भी मालिक नहीं।

(पारा 22, फ़ातिर, आयत-13)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते-कामिला का बयान फ़रमा रहे हैं कि उसने रात को अन्धेरेवाली और दिन को रौशनी वाला बनाया है। कभी की रातें बड़ी, कभी के दिन बड़े, कभी दोनों यकसाँ। कभी जाड़े हैं, कभी गर्मियाँ। उसी ने सूरज और चाँद को और थमे हुए और चलते-फिरते सितारों को मुतीअ कर रखा है, मिक़दार मुअय्यन पर ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर-शुदा चाल पर चलते रहते हैं, पूरी क़ुदरतोंवाले और कामिल इल्मवाले ख़ुदा ने यह निज़ाम क़ायम कर रखा है जो बराबर चल रहा है और वक़्त मुक़र्ररा यानी क़ियामत तक यूँ ही जारी रहेगा। जिस अल्लाह ने यह सब क्या है वही दर अस्ल लायक़े-इबादत है और वही सबका पालनेवाला है। उसके सिवा कोई भी लायक़े-इबादत नहीं। जिन बुतों को और ख़ुदा के सिवा जिन-जिन को लोग पुकारते हैं, ख़्वाह वे फ़रिश्ते ही क्यों न हों, लेकिन सब के सब उसके सामने महज़ मजबूर और बिल्कुल

बेबस हैं, खजूर की गुठली के ऊपर के बारीक छिलके जैसी चीज़ का भी उन्हें इख़्तियार नहीं, आसमान व ज़मीन की हक़ीर से हक़ीर चीज़ के भी वे मालिक नहीं। जिन-जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे तुम्हारी आवाज़ सुनते ही नहीं। तुम्हारे ये बुत वग़ैरह बेजान चीज़ें कान वाली नहीं जो सुन सकें। बेजान चीज़ें भी कहीं किसी की सुन सकती हैं और बिलफ़र्ज़ तुम्हारी पुकार सुन भी लें तो चूँकि उनके क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं इसलिए वे तुम्हारी हाजत बरारी कर नहीं सकते, क़ियामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क से वे इनकारी हो जाएँगे। तुमसे बेज़ार नज़र आएँगे।

﴾43﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्रज्ना बिही स-मरातिम्- मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा, व मिनल्- जिबालि जु-ददुम् बीज़ुंव्-व हुमुरुम्- मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद। (27) व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क, इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अु-लमा-उ, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर। (28)

तर्जमा : क्या आपने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआला ने आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए से मुख़्तलिफ़ रंगतों के फल निकाले और पहाड़ों के मुख़्तलिफ़ हिस्से हैं, सफ़ेद और सुर्ख़ कि उनकी भी रंगतें मुख़्तलिफ़ हैं और बहुत गहरे स्याह, और उसी तरह आदमियों और जानवरों और चौपायों में भी बाज़ ऐसे हैं कि उनकी रंगतें मुख़्तलिफ़ हैं, अल्लाह से उसके वही

बन्दे डरते हैं जो इल्म रखते हैं, वाक़ई अल्लाह तआला ज़बरदस्त बड़ा बख़्शनेवाला है।

(पारा 22, फ़ातिर आयत-27-28)

तशरीह : जब कि क़ुदरतों के कमालात देखो कि एक ही क़िस्म की चीज़ों में गूँ ना गूँ नमूने नज़र आते हैं। एक पानी आसमान से उतरता है और उसी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंग-बिरंग के फल पैदा हो जाते हैं, सुर्ख़, सब्ज़, सफ़ेद वग़ैरह। उसी तरह हर एक की ख़ुशबू अलग-अलग, हरेक का ज़ायक़ा जुदागाना जैसे और आयत में फ़रमाया है 'वफ़िलअर्ज़ि क़ितउन मुतजाविरातुन' यानी कहीं अंगूर है, कहीं खजूर है, कहीं खेती है वग़ैरह, इसी तरह पहाड़ों की पैदाइश भी क़िस्म-क़िस्म की है, कोई सफ़ेद है, कोई सुर्ख़ है, कोई काला है, किसी में रास्ते और घाटियाँ हैं, कोई लम्बा है, कोई नाहमवार है। उन बेजान चीज़ों के बाद जानदार चीज़ों पर नज़र डालो। इनसानों को, जानवरों को, चोपायों को देखो, उनमें भी क़ुदरत की वज़अ-वज़अ की गिलकारियाँ पाओगे। बरबर हब्शी तमातम बिल्कुल स्याह फ़ाम होते हैं। सक़ालबा रूमी बिल्कुल सफ़ेद रंग, अरब दरम्याना, हिन्दी उनके क़रीब-क़रीब। चुनांचे और आयत में है 'वख़्तिलाफ़ु अल्सिनतिकुम अलवानिकुम' तुम्हारी बोल-चाल का इख़्तिलाफ़, तुम्हारी रंगतों का इख़्तिलाफ़ भी एक आलम के लिए तो क़ुदरत की कामिल निशानी हैं। बल्कि एक ही क़िस्म के जानवरों में उनकी रंगतें भी मुख़्तलिफ़ हैं। बल्कि एक ही जानवर के जिस्म पर कई-कई क़िस्म के रंग होते हैं, सुब्हानल्लाह। सबसे अच्छा ख़ालिक़ ख़ुदा कैसी कुछ बरकतोंवाला है।

मुसनद बुज़्र में है कि एक शख़्स ने रसूलल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया कि क्या ख़ुदाए-तआला रंग-आमेज़ी भी करता है? आपने फ़रमाया, हाँ ऐसा रंग रंगता है जो कभी हल्का न पड़े, सुर्ख़ ज़र्द और सफ़ेद, उसके बाद ही फ़रमाया कि जितना कुछ ख़ौफ़े-ख़ुदा करना चाहिए उतना ख़ौफ़ तो उससे सिर्फ़ उलमा ही करते हैं क्योंकि वे जानने-बूझने वाले होते हैं। हक़ीक़तन जो शख़्स जिस क़दर ज़ाते-ख़ुदा की निस्बत मालूमात ज़्यादा रखेगा उसी क़दर उस अज़ीम

क़दीर, अलीम ख़ुदा की अज़मत व हैबत उसके दिल में बढ़ेगी, और उसी क़दर उसकी ख़शीयत उसके दिल में ज़्यादा होगी, जो जानेगा कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है, वह हर क़दम पर उससे डरता रहेगा। ख़ुदा के साथ सच्चा इल्म उसे हासिल है जो उसकी ज़ात के साथ किसी को शरीक न करे। उसके हलाल किए हुए को हलाल और उसके हराम बताए हुए कामों को हराम जाने, उसके फ़रमान पर यक़ीन करे, उसकी वसीयत की निगहबानी करे। उसकी मुलाक़ात को बरहक़ जाने, अपने आमाल के हिसाब को सच समझे। ख़शिय्यत एक क़ुव्वत होती है जो बन्दे के और ख़ुदा की नाफ़रमानी के दरम्यान हायल होती है। आलिम कहते ही उसे हैं जो दर परदा भी ख़ुदा से डरता रहे और ख़ुदा की रज़ामन्दी की रग़बत करे और उसकी नाराज़गी के कामों से नफ़रत रखे। हज़रत इब्ने-मसऊद फ़रमाते हैं, बातों की ज़्यादती का नाम इल्म नहीं, इल्म नाम है बकसरत ख़ुदा से डरने का, हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि कसरते-रिवायात का नाम इल्म नहीं, इल्म तो एक नूर है जिसे अल्लाह तआला अपने बन्दे के दिल में डाल देता है। हज़रत अहमद-बिन-सालेह मिस्री फ़रमाते हैं, इल्म कसरते-रिवायात का नाम नहीं बल्कि इल्म नाम है उसका जिसकी ताबेदारी ख़ुदा की तरफ़ से फ़र्ज़ है यानी किताब व सुन्नत और जो सहाबा और अइम्मा से पहुँचा हो वह रिवायत से ही हासिल होता है, नूर जो बन्दे के आगे-आगे होता है वह इल्म को और उसके मतलब को समझ लेता है, मरवी है कि उलमा की तीन क़िस्में हैं। आलिम बिल्लाह, आलिम-बिअमरिल्लाह और आलिम बिल्लाह व बिअमरिल्लाह, आलिम बिल्लाह आलिम बिअमरिल्लाह नहीं और आलिम बिअमरिल्लाह आलिम बिल्लाह नहीं। हाँ, आलिम बिल्लाह वह है जो अल्लाह तआला से डरता हो लेकिन हुदूद व फ़राइज़ को न जानता हो। आलिम बिअमरिल्लाह वह है जो हुदूद व फ़राइज़ को तो जानता हो लेकिन दिल उसका ख़शिय्यते-ख़ुदा से ख़ाली हो।

إِنَّ اللَّهَ عَٰلِمُ غَيْبِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝

इन्नल्ला-ह आलिमु .गैबिस्समावाति वल्‌अर्ज़्, इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर। (38) हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् .खलाइ-फ़ फ़िल्‌अर्ज़, फ़-मन् क-फ़-र फ़-अलैहि कुफ्रुहू, व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् इल्ला मक्ता, व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ्रुहुम् इल्ला .खसारा।(39)

तर्जमा : बेशक अल्लाह तआला जाननेवाला है आसमानों ओर ज़मीन की पोशीदा चीज़ों का, बेशक वही जाननेवाला है सीनों की बातों का, वही ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में आबाद किया, सो जो शख़्स कुफ्र करेगा उसके कुफ्र का वबाल उसी पर पड़ेगा और काफ़िरों के लिए उनका कुफ्रान उनके परवरदिगार के नज़दीक नाराज़ी ही बढ़ने का बाइस होता है। (पारा 22, फ़ातिर आयत-38 39)

तशरीह : अल्लाह तआला अपने वसीअ और बेपायाँ इल्म का बयान फ़रमा रहे हैं कि वह तो आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का आलिम है, दिलों के भेद, सीनों की बातें इस पर अयाँ हैं। हर आमिल को उसके अमल का वह बदला देगा। उसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का ख़लीफ़ा बनाया है। काफ़िरों के कुफ्र का वबाल ख़ुद उन पर है। वे जूँ अपने-अपने कुफ्र में बढ़ते हैं यूँ-यूँ ख़ुदा की नाराज़गी उन पर बढ़ती है और उनका नुक़सान और ज़्यादा होता जाता है। बरख़िलाफ़ मोमिन के कि उसकी उम्र जिस क़दर बढ़ती है नेकियाँ बढ़ती हैं और दर्जे पाता है और ख़ुदा के हाँ मक़बूल होता जाता है।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

इन्नल्ला-ह युम्सिकुस्समावाति वल्अर्-ज़ अन् तज़ूला, व ल-इन् ज़ा-लता इन् अम्-स-कहुमा मिन् अ-हदिम्-मिम्बअ्दिह्, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा। (41)

तर्जमा : यक़ीनी बात है कि अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और अगर वे टल जाएँ तो फिर अल्लाह के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता। वह हलीम, ग़फ़ूर है। (पारा 22, आयत-41, फ़ातिर)

तशरीह : ख़ुदाए-तआला की, जो सच्चा माबूद है, क़ुदरत व ताक़त देखो कि आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं। हर एक अपनी-अपनी जगह रुका हुआ और थमा हुआ है। इधर-उधर जंबिश भी तो नहीं खा सकता। आसमान को ज़मीन पर गिर पड़ने से ख़ुदा तआला रोके हुए है, ये दोनों उसके फ़रमान से ठहरे हुए हैं, उसके सिवा कोई नहीं जो इन्हें थाम सके, रोक सके। निज़ाम पर क़ायम रख सके। उस हलीम व ग़फ़ूर ख़ुदा को देखो कि मख़लूक़ व ममलूक की नाफ़रमानी, सरकशी, कुफ़्र व शिर्क देखते हुए भी बुर्दबारी और बख़्शिश से काम ले रहा है, ढील और मुहलत दिए हुए है, गुनाहों को माफ़ फ़रमाता जाता है।

इब्ने-अबी हातिम में इस आयत की तफ़सीर में एक हदीस में है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का एक वाक़िआ जनाब रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने एक मर्तबा मिंबर पर बयान फ़रमाया कि आपके दिल में ख़याल गुज़रा कि अल्लाह तआला कभी सोता है? तो अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता उनके पास भेज दिया, जिसने उन्हें तीन दिन तक सोने न दिया। फिर उनके एक-एक हाथ में एक-एक बोतल दी और हुक्म दिया कि उनकी हिफ़ाज़त करो, गिरें नहीं, टूटे नहीं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें हाथों में लेकर हिफ़ाज़त करने लगे, लेकिन नींद का ग़लबा था, ऊँघ आने लगी, कुछ झोंके तो ऐसे आए कि आप होशियार हो गए और बोतल गिरने न दी। लेकिन आख़िर नींद ग़ालिब आ गई और बोतलें हाथ से छूटकर ज़मीन पर गिर गईं और चूरा-चूरा हो गईं। मक़सद यह था कि सोनेवाला दो बोतलें नहीं थाम सकता। फिर अगर अल्लाह तआला सोता तो ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त उससे कैसे होती।

﴾46﴿

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वह्, व मा कानल्लाहु लियुअ्जि-ज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़, इन्नहू का-न अलीमन् क़दीरा। (44)

तर्जमा : और क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं जिसमें देखते-भालते कि जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अंजाम क्या हुआ? हालाँकि वे क़ुव्वत में उनसे बढ़े हुए थे और अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज़ उसको हरा दे, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह बड़े इल्मवाला, बड़ी क़ुदरतवाला है।

(पारा 22, आयत-44, फ़ातिर)

तशरीह : हुक्म होता है कि इन मुनकिरों से फ़रमा दीजिए कि ज़मीन में चल-फिर कर देखें तो सही कि इन जैसे इनसे अगले लोगों के कैसे इबरतनाक अंजाम हुए। उनकी नेमतें छिन गईं, उनके महलात उजाड़ दिए गए, उनकी ताक़त ताक़ हो गई, उनके माल

तबाह कर दिए गए, उनकी औलादें हलाक कर दी गई। ख़ुदा के अज़ाब उन पर से किसी तरह न टले। आई हुई मुसीबत को वे न हटा सके, नोच लिए गए, तबाह व बरबाद हो गए। कुछ काम न आया। कोई फ़ायदा किसी से न पहुँचा। ख़ुदा को कोई हरा नहीं सकता। उसे कोई अम्र आजिज़ नहीं कर सकता। उसका कोई इरादा मुराद से जुदा नहीं। उसका कोई हुक्म किसी से टल नहीं सकता, वह तमाम कायनात का आलिम है, वह तमाम कामों पर क़ादिर है। अगर वह अपने बन्दों के तमाम गुनाहों पर पकड़ करता तो तमाम आसमानोंवाले और ज़मीनोंवाले हलाक हो जाते। जानवर और रिज़्क़ तक बरबाद हो जाते। जानवरों को उनके घोंसलों और भट्टों में भी अज़ाब पहुँच जाता, ज़मीन पर कोई जानवर बाक़ी न बचता, लेकिन अब ढील दिए हुए है, अज़ाबों को मुअख़्ख़र किए हुए है।

﴾47﴿

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝٣١

अलम् यरौ कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम्-मिनल्-कुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिऊन। (31)

तर्जमा : क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनके पहले बहुत-सी क़ौमों को हमने ग़ारत कर दिया कि वे उनकी तरफ़ लौटकर नहीं आएँगे।

(पारा 23, आयत-31, यासीन)

तशरीह : मतलब यह है कि क़ियामत के दिन अज़ाबों को देख कर हाथ मलेंगे कि उन्होंने क्यों रसूलों को झुठलाया और क्यों ख़ुदा तआला के फ़रमान के ख़िलाफ़ किया। दुनिया में तो उनका यह हाल था कि जब कभी जो रसूल आया उन्होंने बेताम्मुल झुठलाया, और दिल खोलकर उनकी बेअदबी और तौहीन की। वे अगर यहाँ ताम्मुल करते तो समझ लेते कि उनसे पहले जिन लोगों ने पैग़म्बरों की न मानी थी वे ग़ारत व बरबाद कर दिए गए, उनकी भूसी उड़ा दी गई, एक भी तो उनमें से न बच सका, न उस दारे-आख़िरत से कोई वापस पलटा।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

व आ-यतुल् लहुमुल्-अर्ज़ुल्-मै-तह्, अह्यैनाहा व अख़्रज्ना मिन्हा हब्बन् फ़मिन्हु यअ्कुलून। (33) व जअल्ना फ़ीहा जन्नातिम्-मिन्-नख़ीलिंव्-व अअ्नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अुयून। (34) लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अमिलत्हु ऐदीहिम्, अ-फ़ला यश्कुरून। (35) सुब्हानल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्लमून। (36)

तर्जमा : और उनके लिए एक निशानी (ख़ुश्क) ज़मीन है जिसको हमने ज़िन्दा कर दिया और उससे ग़ल्ला निकाला जिसमें से वे खाते हैं और हमने उसमें खजूरों के और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर दिए और जिनमें हमने चश्मे भी जारी कर दिए हैं ताकि लोग उसके फल खाएँ, और उसको उनके हाथों ने नहीं बनाया, फिर क्यों शुक्र गुज़ारी नहीं करते। वह पाक ज़ात है जिसने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए ख़ाह वे ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हों, ख़ाह ख़ुद उनके नुफ़ूस हों, ख़ाह वे चीज़ें हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।

(पारा 23, यासीन 33-36)

तशरीह : अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि मेरे वुजूद पर और मेरी ज़बरदस्त क़ुदरत पर और मुर्दों के जिलाने पर एक निशानी यह भी है कि मुर्दा ज़मीन जो बंजर ख़ुश्क पड़ी होती है जिसमें कोई रूईदगी, ताज़गी, हरियावल और घास वग़ैरह नहीं होती, मैं उस पर आसमान से पानी बरसाता हूँ और वह मुर्दा ज़मीन जी उठती है,

लहलहाने लगती है, हर तरफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा उग जाता है और क़िस्म-क़िस्म के फल-फूल वग़ैरह नज़र आने लगते हैं। तो फ़रमाता है कि हम उस मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं और उसमें क़िस्म-क़िस्म के अनाज पैदा कर देते हैं, बाज़ को तुम खाते हो, और बाज़ तुम्हारे जानवर खाते हैं, हम उसमें खजूरों के, अंगूरों के बाग़ात वग़ैरह तैयार कर देते हैं, नहरें जारी कर देते हैं। जो बाग़ों और खेतों को सैराब सरसब्ज़ व शादाब करती रहती हैं। यह सब इसलिए कि इन दरख़्तों के मेवे दुनिया खाए, खेतों और बाग़ात से मुनाफ़े हासिल करे। और हाजतें पूरी करे, ये सब ख़ुदा तआला की रहमत और उसकी क़ुदरत से पैदा हो रहे हैं। किसी के बस और इख़्तियार में नहीं। तुम्हारे हाथों की पैदा करदा चीज़ें नहीं, न तुममें उनको उगाने की ताक़त, न तुम में उनको बचाने की क़ुदरत, न उनको पकाने और तैयार करने का तुम्हें इख़्तियार। सिर्फ़ ख़ुदा तआला के ये काम हैं, और उसी यह महरबानी है, और उसके एहसान के साथ ही साथ ये उसकी क़ुदरत के नमूने हैं, फिर लोगों को क्या हो गया है जो शुक्रगुज़ारी नहीं करते? और ख़ुदा तआला की बेइन्तिहा अनगिनत नेमतें अपने पास होते हुए उसका एहसान नहीं मानते। एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि बाग़ात के फल ये खाते हैं और अपने हाथों का बोया हुआ ये पाते हैं। चुनांचे इब्ने मसऊद की क़िरअत में है पाक और बरतर और तमाम नुक़सानात से बरी वह ख़ुदा तआला है जिसने ज़मीन की पैदावार को और ख़ुद तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किया है और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मख़लूक़ के जोड़े बनाए हैं जिन्हें तुम जानते भी नहीं हो, जैसे और आयत में है 'वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनि ल-अल्लकुम तज़क्करून' हमने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए हैं ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

﴾49﴿

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝ وَالشَّمْسُ

تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ

مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝

व आ-यतुल्-लहुमुल्लैल, नस्-लखु मिन्हुन्नहा-र फ़-इज़ा हुम्-मुज़्लिमून। (37) वश्शम्सु तज्री लिमुस्त-क़र्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक्दीरुल् अज़ीज़िल्-अलीम। (38) वल्क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ-द कल्-उर्जूनिल्-क़दीम।(39) लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल् क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्-नहार्, व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्-यस्बहून। (40)

तर्जमा : और उनके लिए एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच देते हैं तो वे यकायक अन्धेरे में रह जाते हैं, और सूरज के लिए जो मुक़र्ररह राह है वह उसी पर चलता रहता है। यह है मुक़र्रर-करदा ग़ालिब, बाइल्म अल्लाह तआला का। और चाँद की हमने मंज़िलें मुक़र्र कर रखी हैं। यहाँ तक कि वह लौटकर पुरानी टहनी की तरह हो जाता है। न आफ़ताब की यह मजाल है कि चाँद को पकड़े और न रात दिन पर आगे बढ़ जानेवाली है, और सब के सब आसमान में तैरते फिरते हैं। (पारा 23, यासीन 37-40)

तशरीह : अल्लाह तआला की क़ुदरते-कामिला की एक निशानी बयान हो रही है, और वे दिन रात हैं, जो उजाले और अन्धेरे वाले हैं और बराबर एक दूसरे के पीछे आ जा रहे हैं। जैसे फ़रमाया 'युग़्शिल्लैलन्नहा-र यतलुबुहु हसीसन' रात को दिन से छिपाता है, रात दिन को जल्दी ढूँढती आती है। यहाँ भी फ़रमाया रात में से हम दिन को खींच लेते हैं, दिन तो ख़त्म हुआ और रात आ गई, और चारों तरफ़ से अन्धेरा छा गया। पस एक सूरज ही नहीं बल्कि कुल मख़लूक़ अर्श के नीचे ही है इसलिए कि अर्श सारी मख़लूक़ के ऊपर है, और सबको इहाता किए हुए है, और वह कुर्रा नहीं है जैसे कि हैयत-दाँ कहते हैं। बल्कि वह मिस्ल क़ुब्बे के है जिसके पाए हैं और जिसे फ़रिश्ते उठाए हुए हैं। इनसानों के सिरों के ऊपर,

ऊपरवाले आलम में है, बस जबकि सूरज फ़लकी क़ुब्बे में ठीक ज़ुहर के वक़्त होता है, उस वक़्त वह अर्श से बिल्कुल क़रीब होता है। फिर जब वह घूम कर चौथे फ़लक में उसी मक़ाम के बिलमुक़ाबिल आ जाता है, यह आधी रात का वक़्त होता है, जब कि वह अर्श से बहुत दूर हो जाता है, पस वह सजदा करता है और तुलूअ की इजाज़त चाहता है।

सहीह बुख़ारी में है हज़रत अबू-ज़र कहते हैं कि मैं सूरज के ग़ुरूब होने के वक़्त रसूले-ख़ुदा (सल्ल.) के पास मस्जिद में था, आप (सल्ल.) ने मुझसे फ़रमाया, जानते हो यह सूरज कहाँ ग़ुरूब होता है? मैंने कहा, ख़ुदा तआला और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, वह अर्श तले जाकर ख़ुदा तआला को सजदा करता है। और हदीस में है कि आप (सल्ल.) से हज़रत अबू-ज़र ने इस आयत का मतलब पूछा तो आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, उसकी क़रारगाह अर्श के नीचे है।

मुसनद अहमद की हदीस में यह भी है कि वह अल्लाह तआला से वापस होने की इजाज़त तलब करता है और उसे इजाज़त दी जाती है, गोया उससे कहा जाता है कि जहाँ से आया था वहीं लौट जा, तो वह अपने तुलूअ होने की जगह से निकलता है और यही उसका मुस्तक़र है। फिर आप (सल्ल.) ने इस आयत के इब्तिदाई फ़िक़रे को पढ़ा। एक रिवायत में यह भी है कि क़रीब है कि वह सजदा करे लेकिन क़बूल न किया जाए और इजाज़त माँगे लेकिन इजाज़त न दी जाए बल्कि कहा जाए कि जहाँ से आया है वहीं लौट जा। पस वह मग़रिब से ही तुलू करे। यही इस आयत करीमा के मानी हैं। और यह भी कहा गया है कि मुस्तक़र से मुराद उसके चलने की इन्तिहा है, पूरी बुलन्दी जो गर्मियों में होती है और पूरी पस्ती जो जाड़ों में होती है। यह एक क़ौल हुआ। दूसरा क़ौल यह है कि आयत के लफ़्ज़ मुस्तक़र से उसकी चाल का ख़ातिमा है, क़ियामत के दिन उसकी हरकत बातिल हो जाएगी, यह बेनूर हो जाएगा और यह आलम कुल का कुल ख़त्म हो जाएगा। यह

मुस्तक़र ज़मानी है, हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं वह अपने मुस्तक़र पर चलता है यानी अपने वक़्त और मेयार पर जिससे तजावुज़ नहीं कर सकता, जो उसके रास्ते जाड़ों के और गर्मियों के मुक़र्रर हैं इन ही रास्तों से आता-जाता है। इब्ने-मसऊद और इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा की क़िरअत में है कि इसके लिए सुकून व क़रार नहीं बल्कि दिन-रात बहुक्मे-ख़ुदा गर्दिश करता रहता है। न रुके, न थके। जैसे फ़रमाया राईन यानी उसने तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया है जो न थकें न ठहरें, क़ियामत तक चलते-फिरते ही रहेंगे। यह अन्दाज़ा उस ख़ुदा का है जो ग़ालिब है, जिसकी कोई मुख़ालिफ़त नहीं कर सकता, जिसके हुक्म को कोई टाल नहीं सकता। वह अलीम है, हर-हर हरकत व सुकून को जानता है, उसने अपनी हिकमते-कामिला से उसकी रफ़तार मुक़र्रर की है जिसमें न इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ हो सके, न उसके बरअक्स हो सके।

सुब्ह का निकालनेवाला जिसने रात को राहत का वक़्त बनाया और सूरज-चाँद को हिसाब से मुक़र्रर किया है, यह है अन्दाज़ा ग़ालिब ज़ी-इल्म का। फिर फ़रमाता है कि चाँद की हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं वह एक जुदागाना चाल चलता है जिससे महीने मालूम हो जाएँ, जैसे सूरज की चाल से रात-दिन मालूम हो जाते थे, जैसे फ़रमान है कि लोग तुझसे चाँद के बारे में सवाल करते हैं, तू जवाब दे कि वक़्तों और हज के मौसम को बतलाने के लिए है। और आयत में फ़रमाया, उसने सूरज को ज़िया और चाँद को नूर दिया है और उसकी मंज़िलें ठहरा दी हैं ताकि तुम बरसों को और हिसाब को मालूम कर लो। एक आयत में है कि हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बना दी हैं, रात की रौशनी को हमने धुंधला कर दिया है और दिन की निशानी को रौशन किया है ताकि तुम उसमें अपने रब तआला की नाज़िल करदा रोज़ी को तलाश कर सको और बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर सको, पस सूरज की चमक-दमक उसके साथ मख़सूस है और चाँद की रौशनी इसी में है इसकी रफ़तार भी मुख़्तलिफ़ है, सूरज हर दिन तुलू व ग़ुरूब होता

है, इसी जोत के साथ होता है। हाँ इसके तुलूअ व ग़ुरूब की जगहें जाड़े में और गर्मी में अलग-अलग होती हैं। इसी सबब से दिन-रात की तूलानी में कमी बेशी होती रहती है। सूरज दिन का सितारा है और चाँद रात का सितारा है, उसकी मंज़िलें मुक़र्रर हैं, महीने की पहली रात तुलूअ होता है, बहुत छोटा होता है, रौशनी कम होती है। दूसरी शब रौशनी इससे बढ़ जाती है और मंज़िल भी तरक़्क़ी करती जाती है। फिर जूँ-जूँ बुलन्द होता जाता है रौशनी उससे बढ़ जाती है गो उसकी नूरानियत सूरज से मिली हुई होती है, आख़िर चौदहवीं रात को चाँद कामिल हो जाता है और उसकी चाँदनी भी कमाल की हो जाती है, फिर घटना शुरू होता है और इसी तरह दरजा-बदरजा बतदरीज घटता हुआ मिस्ले-खजूर के ख़ोशे की टहनी के हो जाता है, जिसपर तर खजूरें लटकती हों और वह ख़ुश होकर बल खा गई हो। फिर उसे नऐ सिरे से अल्लाह तआला दूसरे महीने की इब्तिदा में ज़ाहिर करता है। अरब में चाँद की रौशनी के एतिबार से महीने की रातों के नाम रख लिए गए हैं, मसलन पहली तीन रातों का नाम 'ग़रर' है उसके बाद की तीन रातों का नाम 'नफ़ल' है उसके बाद की तीन रातों का नाम 'तसअ' है इसलिए कि उनकी आख़िरी रात नौंवी होती है, उसके बाद की तीन रातों का नाम 'अश्र' है इसलिए कि उनका शुरू दसवें से है। उनके बाद भी तीन रातों का नाम 'बैज़' है इसलिए कि इन रातों में चाँद की रौशनी आख़िर तक रहा करती है। इसके बाद की तीन रातों का नाम उनके हाँ 'वरअ' है। इनका यह नाम इसलिए रखा कि सोलहवीं को चाँद ज़रा देर से निकलता है तो थोड़ी देर तक अन्धेरा यानी स्याही रहती है। इसके बाद की तीन रातों को 'ज़ुल्म' कहते हैं। फिर तीन को 'हनावस' फिर तीन को 'दरारी' फिर तीन को 'महाक़' इसलिए कि इसमें चाँद ख़त्म हो जाता है और महीना भी ख़त्म होता है। सूरज और चाँद की हदें उसने मुक़र्रर की हैं, नामुमकिन है कि कोई अपनी हद से इधर-उधर हो जाए या आगे-पीछे हो जाए। इसकी बारी के वक़्त वह गुम है इसकी बारी के वक़्त यह ख़ामोश है। हसन रज़िअल्लाहु अन्हु

कहते हैं कि यह चाँद रात को है। इब्ने-मुबारक रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि हवा के पर हैं और चाँद पानी के ग़िलाफ़ तले जगह करता है। अबू-सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि उसकी रौशनी उसकी रौशनी को पकड़ नहीं सकती। इकरिमा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं रात को सूरज तुलूअ नहीं हो सकता न रात दिन से सबक़त कर सकती है। यानी रात के बाद ही रात नहीं आ सकती बल्कि दरम्यान में दिन आ जाएगा। पस सूरज की सल्तनत दिन को है और चाँद की बादशाहत रात को है, रात इधर से जाती है उधर से दिन आता है। एक-दूसरे के तआक़ुब में हैं लेकिन न तसादुम का डर है न बेनज़्मी का ख़तरा है। न यह कि दिन ही दिन चला जाए, रात न आए, न उसके ख़िलाफ़ एक जाता है। दूसरा आता है हर एक अपने-अपने वक़्त पर ग़ायब व हाज़िर होता रहता है। सब के सब यानी सूरज, चाँद, दिन, रात, फ़लक आसमान में तैर रहे हैं और घूमते फिरते हैं। ज़ैद-बिन-आसिम रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन के दरम्यान फ़लक में ये सब आ-जा रहे हैं, बाज़ लोग कहते हैं वह फ़लक मिस्ल चरख़े के तकवे के है, बाज़ कहते हैं मिस्ल चक्की के पाट के लोहे के।

﴾50﴿

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝٤١ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝٤٢ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝٤٣ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٤٤

व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना ज़ुर्रिय्य-तहुम् फ़िल्-फ़ुल्किल्-मश्हून। (41) व ख़लक़्ना लहुम-मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून। (42) व इन्न-शअ् नुग़्रिक़्हुम् फ़ला सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून (43) इल्ला रह्म-तम्- मिन्ना व मताअन् इला हीन। (44)

तर्जमा : और उनके लिए एक निशानी (यह भी) है कि हमने

उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया और उनके लिए उसी जैसी और चीज़ें पैदा कीं जिनपर ये सवार होते हैं और अगर हम चाहते तो उन्हें डुबो देते फिर न तो कोई उनका फ़यादरस होता न वे बचाए जाएँ, लेकिन हम अपनी तरफ़ से रहमत करते हैं और एक मुद्दत तक के लिए उन्हें फ़ायदे दे रहे हैं।

(पारा 23, यासीन 41-44)

तशरीह : अल्लाह तबारक व तआला अपनी क़ुदरत की एक और निशानी बतला रहा है कि उसने समुन्दर को मुसख़्ख़र कर दिया है जिसमें कश्तियाँ बराबर आमद व रफ़्त कर रही हैं। सबसे पहली कश्ती हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की थी जिस पर सवार होकर वे ख़ुद और उनके साथ ईमानदार बन्दे नजात पा गए थे, बाक़ी रूए-ज़मीन पर एक इनसान भी न बचा था। हमने इस ज़माने के लोगों के आबा व अज्दाद को कश्ती में बिठा लिया था जो बिल्कुल भर पूर थी क्योंकि इसमें ज़रूरत का कुल असबाब भी था और साथ ही हैवानात भी थे जो ख़ुदा तआला के हुक्म से इसमें बिठा लिए थे, हर क़िस्म के जानवर का एक-एक जोड़ा था, बड़ा बावक़ार मज़बूत और बोझल वह जहाज़ था। यह सिफ़त भी सही तौर पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती पर सादिक़ आती है। इसी तरह की ख़ुश्की की सवारियाँ भी ख़ुदा तआला ने उनके लिए पैदा कर दी हैं। मसलन ऊँट जो ख़ुश्की में वही काम देता है जो तरी में कश्ती काम देती है, इसी तरह दीगर चौपाए जानवर भी और यह भी हो सकता है कि कश्तीए-नूह नमूना बनी और फिर इस नमूने पर और कश्तियाँ और जहाज़ बनते चले गए। इस मतलब की ताईद आयत 'लिनजअ-ल-हा लकुम तज़किरह' से भी होती है, यानी जब पानी ने तुग़यानी की हमने तुम्हें कश्ती पर सवार कर लिया ताकि उसे तुम्हारे लिए एक यादगार बना दें और याद रखनेवाले कान उसे याद रखें। हमारे इस एहसान को फ़रामोश न करो कि समुन्दर से हमने तुम्हें पार कर दिया। अगर हम चाहते तो उसी में तुम्हें डुबो देते, कश्ती

की कश्ती बैठ जाती, कोई न होता जो उस वक़्त तुम्हारी फ़रयादरसी करे, न कोई ऐसा तुम्हें मिलता जो तुम्हें बचा सके, लेकिन यह सिर्फ़ हमारी रहमत है कि ख़ुश्की और तरी के लम्बे-चौड़े सफ़र तुम बआराम व राहत तय कर रहे हो, और हम तुम्हें अपने ठहराए हुए वक़्त तक हर तरह सलामत रखते हैं।

﴾51﴿

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ۝ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝

वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल्-लअल्लहुम् युन्सरून। (74) ला यस्ततीअू-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम्- मुह्ज़रून। (75) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् इन्ना नअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून। (76)

तर्जमा : और वे अल्लाह के सिवा दूसरों को माबूद बनाते हैं ताकि वे मदद किए जाएँ, (हालाँकि) उनमें उनकी मदद की ताक़त ही नहीं (लेकिन) फिर भी (मुशरिकीन) उनके लिए हाज़िर बाश लश्करी हैं, पस आपको उनकी बात ग़मनाक न करे, हम उनकी पोशीदा और एलानिया सब बातों को (बख़ूबी) जानते हैं।

(पारा-23, यासीन 74-76)

तशरीह : मुशरिकीन के इस बातिल अक़ीदे की तरदीद हो रही है जो वे समझते थे कि जिन-जिन की सिवाय ख़ुदा तआला के ये इबादत करते हैं वे उनकी मदद व नुसरत करेंगे। उनकी रोज़ियों में बरकत देंगे और ख़ुदा तआला से तक़र्रुब हासिल होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वे उनकी मदद करने से आजिज़ हैं, उनकी मदद तो कुजा वे तो ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते। बल्कि ये बुत तो अपनी दुश्मन के नुक़सान से भी अपने आपको नहीं बचा सकते। कोई आए और तोड़-मरोड़ कर भी चला जाए तो ये उसका

कुछ नहीं कर सकते। बल्कि बोल-चाल पर भी क़ादिर नहीं, समझ-बूझ नहीं। ये बुत क़ियामत के दिन जमाशुदा हिसाब के वक़्त अपने आबिदों के सामने लाचारी और बेकसी के साथ मौजूद होंगे ताकि मुशरिकीन की पूरी ज़िल्लत व ख़ारी हो और उन पर हुज्जत तमाम हो। हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं कि मतलब यह है कि बुत तो उनकी किसी तरह की इम्दाद नहीं कर सकते लेकिन फिर भी ये बेसमझ मुशरिकीन उनके सामने इस तरह मौजूद रहते हैं, जैसे कोई हाज़िर-बाश लश्कर हो, वे न उन्हें कोई नफ़ा पहुँचा सकें, न किसी नुक़सान को दफ़अ कर सकें, लेकिन ये हैं कि उनके नाम पर मरे जाते हैं यहाँ तक कि उनके ख़िलाफ़ आवाज़ सुनना नहीं चाहते। और ग़ुस्से से बेक़ाबू हो जाते हैं। ऐ नबी (सल्ल॰) इन कुफ़्फ़ार की बातों से आप ग़मनाक न हों। हम पर उनका ज़ाहिर और बातिन रौशन है। वक़्त आ रहा है कि गिन-चुन कर हम इन्हें बदले दें।

﴾52﴿

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

अ-व लम् यरौ अन्ना .ख़लक़्ना लहुम्-मिम्मा अमिलत् ऐदीना अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून। (71) व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून। (72) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु, अ-फ़ला यश्कुरून। (73)

तर्जमा : क्या वे नहीं देखते कि हमने अपने हाथों बनाई हुई चीज़ों में से इनके लिए चौपाए भी पैदा कर दिए जिनके ये मालिक हो गए हैं और उन मवेशियों को हमने उनका ताबेअ फ़रमान बना दिया है जिनमें से बाज़ तो उनकी सवारियाँ हैं और बाज़ का गोश्त खाते हैं, इन्हें इनसे और भी बहुत-से फ़ायदे हैं, और पीने की चीज़ें। क्या फिर भी ये शुक्र अदा नहीं करेंगे। (पारा-23, या-सीन 71-73)

तशरीह : अल्लाह तआला अपने इनाम व एहसान का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि उसने ख़ुद ही ये चौपाए पैदा किए और इनसान की मिल्कियत में दे दिए, एक छोटा-सा बच्चा भी ऊँट की नकेल थाम ले, ऊँट जैसा क़वी और बड़ा जानवर इसके साथ-साथ है, सौ ऊँटों की एक क़तार हो, एक बच्चे के हाँकने से सीधी चलती रहती है। इस मातहती के अलावा बाज़ पर लम्बे-लम्बे मशक़्क़तवाले सफ़र बाआसानी जल्दी-जल्दी तय होते हैं, ख़ुद सवार होते हैं, असबाब लादते हैं, बोझ ढोने के काम आते हैं। और बाज़ के गोश्त खाए जाते हैं। फिर सूफ़, ऊन, बालों और खालों वग़ैरह से फ़ायदा उठाते हैं। दूध पीते हैं और भी तरह तरह के फ़ायदे हासिल किए जाते हैं। क्या फिर इनको न चाहिए कि इन नेमतों के मुनइम, इन एहसानों के मुहसिन, इन चीज़ों के ख़ालिक़, उनके हक़ीक़ी मालिक का शुक्र बजा लाएँ। सिर्फ़ उसकी इबादत करें, उसकी तौहीद को मानें और उसके साथ किसी और को शरीक न करें।

﴾53﴿

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन्-नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व .ख़सीमुम्-मुबीन। (77) व ज़-र-ब लना म-सलंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू, क़ा-ल मंय्युह्यिल्- अिज़ा-म व हि-य रमीम। (78) क़ुल् युह्यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिंव्, व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अलीम। (79) अल्लज़ी ज-अ-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़-इज़ा अन्तुम्-मिन्हु तूक़िदून। (80)

तर्जमा : क्या इनसान को इतना भी नहीं मालूम कि हमने उसे

नुत्फ़े से पैदा किया है, फिर यकायक वह सरीह झगड़ालू बन बैठा और उसने हमारे लिए मिसाल बयान की और अपनी असल पैदाइश को भूल गया। कहने लगा, इन गली सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? आप जवाब दीजिए कि इन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने इन्हें अव्वल बार पैदा किया है, जो सब तरह की पैदाइश का बख़ूबी जाननेवाला है, वही जिसने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा कर दी जिससे तुम यकायक आग सुलगाते हो।

(पारा-23, यासीन 77-80)

तशरीह : उबई-बिन-ख़लफ़ मलऊन एक बार अपने हाथ में एक बोसीदा खोखली सड़ी-गली हड्डी लेकर आया और उसको अपनी चुटकी में मलते हुए जब कि इसके रेज़े-रेज़े हवा में उड़ रहे थे हुज़ूर (सल्ल॰) से कहने लगा, आप कहते हैं कि इन हड्डियों को ख़ुदा तआला ज़िन्दा करेगा? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, हाँ ख़ुदा तआला तुझे हलाक कर देगा फिर ज़िन्दा कर देगा, फिर तेरा हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा। जो शख़्स भी दूसरी ज़िन्दगी का मुनकिर हो उसे जवाब है। मतलब यह है कि इन लोगों को चाहिए कि अपनी शुरू पैदाइश पर ग़ौर करें। जिसने एक हक़ीर व ज़लील क़तरे से इनसान को पैदा कर दिया हालाँकि इससे पहले वह कुछ न था, फिर उसकी क़ुदरत पर हरफ़ रखने के क्या मानी? इस मज़मून को बहुत-सी आयतों में बयान फ़रमाया है, जैसे 'अलम नख़लुक़्कुम मिंमाइम्‌महीन' और इन्ना ख़लक़नल-इनसा-न मिन नुत्फ़तिन अमशाजिन' वग़ैरह

मुसनद अहमद में है कि एक बार आप (सल्ल॰) ने अपनी हथेली में थूका फिर उसमें उँगली रख कर फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ इब्ने-आदम! क्या तू मुझे भी आजिज़ कर सकता है? मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया। फिर जब ठीक-ठाक दुरुस्त और चुस्त कर दिया और तू ज़रा कस व बल वाला हो गया तो तूने माल जमा करना और मिस्कीनों से रोक रखना शुरू कर दिया। हाँ, जब दम नरख़रे में अटका तो कहने लगा कि

अब मैं अपना तमाम माल राहे ख़ुदा में सदक़ा करता हूँ। भला अब सदक़े का वक़्त कहाँ अलग़रज़ नुत्फ़े से पैदा किया हुआ इनसान हुज्जत बाज़ियाँ करने लगा और अपना दोबारा जी उठना मुहाल जानने लगा। उस ख़ुदा तआला की क़ुदरत से नज़रें हटा लीं, जिसने आसमान व ज़मीन को और तमाम मख़लूक़ को पैदा कर दिया। यह अगर ग़ौर करता तो अलावा इस अज़ीमुश्शान मख़लूक़ की पैदाइश के ख़ुद अपनी पैदाइश को भी दोबारा पैदा करने की क़ुदरत का एक निशाने अज़ीम पाता। लेकिन उसने तो अक़्ल की आँखों पर ठीकरी रख ली। इसके जवाब में कह दो कि अव्वल मरतबा इन हड्डियों को, जो अब गली सड़ी हैं, जिसने पैदा किया है वही दोबारा इन्हें पैदा करेगा। जहाँ-जहाँ भी ये हड्डियाँ हों वह ख़ूब जानता है।

मुसनद की हदीस में है कि एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहु अन्हु से उक़बा-बिन-उमर रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा कि आप हमें रसूले-ख़ुदा (सल्ल॰) से सुनी हुई कोई हदीस सुनाइए तो आपने फ़रमाया कि हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि एक शख़्स पर जब मौत की हालत तारी हुई तो उसने अपने वारिसों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊँ तो बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करके मेरी लाश को जला कर ख़ाक कर देना फिर उसे समुन्दर में बहा देना। चुनांचे उन्होंने यही किया। अल्लाह तआला ने उसकी राख जमा करके जब उसे दोबारा ज़िन्दा किया तो उससे पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उसने जवाब दिया कि सिर्फ़ तेरे डर से। अल्लाह तआला ने उसको बख़्श दिया। एक रिवायत में है कि उसने कहा था कि मेरी राख हवा के रुख़ उड़ा देना। कुछ तो हवा में, कुछ दरिया में, बहा देना। समुन्दर ने बहुक्मे-ख़ुदा तआला जो राख उसमें थी उसको जमा कर दिया, और उसी तरह हवा ने भी। फिर ख़ुदा तआला के फ़रमान से वह खड़ा कर दिया गया। फिर अपनी क़ुदरत के मुशाहिदे के लिए और इस बात की दलील क़ायम करने के लिए कि ख़ुदा तआला हर चीज़ पर क़ादिर है॰ मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है, हैयत को वह मुनक़लिब कर सकता है, फ़रमाया कि तुम ग़ौर करो कि पानी से

मैंने दरख़्त उगाए जो सरसब्ज़ और शादाब हरे-भरे फलवाले हुए फिर वे सूख गए और उन लकड़ियों से मैंने आग निकाली, कहाँ वह तरी और ठंडक, कहाँ यह ख़ुश्की और गरमी, बस मुझे कोई चीज़ करनी भारी नहीं, तर को ख़ुश्क करना, ख़ुश्क को तर करना, ज़िन्दा को मुर्दा करना और मुर्दा को जला देना सब मेरे बस की बात है। यह भी कहा गया है कि मुराद उससे मर्ख़ और अफ़ार के दरख़्त हैं जो हिजाज़ में होते हैं। उनकी सब्ज़ टहनियों को आपस में रगड़ने से चक़मक़ की तरह आग निकलती है चुनांचे अरब में एक मशहूर मसल (कहावत) है कि 'लिकुल्लि शजरिन नारुन वस्तम-जदलमरख़ु वलअफ़ारु' हुकमा का क़ौल है कि सिवाए अंगूर के दरख़्त के हर दरख़्त में आग है।

﴾54﴿

اَوَلَيْسَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓی اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰی ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَیْئًا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۸۲﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

अ-व लैसल्लज़ी .ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज बिक़ादिरिन् अला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम्, बला; व हुवल् .ख़ल्लाक़ुल्-अलीम। (81) इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून। (82) फ़-सुब्हानल्लज़ी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व इलैहि तुर्जअून। (83)

तर्जमा : जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं, बेशक क़ादिर है और वही तो पैदा करनेवाला दाना और बीना है, जब कभी किसी चीज़ का इरादा करता है उसे इतना फ़रमा देना काफ़ी है कि 'हो जा', वह उसी वक़्त हो जाती है। पस पाक है वह अल्लाह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है। और जिसकी तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे। (पारा-23 या-सीन् 81-83)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत बयान फ़रमा रहा है कि उसने आसमानों को और उनकी सब चीज़ों को पैदा किया। ज़मीन को और उसके अन्दर की सब चीज़ों को भी उसी ने बनाया। फिर इतनी बड़ी क़ुदरतोंवाला इनसानों जैसी छोटी मख़लूक़ को पैदा करने से आजिज़ आ जाए यह तो अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है। जैसे फ़रमाया 'ल-ख़ल-क़ुस्समावाति वल अर्ज़ि अकबरु मिन ख़लक़न्नासि' यानी आसमान व ज़मीन की पैदाइश इनसानी पैदाइश से बहुत बड़ी और अहम है। यहाँ भी फ़रमाया कि वह ख़ुदा तआला जिसने आसमान व ज़मीन को पैदा कर दिया वह क्या इनसानों जैसी कमज़ोर मख़लूक़ को पैदा करने से आजिज़ आ जाएगा? और जब वह क़ादिर है तो यक़ीनन इन्हें मार डालने के बाद फिर वह इन्हें जला देगा। जिसने इब्तिदाअन पैदा किया है, उस पर इआदा बहुत आसान है। जैसे और आयत में है 'अ-व-लम यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी'.... क्या वे नहीं देखते कि जिस ख़ुदा तआला ने ज़मीन व आसमान को बना दिया और उनकी पैदाइश से आजिज़ न आया, न थका, तो क्या वह मुर्दों के ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है, बल्कि वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है, वही पैदा करनेवाला और बनानेवाला, इजाद करनेवाला और ख़ालिक़ है। साथ ही दाना-बीना और रत्ती-रत्ती से वाक़िफ़ है। वह तो जो कुछ करना चाहता है उसका सिर्फ़ हुक्म दे देना काफ़ी होता है।

मुसनद की हदीसे-क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, "ऐ मेरे बन्दो! तुम सब गुनाहगार हो मगर जिसे मैं माफ़ कर दूँ, तुम मुझसे माफ़ी तलब करो, मेरा वादा है कि माफ़ कर दूँगा, तुम सब फ़क़ीर हो मगर जिसे मैं ग़नी कर दूँ। मैं जव्वाद हूँ, मैं माजिद हूँ, मैं वाजिद हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ, मेरा इनाम भी एक कलाम है और मेरा अज़ाब भी कलाम है। मैं जिस चीज़ को करना चाहता हूँ, कह देता हूँ कि 'हो जा', वह हो जाती है। हर बुराई से उसी हय्यु व क़य्यूम की ज़ात पाक है। जो ज़मीन व आसमान का बादशाह है जिसके हाथ में आसमानों और ज़मीनों की कुंजियाँ हैं, वह सबका

ख़ालिक़ है, वही असली हाकिम है, उसी की तरफ़ क़ियामत के दिन सब लौटाए जाएँगे और वही आदिल व मुनइम ख़ुदा तआला इन्हें सज़ा व जज़ा देगा।

﴿55﴾

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۞ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ ۞

रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़्।(5) इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ी-नति-निल्-कवाकिब। (6)

तर्जमा : आसमानों और ज़मीन और इनके दरम्यान की तमाम चीज़ों और मशरिक़ों का रब वही है। हमने आसमाने-दुनिया को सितारों की ज़ीनत से आरास्ता किया। (पारा 23, अस-साफ़्फ़ात 5-6)

तशरीह : इसका ज़िक्र हो रहा है कि तुम सबका माबूद बरहक़ एक अल्लाह तआला ही है, वही आसमान व ज़मीन का और उनके दरम्यान की तमाम चीज़ों का मालिक व मुतसर्रिफ़ है, उसी ने आसमान पर सितारे और चाँद-सूरज को मुसख़्ख़र कर रखा है। जो मशरिक़ से ज़ाहिर होते हैं, मग़रिब में ग़ुरूब होते हैं। दूसरी आयत में ज़िक्र कर भी दिया है। फ़रमान है 'रब्बुल-मशरिक़ैनि व रब्बुल मग़रिबैनि' यानी जाड़े और गर्मियों की तुलूअ व ग़ुरूब की जगह का रब वही है आसमाने दुनिया को देखनेवाली निगाहों में जो ज़ीनत दी गई है उसका बयान फ़रमाया। उसके सितारों की, उसके सूरज की रौशनी ज़मीन को जगमगा देती है जैसे और आयत में है 'व ल-क़द ज़ैय्यन्नस्समा अद्दुनिया' हमने आसमाने-दुनिया को ज़ीनत दी सितारों के साथ।

﴿56﴾

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ

الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

ख़-ल-क़कुम्-मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् सुम्-म ज-अ-ल मिन्हा ज़ौ-जहा व अन्ज़-ल लकुम्-मिनल्-अन्आमि समानि-य-त अज़्वाज, यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् .ख़ल्क़म्-मिम्बअ़्दि .ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलास, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्क, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ून। (6)

तर्जमा : निहायत अच्छी तदबीर से उसने आसमानों और ज़मीन को बनाया, वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेट देता है और उसने सूरज-चाँद को काम पर लगा रखा है। हर एक मुक़र्ररह मुद्दत तक चल रहा है। यक़ीन मानो कि वही ज़बरदस्त और गुनाहों का बख़्शनेवाला है। उसने तुम सबको एक ही जान से पैदा किया है, फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए चौपायों में से (आठ नर व मादा) उतारे, वे तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों में एक बनावट के बाद दूसरी बनावट पर बनाता है, तीन-तीन अन्धेरों में, यही अल्लाह तआला तुम्हारा रब है, इसी के लिए बादशाहत है, इसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ बहक रहे हो।

(पारा 23 अज़-ज़ुमर-6)

तशरीह : हर चीज़ का ख़ालिक़, सबका मालिक, सबपर हुक्मराँ और सबपर क़ाबिज़ अल्लाह तआला ही है। दिन-रात का उलट-फेर उसी के हाथ में है, उसी के हुक्म से इन्तिज़ाम के साथ दिन-रात एक-दूसरे के पीछे बराबर मुसलसल चले आ रहे हैं, न वह आगे बढ़ सके न वह पीछे रह सके। सूरज और चाँद को उसने मुसख़्ख़र कर रखा है, वह अपने दौरे को पूरा कर रहे हैं। क़ियामत तक इस

निज़ाम में तुम कोई फ़र्क़ न पाओगे। वह इज़्ज़त व अज़मतवाला, किबरियाई और रफ़अतवाला है। गुनहगारों का बख़्शनहार और आसियों पर मेहरबान वही है, तुम सबको उसने एक ही शख़्स यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किया है फिर देखो कि तुममें आपस में किस क़दर इख़्तिलाफ़ है। रंग व सूरत और आवाज़ व बोल-चाल और ज़बान व बयान हर एक अलग-अलग है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ही उनकी बीवी साहिबा हज़रत हव्वा को पैदा किया। जैसे और जगह है कि लोगो! अल्लाह तआला से डरो जो तुम्हारा रब है, जिसने तुम्हें एक ही नफ़्स से पैदा किया है। उसी से उसकी बीवी को पैदा किया। फिर बहुत-से मर्द व औरत फैला दिए। उसने तुम्हारे लिए आठ नर व मादा चौपाए पैदा किए जिनका बयान सूरा मायदा की आयत मिनज़्ज़ानानिस्नैनि'..... में है यानी भेड़-बकरी, गाय, ऊँट। वह तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों में पैदा करता है। जहाँ तुम्हारी पैदाइशें होती रहती हैं। पहले नुतफ़ा, फिर ख़ून बस्ता, फिर लोथड़ा, फिर गोश्त-पोस्त, हड्डी, रग, पट्ठे, फिर रूह। ग़ौर करो कि वह कितना अच्छा ख़ालिक़ है। तीन अन्धेरियों में तुम्हारी यह तरह-तरह की तब्दीलियों की पैदाइश का हेर-फेर होता रहता है। रहम की अन्धेरी। उसके ऊपर की झिल्ली की अन्धेरी, और पेट की अन्धेरी। यह जिसने आसमान व ज़मीन को और ख़ुद तुम को और तुम्हारे अगले पिछलों को पैदा किया है, वही रब तआला है, उसी का मिल्क है, वही सब में मुतसर्रिफ़ है, वही लायक़े-इबादत है, उसके सिवा कोई और नहीं। अफ़सोस, न जाने तुम्हारी समझ और अक़्लें कहाँ गईं कि तुम उसके सिवा दूसरों की इबादत व बन्दगी करने लगे।

﴾57﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ
يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-स-ल-कहू यनाबी-अ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म युख़्रिजु बिही ज़र्‌अम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अलुहू हुतामा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब। (21)

तर्जमा : क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह तआला आसमान से पानी उतारता है और उसे ज़मीन की सोतों में पहुँचाता है, फिर उसी के ज़रिया से मुख़्तलिफ़ क़िस्म भी खेतियाँ उगाता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती हैं, और आप उन्हें ज़र्द रंग देखते हैं, फिर उन्हें रेज़ा-रेज़ा कर देता है, इसमें अक़्लमन्दों के लिए बहुत ज़्यादा नसीहत है। (पारा 23, अज़-ज़ुमर 21)

तशरीह : ज़मीन में जो पानी है वह दरहक़ीक़त आसमान से उतरा हुआ है, जैसे फ़रमान है कि हम आसमान से पानी उतारते हैं, यह पानी ज़मीन पी लेती है। और अन्दर ही अन्दर वह फैल जाता है, पस हस्बे-हाजिब किसी सौत से अल्लाह तआला उसे निकालता है और चश्मे जारी हो जाते हैं। जो पानी ज़मीन के मेल से खारी हो जाता है वह खारी ही रहता है, इसी तरह आसमानी पानी बर्फ़ की शक्ल में पहाड़ों पर जम जाता है जिसे पहाड़ जज़्ब कर लेते हैं और फिर उनमें से सोतें बह निकलती हैं, उन चश्मों और आबशारों का पानी खेतों में पहुँचता है जिससे खेतियाँ लहलहाने लगती हैं, जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंग व बू की और तरह-तरह के मज़े और शक्ल व सूरत की होती हैं। फिर आख़िरी वक़्त में उनकी जवानी बुढ़ापे से और सब्ज़ी ज़रदी से बदल जाती है फिर ख़ुश्क हो जाती हैं और काट ली जाती हैं। क्या इसमें अक़्लमन्दों के लिए बसीरत व नसीहत नहीं? क्या वे इतना नहीं देखते कि इसी तरह दुनिया है कि आज जवान और ख़ूबसूरत नज़र आती है, कल बुढ़िया और बदसूरत हो जाती है। आज एक शख़्स नौजवान ताक़तवर है, कल वही बूढ़ा बद शक्ल और कमज़ोर नज़र आता है, फिर आख़िर मौत के नीचे में

फंसता है। पस अक़्लमन्द अंजाम पर नज़र रखें। बेहतर वह है जिसका अंजाम बेहतर हो।

﴾58﴿

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾

व ल-इन् स-अल्तहुम्-मन्-ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-नल्लाहु, क़ुल् अ-फ़- रऐतुम्-मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरा-दनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरा-दनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिहू, क़ुल् हस्बियल्लाहु अलैहि य-तवक्कलुल्-मु-तवक्किलून। (38)

तर्जमा : अगर आप इनसे पूछें कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यक़ीनन वे यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने, आप इनसे कहिए कि अच्छा, यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसके नुक़्सान को हटा सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझ पर मेहरबानी का इरादा करे तो क्या ये उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं? आप कह दें कि अल्लाह मुझे काफ़ी है, तवक्कुल करनेवाले इसी पर तवक्कुल करते हैं।

(पारा 24, अज़-ज़ुमर 38)

तशरीह : ऐ नबी (सल्ल.)! ये लोग तुझे अल्लाह के सिवा औरों के डरों से डरा रहे हैं, यह उनकी जिहालत व ज़लालत है और ख़ुदा जिसे गुमराह कर दे उसे कोई राह नहीं दिखा सकता। जिस तरह ख़ुदा के राह दिखाए हुए शख़्स को कोई बहका नहीं सकता, अल्लाह तआला बुलन्द जनाब वाला है। उसपर भरोसा करनेवाले का कोई

कुछ बिगाड़ नहीं सकता और उसकी तरफ़ झुक जानेवाला महरूम नहीं रहता। इससे बढ़कर इन्तिक़ाम पर क़ादिर भी कोई नहीं जो उसके साथ कुफ़्र व शिर्क करते हैं उसके रसूलों से लड़ते-भिड़ते हैं। क़तअन वह उन्हें सख़्त सज़ाएँ देगा। मुशरिकीन की और जिहालत बयान हो रही है कि बावुजूद अल्लाह तआला को ख़ालिक़े-कुल मानने के फिर भी ऐसी माबूदाने-बातिल की परस्तिश करते हैं जो किसी नफ़े-नुक़सान के मालिक नहीं जिन्हें किसी अम्र का कोई इख़्तियार नहीं।

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह को याद रख वह तेरी हिफ़ाज़त करेगा। अल्लाह को याद रख तू उसे हर वक़्त अपने पास पाएगा। आसानी के वक़्त रब की नेमतों का शुक्रगुज़ार रह, सख़्ती के वक़्त वह तुझे काम आएगा। जब कुछ माँगे तो अल्लाह ही से माँग और जब मदद तलब करे तो उसी से मदद तलब कर, यक़ीन रख कि अगर तमाम दुनिया मिलकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे और ख़ुदा का इरादा न हो तो वे सब तुझे ज़रा-सा भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते और सब जमा होकर तुझे कोई नफ़ा पहुँचाना चाहें जो ख़ुदा ने मुक़द्दर में न लिखा हो तो हरगिज़ नहीं पहुँचा सकते। सहीफ़े ख़ुश्क हो चुके, क़लमें उठा ली गईं। यक़ीन और शुक्र के साथ नेकियों में मशग़ूल रहा कर। तकलीफ़ों में सब्र करने पर बड़ी नेकियाँ मिलती हैं। मदद सब्र के साथ है। ग़म व रंज के साथ ही ख़ुशी और फ़राख़ी है। हर सख़्ती अपने अन्दर आसानी को लिए हुए है। (इब्ने-अबी-हातिम) तू कह दे कि मुझे ख़ुदा बस है, भरोसा करनेवाले उसी की पाक ज़ात पर भरोसा करते हैं। जैसे कि हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जवाब दिया था जबकि उन्होंने कहा था कि ऐ हूद हमारे ख़याल से तो तुम्हें हमारे किसी माबूद ने किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है, तो आपने फ़रमाया, मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तुम्हारे तमाम माबूदाने-बातिल से बेज़ार हूँ। तुम सब मिलकर मेरे साथ जो दाव घात तुमसे हो सकते हैं, सब कर लो और मुझे मुतलक़ मुहलत न

दो। सुनो मेरा तवक्कुल मेरे रब पर है जो दरअस्ल तुम सबका भी रब है। रूए-ज़मीन पर जितने चलने फिरनेवाले हैं सबकी चोटियाँ उसके हाथ में हैं, मेरा रब सिराते-मुस्तक़ीम पर है।

﴾59﴿

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰى اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾

अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल्-अन्फु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अलैहल्-मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्- तफ़क्करून । (42)

तर्जमा : अल्लाह ही रूहों को उनकी मौत के वक़्त और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें उनकी नींद के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है, फिर जिन पर मौत का हुक्म लग चुका है उन्हें तो रोक लेता है और दूसरी (रूहों) को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है, ग़ौर करनेवालों के लिए इसमें यक़ीनन बहुत-सी निशानियाँ हैं।

(पारा 24, अज़-ज़ुमर 42)

तशरीह : हम हर मौजूद में जो चाहें तसर्रुफ़ करते रहते हैं। वफ़ाते-कुबरा जिसमें हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इनसान की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वफ़ाते-सुग़रा जो नींद के वक़्त होती है हमारे ही क़ब्ज़े में है। जैसे और आयत में है 'य-त-वफ़्फ़ाकुम बिल्लैलि व यअ्लमु मा ज-रहतुम बिन्नहारि'..... यानी वह ख़ुदा जो तुम्हें रात को फ़ौत कर देता है और दिन में जो कुछ तुम करते हो जानता है फिर तुम्हें दिन में उठा बैठाता है ताकि मुक़र्रर किया हुआ वक़्त पूरा कर दिया जाए, फिर तुम सबकी बाज़गश्त उसी की तरफ़ है और वह तुम्हारे आमाल की ख़बर देगा। वही अपने सब बन्दों पर ग़ालिब है, वही तुम पर निगहबान फ़रिश्ते भेजता है तावक़्ते कि तुममें से किसी

की मौत आ जाए तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे तक़सीर और कमी नहीं करते। पस इन दोनों आयतों में भी यही ज़िक्र हुआ है, पहले छोटी मौत को फिर बड़ी मौत को बयान फ़रमाया। यहाँ पहले बड़ी वफ़ात को फिर छोटी वफ़ात को ज़िक्र किया। इससे यह भी पाया जाता है कि मलाए-आला में ये रूहें जमा होती हैं, बाज़ सल्फ़ का क़ौल है कि मुर्दों की रूहें, जब वे मरें और ज़िन्दों की रूहें जब वे सोएँ, क़ब्ज़ कर ली जाती हैं और दूसरी रूहें मुक़र्ररह वक़्त तक के लिए छोड़ दी जाती हैं यानी मरने के वक़्त तक हज़रत इब्ने-अब्बास फ़रमाते हैं कि मुर्दों की रूहें अल्लाह तआला रोक लेता है और ज़िन्दों की रूहें वापस भेज देता है, और इसमें कभी ग़लती नहीं होती। ग़ौर-फ़िक्र के जो आदी हैं वे उसी एक बात में क़ुदरते-ख़ुदा के बहुत-से दलायल पा लेते हैं।

﴾60﴿

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

कुलिल्ला-हुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्ज़ि आलिमल्-ग़ैबि वश्शहा-दति अन्-त तह्कुमु बै-न अिबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून। (46)

तर्जमा : आप कह दीजिए कि ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले, छिपे-खुले के जाननेवाले, तू ही अपने बन्दों में उन उमूर का फ़ैसला फ़रमाएगा जिनमें वे उलझ रहे हैं।

(पारा 24, अज़-ज़ुमर, 46)

तशरीह : मुशरिकीन को तौहीद से जो नफ़रत है और शिर्क से जो मुहब्बत है उसे बयान फ़रमाकर अपने नबी (सल्ल.) से अल्लाह तआला वहदहू लाशरीक लहू फ़रमाता है कि तू सिर्फ़ अल्लाह तआला वाहिद को ही पुकार जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है और उस वक़्त उसने इन्हें पैदा किया है जब कि न ये कुछ थे न इनका कोई नमूना था। वह ज़ाहिर व बातिन छिपे-खुले का आलिम

है। ये लोग जो इख़्तिलाफ़ात अपने आप में करते थे सबका फ़ैसला उस दिन होगा जब ये क़बरों से निकलेंगे और मैदाने-क़ियामत में आएँगे।

﴾61﴿

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۙ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ۧ

अल्लाहु .खालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अला कुल्लि शैइंव्-वकील। (62) लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़, वल्लज़ी-न क-फ़रू बि-आया-तिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-खासिरून। (63)

तर्जमा : अल्लाह हर चीज़ का पैदा करनेवाला है और वही हर चीज़ पर निगहबान है, आसमानों और ज़मीन की कुंजियों का मालिक वही है। जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया वही ख़सारा पानेवाले हैं। (पारा 24, अज़-ज़ुमर 62-63)

तशरीह : तमाम जानदार और बेजान चीज़ों का ख़ालिक़, मालिक रब और मुतसर्रिफ़ अल्लाह तआला अकेला ही है। हर चीज़ उसकी मातहती में और उसके क़ब्ज़े में और उसकी तदबीर में है। सबका कारसाज़ और वकील वही है, तमाम कामों की बागडोर उसी के हाथ में है। ज़मीन और आसमान की कुंजियों और उनके ख़ज़ानों का वही तनहा मालिक है। हम्द व सताइश के क़ाबिल और हर चीज़ पर क़ादिर वही है। कुफ़्र व इनकार करनेवाले बड़े ही घाटे और नुक़सान में हैं।

﴾62﴿

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ڰ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही, वल्अर्ज़ु जमीअन् क़ब्-ज़तुहू यौमल्-क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि-यमीनिही, सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून। (67)

तर्जमा : और उन लोगों ने जैसी क़दर अल्लाह तआला की करनी चाहिए थी नहीं की, सारी ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और तमाम आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे, वह पाक और बरतर है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका शरीक बनाएँ।

(पारा 24, अज़-ज़ुमर 67)

तशरीह : मुशरिकीन ने दरअस्ल अल्लाह तआला की क़दर व अज़मत जानी ही नहीं, इसी वजह से वे उसके साथ दूसरों को शरीक करने लगे। उससे बढ़कर इज़्ज़तवाला, उससे ज़्यादा बादशाहत वाला, उससे बढ़कर ग़लबा और क़ुदरतवाला कोई नहीं। न कोई उसका हमसर और बराबरी करनेवाला है। यह आयत कुफ़्फ़ारे-क़ुरैश के बारे में नाज़िल हुई है। इन्हें अगर क़दर होती तो उसकी बातों को ग़लत न जानते। जो शख़्स ख़ुदा को हर चीज़ पर क़ादिर माने वह है जिसने ख़ुदा की अज़मत की और जिसका यह अक़ीदा न हो वह ख़ुदा की क़दर करनेवाला नहीं।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि यहूदियों का एक बहुत बड़ा आलिम रसूल (सल्ल॰) के पास आया और कहने लगा कि हम यह लिखा पाते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल सातों आसमानों को एक उंगली पर रख लेगा और सब ज़मीनों को एक उंगली पर रख लेगा और दरख़्तों को एक उंगली पर रख लेगा। और पानी और मिट्टी को एक उंगली पर और बाक़ी तमाम मख़लूक़ को एक उंगली पर रख लेगा फिर फ़रमाएगा कि मैं ही सबका मालिक और सच्चा बादशाह हूँ। हुज़ूर (सल्ल॰) उसकी बात की सच्चाई पर हँस दिए यहाँ तक कि आप (सल्ल॰) के मसूढ़े ज़ाहिर हो गए। फिर आप (सल्ल॰) ने इसी आयत की तिलावत की, मुसनद की हदीस भी क़रीब इसी के है। इसमें है कि आप (सल्ल॰) हँसे और अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। और रिवायत में है कि वह अपनी उंगली पर बताता जाता था, पहले उसने कलिमे की उंगली दिखाई थी। इस रिवायत में चार उंगलियों का ज़िक्र है, सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ज़मीन को क़ब्ज़ कर लेगा और

आसमान को अपनी दाहिनी मुट्ठी में ले लेगा फिर फ़रमाएगा, मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह? मुस्लिम की इस हदीस में है कि ज़मीनें उसकी एक उंगली पर होंगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में होंगे। फिर फ़रमाएगा, मैं ही बादशाह हूँ।

मुसनद अहमद में है कि हुज़ूर (सल्ल.) ने एक दिन मिंबर पर इस आयत की तिलावत की और आप (सल्ल.) अपना हाथ हिलाते जाते थे, आगे-पीछे ला रहे थे और फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला अपनी बुज़ुर्गी आप बयान फ़रमाएगा कि मैं जब्बार हूँ, मैं मुतकब्बिर हूँ, मैं मालिक हूँ, मैं बाइज़्ज़त हूँ, मैं करीम हूँ, आप (सल्ल.) उसके इस बयान के वक़्त इतना हिल रहे थे कि हमें डर लगने लगा कि कहीं मिंबर आप (सल्ल.) समेत गिर न पड़े। एक रिवायत में है कि हज़रत इब्ने-उमर रज़ियअल्लाहु अन्हु ने उसकी पूरी कैफ़ियत दिखा दी कि किस तरह हुज़ूर (सल्ल.) ने उसे हिकायत किया था कि अल्लाह तबारक व तआला आसमानों और ज़मीनों को अपने हाथ में लेगा और फ़रमाएगा, मैं बादशाह हूँ। अपनी उंगलियों को कभी खोलेगा कभी बन्द करेगा और आप (सल्ल.) उस वक़्त हिल रहे थे यहाँ तक कि हुज़ूर (सल्ल.) के हिलने से सारा मिंबर हिलने लगा और मुझे यह डर लगा कि कहीं वे हुज़ूर को गिरा न दे, बज़्ज़ार की रिवायत में है कि आप (सल्ल.) ने यह आयत पढ़ी और मिंबर हिलने लगा। पस आप (सल्ल.) तीन मरतबा आए-गए।

मोजमे-कबीर तबरानी की एक हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल.) ने अपने सहाबा की एक जमाअत से फ़रमाया, मैं आज तुम्हें सूरा ज़ुमर की आख़िरी आयतें सुनाऊँगा, जिसे उनसे रोना आ गया वह जन्नती हो गया। अब आप (सल्ल.) ने इस आयत से लेकर ख़त्म सूरा तक की आयतें तिलावत फ़रमाईं। बाज़ रोए और बाज़ को न रोना आया। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमने हर चन्द रोना चाहा लेकिन रोना न आया। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, अच्छा मैं फिर पढूँगा। जिसे रोना न आए वह रोनी शकल बनाकर बतकल्लुफ़ रोए, एक और हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने तीन

चीज़ें अपने बन्दों से छिपा ली हैं। अगर वे इन्हें देख लेते तो कोई शख़्स कभी कोई बदी न करता—

1. अगर मैं परदा हटा देता और वह मुझे देख कर ख़ूब यक़ीन कर लेते और मालूम कर लेते कि मैं अपनी मख़लूक़ से क्या कुछ करता हूँ जब कि उनके पास आऊँ और आसमानों को अपनी मुट्ठी में ले लूँ। फिर ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लूँ फिर कहूँ, मैं बादशाह हूँ, मेरे सिवा मुल्क का मालिक कौन है?

2. फिर मैं उन्हें जन्नत दिखाऊँ और उसमें जो भलाइयाँ हैं सब उनके सामने कर दूँ और वे यक़ीन के साथ ख़ूब अच्छी तरह देख लें।

3. और मैं उन्हें जहन्नम दिखा दूँ और उसके अज़ाबों का मुआयना करा दूँ यहाँ तक कि उन्हें यक़ीन आ जाए, लेकिन मैंने क़सदन ये चीज़ें पोशीदा कर रखी हैं ताकि मैं जान लूँ कि वे मुझे किस तरह जानते हैं। क्योंकि मैंने ये सब बातें बयान कर दी हैं।

﴾63﴿

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

व तरल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अर्शि युसब्बिहू-न बि-हम्दि रब्बिहिम्, व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन। (75)

तर्जमा : और तू फ़रिश्तों को अल्लाह के अर्श के इर्द-गिर्द हलक़ा बाँधे हुए अपने रब की हम्द व तस्बीह करते हुए देखेगा और उनमें इनसाफ़ का फ़ैसला किया जाएगा। और कह दिया जाएगा कि सारी ख़ूबी अल्लाह ही के लिए जो तमाम जहानों का पालनहार है।

(पारा 24, अज़-ज़ुमर 75)

तशरीह : जबकि अल्लाह तआला ने अहले-जन्नत और अहले-जहन्नम का फ़ैसला सुना दिया और उन्हें उनके ठिकाने पहुँचाए जाने का हाल भी बयान कर दिया और उसमें अपने अद्ल

व इनसाफ़ का सुबूत भी दे दिया तो इस आयत में फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ उस वक़्त तू देखेगा कि फ़रिश्ते ख़ुदा के अर्श के चारोंतरफ़ खड़े हुए होंगे और अल्लाह तआला की हम्द व तस्बीह, बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान कर रहे होंगे, सारी मख़लूक़ में अद्ल व हक़ के साथ फ़ैसले हो चुके होंगे। इस सरासर अद्ल और बिल्कुल रहमवाले फ़ैसलों पर कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा उसकी सना-ख़्वानी करने लगेगा। और जानदार और बेजान चीज़ से आवाज़ उठेगी कि 'अल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' चूँकि उस वक़्त हर तर व ख़ुश्क अल्लाह की हम्द बयान करेगी।

﴾64﴿

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ وَیُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا یَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ یُّنِیْبُ ۝

हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम्-मिनस्समा-इ रिज़्क़ा, व मा य-तज़क्करु इल्ला मंय्युनीब।(13)

तर्जमा : वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखलाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है। नसीहत तो सिर्फ़ वही हासिल करते हैं जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ करते हैं।

(पारा 24, अल-मोमिन 13)

तशरीह : अल्लाह तआला की क़ुदरते-कामिला को बयान किया कि बारी तआला हम मुर्दे थे तूने हमें ज़िन्दा कर दिया। फिर मार डाला, फिर ज़िन्दा कर दिया। पस तू हर उस चीज़ पर जिसे तू चाहे क़ादिर है, हमें अपने गुनाहों का इक़रार है। यक़ीनन हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती की, अब बचाव की कोई सूरत बना दे यानी हमें दुनिया की तरफ़ फिर लौटा दे जो यक़ीनन तेरे बस में है, हम वहाँ जाकर अपने पहले आमाल के ख़िलाफ़ आमाल करेंगे। अब अगर हम वही काम करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं। उन्हें जवाब दिया जाएगा कि अब दोबारा दुनिया में जाने की कोई राह नहीं, इसलिए

कि अगर दोबारा चले भी जाओगे तो फिर भी वही करोगे जिससे मना किए जाओगे, तुमने अपने दिल ही टेढ़े कर लिए हैं, तुम अब भी हक़ को क़बूल न करोगे बल्कि उसके ख़िलाफ़ ही करोगे। तुम्हारी यह हालत थी कि जहाँ ख़ुदाए-वाहिद का ज़िक्र आया और तुम्हारे दिल में कुफ़्र समाया, हाँ उसके साथ किसी को शरीक किया जाए तो तुम्हें यक़ीन व ईमान जाता था। यही हालत फिर तुम्हारी हो जाएगी। दुनिया में अगर दोबारा गए तो दोबारा यही करोगे, पस हाकिमे-हक़ीक़ी जिसके हुक्म में कोई ज़ुल्म न हो, सरासर अद्ल व इनसाफ़ ही हो, वह अल्लाह तआला ही है जिसे चाहे हिदायत दे जिसे चाहे न दे। जिस पर चाहे रहम करे, जिसे चाहे अज़ाब करे। उसके हुक्म व अद्ल में कोई उसका शरीक नहीं, वह ख़ुदा अपनी क़ुदरतें लोगों पर ज़ाहिर करता है। ज़मीन और आसमान में उसकी तौहीद की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं जिनसे साफ़ ज़ाहिर है कि सबका ख़ालिक़, सबका मालिक, सबका पालनहार और हिफ़ाज़त करनेवाला वही है। वह आसमान से रोज़ी यानी बारिश नाज़िल फ़रमाता है जिससे हर क़िस्म के अनाज की खेतियाँ और तरह-तरह के अजीब-अजीब मज़े के मुख़्तलिफ़ रंग-रूप और शकल व वज़अ के मेवे और फल-फूल पैदा होते हैं हालाँकि पानी एक, ज़मीन एक। पस इससे भी उसकी शान ज़ाहिर है, सच तो यह है कि इबरत, नसीहत, फ़िक्र व ग़ौर की तौफ़ीक़ उन ही को होती है जो ख़ुदा की तरफ़ रग़बत व रुजूअ करनेवाले हों।

﴾65﴿

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ﴿٢١﴾

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम्, कानू हुम् अशद्-द

मिन्हुम् क़ुव्व-तंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनुबिहिम्, व मा का-न लहुम्-मिनल्लाहि मिंव्वाक़। (21)

तर्जमा : क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते जो लोग इनसे पहले थे उनका नतीजा कैसा कुछ हुआ? वे बाएतिबारे-क़ुव्वत व ताक़त के और बाएतिबार ज़मीन में अपनी यादगारों के उनसे बहुत ज़्यादा थे, पस अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया और कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेता। (पारा 24, अल-मोमिन 21)

तशरीह : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी! क्या तेरी रिसालत के झुटलानेवाले कुफ़्फ़ार ने अपने से पहले के रसूलों के झुटलानेवाले कुफ़्फ़ार की हालतों का मुआयना इधर-उधर चल फिर कर नहीं किया? जो उनसे ज़्यादा क़वी, ताक़तवर और जुस्सावार थे जिनके मकानात और आलीशान इमारतों के खंडरात अब तक मौजूद हैं जो उनसे ज़्यादा बा-तम्कनत थे, इनसे बड़ी उमरोंवाले थे, जब उनके कुफ़्र और गुनाहों की वजह से अज़ाबे-इलाही उन पर आया तो न तो कोई उसे हटा सका, न किसी में मुक़ाबले की ताक़त पाई गई, न उससे बचने की कोई सूरत निकली। ग़ज़बे-ख़ुदा उन पर बरस पड़ने की बड़ी वजह यह हुई कि उनके पास भी उनके रसूल वाज़ेह दलीलें और साफ़ रौशन हुज्जतें लेकर आए बावजूद इसके उन्होंने कुफ़्र किया जिस पर ख़ुदा ने उन्हें हलाक कर दिया और कुफ़्फ़ार के लिए इन्हें बाइसे-इबरत बना दिया। ख़ुदाए-तआला पूरी क़ुव्वतवाला, सख़्त पकड़वाला, शदीद अज़ाबवाला है।

﴾66﴿

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ
رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ
الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ

قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरा, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन अलन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून। (61) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् .खालिक़ु कुल्लि शैइ ला इला-ह इल्ला हु, फ़-अन्ना तुअ्फ़कून। (62) कज़ालि-क युअ्-फ़कुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून। (63) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज क़रारंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-क़कुम्-मिनत्तय्यिबात, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम्, फ़-तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आलमीन। (64) हुवल्-हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन। (65)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए रात बना दी कि तुम इसमें आराम हासिल करो और दिन को देखनेवाला बना दिया, बेशक अल्लाह तआला लोगों पर फ़ज़्ल व करमवाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ारी नहीं करते, यही अल्लाह है तुम सबका रब, हर चीज़ का ख़ालिक़, उसके सिवा कोई माबूद नहीं फिर कहाँ तुम फिर जाते हो। इसी तरह वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बना दिया। और तुम्हारी सूरतें बनाईं और बहुत अच्छी बनाईं और तुम्हें उम्दा-उम्दा चीज़ें खाने को अता फ़रमाईं, यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है, पस बहुत ही बरकतोंवाला अल्लाह है सारे जहाँ का परवरिश करनेवाला, वह ज़िन्दा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। पस तुम

ख़ालिस उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो, तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

(पारा 24, अल-मोमिन 61-65)

तशरीह : अल्लाह तआला अपना एहसान बयान फ़रमाता है कि उसने रात को सुकून व राहत की चीज़ बनाई और दिन को रौशन चमकीला किया ताकि हर शख़्स को अपने काम काज में, सफ़र में, तलबे-मआश में सहूलत हो और दिन भर का कसल और थकान रात के सुकून व आराम से उतर जाए। मख़लूक़ पर अल्लाह तआला बड़े ही फ़ज़ल व करम करनेवाला है लेकिन अक्सर लोग रब की नेमतों की नाशुक्री करते हैं, इन चीज़ों को पैदा करनेवाला और यह राहत व आराम के सामान मुहैया कर देनेवाला वही अल्लाह वाहिद है जो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है, उसके सिवा कोई लायक़े-इबादत नहीं। न उसके सिवा और कोई मख़लूक़ हैं, किसी चीज़ को उन्होंने पैदा नहीं किया बल्कि जिन बुतों की तुम परस्तिश कर रहे हो वह तो ख़ुद तुम्हारे अपने हाथों के घड़े हुए हैं। उनसे पहले के मुशरिकीन भी उसी तरह बहके और बेदलील व हुज्जत ग़ैर ख़ुदा की इबादत करने लगे। ख़ाहिशे-नफ़सानी को सामने रखकर दलाइले-ख़ुदा की तकज़ीब की और जिहालत को आगे रख कर बहकते-भटकते रहे। अल्लाह तआला ने ज़मीन को तुम्हारे लिए क़रारगाह बनाई। यानी ठहरी हुई और फ़र्श की तरह बिछी हुई कि इस पर तुम अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो, चलो-फिरो और आओ-जाओ। पहाड़ों को इसमें गाड़कर उसे ठहरा दिया कि अब हिल-जुल नहीं सकती। उसने आसमान को छत बनाया जो हर तरह महफ़ूज़ है। उसी ने तुम्हें बेहतरीन सूरतों में पैदा किया। हर जोड़ ठीक-ठाक और नज़र फ़रेब बनाया। मौज़ूँ क़ामत, मुनासिब आज़ा सुडौल बदन ख़ूबसूरत चेहरा अता फ़रमाया। नफ़ीस और बेहतर चीज़ें खाने-पीने को दीं। पैदा उसने किया, बसाया उसने, खिलाया-पिलाया उसने, पहनाया-ओढ़ाया उसने। पस सही मानी में ख़ालिक़ व राज़िक़ वही रब्बुल आलमीन

है। जैसे सूरा बक़रा में फ़रमाया यानी लोगो, अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे अगलों को पैदा किया ताकि तुम बचो। उसी ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया, और आसमान से बारिश नाज़िल फ़रमा कर उसकी वजह से ज़मीन से फल निकाल कर तुम्हें रोज़ियाँ दीं, पस तुम बावुजूद इन बातों के जानने के अल्लाह के शरीक औरों को न बनाओ। यहाँ भी अपनी ये सिफ़तें बयान फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया कि यही अल्लाह तुम्हारा रब है और सारे जहाँ का रब भी वही है। वह बाबरकत है। वह बुलन्दी पाकीज़गी बरतरी और बुज़ुर्गी वाला है। वह अज़ल से है, अबद तक रहेगा। वह ज़िन्दा है जिस पर कभी मौत नहीं, वही अव्वल व आख़िर, ज़ाहिर व बातिन है। उसका कोई वस्फ़ किसी दूसरे में नहीं। उसका नज़ीर व अदील कोई नहीं।

﴾67﴿

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

हुवल्लज़ी .ख़-ल-क़कुम्-मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लि-तकूनू शुयूख़ा, व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लि-तब्लुग़ू अ-जलम्-मुसम्मंव्-व लअल्लकुम् तअ्क़िलून। (67) हुवल्लज़ी युह्यी व युमीत, फ़-इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून।(68)

तर्जमा : वह वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून के तोथड़े से पैदा किया फिर तुम्हें बच्चे की सूरत में निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है कि) तुम अपनी पूरी क़ुव्वत को पहुँच जाओ

फिर बूढ़े हो जाओ। तुममें से बाज़ उससे पहले ही फ़ौत हो जाते हैं, (वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम मौत मुअय्यन तक पहुँच जाओ और ताकि तुम सोच-समझ लो। (पारा 24, अल-मोमिन 67-68)

तशरीह : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम इन मुशरिकों से कह दो कि अल्लाह तआला अपने सिवा हर किसी की इबादत से अपनी मख़लूक़ को मना फ़रमा चुका है। उसके सिवा और कोई मुस्तहिक़ इबादत नहीं। उसकी बहुत बड़ी दलील उसके बाद की आयत है जिसमें फ़रमाया कि उसी 'वहदहू ला शरीक् लहू' ने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून की फुटकी से पैदा किया, उसी ने तुम्हें माँ के पेट से बच्चे की सूरत में निकाला। उन तमाम हालात को वही बदलता रहा। फिर उसी ने बचपन से जवानी तक तुम्हें पहुँचाया। वही जवानी के बाद बुढ़ापे तक ले जाएगा। ये सब काम उसी एक के हुक्म, तक़दीर और तदबीर से होते हैं फिर किस क़दर नामुरादी है कि उसके साथ दूसरे की इबादत की जाए। बाज़ उससे पहले ही फ़ौत हो जाते हैं यानी कच्चेपने में ही गिर जाते हैं। हमल साक़ित हो जाता है। बाज़ बचपन में, बाज़ जवानी में, बाज़ अधेड़ उमर में बुढ़ापे से पहले ही मर जाते हैं चुनांचे और जगह क़ुरआन पाक में है यानी हम माँ के पेट में ठहराते हैं जब तक चाहें। यहाँ फ़रमान है कि ताकि तुम वक़्ते-मुक़र्ररा तक पहुँच जाओ और तुम सोचो-समझो। यानी अपनी हालतों के इस इनक़िलाब से तुम ईमान ले ओ कि इस दुनिया के बाद भी तुम्हें नई ज़िन्दगी में एक रोज़ खड़ा होना है। वही जिलानें मारनेवाला है। उसके सिवा कोई मौत ज़ीस्त पर क़ादिर नहीं। उसके किसी हुक्म को, किसी फ़ैसले को, किसी तक़र्रुर को, किसी इरादे को कोई तोड़नेवाला नहीं, जो वह चाहता है होकर ही रहता है और जो वे न चाहे नामुमकिन है कि वह हो जाए।

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लि-तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून। (79) व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लि-तब्लुग़ू अलैहा हा-जतन् फ़ी सुदूरिकुम् व अलैहा व अलल्-फ़ुल्कि तुह्मलून। (80) व युरीकुम् आयातिही, फ़-अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून। (81)

तर्जमा : अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किए जिनमें से बाज़ पर तुम सवार होते और बाज़ को तुम खाते हो और भी तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से नफ़े हैं और ताकि अपने सीनों में छिपी हुई हाजतों को उन्हीं पर सवारी करके तुम हासिल कर लो और उन चौपायों पर और कश्तियों पर सवार किए जाते हो, अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है, पस तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों के मुनकिर बनते रहोगे।

(पारा 24, अल-मोमिन 79-81)

तशरीह : यानी ऊँट, गाए, बकरी ख़ुदाए-तआला ने इनसान के तरह-त्तरह के नफ़े के लिए पैदा किए हैं, सवारियों के काम आते हैं, खाए जाते हैं। ऊँट सवारी का काम भी दे, दूध भी दे, बोझ भी ढोए और दूर-दराज़ के सफ़र बआसानी तय करा दे। गाए का गोश्त खाने के काम भी, आए दूध भी दे, हल में भी जुते। बकरी का गोश्त भी खाया जाए और दूध भी पिया जाए फिर उन सबके बाल बीसियों कामों में आएं जैसे कि सूरा अनआम, सूरा नहल वग़ैरह में बयान हो चुका है। यहाँ भी यह मुनाफ़ा बतौर इनाम गिनवाए जा रहे हैं। दुनिया-जहान में और उसके गोशे में और कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे में और ख़ुद तुम्हारी जानों में उस ख़ुदा की निशानियाँ मौजूद हैं। सच

तो यह है कि उसकी अनगिनत निशानियों में से एक का भी कोई शख़्स सही मानी में इनकारी नहीं हो सकता।

﴾69﴿

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم
مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग़्ना अन्हुम्-मा कानू यक्सिबून। (82)

तर्जमा : क्या उन्होंने ज़मीन में चल-फिर कर अपने से पहलों का अंजाम नहीं देखा? जो उनसे तादाद में ज़्यादा थे, क़ुव्वत में सख़्त और ज़मीन में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं, उनके लिए कामों ने उन्हें कुछ भी फ़ायदा न पहुँचाया। (पारा 24, अल-मोमिन 82)

तशरीह : अल्लाह तआला इन अगले लोगों की ख़बर दे रहा है जो रसूलों को उससे पहले झुटला चुके हैं। साथ ही बतलाता है कि उसका नतीजा क्या कुछ उन्होंने भुगता। बावजूद यह कि वे क़वी थे, ज़्यादा थे, ज़मीन में निशानात इमारतें वग़ैरह भी ज़्यादा रखनेवाले थे और बड़े मालदार थे, लेकिन कोई चीज़ उनके काम न आई, किसी ने अल्लाह के अज़ाब को दफ़ा किया, न कम किया न हटाया न टाला। ये थे ही ग़ारत किए जाने के क़ाबिल।

﴾70﴿

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ
مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا
آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्सा-अह्, व मा तख़्रुजु मिन्

स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिह्, व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई क़ालू आज़न्ना-क मा मिन्ना मिन् शहीद। (47)

तर्जमा : क़ियामत का इल्म अल्लाह ही की तरफ़ लौटाया जाता है और जो-जो फल अपने शगूफ़ों में से निकालते हैं और जो मादा हमल से होती है और जो बच्चे वह जन्नती है सबका इल्म उसे है और जिस दिन अल्लाह तआला इन (मुशरिकों) को बुलाकर दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं, वे जवाब देंगे कि हम ने तो तुझे कह सुनाया कि हममें से तो कोई उसका गवाह नहीं।

(पारा 25, हामीम सजदा 47)

तशरीह : अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है कि क़ियामत कब आएगी? उसका इल्म उसके सिवा किसी और को नहीं। तमाम इनसानों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल॰) से जब फ़रिश्तों के सरदारों में से एक सरदार हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने क़ियामत के आने का वक़्त पूछा, तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जिससे पूछा जाता है वह भी पूछनेवाले से ज़्यादा जाननेवाला नहीं। मतलब यही है कि क़ियामत के वक़्त को अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं जानता। फिर फ़रमाता है कि हर चीज़ को उस ख़ुदा तआला का इल्म घेरे हुए है, यहाँ तक कि जो फल शगूफ़ा खिलाकर निकले, जिस औरत को हमल रहे, जो बच्चा उसे हो सब उसके इल्म में है, ज़मीन व आसमान का एक ज़र्रा उसके वसीअ इल्म से बाहर नहीं। और आयत में है यानी जो पत्ता झड़ता है उसे भी वह जानता है। हर मादा को जो हमल रहता है और रहम जो कुछ घटाते-बढ़ाते रहते हैं, ख़ुदा तआला ख़ूब जानता है, उसके पास हर चीज़ का अन्दाज़ा है। उमरें जो घटी-बढ़ीं वह भी किताब में लिखी हुई हैं। ऐसा कोई काम नहीं जो ख़ुदा तआला पर मुश्किल हो। क़ियामत के दिन मुशरिकों से तमाम मख़लूक़ के सामने अल्लाह तआला सवाल करेगा कि जिन्हें तुम मेरे साथ परस्तिश में शरीक करते थे वे आज कहाँ हैं? वे जवाब देंगे कि हम तो तुझे मालूम करा चुके कि आज

तो हममें से कोई भी उसका इक़रार न करेगा कि कोई तेरा शरीक भी है। आज उनके माबूदाने-बातिल सब गुम हो जाएंगे। कोई नज़र न आएगा जो उन्हें नफ़ा पहुँचा सके और ये ख़ुद जान लेंगे कि आज ख़ुदा तआला के अज़ाबों से छुटकारे की सूरत नहीं।

﴾71﴿

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٥٣

सनुरीहिम् आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-तबय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़, अ-व लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद। (53)

तर्जमा : अनक़रीब हम इन्हें अपनी निशानियाँ आफ़ाक़े आलम में भी दिखाएंगे और ख़ुद उनकी ज़ात में भी, यहाँ तक कि उनपर खुल जाए कि हक़ यही है, क्या आपके रब का हर चीज़ से वाक़िफ़, आगाह होना काफ़ी नहीं। (पारा 25, हा-मीम सजदा 53)

तशरीह : अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है कि क़ुरआन करीम की हक़्क़ानियत की निशानियाँ और हुज्जतें उन्हें उनके गिर्दो-नवाह में दुनिया के चौतरफ़ दिखा देंगे। इस्लामियों को फ़तूहात होंगी। वे सुल्तान बनेंगे। तमाम और दीनों पर इस दीन को ग़ल्बा होगा। फ़तहे-बद्र और फ़तहे-मक्का की निशानियाँ ख़ुद उनकी अपनी जानों में होंगी कि ये लोग तादाद में और शान व शौकत में बहुत ज़्यादा होंगे फिर भी मुट्ठी भर अहले-हक़ इन्हें ज़ेरो-ज़बर कर देंगे और मुमकिन है यह मुराद हो कि हिकमत ख़ुदा तआला की हज़ारहा निशानियाँ ख़ुद इनसान के अपने वुजूद में मौजूद हैं। उसकी सिनअत व बनावट, उसकी तरकीब व जिबिल्लत, उसके जुदागाना अख़लाक़ और मुख़्तलिफ़ सूरतें और रंग व रूप वग़ैरह उसके ख़ालिक़ व सानेअ की बेहतरीन यादगारें हर वक़्त उसके सामने हैं, बल्कि उसकी अपनी ज़ात में मौजूद हैं, उसका हेर-फेर कभी कोई हालत बचपन, जवानी, बुढ़ापा, बीमारी, तन्दुरुस्ती, तंगी, फ़राख़ी, रंज-राहत वग़ैरह

औसाफ़ जो उस पर तारी होते हैं, अलग़रज़ यह बेरूनी और अन्दरूनी आयात क़ुदरत इस क़दर हैं कि इनसान ख़ुदा की बातों की हक़्क़ानियत के मानने पर मजबूर हो जाता है, अल्लाह तआला की गवाही बस है और बिल्कुल काफ़ी है, वह अपने बन्दों के अक़वाल व अफ़आल से वाक़िफ़ है।

﴾72﴿

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़, व हुवल् अलिय्युल्-अज़ीम। (4)

तर्जमा : आसमानों की (तमाम) चीज़ें और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है, वह बरतर और अज़ीमुश्शान है।

(पारा 25, शूरा 4)

तशरीह : फिर फ़रमाता है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़लूक़ उसकी ग़ुलाम है उसकी मिल्कीयत है। उसके दबाव तले और उसके सामने आजिज़ व मजबूर है। वह बुलन्दियोंवाला और बड़ाइयों वाला है। वह बहुत बड़ा और बहुत बुलन्द है। वह ऊँचाईवाला और किबरियाईवाला है। उसकी अज़मत व जलालत का यह हाल है कि क़रीब से आसमान फट पड़ें, फ़रिश्ते उसकी अज़मत से कपकपाए हुए उसकी पाकी और तारीफ़ बयान करते रहते हैं और ज़मीनवालों के लिए मग़फ़िरत तलाश करते रहते हैं। जैसे और जगह इरशाद है 'अल्लज़ी-न यहमिलूनल अर-श व मन हौलहु....' यानी हामिलाने-अर्श और उस क़ुर्ब व जवार के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह और हम्द बयान करते रहते हैं, उस पर ईमान रखते हैं और ईमानवालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब तूने अपनी रहमत व इल्म से हर चीज़ को घेर रखा है, पस तू इन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबा की है और तेरे रास्ते के ताबे हैं। इन्हें अज़ाबे-जहन्नम से भी बचा ले। फिर फ़रमाया कि जान लो अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾

फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़, ज-अ-ल लकुम्-मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व मिनल्-अन्आमि अज़्वाजन् यज़्-रउकुम् फ़ीहि, लै-स कमिस्लही शैउ, व हुवस्समीअुल्-बसीर। (11) लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़, यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्-यशा-उ व यक्दिर, इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अलीम। (12)

तर्जमाः वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करनेवाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बना दिए हैं और चौपायों के जोड़े बनाए हैं, तुम्हें वह इसमें फैला रहा है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह सुनने और देखनेवाला है, आसमानों और ज़मीन की कुंजिया उसी की हैं, जिसकी चाहे रोज़ी कुशादा कर दे। और तंग कर दे यक़ीनन वह हर चीज़ को जाननेवाला है।

(पारा 25, शूरा 11-12)

तशरीह : फिर फ़रमाता है कि वह अल्लाह जो हर चीज़ पर हाकिम है वही मेरा रब है, मेरा तवक्कुल उसी पर है और अपने तमाम काम उसी पर सौंपता हूँ और हर वक़्त उसी की जानिब रुजूअ करता हूँ। वह आसमान व ज़मीन और उसके दरम्यान की कुल मख़लूक़ का ख़ालिक़ है। उसका एहसान देखो कि उसने तुम्हारी ही जिंस और तुम्हारी ही शक्ल के तुम्हारे जोड़े बना दिए यानी मर्द व औरत और चौपायों के भी जोड़े पैदा किए जो आठ हैं। वह उसी पैदाइश में तुम्हें पैदा करता है यानी उसी सिफ़त पर यानी जोड़-जोड़ पैदा करता जा रहा है। नसलें की नसलें फैला दीं। क़रनों गुज़र गए और सिलसिला उसी तरह चला आ रहा है। इधर इनसानों का उधर

जानबरों को। बग़वी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, मुराद रहम में पैदा करना है, बाज़ कहते हैं पेट में। बाज़ कहते हैं कि उसी तरीक़ पर फैलाना है। हज़रत मुजाहिद रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नसलें फैलानी मुराद हैं, हक़ यह है कि ख़ालिक़ जैसा और कोई नहीं, वह फ़र्द व समद है, वह बेनज़ीर है। वह समीअ व बसीर है। आसमान व ज़मीन की कुंजियाँ उसी के हाथों में हैं। मक़सद यह है कि सारे आलम का मुतसर्रिफ़, मालिक, हाकिम वही यकता ला शरीक है। जिसे चाहे कुशादा रोज़ी दे। जिस पर चाहे तंगी कर दे। उसका कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं। किसी हालत में वह किसी पर ज़ुल्म करने वाला नहीं, उसका वसीअ इल्म सारी मख़लूक़ को घेरे हुए है।

﴾74﴿

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۞ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۞

व हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स मिम्बअ़दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह्म-तह, व हुवल् वलिय्युल्-हमीद। (28) व मिन् आयातिही .ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस़्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बह्, व हु-व अ़ला जम्अिहिम् इज़ा यशा-उ क़दीर।(29)

तर्जमा : और वही है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है। वही है कारसाज़ और क़ाबिले-हम्द व सना और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश है और उनमें जानदारों का फैलाना है। वह उस पर भी क़ादिर है कि जब चाहे उन्हें जमा कर दे।

(पारा 25, अश-शूरा 28-29)

तशरीह : फिर इरशाद होता है कि लोग बाराने-रहमत का इन्तिज़ार करते-करते मायूस हो जाते हैं, ऐसी पूरी हाजत और सख़्त मुसीबत के वक़्त में बारिश बरसाता हूँ, उनकी नाउम्मीदी और ख़ुश्क

साली कट जाती है और आम तौर पर मेरी रहमत फैल जाती है। अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन फ़ारूक़े-आज़म हज़रत उमर-बिन-ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु से एक शख़्स कहता है, अमीरुल-मोमिनीन क़हतसाली हो गई और अब तो लोग बारिश से बिल्कुल मायूस हो गए तो आपने फ़रमाया, जाओ अब बारिश इनशा-अल्लाह ज़रूर होगी। फिर इसी आयत की तिलावत की, वह वली व हमीद है यानी मख़लूक़ात के तसर्रुफ़ात उसी के क़ब्ज़े में हैं, उसके काम क़ाबिले-सताइश व तारीफ़ हैं, मख़लूक़ के भले को वह जानता है और उनके नफ़े का उसे इल्म है। उसके काम नफ़े से ख़ाली नहीं, अल्लाह तआला की अज़मत व क़ुदरत और सल्तनत का बयान हो रहा है कि आसमान व ज़मीन उसी का पैदा किया हुआ है। और उनमें की सारी मख़लूक़ भी उसी की रचाई हुई है। फ़रिश्ते, इनसान, जिन्नात और मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के हैवानात जो कोने-कोने में फैले हुए हैं क़ियामत के दिन वे उन सबको एक ही मैदान में जमा करेगा। जब कि उनके हवास उड़े हुए होंगे और उनमें अद्ल व इनसाफ़ किया जाएगा।

﴾75﴿

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾

व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्-बह्रि कल्-अअ्लाम, (32) इंय्य-शअ् युस्किनिर्-री-ह फ़-यज़्लल्-न रवाकि-द अला ज़हरिह्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर। (33)

तर्जमा : और दरिया में चलनेवाली पहाड़ों जैसी कश्तियाँ उसकी निशानियों में से हैं। अगर वह चाहे तो हवा बन्द कर दे और ये कश्तियाँ समुन्दरों पर रुकी रह जाएँ। यक़ीनन हर सब्र करनेवाले शुक्रगुज़ार के लिए निशानियाँ हैं। (पारा 25, अश-शूरा 32-33)

तशरीह : अल्लाह तबारक व तआला अपनी क़ुदरत के निशान

अपनी मख़लूक़ के सामने रखता है कि उसने समुन्दरों को मुसख़्ख़र कर रखा है ताकि कश्तियाँ बराबर आएँ-जाएँ। बड़ी-बड़ी कश्तियाँ समुन्दरों में ऐसी ही मालूम होती हैं जैसे ज़मीन में ऊँचे पहाड़। इन कश्तियों को इधर से उधर ले जानेवाली हवाएँ उसके क़ब्ज़े में हैं, अगर वह चाहे तो इन हवाओं को रोक ले। फिर तो बादबान बेकार हो जाएँ और कश्ती रुक कर खड़ी हो जाए। हर एक वह शख़्स जो सख़्तियों में सब्र का और आसानियों में शुक्र का आदी हो उसके लिए तो बड़ी इबरत की जा है। वह रब तआला की अज़ीमुश्शान क़ुदरत और उसकी बेपायाँ सल्तनत को इन निशानों से समझ सकता है और जिस तरह हवाएँ बन्द करके कश्तियों को खड़ा कर लेना और रोक लेना उसके बस में है उसी तरह इन पहाड़ों जैसी कश्तियों को दम भर में डुबो देना भी उसके हाथ में है। अगर वह चाहे तो अहले-कश्ती के गुनाहों के बाइस उन्हें ग़र्क़ कर दे। अभी तो वह बहुत-से गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा लेता है और अगर सब गुनाहों पर पकड़े तो जो भी कश्ती में बैठे सीधा समुन्दर में डूबे। लेकिन उसकी बेपायाँ रहमत उनको इस पार से उस पार कर देती है। उलमाए-तफ़सीर ने यह फ़रमाया है कि अगर वह चाहे तो इसी हवा को नामुवाफ़िक़ कर दे। तेज़ व तुन्द आँधी चला दे जो कश्ती को सीधी राह चलने ही न दे। इधर से उधर कर दे, संभाले न संभल सके। जहाँ जाना है उस तरफ़ जा ही न सके और यूँ ही सरगश्ता व हैरान हो-होकर अहले-कश्ती तबाह हो जाएँ। अलग़रज़ अगर बन्द कर दे तो खड़े-खड़े नाकाम रहें। अगर तेज़ कर दे तो नाकामी लेकिन यह उसका लुत्फ़ व करम है कि ख़ुशगवार मुवाफ़िक़ हवाएँ चलाता है। और लम्बे-लम्बे सफ़र इन कश्तियों के ज़रिए बनी आदम तय करता है और अपने मक़सद को पा लेता है। यही हाल पानी का है कि अगर बिल्कुल न बरसाए, ख़ुश्क साली रहे तो दुनिया तबाह हो जाए, अगर बहुत ही बरसा दे तो तर साली कोई चीज़ पैदा न होने दे और दुनिया हलाक हो जाए। साथ ही मेंह की कसरते तुग़यानी का, मकानों के गिरने का और पूरी बरबादी का सबब बन

जाए। यहाँ तक कि रब तआला की मेहरबानी से जिन शहरों में और जिन ज़मीनों में ज़्यादा बारिश की ज़रूरत है वहाँ कसरत से मेंह बरसता है और जहाँ कम की ज़रूरत है वहाँ कमी से। फिर फ़रमाता है कि हमारी निशानियों में झगड़नेवाले ऐसे मौक़ों पर तो मान लेते हैं कि यह हमारी क़ुदरत से बाहर नहीं। हम अगर इन्तिक़ाम लेना चाहें, हम अगर अज़ाब करना चाहें तो छूट नहीं सकते। सब हमारी क़ुदरत और मशीयत तले हैं।

﴾76﴿

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَاۗءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, य-हबु लिमंय्यशा-उ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशा-उज़्-ज़ुकूर। (49) औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक्रानंव्-व इनासा, व यज्अलु मंय्यशा-उ अक़ीमा, इन्नहू अलीमुन् क़दीर। (50)

तर्जमा : आसमानों की और ज़मीन की सल्तनत अल्लाह तआला ही के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है या उन्हें जमा कर देता है, बेटे भी और बेटियाँ भी और जिसे चाहे बाँझ कर देता है। वह बड़े इल्मवाला और कामिल क़ुदरतवाला है।

(पारा 25, अश-शूरा 49-50)

तशरीह : फ़रमाता है ख़ालिक़, मालिक और मुतसर्रिफ़ ज़मीन व आसमान का सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है, वह जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। जिसे चाहे दे, जिसे चाहे पैदा करे और बनाए जिसे चाहे सिर्फ़ लड़कियाँ दे जैसे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, और जिसे चाहे सिर्फ़ लड़के ही अता फ़रमाता है जैसे हज़रत इबराहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम, और जिसे चाहे लड़के-लड़कियाँ

सब कुछ देता है जैसे हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और जिसे चाहे ला वलद रखता है जैसे हज़रत याह्या और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। पस ये चार क़िस्में हुईं लड़कियोंवाले, लड़कोंवाले, दोनोंवाले और दोनों से ख़ाली हाथ, वह अलीम है, हर मुस्तहिक़ को जानता है, क़ादिर है जिस तरह का चाहे तफ़ावुत रखता है, पस यह मक़ाम भी मिस्ल इस फ़रमाने इलाही के है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में है ताकि हम इसे लोगों के लिए निशाने बनाएँ। यानी दलीले-क़ुदरत बनाएँ और दिखा दें कि हमने मख़लूक़ को चार तौर पर पैदा किया, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सिर्फ़ मिट्टी से हुए, न माँ न बाप, हज़रत हव्वा सिर्फ़ मर्द से पैदा हुईं। बाक़ी कुल इनसान मर्द व औरत दोनों से सिवाए हज़रत ईसा के कि वे सिर्फ़ औरत से बग़ैर मर्द के पैदा किए गए। पस आप अलैहिस्सलाम की पैदाइश से ये चारों क़िस्में पूरी हो गईं। पस यह मक़ाम माँ-बाप के बारे में। था और वह मक़ाम औलाद के बारे में इसकी की भी चार क़िस्में, और उसकी भी चार क़िस्में सुब्हानल्लाह। यह है उस ख़ुदा तआला के इल्म व क़ुदरत की निशानी।

﴾77﴿

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ
الْعَلِيْمُ ﴿۹﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ
بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ
لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ
تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا
هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

व ल-इन् स-अल्तहुम्-मन् .ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न .ख़-ल-क़हुन्नल्-अज़ीज़ुल्-अलीम। (9) अल्लज़ी

ज-अ-ल लंकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व ज-अ-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-लअल्लकुम् तह्तदून।(10) वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अम्-बि-क़-दर्, फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैता, कज़ालि-क तुख़्रजून (11) वल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ-ल लकुम्-मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आमि मा तर्-कबून। (12) लि-तस्तवू अला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अलैहि व तक़ूलू सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन। (13) व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून।(14)

तर्जमा : अगर आप इनसे दरयाफ़्त करें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो यक़ीनन उनका जवाब यही होगा कि इन्हें ग़ालिब व दाना (अल्लाह) ने ही पैदा किया है, वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श (बिछोना) बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते कर दिए ताकि तुम राह पा लिया करो। उसी ने आसमान से एक अन्दाज़े के मुताबिक़ पानी नाज़िल फ़रमाया, पस हमने उससे मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दिया। उसी तरह निकाले जाओगे। जिसने तमाम चीज़ों के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए कश्तियाँ बनाईं और चौपाए जानवर (पैदा किए) जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जम कर सवार हुआ करो फिर अपने रब की नेमत को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ, और कहो, पाक ज़ात है उसकी जिसने उसे हमारे बस में कर दिया। हालाँकि हमें उसे क़ाबू करने की ताक़त न थी और बिलयक़ीन हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जानेवाले हैं। (पारा 25, ज़ुख़रुफ़ 9-14)

तशरीह : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी! अगर तुम इन मुशरिकीन से दरयाफ़्त करो तो ये इस बात का इक़रार करेंगे कि ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है फिर भी उसकी वहदानियत को जानते और मानते उसकी इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं जिसने ज़मीन को फ़र्श और क़रारगाह, ठहरी

हुई और साबित व मज़बूत बनाई जिस पर तुम चलो-फिरो, रहो-सहो, उठो-बैठो, सोओ-जागो। हालाँकि यह ज़मीन ख़ुद पानी पर है। लेकिन मज़बूत पहाड़ों के साथ उसे हिलने-जुलने से रोक दिया गया है और उसमें रास्ते बना दिए हैं ताकि तुम एक शहर से दूसरे शहर को, एक मुल्क से दूसरे मुल्क को पहुँच सको। उसी ने आसमान से ऐसे अन्दाज़ से बारिश बरसाई जो किफ़ायत हो जाए, खेतियाँ और बाग़ात सर सब्ज़ रहें, फलें-फूलें और पानी तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के पीने में भी आए। फिर इससे मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा कर दी, ख़ुश्की-तरी से तब्दील हो गई, जंगल लहलहा उठे, फल-फूल उगने लगे और तरह-तरह ख़ुशगवार मेवे पैदा हो गए। फिर उसे दलील बनाई मुर्दा इनसानों के जी उठने की और फ़रमाया, उसी तरह तुम क़बरों से निकाले जाओगे। उसने हर क़िस्म के जोड़े पैदा किए। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हैवानात तुम्हारे नफ़े के लिए पैदा किए, कश्तियाँ समुन्दरों के सफ़र को, चौपाए जानवर ख़ुश्की के सफ़र को मुहैया कर दिए। उनमें से बहुत-से जानवरों के गोश्त तुम खाते हो, बहुत-से तुम्हें दूध देते हैं, बहुत-से तुम्हारी सवारियों में काम आते हैं, तुम्हारे बोझ ढोते हैं। तुम इनपर सवारियाँ लेते हो और ख़ूब मज़े से उनपर सवार होते हो, अब तुम्हें चाहिए कि जम कर बैठ जाने के बाद अपने रब तआला की नेमत को याद करो कि उसने कैसे-कैसे ताक़तवर वुजूद तुम्हारे क़ाबू में कर दिए और यूँ कहो कि वह ख़ुदा तआला पाक ज़ातवाला है जिसने उसे हमारे क़ाबू में कर दिया, अगर वह उसे हमारा मुतीअ् न करता तो हम इस क़ाबिल न थे, न हममें इतनी ताक़त थी, और हम अपनी मौत के बाद उसी की तरफ़ जानेवाले हैं। इस आमद व रफ़्त से और इस मुख़्तसर सफ़र से सफ़रे-आख़िरत याद करो। जैसे कि दुनिया के तोशे का ज़िक्र करके ख़ुदा तआला ने आख़िरत के तोशे की जानिब तवज्जोह दिलाई और फ़रमाया, तोशा ले लिया करो लेकिन बेहतरीन तोशा आख़िरत का तोशा है और दुनियावी लिबास के ज़िक्र के मौक़े पर उख़रवी लिबास

पर मुतवज्जेह किया और फ़रमाया, लिबास व तक़वा अफ़ज़ल व बेहतर है।

﴾78﴿

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

व हुवल्लज़ी फ़िस्समा-इ इलाहुंव्-व फ़िल्अर्ज़ि इलाह्, व हुवल् हकीमुल्-अलीम। (84) व तबा-रकल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, व अिन्दहू अिल्मुस्सा-अह्, व इलैहि तुर्जअून। (85) व ला यम्लिकुल्-लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिहिश्- शफ़ा-अ-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्लमून। (86) व ल-इन स-अल्-तहुम-मन् .ख-ल-क़हुम ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून। (87)

तर्जमा : वही आसमानों में माबूद है और ज़मीन में भी वही क़ाबिले-इबादत है और वह बड़ी हिकमतवाला और पूरे इल्मवाला है। और वह बहुत बरकतोंवाला है जिसके पास आसमान व ज़मीन और उनके दरमियान की बादशाहत है। और क़ियामत का इल्म भी उसके पास है। और उसी की जानिब तुम सब लौटाए जाओगे। जिन्हें ये लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे शफ़ाअत करने का इख़्तियार नहीं रखते, हाँ (मुस्तहिक़े शफ़ाअत वे हैं) जो बात का इक़रार करें और उन्हें इल्म भी हो। अगर आप उनसे दरयाफ़्त करें कि उन्हें किसने पैदा किया है? तो यक़ीनन ये जवाब देंगे कि अल्लाह ने, फिर ये कहाँ उल्टे जाते हैं। (पारा 25, ज़ुख़रुफ़ 84-87)

तशरीह : फिर ज़ाते-हक़ की बुज़ुर्गी और अज़मत व जलाल का

मज़ीद बयान होता है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़लूक़ात उसकी आबिद है, उसके सामने पस्त और आजिज़ है। वह हकीम व अलीम है। जैसे और आयत में है कि ज़मीन व आसमान में अल्लाह तआला वही है। हर पोशीदगी और ज़हिर को और तुम्हारे हर-हर अमल को जानता है। वह सबका ख़ालिक़ व मालिक, सबका रचाने और बचानेवाला, सबपर हुकूमत और सल्तनत रखनेवाला बड़ी बरकतोंवाला है। वह तमाम ऐबों से, कुल नुक़सानात से पाक है। वह सबका मालिक है, बुलन्दियों और अज़मतोंवाला है, कोई नहीं जो उसका हुक्म टाल सके, कोई नहीं जो उसकी मर्ज़ी बदल सके। हर एक पर क़ाबिज़ वही है। हर एक काम उसकी क़ुदरत के मातहत है, क़ियामत के आने के वक़्त को वही जानता है। उसके सिवा किसी को उसके आने के ठीक वक़्त का इल्म नहीं। सारी मख़लूक़ उसी की तरफ़ लौटाई जाएगी, वह हर एक को अपने-अपने आमाल का बदला देगा। फिर इरशाद होता है कि इन काफ़िरों के माबूदाने-बातिल जिन्हें ये अपना सिफ़ारिश ख़याल किए बैठे हैं, इनमें से कोई भी सिफ़ारिश के लिए आगे बढ़ नहीं सकता, किसी की शिफ़ाअत इन्हें काम न आएगी लेकिन जो शख़्स हक़ का इक़रारी और शाहिद हो और वह ख़ुद भी बसीरत व बसारत पर यानी इल्म व मारिफ़तवाला हो, उसे ख़ुदा तआला के हुक्म से नेक लोगों की शिफ़ाअत कारआमद होगी। इनसे अगर तू पूछे कि उनका ख़ालिक़ कौन है? तो ये इक़रार करेंगे कि अल्लाह तआला ही है। अफ़सोस कि ख़ालिक़ उसी एक को मान कर फिर इबादत दूसरों की भी करते हैं जो महज़ मजबूर और बिलकुल बेक़ुदरत हैं और कभी अपनी अक़्ल को काम में नहीं लाता कि जब पैदा उसी एक ने किया तो हम दूसरे की इबादत क्यों करें? जहालत व ग़बावत, कुन्दज़हनी और बेवक़ूफ़ी इतनी बढ़ गई है कि ऐसी सीधी सी बात मरते दम समझ में न आई, बल्कि समझाने से भी न समझे इसी लिए ताज्जुबन इरशाद हुआ कि इतना मानते हुए फिर क्यों औंधे हुए जाते हो!

إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝

इन्-न फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिल्-मुअ्मिनीन। (3) व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिंय्-यूक़िनून। (4) वख़्तिलाफ़िल-लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर्-रियाहि आयातुल्-लिक़ौमिंय्-यअ्क़िलून। (5) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अलै-क बिल्हक़्क़, फ़बि-अय्यि हदीसिम्-बअ्दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून। (6)

तर्जमा : आसमानों और ज़मीन में ईमानदारों के लिए यक़ीनन बहुत-सी निशानियाँ हैं, और ख़ुद तुम्हारी पैदाइश में और जानवरों के फैलाने में यक़ीन रखनेवाली क़ौम के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं और रात दिन के बदलने में और जो कुछ रोज़ी अल्लाह तआला आसमान से नाज़िल फ़रमाकर ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। (इसमें) और हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं निशानियाँ हैं। ये हैं अल्लाह की आयतें जिन्हें हम आपको रास्ती से सुना रहे हैं, पस अल्लाह तआला और उसकी आयतों के बाद ये किस बात पर ईमान लाएँगे।

(पारा 25, जासिया 3-6)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ को हिदायत फ़रमाता है कि वे क़ुदरत की निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र करें। ख़ुदा की नेमतों को जानें और पहचानें फिर उनका शुक्र बजा लाएँ। देखें कि

ख़ुदा कितनी बड़ी क़ुदरतोंवाला है जिसने आसमान व ज़मीन और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तमाम मख़लूक़ को पैदा किया है। फ़रिश्ते, जिन्न, इनसान, चौपाए, परिन्द, जंगली जानवर, दरिन्द, कीड़े, पतिंगे सब उसी के पैदा किए हुए हैं। समुन्दर की बेशुमार मख़लूक़ का ख़ालिक़ भी वही एक है, दिन को रात के बाद और रात को दिन के पीछे वही ला रहा है। रात का अन्धेरा, दिन का उजाला उसी के क़ब्ज़े की चीज़ें हैं। हाजत के वक़्त अन्दाज़ के मुताबिक़ बादलों से पानी वही बरसाता है। रिज़्क़ से मुराद बारिश है इसलिए कि उसी से खाने की चीज़ें उगती हैं। ख़ुश्क बंजर ज़मीन सब्ज़ व शादाब हो जाती हैं और तरह-तरह की पैदावार उगाती हैं। शुमाली-जुनूबी, पुरवा पछवा तर व ख़ुश्क, कम व बेश, रात और दिन की हवाएँ वही चलाता है। बाज़ हवाएँ बारिश को लाती हैं। बाज़ बादलों को पानीवाला कर देती हैं। बाज़ रूह की ग़िज़ा बनती हैं और उनके सिवा और कामों के लिए चलती हैं। पहले फ़रमाया कि उसमें ईमानवालों के लिए निशानियाँ हैं, फिर यक़ीनवालों के लिए फ़रमाया, फिर अक़्लवालों के लिए फ़रमाया, यह एक इज़्ज़तवाले हाल से दूसरे इज़्ज़तवाले हाल की तरफ़ तरक़्क़ी करना है। इसी मिस्ल सूरा बक़रा की आयत 'इन्ना फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल-अर्ज़ि' है। इमाम इब्ने-अबी हातिम ने यहाँ पर एक तवील असर वारिद किया है, उसमें इनसान को चार क़िस्म के इख़्लात से पैदा करना भी है, मतलब यह है कि क़ुरआन जो हक़ की तरफ़ से निहायत सफ़ाई और वज़ाहत से नाज़िल हुआ है, उसकी आयतें तुझ पर तिलावत की जा रही हैं जिसे ये सुन रहे हैं और फिर भी न ईमान लाते हैं, न अमल करते हैं, तो फिर आख़िर ईमान किस चीज़ पर लाएँगे।

﴾80﴿

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़-र लकुमुल्-बह्-र लितज्रि-यल्-फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअल्लकुम् तश्कुरून। (12) व सख़्ख़-र लकुम्-मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअम्-मिन्हु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून। (13)

तर्जमा : अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को ताबेअ बना दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र बजा लाओ और आसमान व ज़मीन की हर-हर चीज़ को भी उसने अपनी तरफ़ से तुम्हारे लिए ताबेअ कर दिया है, जो ग़ौर करें यक़ीनन वे उसमें बहुत-सी निशानियाँ पा लेंगे। (पारा 25, जासिया 12-13)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी नेमतें बयान फ़रमा रहा है, उसी के हुक्म से समुन्दर में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ सफ़र तय करते हो, बड़ी-बड़ी कश्तियाँ माल से और सवारी से लदी हुई इधर-से उधर ले जाते हो। तिजारतें और कमाई करते हो। ये इसलिए भी है कि शुक्रे-ख़ुदा बजा लाओ, नफ़ा हासिल करके रब का एहसान मानो। फिर उसने आसमान की चीज़ जैसे सूरज, चाँद, सितारे और ज़मीन की चीज़ जैसे पहाड़, नहरें और तुम्हारे फ़ायदे की बेशुमार चीज़ें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दीं। यह सब उसका फ़ज़्ल व एहसान, इनआम व इकराम है। और उसी एक की तरफ़ से है। जैसे इरशाद है। यानी तुम्हारे पास जो नेमतें हैं सब ख़ुदा की दी हुई हैं। और अब भी तुम सख़्ती के वक़्त उसकी तरफ़ गिड़गिड़ते हो।

हज़रत इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हर चीज़ अल्लाह ही की तरफ़ से है और यह नाम उसके नामों में से है। पस ये सब उसी की जानिब से है। कोई नहीं जो उससे छीना-झपटी या झगड़ा कर सके। हर एक इस यक़ीन पर है कि वह उसी तरह है। एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-उमर से सवाल किया कि मख़लूक़ किस चीज़ से बनाई गई है। आपने फ़रमाया, नूर से और आग से और अन्धेरे से और मिट्टी से और कहा, जाओ

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु को अगर देखो तो उनसे भी दरियाफ़्त कर लो। उसने आप से भी पूछा। यही जवाब पाया। फिर फ़रमाया, वापस उनके पास जाओ और पूछो कि ये सब किस चीज़ से पैदा किए गए। वह लौटा और सवाल किया तो आपने यही आयत पढ़ सुनाई। ग़ौर-फ़िक्र रखनेवालों के लिए इसमें भी बहुत निशानियाँ हैं।

﴾81﴿

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

फ़लिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आलमीन। (36) व लहुल्-किब्रिया-उ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम। (37)

तर्जमा : पस अल्लाह की तारीफ़ है जो आसमानों और ज़मीन और तमाम जहान का पालनहार है। तमाम (बुज़ुर्गी और) बड़ाई आसमानों और ज़मीन में उसी की है और वही ग़ालिब और हिकमतवाला है। (पारा 25, जासिया 36-37)

तशरीह : अब इरशाद फ़रमाता है कि तमाम हम्द ज़मीन व आसमान और हर चीज़ के मालिक अल्लाह तआला के लिए है जो कुल जहाँ का पालनहार है। उसी की किबरियाई यानी सल्तनत और बड़ाई आसमानों और ज़मीन में है। वह बड़ी अज़मत और बुज़ुर्गी वाला है। हर चीज़ उसके सामने पस्त है। हर एक उसका मोहताज है।

सहीह मुस्लिम शरीफ़ की हदीस क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, अज़मत मेरा तहबन्द है और किबरियाई मेरी चादर है, जो शख़्स इनमें से किसी को भी मुझसे लेना चाहेगा मैं उसे जहन्नम रसीद करूँगा यानी बड़ाई और तकब्बुर करनेवाला दोज़ख़ी है। वह अज़ीज़ है यानी ग़ालिब है जो कभी किसी से मग़लूब नहीं होने का। कोई नहीं जो उस पर रोक-टोक कर सके, उसके सामने

पड़ सके। वह हकीम है। उसका कोई क़ौल, कोई फ़ेल, उसकी शरिअत का कोई मसला, उसकी लिखी हुई तक़दीर का कोई हरफ़ हिकमत से ख़ाली नहीं। वह बुलन्दी और बरतरीवाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, न उसके सिवा कोई मसजूद।

﴾82﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ① هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا وَاَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ② وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ③

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी .ख़-लक़स्- समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अलज़्-ज़ुलुमाति वन्नूर, सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ्दिलून। (1) हुवल्लज़ी .ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-जला, व अ-जलुम्-मुसम्मन् अिन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून। (2) व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़, यअ्लमु सिर्रकुम् व जह्रकुम् व यअ्लमु मा तक्सिबून।(3)

तर्जमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लायक़ हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और तारीकियों और नूर को बनाया फिर भी काफ़िर लोग (ग़ैरुल्लाह को) अपने रब के बराबर क़रार देते हैं। वह ऐसा है जिसने तुमको मिट्टी से बनाया फिर एक वक़्त मुअय्यन किया और (दूसरा) मुअय्यन वक़्त ख़ास अल्लाह ही के नज़दीक है। फिर भी तुम शक रखते हो। और वही है माबूदे-बरहक़ आसमानों में भी और ज़मीन में भी, वह तुम्हारे पोशीदा अहवाल को भी और तुम्हारे ज़ाहिर अहवाल को भी जानता है और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको भी जानता है।

(पारा-7, अनआम 1-3)

तशरीह : अल्लाह तआला अपने नफ़से-करीमा की मदह फ़रमाता है कि उसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया। गोया

कि बन्दों को हम्द करना सिखला रहा है। दिन में नूर को और रात में तारीकी को अपने बन्दों के लिए एक मुनफ़अत क़रार देता है। यहाँ लफ़्ज़ नूर को वाहिद लाया गया है और ज़ुलमात को जमा लाया गया है क्यों कि अशरफ़ चीज़ को वाहिद ही लाते हैं जैसे अल्लाह तआला का क़ौल है- 'अनिल यमीनि वशिशमाइल' और 'इन-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमा फ़त्तबिऊ वला तत्तबिउस्सबी-ल फ़तफ़र्रक़ु बिकुम अन सबीलिह' यहाँ भी यमीन वाहिद है और शमायल जमा है और अपने रास्ते को लफ़्ज़ सबील कह कर वाहिद लाया है और ग़लत रास्तों को सुबुल कह कर जमा लाया है। ग़र्ज़ यह कि बावजूद इसके बाज़ बन्दे कुफ़्र करते हैं और उसके लिए शरीक व अदील क़रार देते हैं। उसके बीवी और बच्चे बनाते हैं। ख़ुदाए-तआला इन बातों से मुनज़्ज़ा है। फिर फ़रमाता है, उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया। यानी तुम्हारे बाप आदम मिट्टी से बनाए गए थे और मिट्टी ही ने उनके गोश्त-पोस्त की शकल इख़्तियार की। फिर उन ही से लोग पैदा होकर मशरिक़ व मग़रिब में फैल गए फिर आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी उमर पूरी की और अपने मुक़र्ररह वक़्त मौत तक आन पहुँचे। अजले-ख़ास इनसान की उमर रवाँ है और अजले-आम से मुराद सारी दुनिया की उमर है। यानी दुनिया के ख़त्म होने और ज़वाल-पज़ीर होने तक और दारे-आख़िरत का वक़्त आने तक। इब्ने-अब्बास (रज़ि०) और मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि पहली अजल से मुराद मुद्दते-दुनिया है और अजले-मुसम्मा से मुराद उमरे-इनसान ता बवक़्ते मर्ग है। गोया कि वह ख़ुदा के इस क़ौल से माख़ूज़ है। 'वहुवल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम'.... यानी वह रात में तुमको मार देता है। और दिन में तुम जो कुछ करते हो उसे जानते हैं। और रात में तो तुम कुछ कर ही नहीं सकते। यानी नींद में होते हो जो क़ब्ज़ रूह की शक्ल में है। और फिर जागते हो तो अपने साथियों के पास गोया वापस आ जाते हो, इस वक़्त को सिवाए इसके और कोई नहीं जानता जैसे कि एक जगह फ़रमाया है कि

उसका इल्म ख़ुदा ही को है। उसका वक़्त ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं जान सकता और उसी तरह यह क़ौले-बारी है कि ऐ नबी! तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी? सो तुम्हें इसकी क्या ख़बर। उसका इल्म तो ख़ुदा ही को है। फिर आयते-ज़ेरे-ज़िक्र में इरशाद होता है कि तुम क़ियामत के बारे में शक करते हो, वही आसमानों और ज़मीनों का ख़ुदा तुम्हारी छिपी बातों को भी जानता है और खुली बातों को भी और तुम जो कुछ करते हो उससे अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

﴾83﴿

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝٦

अलम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अलैहिम् मिद्रारंव्-व जअल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्-बअ्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन। (6)

तर्जमा : क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम इनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं, जिनको हमने दुनिया में ऐसी क़ुव्वत दी थी कि तुमको वह क़ुव्वत नहीं दी और हमने उन पर ख़ूब बारिशें बरसाईं और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं। फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला और उनके बाद दूसरी जमाअतों को पैदा कर दिया। (पारा 7 अनआम 6)

तशरीह : अल्लाह इन्हें समझा रहा है और डरा रहा है कि पहले के लोगों ने जो उनसे ज़्यादा क़वी और कसीरुल-तादाद थे और अमवाल व औलाद भी ज़्यादा रखते थे, दौलत व हुकूमत भी हासिल थी, फिर भी उन्हें कैसा अज़ाब व निकाल पहुँचा था। इसी क़िस्म के

अज़ाब से तुम्हें भी साबिक़ा पड़ सकता है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने इनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर दिया है, जो दुनिया में बड़ी क़ुदरत रखते थे कि ऐसे अमवाल व औलाद व आमार और ऐसी शान व शौकत तुम्हें नसीब ही नहीं, आसमान से हम उनके लिए पानी बरसाते थे, कभी इन्हें क़हत से साबिक़ा नहीं पड़ा। हमने बाग़ात चश्मे और नहरें दे रखी थीं और इससे मक़सद इन्हें फ़क़त ढील देना था फिर इनके गुनाहों और नाफ़रमानियों के सबब इन्हें हलाक कर दिया। और इनकी जगह पर दूसरी क़ौमें आबाद कीं। पहले लोग तो जानेवाले दिन की तरह चले गए और दास्तान बन कर रह गए। लेकिन उनके बाद के लोगों ने भी पहले के लोगों की तरह अमल किया और साबिक़ा लोगों की तरह ये भी हलाक होकर रह गए। चुनांचे ऐ लोगो, इस बात से डरो कि तुम्हें भी कहीं ऐसे ही हालात से साबिक़ा न पड़े। तुमसे निमटना ख़ुदा के लिए इनसे ज़्यादा अहम काम तो नहीं। तुम्हारा रसूल जिसकी तुम तकज़ीब कर रहे हो तो यह तो उनके रसूल से भी ज़्यादा अकरम है, इसलिए अगर अल्लाह ख़ास तौर पर मेहरबानी व एहसान न करे तो तुम ज़्यादा उक़ूबत के मुस्तहिक़ हो।

﴾84﴿

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۗ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हू, व इंय्यम्सस्-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर।(17) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अिबादिही, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर। (18)

तर्जमा : और अगर तुझको अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो उसका दूर करनेवाला सिवाय अल्लाह तआला के और कोई नहीं। और अगर तुझको अल्लाह तआला कोई नफ़ा पहुँचाए तो वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखनेवाला है और वही अल्लाह अपने बन्दों के

ऊपर ग़ालिब है, बरतर है और वही बड़ी हिकमतवाला और पूरी ख़बर रखनेवाला है। (पारा 7, अनआम 17-18)

तशरीह : अल्लाह तआला ख़बर दे रहा है कि वह मालिके मज़र्रत व नफ़ा है, अपनी मख़लूक़ात में जैसे चाहे तसर्रुफ़ करे, उसकी हिकमत को न कोई पीछे डालनेवाला है न उसकी क़ज़ा को कोई रोकनेवाला है। अगर वह मज़र्रत को रोक दे तो कोई जारी करनेवाला नहीं और ख़ैर को जारी कर दे तो कोई रोकनेवाला नहीं। जैसे कि फ़रमाया 'यफ़तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रहमति' यानी ख़ुदा जिसे जो रहमत देना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता, और जिससे वह रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया 'वहुवल क़ाहिरु फ़ौ-क़ इबादिहि' यानी ख़ुदा वह है जिसके लिए लोगों के सिर झुक गए हैं। हर शै पर वह ग़ालिब है, उसकी अज़मत व किबरियाई और उलूए-क़द्र के सामने सब पस्त हैं। उसका हर फ़ेल हिकमत पर मुश्तमिल है, वह मवाज़ेअ अशया से बाख़बर है। अगर वह कुछ देता है तो मुस्तहिक़ ही को देता है, और रोक देता है तो ग़ैर-मुस्तहिक़ से रोक देता है।

﴾85﴿

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

व अिन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हू, व यअ्लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्रि, व मा तस्क़ुतु मिंव्‌-र-क़तिन् इल्ला यअ्लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्‌-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्‌-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम्‌-मुबीन। (59) व हुवल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम्

बिन्नहारि सुम्-म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम्-मुसम्मा, सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून। (60)

तर्जमा : और अल्लाह तआला ही के पास हैं ग़ैब की कुंजियाँ (ख़ज़ाने), उनको कोई नहीं जानता बजुज़ अल्लाह के। और वह तमाम चीज़ों को जानता है जो कुछ ख़ुश्की में हैं और जो कुछ दरियाओं में हैं और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के तारीक हिस्सों में नहीं पड़ता और न कोई तर और न कोई ख़ुश्क चीज़ गिरती है मगर यह सब किताबे-मुबीन में है और वह ऐसा है कि रात में तुम्हारी रूह को (एक गूना) क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो उसको जानता है फिर तुमको जगा उठाता है। ताकि मीआदे-मुअय्यन तमाम कर दी जाए। फिर उसी की तरफ़ तुमको जाना है फिर तुमको बतलाएगा जो कुछ तुम किया करते थे।

(पारा-7, अल-अनआम 59-60)

तशरीह : फिर इरशादे-बारी है कि ग़ैब की बातें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता, नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि ग़ैब की बातें पाँच हैं, वे ये कि क़ियामत का वक़्त ख़ुदा तआला के सिवा कोई नहीं जानता। दूसरे पानी का बरसना। तीसरे यह कि हमल में लड़का है या लड़की। चौथे यह कि कल कोई शख़्स क्या करनेवाला है, पाँचवें यह कि कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस मक़ाम में मरेगा। अल्लाह ही इन बातों से बाख़बर है।

हदीसे-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु में ही है कि जिबरील अलैहिस्सलाम एक वक़्त एक आराबी की शक्ल व सूरत में आप (सल्ल॰) के पास आए और ईमान व इस्लाम व एहसान के बारे में आप (सल्ल॰) से सवालात किए तो नबी (सल्ल॰) ने जवाब के ज़िमन में फ़रमाया था कि पाँच चीज़ों का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं। फिर आयत तिलावत की 'इन्नल्ला-ह इन्दहु इल्मुस्साअति' और

'व यअलमु मा फ़िलबर्रि वल-बहर' यानी उसका इल्म करीम जमीअ मौजूदात बर्री व बहरी पर मुहीत है। ज़मीन और आसमान का कोई ज़र्रा इससे मख़फ़ी नहीं, सरी-सरी ने क्या ख़ूब कहा है यानी ख़ुदा तआला से कोई ज़र्रा भी मख़फ़ी नहीं रह सकता, ख़्वाह देखनेवालों से कोई चीज़ खुली रहे या ढकी रहे।

अल्लाह तआला का फ़रमान 'व मा तसक़ुतु मिंव-व-रक़तिन इल्ला यअलमुहा' जब वह जमादात तक की हरकात को जानता है तो फिर हैवानात और ख़ुसूसन जिन्न व इंस की हरकात व आमाल को कैसे न जानेगा जब कि वे मुकल्लफ़ भी हैं। जैसे कि फ़रमाया 'यअलमु ख़ाइ-नतल ऐनि व मा तुख़फ़िस्सुदूर' बर्र व बहर के हर-हर शजर तक पर एक फ़रिश्ता मुवक्किल है जो पत्तों के गिरने तक की याद्दाश्त रखता है। किताब लौहे-महफ़ूज़ में हर रत्ब व याबिस, हर सीधी टेढ़ी बात और ज़मीन की तारीकियों के अन्दर का एक-एक ज़र्रा तक लिखा हुआ है, हर दरख़्त बल्कि सूई के नाके पर भी फ़रिश्ता मुक़र्रर है यानी लिखता है कि कब ये तरो-ताज़ा हुआ और कब सूख गया। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि अल्लाह ने दवात को पैदा किया और अलवाह पैदा किए और दुनिया में तमाम होनेवाले उमूर दर्ज किए कि कैसी मख़लूक़ पैदा होगी, रिज़्क़ उसको हलाल मिला या हराम, अमल उसका नेक होगा या बद। अम्र-बिन-अल-आस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तीसरी ज़मीन से नीचे और चौथी के ऊपर के जिन्नातों ने तुम्हारे लिए ज़ाहिर होना चाहा लेकिन उनका नूर और रौशनी किसी ज़ाविये से भी तुम्हें दिखाई न दे सकी। ये अल्लाह तआला की ख़वातीमं हैं कि हर ख़ातिम पर एक फ़रिश्ता है, अल्लाह तआला हर रोज़ एक फ़रिश्ता को भेज कर कहता है कि जो ख़ातिम तेरे हवाले है उसकी हिफ़ाज़त कर।

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि वे अपने बन्दों को रात के वक़्त बवक़्ते ख़्वाब वफ़ात देता है और ये वफ़ाते-असग़र है जैसा कि

फ़रमाया जब अल्लाह तआला ने कहा ऐ ईसा मैं तुम्हें वफ़ात देनेवाला हूँ और अपनी तरफ़ तुम्हें उठा लेनेवाला हूँ। और फ़रमाया कि अल्लाह तआला मौत के वक़्त नुफ़ूस को वफ़ात दे देता है और जो बहालते-ख़्वाब मर नहीं जाते हैं वे ऐसे नुफ़ूस होते हैं, उन पर तारी होनेवाली मौत रोक दी जाती है। और उन पर दूसरी मौत भेजी जाती है यानी नींद और ये मुक़र्ररह मौत तक होता रहता है। इस आयत में दो वफ़ातों का ज़िक्र किया गया है। एक मौते-कुबरा दूसरी मौते-सुग़रा, फिर इरशाद होता है कि वह रात के वक़्त तुमको वफ़ात दे देता है तुम कारोबार से रुक जाते हो लेकिन दिन में तुम अपने काम में लगे रहते हो और वह तुम्हारे दिन भर के आमाल को जानता है, यह एक जुमला है जो इस बात पर दलालत करता है कि अल्लाह तआला का इल्म अपनी मख़लूक़ पर कैसा मुहीत है, रात के वक़्त हालते-सुकून में और दिन में बहालत हरकात। जैसा कि फ़रमाया 'सवाउम्मिनकुम् मन अ-सर्रलक़ौ-ल वमन ज-ह-र बिहि व मन हु-व मुस्तख़फ़िन बिल्लैलि वसारिबुन बिन्नहार' यानी छिपा व खुला रात का या दिन का सब उमूर का उसे इल्म है। और फ़रमाया 'वमिर्रहमतिही ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र' यानी यह अल्लाह तआला की रहमत है कि तुम्हारे लिए दिन और रात बनाया ताकि रात में सुकून हासिल करो और दिन में कमाओ-खाओ और फ़रमाया कि हमने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया और दिन को तलबे-मआश का वक़्त। इसी लिए आयत ज़ेरे-ज़िक्र में फ़रमाता है कि रात को वह मार देता है और दिन में जो आमाल तुमने कर रखे हैं उन्हें जानता है। फिर इस ज़ाहिरी मौत के बाद दिन के वक़्त फिर तुम्हें जीता-जागता उठाता है। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि हर इनसान के साथ एक फ़रिश्ता होता है, जब वह सो जाए तो उसके नफ़्स को ले लेता है। और ख़ुदा के पास ले जाता है। अगर अल्लाह तआला फ़रमाए कि रोक रख तो रोक लेता है वरना फिर उसके जिस्म में वापस कर देता है। 'हुवल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम' का

यही मतलब है। अल्लाह तआला फ़रमाता है यानी हर शख़्स का मुक़र्ररह वक़्त पूरा हो जाने पर उसकी जान ख़ुदा तआला के पास पहुँचा दी जाती है। अल्लाह पाक उसको बतला देता है कि तू क्या अमल करता था और फिर उसका बदला देता है। ख़ैर हो तो ख़ैर का बदला, बद है तो बद और अल्लाह तआला फ़रमाता है 'व हुवल क़ाहिरु फ़ौ-क़ इबादिही' यानी वह हर चीज़ पर ग़ालिब है और हर शैय उसके सामने झुकी हुई है, उसने इनसान पर मलायका मुक़र्रर कर रखे हैं जो उसकी हर आन हिफ़ाज़त करते हैं जैसे कि फ़रमाया कि इनसान के आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं। जैसा कि फ़रमाया 'इन-न अलैकुम लहाफ़िज़ी-न' और फ़रमाया 'इज़ य-त-लक़्क़ल मुतलक़्क़ियान.....' और फ़रमाया कि जब तुममें से किसी को मौत आ जाती है हमारे मलायका उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं।

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मलकुल-मौत के कई फ़रिश्ते मददगार हैं जो जिस्म से रूह खींचते हैं। और जब हलक़ तक वह रूह आ पहुँचती है तो मलकुल मौत क़ब्ज़ कर लेते हैं। फिर फ़रमाया यानी वह रूह मुतवफ़्फ़ी की हिफ़ाज़त में कोई कमी नहीं करते। फिर उसको वहाँ पहुँचा देते हैं जहाँ ख़ुदा की मर्ज़ी होती है। अगर वह नेक हो तो इल्लीयीन में जगह दी जाती है और अगर फ़ाजिर हो तो सिज्जीन में। जो दोज़ख़ का तबक़ा है, ख़ुदा की पनाह। फिर ये मलाइका उन रूहों को अपने मौलाए-हक़ की तरफ़ फेर देते हैं।

यहाँ हम एक हदीस ज़िक्र करते हैं जिसको अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मरनेवाले के पास मलाइका आते हैं, अगर वे मर्दे-सालेह हो तो कहते हैं कि आ जा ऐ नफ़्से-तैयिबा तू तो जसदे-तैयिबा में था। दुनिया से महमूद वापस आ। तुझको जन्नत की रूह व ईमान की ख़ुशख़बरी है, ख़ुदा तुझसे नाराज़ नहीं। जब ये मुसलसल कहते

रहते हैं तो रूह जिस्म से निकल आती है, वे उसे लेकर आसमान पर चढ़ते हैं, आसमान का दरवाज़ा उसके लिए खुल जाता है। पूछा जाता है, कौन है? कहा जाता है कि फ़लाँ की रूह है। तो आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं कि मरहबा ऐ नफ़से-तैयिबा तू जिस्मे-तैयिब में था। तुझे ख़ुशख़बरी है, यहाँ तक कि वे उसे लेकर उस आसमान तक पहुँचते हैं जहाँ अल्लाह पाक है और अगर वह जान बदकार की जान है तो कहते हैं कि ऐ ख़बीस जिस्म में रहनेवाली ख़बीस जान, निकल ज़लील बनकर, तुझे हमीम व ग़स्साक़ की ख़ुशख़बरी है और तेरे लिए उसी पीप और आब गरम की तरह और दूसरे अज़ाब भी हैं। बार-बार कहने के बाद जब वह निकलती है तो उसे लेकर आसमान पर चढ़ जाते हैं, दरवाज़ा खुल जाता है। पूछा जाता है, कौन है? कहा जाता है फ़लाँ। तो फ़रिश्ते कहते हैं, लानत है तुझ पर ऐ नफ़ूस ख़बीसा! तेरे लिए आसमान का दरवाज़ा नहीं खुलेगा। फिर वह जान अपनी क़बर की तरफ़ वापस कर दी जाती है और मुहतमिल है कि यह मुराद हो कि 'सुम्म रुद्दु' यानी सारी मख़लूक़ को क़ियामत के रोज़ ख़ुदा तआला की तरफ़ रद किया जाएगा और अल्लाह पाक हस्बे-इन्साफ़ उन पर हुक्म सादिर फ़रमाएगा जैसा कि फ़रमाया 'इन्नल-अव्वली-न वल आख़िरी-न लमजमूऊ-न इला मीक़ात यौमिम-मालूम' और फिर वारिद है 'व ह-शरनाहुम फ़लम नुग़ादिर मिनहुम अहदा' यानी अव्वलीन व आख़िरीन सबको बरोज़ क़ियामत जमा किया जाएगा। हम सबको उठाएँगे। किसी को नहीं छोड़ेंगे। और अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। वह मौलाए-हक़्क़ है, हुक्म सिर्फ़ उसी का चलता है। वह बहुत जल्द सबका हिसाब लेगा।

﴾86﴿

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ

عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝

क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि तद्ऊनहू तज़र्रुअंव्-वख़ुफ़्यह्, ल-इन् अन्जाना मिन्-हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन। (63) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून। (64) क़ुल् हुवल्क़ादिरु अला अंय्यब्अ-स अलैकुम् अज़ाबम्-मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शि-यअंव्-व युज़ी-क़ बअ्ज़कुम् बअ्-स बअ्ज़्, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लअल्लहुम् यफ़्क़हून। (65)

तर्जमा : आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुश्की और दरिया की ज़ुलमात से नजात देता है। तुम उसको पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके कि अगर तू हमको उनसे नजात दे दे तो हम ज़रूर शुक्र करनेवालों में से हो जाएँगे। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही तुमको उनसे नजात देता है और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो। आप कहिए कि इस पर भी वही क़ादिर है कि तुम पर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे या तुम्हारे पावँ तले से या कि तुमको गरोह-गरोह करके सबको भिड़ा दे और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई चखा दे। आप देखिए तो सही हम किस तरह दलायल मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं, शायद वे समझ जाएँ। (पारा 7, अनआम 63-65)

तशरीह : अल्लाह अपने बन्दों पर एहसान का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि हमने बर्र व बहर की तारीकियों से इन परेशान हालों को कैसे नजात दी जबकि बर्री मुश्किलात और बहरी गरदाब में फँस गए थे जहाँ मुख़ालिफ़ हवाएँ चल रही थीं, और उस वक़्त वह दुआ के लिए ख़ुदाए-वाहिद को मख़सूस कर रहे थे जैसा कि एक जगह फ़रमाया कि जब तुम्हें समुन्दर में किसी मज़र्रत से साबिक़ा पड़ता है। तो उस

वक़्त ये सारे शुरका को भूल जाते हैं, कोई बुत्त याद नहीं आता और याद आता है तो सिर्फ़ ख़ुदा। क़ौल पाक है कि तुम्हारा ख़ुदा वही ख़ुदा तो है जो बहर व बर्र में ले चलता है और जब जहाज़ ख़ुशगवार और मुवाफ़िक़ हवा के साथ चलते हैं तो बड़े ख़ुश रहते हो और जब बादे-मुख़ालिफ़ चलती है और हर तरफ़ से मौजें टक्कर देती रहती हैं और यक़ीन हो जाता है कि अब तो मौत में घिर गए तो बड़े ख़ुलूस से ख़ुदा को पुकारते हैं कि ऐ ख़ुदा अगर इस मुसीबत से तू हमें नजात बख़्शेगा तो हम बहुत शुक्रगुज़ार बन्दे बनेंगे। और इरशाद होता है कि ग़ौर तो करो कि बहरो-बर्र की तारीकियों में तुम्हें सीधी राह कौन चलाता है। और ख़ुश-आइन्द हवाओं को अपनी रहमत से कौन भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है जिसे तुमने शरीक बना लिया हो। और यह आयते-करीमा ज़ुलमाते-बहरो-बर्र से कौन नजात देता है जिसको तुम सिर्र व एलानियतन पुकारते हो कि अगर तू हमें नजात दे तो हम शुक्र गुज़ार बनेंगे। कह दो कि अल्लाह ही ने तुम्हें इससे और हर दर्दो-कर्ब से नजात बख़्शी है। लेकिन तुम भी ख़ुशहाली में बुतों को उसका शरीक बनाते हो। ख़ुदा इस पर क़ादिर है कि तुम पर अज़ाब नाज़िल फ़रमाए जैसा कि सूरा सुब्हान में है कि तुम्हारा रब ही जहाज़ों को समुन्दर में चलाता है। ताकि तुम दौलत कमाओ। वह तुम पर रहीम व करीम है। और जब तुम्हें कोई समुन्दर के ख़तरात से बचा कर ख़ुश्की पर ला खड़ा करता है तो ख़ुदा से ऐराज़ कर जाते हो। इनसान बड़ा ही ना-शुक्रगुज़ार है, ज़मीन पर आने के बाद क्या तुम बच गए वह चाहे तो पानी में डुबोने की तरह क्या ज़मीन के अन्दर भी तुम्हें नहीं धंसा सकता। या तुम पर आसमान से पथराव हो जाए और फिर कोई तुम्हारा मददगार न हो, वह तुम्हें फिर समुन्दर का सफ़र कराके और बादे-मुख़ालिफ़ को भेज कर नहीं ग़र्क़ कर सकता है? ख़ुदा तआला क़ादिर है कि चाहे तो तुम्हारे सिर के ऊपर से या तुम्हारे पैरों तले ही से तुम पर अज़ाब भेज दे। यह मुशरिकीन से ख़िताब था। मुजाहिद रहिमहुल्लाह कहते हैं कि ये

तंबीह उम्मते-मुहम्मद (सल्ल.) के लिए है। यहाँ हम चन्द अहादीस ज़िक्र करेंगे जो उसी से मुताल्लिक़ हैं। भरोसा ख़ुदा ही पर है, बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने इस आयते-मन्दरजा बाला के बारे में फ़रमाया कि 'यलबिसकुम' यानी तुम फ़िरक़े बन-बन कर आपस में तिफ़रक़ा-बन्दियाँ करने लगो और दूसरे से लड़ बैठो यानी अल्लाह चाहे तो तुम्हें ऐसे अज़ाब में भी मुब्तिला फ़रमा सकता है। जाबिर-बिन-अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब यह आयत उतरी यानी 'अज़ाबंमिन फ़ौक़िकुम' वाली तो रसूल अल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया, 'आउज़ु बिवजहि-क और तहति अरजुलिकुम' के वक़्त भी फ़रमाया 'अऊज़ु बिवजहि-क' यानी ऐ ख़ुदा तेरी पनाह। और जब 'अवयलबि-स-कुम शि-यअन....' सुना तो फ़रमाया, निसबतन सहल है। जाबिर रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी कि 'कुल हुवलक़ादिरु....' तो आप (सल्ल.) ने फ़रमाया 'आऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक' फिर 'मिन-तहति अरजुलिकुम' सुनकर भी फ़रमाया 'आऊज़ु बिल्लाह' फिर 'यलबिस-कुम शि-यअन' सुनकर फ़रमाया यह आसान तर है। अगर इस पर भी आप (सल्ल.) पनाह माँगते तो माँग सकते थे। सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास रज़िअल्लाहु अन्हु से भी मरवी है कि इस आयत को सुनकर आप (सल्ल.) ने फ़रमाया कि यह बात होकर रहेगी और अभी तक हुई नहीं है।

एक हदीस सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है, हम नबी (सल्ल.) के साथ चले और मस्जिद बनी-मुआविया में आए वहाँ आप (सल्ल.) ने दो रकअतें पढ़ीं। हमने भी आप (सल्ल.) के साथ नमाज़ पढ़ी। फिर आप (सल्ल.) देर तक रब अज़्ज़ व जल्ल से मनाजात में मसरूफ़ रहे फिर फ़रमाने लगे कि मैंने तीन बातों की ख़ुदा से दरख़ास्त की थी कि मेरी उम्मत फ़िरऔनियों की तरह ग़र्क़ होकर तबाह न हो और क़हत से हलाक न हो और उनके गरोहों के अन्दर जंग बरपा न हो जाए तो पहली दो बातें तो मंज़ूर कर ली गईं और तीसरी बात नामंज़ूर की गई।

जाबिर-बिन-अतीक रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे पास अब्दुल्लाह-बिन-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु मक़ाम बनी-मुआविया में आए जो अंसार का एक गाँव है। और कहा कि क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी इस मस्जिद में नबी (सल्ल.) ने कहाँ नमाज़ पढ़ी थी? मैंने कहा, हाँ। और एक गोशे की तरफ़ इशारा किया। फिर पूछा वहाँ आप (सल्ल.) ने किन तीन बातों की दुआ की थी। मैंने कहा, हाँ, आप (सल्ल.) ने दुआ की थी कि कोई दुश्मन मेरी उम्मत पर ग़ालिब न हो और क़हत इन्हें हलाक न करे तो ये दोनों बातें मंज़ूर कर ली गईं और ये भी दुआ की थी कि उनकी आपस में जंग न हो तो यह दुआ क़बूल न हुई तो अब्दुल्लाह-बिन-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुमने ठीक कहा। चुनांचे क़ियामत तक मुसलमानों की आपस में जंगें होती रहेंगी।

मुआज़-बिन-जबल रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैं रसूल अल्लाह (सल्ल.) के पास आया तो कहा गया कि अभी चले गए हैं। जहाँ जाता कहा जाता कि अभी यहाँ से चले गए। हत्ता कि मैंने आप (सल्ल.) को एक जगह नमाज़ पढ़ते देखा, मैं भी आप (सल्ल.) के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। आप (सल्ल.) ने बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद मैंने कहा, या रसूल अल्लाह, आपने बड़ी लम्बी नमाज़ पढ़ी। आप (सल्ल.) ने इन्ही अपनी तीन दुआओं का ज़िक्र फ़रमाया।

ख़ब्बाब-बिन-अरत्त रज़िअल्लाहु अन्हु मौला बनी-ज़ोहरा से रिवायत है जो बदर में नबी (सल्ल.) के साथ हाज़िर थे, कहते हैं कि एक दिन मैं तमाम रात नबी (सल्ल.) के साथ नमाज़ पढ़ता रहा। हत्ता कि जब आप (सल्ल.) ने नमाज़ पढ़कर सलाम फेरा तो मैंने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह (सल्ल.) आज आपने ऐसी नमाज़ पढ़ी कि मैंने कभी नहीं देखा था। तो आप (सल्ल.) ने फ़रमाया। हाँ, यह नमाज़ उम्मीदो-रिज़ा की थी जिसके बाद मैंने ख़ुदा से तीन बातों की दरख़ास्त की थी। उसके बाद पूरी हदीस मज़कूर है।

शद्दाद-बिन-औस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी

(सल्ल.) ने फ़रमाया कि मेरे लिए ज़मीन के मशरिक़ व मग़रिब क़रीब कर दिए गए और यह कि मेरी उम्मत इन सब पर मालिक हो जाएगी और मुझे दोनों ख़ज़ाने दिए गए हैं। ख़ज़ाना अबयज़ भी और ख़ज़ाना अहमर भी। और मैंने सवाल किया था कि उसके साथ ऐ ख़ुदा यह भी हो कि मेरी उम्मत क़हत से न मरे और न कोई दुश्मन इन पर ऐसा मुसल्लत हो कि उमूमी हलाकत ला डाले और उनमें गरोह-बन्दी न हो जाए कि एक-दूसरे से जंग करने लगें। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ मुहम्मद मैंने जो तक़दीर क़ायम कर दी वह होकर रहेगी। मैंने तुम्हारी दोनों बातें तो मंज़ूर कीं लेकिन तुम्हारी उम्मत बाज़ को बाज़ हलाक करेगी या क़ैद किया करेगी। और नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया कि मुझे अगर अपनी उम्मत पर ख़ौफ़ है तो गुमराह इमामों और सरदारों का है, जब एक बार मेरी उम्मत में तलवार चल पड़ेगी तो फिर न रुकेगी और क़ियामत तक आपस में जंग व जिदाल का सिलसिला क़ायम रहेगा।

नाफ़ेअ-बिन-ख़ालिद ख़ज़ाई रहिमहुल्लाह ने अपने बाप से रिवायत की है जो कि असहाबे-रसूल से थे और बैअते-रिज़वान तहतश्शजर में से थे कि एक दिन नबी (सल्ल.) ने नमाज़ पढ़ी, लोग आप (सल्ल.) को घेरे हुए थे, आप (सल्ल.) ने हल्की नमाज़ पढ़ी लेकिन रुकूअ व सुजूद कामिल किया लेकिन जब जुलूस किया तो जुलूस बहुत तवील था। हत्ता कि हममें से बाज़, बाज़ को इशारा करने लगे कि शायद नबी (सल्ल.) पर वही उतर रही है। तो नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया नहीं, मैं सलाते-रग़बत व रहबत पढ़ रहा था, फिर इन तीनों बातों की पूरी हदीस दर्ज है। वे यह हदीस सुना चुके तो मैंने कहा, क्या तुम्हारे बाप ने रसूलल्लाह (सल्ल.) से सुना है? तो कहा हाँ, नबी (सल्ल.) की ज़बान से सुना है और अपनी इन दस उंगलियों के बराबर दस दफ़ा।

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया कि मैंने ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल से दुआ की थी कि मेरी उम्मत को चार चीज़ों से दूर रख। चुनांचे दो बातों से अल्लाह

तआला ने मेरी उम्मत को महफ़ूज़ रखा। और दो से नहीं रखा। मैंने दुआ की थी कि मेरी उम्मत पर आसमान से पथराव न हो और अहले-फ़िरऔन की तरह वह ग़र्क़ होकर न मरें और उनमें तफ़रक़ा-गीरी न हो और यह कि वह एक-दूसरे से जंग न करें, तो अल्लाह तआला ने पथराव न होने और ग़र्क़ से महफ़ूज़ रहने की दुआएँ तो क़बूल कर लीं लेकिन आपस में फ़िरक़ा-पसन्दी और गरोह-बन्दी और जंग व क़िताल बाक़ी रहा, इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब यह आयत उतरी 'क़ुल हुवल क़ादिरु' तो नबी (सल्ल॰) उठे, वुज़ू किया और दुआ माँगने लगे कि ऐ ख़ुदा!! मेरी उम्मत पर ऊपर और नीचे से अज़ाब नाज़िल न फ़रमा और उनमें गरोह-बन्दी और जंग न हो, तो जिबरील अलैहिस्सलाम आए और कहा, ऐ मुहम्मद, अल्लाह तआला ने तुम्हारी उम्मत को आसमान से अज़ाब नाज़िल होने और पाँव तले से अज़ाब उबलने से महफ़ूज़ कर दिया है, आसमानी अज़ाब से पथराव मुराद है और पाँव तले कि अज़ाब से ज़मीन में धंस जाना मुराद है। ये चार चीज़ें थीं जिनमें से दो नबी (सल्ल॰) की वफ़ात से पच्चीस बरस बाद ही ज़ाहिर होने लगीं। यानी आपस में इख़्तिलाफ़े-राय और गरोह-बन्दी और मुसलमान की दो पार्टियों में जंग व जिदाल, रजम और ख़सफ़ से उम्मते-मुहम्मदी (सल्ल॰) मामून व महफ़ूज़ रखी गई। इस आयत के बारे में अब्दुल्ला-बिन-मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु मस्जिद में या मिम्बर पर चीख़-चीख़ कर फ़रमाते थे कि ऐ लोगो! तुम पर अल्लाह की आयत उतर चुकी है। अगर अज़ाब आसमान से आएगा तो कोई नहीं बचेगा और अगर पाँव तले से आएगा तो तुम ज़मीन में धंस कर हलाक हो जाओगे, अगर जमाअतों में बट जाओगे और आपस में जंग छिड़ जाएगी तो ये सब से बदतर बात होगी। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इस आयत में 'अज़ाबन मिन फ़ौक़िकुम' से बुरे पेशवा मुराद हैं। और 'तहति अरजुलिकुम' से बुरे ख़ादिम और बुरे पैरो मुराद हैं। या यह कि उमरा और ग़ुरबा मुराद हैं, इब्ने-जरीर रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि इस सिहत की

गवाही ख़ुदाए-पाक का यह क़ौल देता है 'अ-अमिन्तुम मन फ़िस्समाइ....' यानी क्या तुम इससे महफ़ूज़ हो कि ख़ुदा तुम्हें ज़मीन में धंसा दे और वह भड़कने और उबलने लगे या इस बात से महफ़ूज़ हो कि आसमान से पहले की क़ौमों की तरह पत्थर बरसाए। अनक़रीब तुम जान लोगे कि मेरी अन्देशा-दहानी कितनी सही थी।

ज़ैद-बिन-असलम कहते हैं कि जब 'हुवल क़ादिर' वाली आयत उतरी तो रसूल अल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि आपस में तलवार लेकर एक-दूसरे की गरदनें काटने लगो। तो लोगों ने कहा हम तो गवाही देते हैं कि ख़ुदा एक है और आप अल्लाह तआला के रसूल हैं। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया। हाँ, तो किसी ने कहा कि ऐसा कभी न होगा कि हममें का एक दूसरे को क़त्ल करने लगे जब कि हम सही मानी में मुसलमान हों, चुनांचे यह आयत उतरी, इरशाद होता है कि 'कज़्ज़ि-ब बिही क़ौमु-क व हुवल हक़्क़ु....' यानी तुम्हारी क़ौम वह्य को झुटलाएगी हालांकि वह हक़ है। तुम कह दो कि मैं तुम्हारा कोई सिर। धरा तो नहीं, न ज़िम्मेदार। हर बात का एक वक़्त मुक़र्रर है, क़रीब में तुमको हक़ीक़त का पता चल जाएगा।

﴾87﴿

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ڛ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۭ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۭ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

व हुवल्लज़ी .ख-लक़स्समावाति वल्अर्-ज बिल्हक़्क़, व यौ-म यक़ूलु कुन् फ़-यकून। क़ौलुहुल्-हक़्क़, व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़खु फ़िस्सूर, आलिमुल-ग़ैबि वश्शहा-दह्, व हुवल् हकीमुल्-खबीर। (73)

तर्जमा : और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया और जिस वक़्त अल्लाह तआला इतना कह देगा तू हो

जा, वह हो पड़ेगा। उसका कहा हक़ और बाअसर है। और सारी हुकूमत ख़ास उसी की होगी जब कि सूर में फूँक मारी जाएगी। वह जाननेवाला है पोशीदा चीज़ों का और ज़ाहिरी चीज़ों का और वही है बड़ी हिकमतवाला पूरी ख़बर रखनेवाला। (पारा 7, अनआम 73)

तशरीह : उसी ने आसमानों और ज़मीन को एतिदाल के साथ पैदा किया वह उनका मालिक और मुदब्बिर है। वह क़ियामत के रोज़ सिर्फ़ 'कुन' कहेगा और पलक झपकने में सब चीज़ें अज़ ख़ुद दोबारा वुजूद में आ जाएँगी जैसा कि फ़रमाया, 'लिमनिल मुल्कुल यौमि लिल्लाहिल वाहिदिल क़हहार' है। यानी आज सल्तनत किसकी है? वाहिदे-क़हहार की सल्तनत है, जैसा कि फ़रमाया 'अलमुल्कु यौमइज़िनिल हक़्क़ु लिर्रहमानि व काना यौमन अलल-काफ़िरी-न असीरन' उस रोज़ रहमान की सल्तनत बरहक़ है और वह दिन काफ़िरों पर बड़ा ही सख़्त होगा, यानी नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर को मुँह में लगाए हुए हैं, सिर झुकाए हुए हैं और मुंतज़िर हैं कि कब सूर फूँकने का हुक्म सादिर होता है। नबी (सल्ल॰) एक वक़्त असहाब के साथ बैठे हुए थे कि आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक जब आसमानों और ज़मीन के पैदा करने से फ़ारिग़ हुआ तो सूर को पैदा किया और इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को दिया जिसको वे अपने मुँह में लगाए हुए हैं। आँखें अर्श की तरफ़ लगी हैं, मुन्तज़िर हैं कि कब सूर फूँकने का हुक्म होता है। तो अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने कहा, या रसूल अल्लाह! सूर क्या है? इरशाद फ़रमाया, वह क़रना। पूछा वह कैसा है कहा बहुत बड़ा है, ख़ुदा की क़सम जिसने मुझे भेजा, इसका अर्ज़ इतना है जितनी आसमानों और ज़मीन की पहनाई। इसमें तीन वक़्त फूँका जाएगा। पहली फूँक घबराहट और परेशानी पैदा करनेवाली फूँक होगी और दूसरी सबको बेहोश कर देनेवाली और तीसरी फिर ख़ुदा तआला के सामने आ खड़े होने की। अल्लाह पाक पहली फूँक का हुक्म देगा उससे सारी दुनिया जहाँ के लोग घबरा उठेंगे मगर जिसको ख़ुदा मुस्तक़ीम रखे जब तक दूसरा

हुक्म न होगा सूर फूँका जाता रहेगा, रुकेगा नहीं। जैसा कि फ़रमाया 'वमा यंज़ुरू हाउलाइ इल्ला सैहतंव-वाहिदतन मा लहा मिन फ़वाक़िन' यानी वह एक ज़बरदस्त चीख़ और बहुत ही बुलन्द आवाज़ होगी, पहाड़ अब्र की तरह उड़ रहे होंगे और ज़मीन हिलने और झूलने लगेगी, जैसे समुन्दर में शिकस्ता सफ़ीना जिसको मौजें हर तरफ़ धकेलती रहती हैं। जैसे किसी क़िन्दील को जो छत में लटकी हुई हो हवा झूला देती रहती है। फ़रमाया 'यौ-म तरजुफ़ुर्राजिफ़तु....' है। उस रोज़ लरज़ा देनेवाला सूर फूँका जाएगा। और उसके बाद फिर दूसरी बार फूँका जाएगा। उस रोज़ सब के सब बेइन्तिहा ख़ौफ़ज़दा हो जाएँगे, हामला औरतों के हमल साक़ित हो जाएँगे, लड़कों पर ख़ौफ़ के मारे बुढ़ापा तारी हो जाएगा।

शयातीन जान बचाने के ख़याल से ज़मीन के किनारों तक भाग जाएँगे लेकिन फ़रिश्ते मारमार कर वापस लाएँगे। एक-दूसरे को पुकारता रहेगा लेकिन कोई किसी को पनाह न दे सकेगा। सिवा ख़ुदा के। लोग इसी घबराहट के आलम में होंगे कि ज़मीन हर तरफ़ के गोशे से फटने लगेगी। ऐसा अम्रे-अज़ीम ज़ाहिर होगा कि कभी न देखा गया और ऐसा कर्ब व हौल लाहिक़ होगा कि अल्लाह ही जानता है, फिर लोग आसमान की तरफ़ देखेंगे तो उसके पुर्ज़े उड़ रहे होंगे, सितारे टूट रहे होंगे। सूरज और चाँद स्याह पड़ जाएँगे। नबी (सल्ल॰) ने, फ़रमाया लेकिन मुर्दों को उसकी ख़बर न होगी अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूल अल्लाह (सल्ल॰) अल्लाह तआला जब फ़रमाएगा, फ़-फ़ज़ि-अ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िलअर्ज़ि इल्ला मन शाअल्लाह' तो अल्लाह तआला किसको मुस्तसना फ़रमाएगा। तो आपने फ़रमाया वे शुहदाअ हैं। फ़ज़अ और घबराहट तो ज़िन्दों को हुआ करती है। और वे ज़िन्दा तो हैं लेकिन ख़ुदा के पास हैं। ख़ुदा उन्हें रिज़्क़ देता है। अल्लाह ने उस दिन के फ़ज़अ से उन्हें महफ़ूज़ रखा है। क्योंकि वह तो अल्लाह का अज़ाब है और अज़ाब तो अशरारे-ख़ल्क़ पर उतरता है। इसी चीज़ को अल्लाह तआला ने 'तज़हलु कुल्लु मुरज़िअति' वाली आयत में पेश

फ़रमाया है कि हर दूध पिलानेवाली अपने शीर-ख़्वार बच्चे से ग़ाफ़िल हो जाएगी। हर हामिला का हमल गिर जाएगा, जब तक ख़ुदा चाहे वह उस अज़ाब में मुब्तिला रहेंगे। तवील अर्से तक यह कैफ़ियत रहेगी। फिर अल्लाह पाक बेहोशी लानेवाले सूर का हुक्म इसराफ़ील को दे देगा। इसलिए सब अहले-समावात वलअर्ज़ बेहोश हो जाएँगे लेकिन जिसको ख़ुदा चाहे वह होश में रहेगा। मलकुलमौत ख़ुदा के पास आएँगे और कहेंगे, ऐ ख़ुदा सब मर गए, अल्लाह तो जानता है मगर पूछेगा बाक़ी कौन है? वे अर्ज़ करेंगे, तू बाक़ी है कि तुझे तो कभी मौत आनेवाली नहीं, और अर्श उठानेवाले मलायका भी हैं। जिबरील अलैहिस्सलाम वं मीकाईल अलैहिस्सलाम भी बाक़ी हैं और मैं भी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएगा, जिबरील व मीकाईल अलैहिस्सलाम को भी मर जाना चाहिए तो अर्श बोल उठेगा। या रब! जिबरील व मीकाईल अलैहिस्सलाम भी मर जाएँगे? ख़ुदा तआला फ़रमाएगा, ज़बान न खोलना, तहतुल-अर्श जितने हैं सबको मर जाना है। मलकुल मौत फिर ख़ुदा से अर्ज़ करेंगे या रब! जिबरील और मीकाइल अलैहिस्सलाम भी मर गए। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, अब कौन बाक़ी है? वे कहेंगे कि तू बाक़ी है, तुझे तो मौत आएगी नहीं। अब मैं और अर्श उठानेवाले बाक़ी हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, अर्श उठानेवालों को भी मर जाना चाहिए वे भी मर जाएँगे। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा, अब कौन बाक़ी है? इज़राईल अलैहिस्सलाम से सूर ले लो और इसराफ़ील अलैहिस्सलाम से कहेगा तुम भी मेरी मख़लूक़ हो, तुम भी मर जाओ। वे उसी वक़्त मर जाएंगे और ख़ुदाए-वाहिद व समद लम-यलिद वलम यूलद के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा तो आसमान व ज़मीन लपेट दिए जाएंगे। जैसे कि दफ़्तर लपेट दिया जाता है। तीन दफ़ा उसको खोला और लपेटा जाएगा। फिर फ़रमाएगा, मैं जब्बार हूँ। मैं जब्बार हूँ। मैं जब्बार हूँ। फिर तीन बार आवाज़ देगा, क्या आज के रोज़ है किसी की बादशाहत? कौन जवाब देता। फिर ख़ुद ही फ़रमाएगा, बादशाहत अल्लाह वाह्दुिल क़ह्हार की है।

फिर दूसरे ज़मीन व आसमान पैदा करेगा, उन्हें फैला देगा और दराज़ कर देगा जिसमें कोई कजी और नुक़्स बाक़ी न रहेगा फिर मख़लूक़ को अल्लाह तआला की एक ज़बरदस्त आवाज़ होगी तो अज़ सरे-नौ पैदा-शुदा ज़मीन सब पहले की तरह हो जाएँगे जो ज़मीन के अन्दर और जो ज़मीन के बाहर है। फिर तहतुल अर्श से अल्लाह तआला पानी नाज़िल फ़रमाएगा। आसमान को हुक्म देगा कि बरसे। चालीस दिन तक पानी बरसता रहेगा। हत्ता कि पानी उन पर बारह गज़ बुलन्द हो जाएगा। फिर अजसाम को हुक्म देगा तो वह ज़मीन में से ऐसे नमूदार होने लगेंगे जैसे नबातात और सब्ज़ियाँ उग आती हैं। जब अजसाम पहले की तरह मुकम्मल हो जाएँगे तो पहले मलाइकाए-अर्श ज़िन्दा किए जाएँगे। अल्लाह तआला इसराफ़ील अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमाएगा। फिर अरवाह बुलाई जाएँगी। मुसलमानों की रूहें नूर की तरह चमकती होंगी और काफ़िरों की रूहें तारीक रहेंगी। इन सबको लेकर सूर में डाल दिया जाएगा। इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को हुक्म होगा कि नफ़ख़ए-बअस फूँका जाए, चुनांचे ज़िन्दगी की फूँक-फूँकी जाएगी तो रूहें ऐसी उछल पड़ेंगी जैसे शहद की मक्खियाँ कि ज़मीन व आसमान उनसे भर जाएगा। अब हुक्मे-बारी होगा कि रूहें अपने अजसाम में दाख़िल हो जाएँ तो दुनिया की सारी रूहें दाख़िल होने लगेंगी और नथनों की राह जिस्मों में आएँगी जैसे ज़हर किसी मारगुज़ीदा के जिस्म में सरायत कर जाता है। फिर ज़मीन फटने लगेगी और लोग उठ-उठ कर अपने रब की तरफ़ रुख़ करने लगेंगे और सबसे पहले मेरी क़बर खुलेगी। ख़ुदाए-तलब कुनिन्दा की तरफ़ सब जाएँगे। काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो बड़ा संगीन मालूम होता है। लोग बरहना और ग़ैर मख़्तून होंगे, एक ही जगह खड़े होंगे। सत्तर बरस यही आलम रहेगा कि ख़ुदा तआला न उन्हें देखेगा न कोई फ़ैसला करेगा। लोग आह व गिरया करने लगेंगे। आँसू ख़त्म हो जाएँगे तो ख़ून आँखों से बहने लगेगा। लोग, अपने पसीने में शराबोर हो जाएँगे। ठोड़ियों तक पसीना पहुँचा हुआ होगा। लोग

कहेंगे ख़ुदा के पास किसी को शफ़ाअत के लिए जाना चाहिए ताकि वह कोई तसफ़िया कर दे। अब आपस में कहने लगेंगे कि बाप आदम अलैहिस्सलाम के सिवा ऐसा कौन हो सकता है जो ज़बान खोल सके। अल्लाह तआला ने उन्हें अपने हाथ से बनाया, अपनी रूह उनके अन्दर फूँकी और सबसे पहले उनसे बात की। चुनांचे लोग आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे और उनके आगे अपना मक़सद पेश करेंगे, वे सिफ़ारिश करने से इनकार कर देंगे और कहेंगे कि मैं इसके शायाने-शान नहीं। फिर फ़रदन-फ़रदन एक-एक नबी के पास आएँगे जिसके पास आएँगे वह नबी इनकार कर देगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) फ़रमाते हैं कि फिर मेरे पास आएँगे, मैं जाऊँगा और सजदे में फ़हस पर गिर पड़ूंगा। अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु ने पूछा कि या रसूल अल्लाह 'फ़हस क्या चीज़' है। नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया, अर्श के सामने का हिस्सा। अब अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजेगा। वह मेरा बाज़ू पकड़कर उठाएगा। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाएगा, तुम क्या कहना चाहते हो? मैं अर्ज़ करूँगा या रब! तूने मुझसे शिफ़ाअत का हक़ देने का वादा फ़रमाया है। चुनांचे यह हक़ मुझे अता फ़रमा और लोगों के दरमियान फ़ैसले फ़रमा दे। ख़ुदा तआला फ़रमाएगा, अच्छा तुम शिफ़ाअत कर सकते हो और मैं इनसानों के बीच फ़ैसले नाफ़िज़ कर दूँगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) फ़रमाते हैं फिर मैं वापस आकर लोगों के साथ खड़ा हो जाऊँगा। हम सब लोग खड़े ही होंगे कि आसमान से एक ज़ोर की आवाज़ होगी कि हम घबरा उठेंगे। ज़मीन जिन्न व इंस से दुगनी तादाद में आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल होंगे। वह ज़मीन से क़रीब-तर आ जाएँगे। ज़मीन उनके नूर से चमक उठेगी, वे सफ़बन्दी कर लेंगे। हम उनसे पूछेंगे, क्या ख़ुदाए-पाक तुम्हारे अन्दर है! वे कहेंगे, नहीं, वह आने ही वाला है। फ़रिश्ते आसमान से दोबारा इस तादाद में उतरेंगे कि उतरे हुए फ़रिश्तों से दुगनी तादाद में और जिन्न व इंस से भी दुगनी तादाद में ज़मीन उनके नूर से चमक उठेगी। वे क़रीने से खड़े हो जाएंगे। हम पूछेंगे क्या

ख़ुदाए-पाक तुम्हारे अन्दर है? वे कहेंगे नहीं, वह आने ही वाला है। फिर तीसरी दफ़ा इससे भी दुगनी तादाद में नुज़ूले-मलाइका होगा। अब ख़ुदाए-जब्बार अज़्ज़ व जल्ल अब्र के चतर लगाए आठ फ़रिश्तों से अपना तख़्त उठवाए तशरीफ़ फ़रमा होगा। हालाँकि उस वक़्त तो उसका तख़्त चार फ़रिश्ते उठाए रहते हैं। उनके क़दम आख़िरी नीचेवाली ज़मीन की तह में हैं, ज़मीन व आसमान उनके निस्फ़ हिस्से जिस्म के मक़ाम में हैं। उनके कन्धों पर अर्शे-ख़ुदावन्दी है, उनकी ज़बानों पर तस्बीह व तहमीद रहेगी। वे कह रहे होंगे कि 'सुब्हा-न ज़िल अरशि वल-जबरूत, सुब्हा-न ज़िल मुल्कि वल म-ल-कूत, सुब्हा-न ज़िल हयि्यल-लज़ी ला यमूतु सुब्हानल्लज़ी युमीतुल ख़लाइ-क़ वला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दूसन-कुद्दूसुन-कुद्दूसन सुबहा-न रब्बिनल आलल्लज़ी युमीतुल ख़लाइ-क़ वला यमूतु' फिर अल्लाह तआला अपनी कुरसी पर जलवा अफ़रोज़ होगा। एक आवाज़ होगी, या मअश-र जिन्न व इंस! मैंने जब से तुम्हें पैदा किया है आज तक ख़ामोश था। तुम्हारी बातें सुनता रहा। तुम्हारे आमाल देखता रह, अब तुम ख़ामोश रहो, तुम्हारे आमाल के सहीफ़े तुमको पढ़कर सुनाए जाएँगे। अगर वे अच्छे साबित हुए तो ख़ुदा का शुक्र करो और अगर ख़राब निकले तो अपने आप को मलामत करो। फिर अल्लाह तआला जहन्नम को हुक्म देगा। तो उसमें से एक तारीक-तरीन चमकदार सूरत रूनुमा होगी। अब अल्लाह तआला फ़रमाएगा, ऐ बनी-आदम! क्या मैंने हुक्म नहीं दे रखा था कि शैतान को न पूजना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। तुम मेरी ही इबादत करना कि यही सिराते-मुस्तक़ीम है। इस शैतान ने तो बहुतों को गुमराह किया है। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते थे। यह वह जहन्नम है जिसका तुमसे वादा किया गया था और जिसको तुम झुटलाते थे। अब ऐ मुजरिमो! नेकों से अलग हो जाओ। अल्लाह तआला अब उम्मतों को अलग-अलग कर देगा। इरशादे बारी है कि ऐ नबी! तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे। हर उम्मत के पास उसका नामाए-आमाल होगा और आज अपने किए

का बदला पाएँगे। अब अल्लाह पाक अपनी तमाम मख़लूक़ के दरम्यान फ़ैसला शुरू कर देगा लेकिन जिन्न व इंस का अभी नहीं।

अब वुहूश व बहाइम के दरम्यान फ़ैसले फ़रमाएगा। हत्ता कि जब इनसाफ़ दिलवाने से कोई जानवर भी बाक़ी न रहेगा तो इन जानवरों से कहेगा कि मिट्टी हो जाओ तो काफ़िर कहने लगेंगे कि काश हम भी इस अज़ाब से बचने के लिए मिट्टी हो जाते। ग़रज़ यह कि अब बन्दों के दरमियान फ़सले-मुक़द्दिमात होगा, सबसे पहले क़त्ल व ख़ून के मुक़द्दिमात पेश होंगे, अब हर वह मक़तूल आएगा जिसको ख़ुदा की राह में क़त्ल करनेवाले ने क़त्ल किया होगा। अल्लाह तआला क़ातिल को हुक्म देगा, वह मक़बूल का सिर उठाएगा। वह सिर अर्ज़ करेगा कि ऐ ख़ुदा! इससे पूछ कि इसने मुझे क्यों क़त्ल किया था। अल्लाह तआला इससे पूछेगा (हालाँकि वह ख़ुद जानता है) कि क्यों क़त्ल किया था? वह ग़ाज़ी कहेगा, ऐ ख़ुदा! तेरी इज़्ज़त और तेरे नाम की ख़ातिर। तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा, तू सच कहता है, और उसका चेहरा नूरे-शम्स की तरह चमकने लगेगा। मलाइका उसको जन्नत की तरफ़ ले कर चले जाएँगे। इसी तरह दूसरे मक़तूल भी अपनी आँते सिर पर लिए आएंगे। अल्लाह उनके क़ातिलों से भी पूछेगा कि क्यों क़त्ल किया था, उनको कहना पड़ेगा कि अपनी शोहरत व नाम की ख़ातिर। तो फ़रमाएगा, हलाक हो जाए तू, ग़रज़ हर मक़तूल का मुक़द्दिमा पेश होगा और इनसाफ़ होगा, और हर ज़ुल्म का बदला ज़ालिम से लिया जाएगा और जिस ज़ालिम को ख़ुदा चाहे अज़ाब देगा और जिस पर चाहे वह अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाएगा। फिर सारी मख़लूक़ का इनसाफ़ होगा कि कोई मज़लूम ऐसा न बचेगा कि ज़ालिम से बदला न दिलाया गया हो हत्ता कि जो दूध में पानी मिलाकर बेचता है और कहता है ख़ालिस है उसको भी सज़ा दी जाएगी। और ख़रीदनेवाले को उसकी नेकियाँ दी जाएंगी। इससे भी जब फ़राग़त हो जाएगी तो एक निदा देनेवाला निदा देगा और सारी मख़लूक़ सुनेगी कि हर गरोह को चाहिए कि अपने-अपने ख़ुदाओं की तरफ़ हो जाओ और

अपने माबूदों का दामन पकड़ लो। अब कोई बुत-परस्त ऐसा न होगा जिसके बुत उसके सामने ज़लील पड़े हुए न हों। एक फ़रिश्ता उस दिन उज़ैर अलैहिस्सलाम की शक्ल में आ जाएगा और एक फ़रिश्ते को ईसा अलैहिस्सलाम-बिन-मरयम की सूरत दी जाएगी। चुनांचे यहूद तो उज़ैर अलैहिस्सलाम के पीछे आ जाएंगे और ईसा अलैहिस्सलाम के पीछे नसारा हो जाएंगे। फिर उनके ये फ़रज़ी माबूद उनको दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएंगे और वह कहेगा कि अगर ये इनके ख़ुदा होते तो अपने माननेवालों को दोज़ख़ की तरफ़ कभी न ले जाते। अब ये सब दोज़ख़ में दवाम-पज़ीर होंगे। अब जबकि सिर्फ़ मोमिनीन बाक़ी रह जाएंगे जिनमें मुनाफ़िक़ीन भी शामिल रहेंगे, अल्लाह तआला उनके पास आएगा, अपनी जिस हैयते-मुतबद्दिला में चाहेगा और फ़रमाएगा, ऐ लोगो! सब अपने-अपने ख़ुदाओं से जा मिले हैं, तुम भी जिनकी इबादत करते थे उनसे जा मिलो। ये सब लोग मोमिनीन बशमूल मुनाफ़िक़ीन यह कहेंगे कि ख़ुदा की क़सम हमारा ख़ुदा तो तू था, तेरे सिवा हम किसी और को नहीं मानते थे। अब अल्लाह तआला उनके पास से हट जाएगा। फिर अपनी हक़ीक़ी शान में आएगा, उनके पास रुका रहेगा जब तक कि चाहे, फिर सामने आएगा और इरशाद फ़रमाएगा, ऐ लोगो! सब अपने-अपने ख़ुदाओं से जा मिले हैं, तुम भी अपने माबूदों से जा मिलो। वे कहेंगे, ख़ुदा की क़सम! तेरे सिवा हमारा तो कोई ख़ुदा नहीं। हम तेरे सिवा किसी को नहीं पूजते थे। अब ख़ुदाए-पाक अपनी साक़ खोल देगा। उसकी अज़मत से उन पर यह बात रौशन हो जाएगी कि उनका ख़ुदा यही है फिर सबके सब सजदे में सिर के बल गिर पड़ेंगे, लेकिन जो मुनाफ़िक़ होंगे वे पीठ के बल गिरेंगे। सजदे के लिए झुक न सकेंगे, पीठ उनकी गाय की पीठ की तरह सीधी रहेंगी। अब अल्लाह हुक्म देगा कि इन्हें उठा ले जाओ, अब इनके सामने जहन्नम का पुल सिरात आएगा जो किसी ख़ंजर या तलवार की धार से भी तेज़ तर होगा और जगह-जगह आंकड़े और कांटे, और बड़ी फिसलती हुई और ख़तरनाक होगी। इसके नीचे और एक पस्त-तर

फिसलवाँ पुल भी होगा। नेक लोग ऐसे गुज़र जाएंगे जैसे आँख झपक जाती है। या बिजली चमक जाती है या तेज़ चलनेवाली हवा की तरह या तेज़ रौ घोड़े या तेज़ तर सवारी या तेज़ दौड़नेवाले आदमी की तरह कि बाज़ तो पूरी तरह महफ़ूज़ रहेंगे और नजात पा जाएंगे, और बाज़ ज़ख़्मी होकर और बाज़ कट-कट कर जहन्नम में गिर जाएंगे और फिर जब अहले-जन्नत जन्नत की तरफ़ भेजे जाने लगेंगे तो कहेंगे कि अब हमारी शिफ़ाअत ख़ुदा के पास कौन करेगा। चुनांचे वे आदम अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और दरख़ास्ते-शिफ़ाअत करेंगे तो वे अपने गुनाह का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि मैं तो इसका अहल नहीं, तुम नूह अलैहिस्सलाम के पास जाओ, वह ख़ुदा का सबसे पहला रसूल कहा जाता है। लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास आएंगे, वे भी अपनी ख़ताओं का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे मैं तो अहल नहीं, और कहेंगे कि इबराहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ कि अल्लाह ने उन्हें अपना ख़लील कहा है। वे भी अपनी ख़ताओं का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ कि ख़ुदा ने उनसे आप बातें की हैं। और उन पर तौरेत जैसी किताब सबसे पहले उतारी है। वे मूसा अलैहिस्सलाम के पास आकर दरख़ास्त करेंगे तो वे भी अपने क़त्ल के गुनाह का ज़िक्र करके कहेंगे कि मैं भी इसका अहल नहीं तुम रूह के पास जाओ, वे अल्लाह की रूह और उसका कलिमा हैं।

ईसा अलैहिस्सलाम भी यही कहेंगे कि नहीं मैं इस क़ाबिल नहीं, तुम मुहम्मद (सल्ल.) ही के पास पहुँचो। आँहज़रत (सल्ल.) फ़रमाते हैं कि अब लोग मेरे पास आएंगे और ख़ुदा ने मुझे तीन शफ़ाअतों का हक़ दिया और वादा फ़रमाया है अब मैं जन्नत की तरफ़ चलूँगा, हलक़एे-बाब को खटखटाउंगा। दरवाज़एे-जन्नत खुलेगा, मुझे ख़ुश आमदीद कहा जाएगा। मैं जन्नत में दाख़िल होकर ख़ुदा की तरफ़ नज़र उठाउँगा, सजदे में गिर पड़ूँगा। अल्लाह तआला मुझे तहमीद तमजीद की इजाज़त देगा कि किसी को ऐसी तहमीद नहीं सिखाई थी, फिर फ़रमाएगा, ऐ मुहम्मद! सिर उठाओ, क्या शफ़ाअत करते

हो! करो! तुम्हारी शिफ़ाअत सुनी जाएगी, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा। मैं अपना सिर उठाऊँगा तो अल्लाह तआला पूछेगा क्या कहना चाहते हो। मैं कहूँगा, या रब तूने मुझे शफ़ाअत का हक़ दिया है। अहले-जन्नत के बारे में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा कि वे दाख़िले-जन्नत हो सकें। तो फ़रमाएगा, अच्छा मैंने इजाज़त दी, ये लोग जन्नत में दाख़िल हो सकते हैं, नबी (सल्ल॰) फ़रमाते थे कि ख़ुदा की क़सम तुम जन्नत के अन्दर अपने मसाकिन और अपने अज़वाज को इससे जल्द पहचान लोगे जितना कि दुनिया में पहचानते हो। हर आदमी को बहत्तर बीवियाँ मिलेंगी, दो औलादे-आदम में से और सत्तर हूरों में से। उन दो को उन सत्तर हूरों पर फ़ज़ीलत रहेगी, क्योंकि दुनिया में उन नेकूकार औरतों ने ख़ुदा की बड़ी-बड़ी इबादत की थी। वह एक के पास आएगा तो वह एक याक़ूत के मकान में मोतियों से आरास्ता सोने के तख़्त पर बैठी होगी। जो सुन्दुस और इस्तिबरक़ के सत्तर जन्नती हुल्ले पहने होगी। वह उसके कन्धे पर हाथ रखेगा तो अपने हाथ का अक्स उसके सीने के वरे उसके कपड़ों, जिस्म और गोश्त के वरे होता हुआ दूसरी तरफ़ दिखाई देगा। जिस्म इस क़दर मुसफ़्फ़ा होगा कि पिंडली का गूदा नज़र आता होगा, गोया कि तुम याक़ूत की छड़ी को देख रहे हो। उसका दिल इसके लिए आइना बना होगा और उसका दिल उसके लिए, न यह उससे थकेगा न वह इससे थकेगी। वह जब कभी इस औरत के पास आएगा इसको बाकरा पाएगा, न यह इससे ख़स्तगी की शिकायत करेगा, न वह इससे ख़स्तगी की शिकायत करेगी। ऐसे में आवाज़ आएगी कि हमें इल्म है कि तुम में किसी का जी भरेगा नहीं लेकिन दूसरी अज़वाज भी तो हैं। चुनांचे वह बारी-बारी से उनके पास आएगा और जिस किसी की पास वह आएगा, कहेगी कि ख़ुदा की क़स्म जन्नत में मुझसे ज़्यादा ख़ूबतर कोई नहीं। और न मेरे पास तुझसे ज़्यादा महबूब-तर है।

लेकिन जब अहले नार दोज़ख़ में डाले जाएँगे तो आग किसी के तो क़दमों तक होगी और किसी के निस्फ़ साक़ तक और किसी के

घुटनों और कमर तक और चेहरे को छोड़कर किसी के पूरे जिस्म तक क्योंकि चेहरे पर आग हराम कर दी गई है। रसूल अल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआला से कहूँगा कि या रब! मेरी उम्मत के अहले दोज़ख़ के बारे में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा। तो फ़रमाएगा कि निकाल लो दोज़ख़ से जिन अपने उम्मतियों को तुम जानते हो, चुनांचे कोई उम्मती बचा न रहेगा, फिर शफ़ाअत आम की इजाज़त मिलेगी। चुनांचे हर नबी और शहीद अपनी अपनी शफ़ाअतें पेश करेंगे। अब अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि जिसके दिल में दीनार के वज़्न के बरबर ईमान हो, उसको दोज़ख़ से निकाल लो। अगर चौथाई दीनार बराबर भी हो। फिर क़ीरात बराबर भी। फिर राई के बराबर भी अगर हो। चुनांचे सब दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे। फिर वे भी जिन्होंने अल्लाह के लिए कारे-ख़ैर किया हो। अब कोई बाक़ी न रहेगा जो क़ाबिले-शफ़ाअत हो। हत्ता कि ख़ुदाए-तआला की इस रहमत आम्मा को देख कर इबलीस को भी तमअ होगी कि कोई उसकी शफ़ाअत करे। अब अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि अब एक मैं बाक़ी रह गया हूँ, मैं तो सब रहम करनेवालों में बड़ा रहम करनेवाला हूँ, चुनांचे जहन्नम में वह अपने हाथ डालेगा। और ऐसे ला तादाद दोज़ख़यों को निकाल लेगा जो जल कर कोयलों की तरह हो गए होंगे। उन्हें जन्नत की एक नहर में जिसको नहर हैवान कहते हैं डाला जाएगा, वे अज़-सरे नौ ऐसे सर-सब्ज़ हो जाएंगे जैसे झील के किनारे के नबातात। धूप इन्हें पहुँचे तो सब्ज़ दिखाई दे और साये में हो तो ज़र्द मालूम हो। वह शादाब सब्ज़ियों की तरह उग आएंगे और ज़र्रात की तरह फैले होंगे, उनकी पेशानियों पर लिखा होगा, 'ख़ुदा के आज़ाद करदा जहन्नमी' इस तहरीर से अहले-जन्नत उनसे मुतारिफ़ हो जाएंगे कि उन्होंने कुछ नेक काम किए थे। एक अर्से तक जन्नत में वे उसी तरह रहेंगे फिर ख़ुदा से दरख़ास्त करेंगे कि या रब यह तहरीर मिटा दे। चुनांचे मिटा दी जाएगी।

إِنَّ اللهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذٰلِكُمُ اللهُ ۖ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

इन्नल्ला-ह फ़ालिक़ुल्-हब्बि वन्नवा, युख़्रिजुल् हय्-य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्-हय्य, ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून। (95) फ़ालिक़ुल्-इस्बाह, व ज-अलल्लै-ल स-कनंव्-वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बाना, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अज़ीज़िल्-अलीम। (96) व हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुन्नुजू-म लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्र, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यअ्लमून। (97)

तर्जमा : बेशक अल्लाह तआला दाने को और गुठलियों को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकाल लाता है। और वह बेजान को जानदार से निकालनेवाला है। अल्लाह तआला यह है, सो तुम कहाँ उलटे चले जा रहे हो। वह सुब्ह का निकालनेवाला है। और उसने रात को राहत की चीज़ बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब से रखा है। यह ठहराई बात है ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है। बड़े इल्मवाला है। और वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिए से अन्धेरों में, ख़ुश्की में और दरिया में भी रास्ता मालूम कर सको। बेशक हमने दलायल ख़ूब खोल-खोल कर बयान कर दिए हैं, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं।

(पारा 7, अनआम 95-97)

तशरीह : अल्लाह पाक ख़बर देता है कि ज़मीन में बोए हुए

दाने को वह ऊपर लाकर चीर देता है। और उसमें से मुख़्तलिफ़ नौअ की सब्ज़ियाँ और रूईदगियाँ पैदा हो जाती हैं जिनके रंग अलग, शकलें अलग और ज़ायक़े अलग। और उसी फ़ालिक़ुल हब्बि वन्नवा' की तफ़सीर में फ़रमाया कि वह एक बेजान चीज़ के अन्दर से एक जानदार चीज़ यानी नबातात पैदा करता है। और जानदार के अन्दर से बेजान चीज़ निकालता है, जैसे बीज और हबूब कि बेजान चीज़ हैं। जो जानदार पौधे के अन्दर पैदा होते हैं, जैसा कि फ़रमाया समझने के लिए यह भी एक नुकता है कि ज़मीन तो होती है ख़ुश्क और मुर्दा लेकिन पानी बरसाकर हम उसे फिर ज़िन्दा कर देते हैं और उससे अनाज और ग़ल्ला पैदा करते हैं जिसे तुम खाते हो, कोई कहता है कि बेजान अंडे से जानदार मुर्ग़ी का पैदा करना मुराद है। या जानदार मुर्ग़ी से बेजान अंडा पैदा करना मुराद है। कोई मुराद लेता है कि फ़ाजिर से वलदे-सालेह और मर्दे-सालेह से वलदे-फ़ाजिर मुराद है। क्योंकि नेक बमंज़िला ज़िन्दा के है और बद बमंज़िला मुर्दा के है। इसके सिवा और बहुत-से उमूर मुराद हो सकते हैं। फ़रमाया है कि इन सबका फ़ाइल अल्लाह वहदहु ला शरीक है। तो फिर तुम किधर भटके जा रहे हो, हक़ से मुँह मोड़ते हो, ग़ैर ख़ुदा की परस्तिश करते हो। वह रौशनी और तारीकी का पैदा करनेवाला है। चुनांचे अल्लाह तआला अशयाए-मुतज़ाद की तख़लीक़ पर अपनी क़ुदरते-कामिला का बयान फ़रमाता है, इसी लिए फ़रमाया कि रात के अन्दर से दिन को चीर कर निकालनेवाला है। और इसी तरह इसके बरअक्स और रात को तारीक और महल्ले-सुकून बनाया ताकि सारी चीज़ें इसमें सुकून-चैन और राहत ले सकें। जैसा कि फ़रमाया, क़सम है दिन की रौशनी की और क़सम है रात की जो तारीक तर हो जाती है। और फ़रमाया, क़सम है रात की जो घटा-टोप तारीकी बन जाती है और दिन की, क़सम है जो ख़ूब रौशन हो जाता है और फ़रमाया, क़सम है दिन की जब उसकी ज़िया ख़ुब फूट पड़ती है। और रात की जो सारी दुनिया को घेर लेती है। सुहैब रूमी रज़िअल्लाहु अन्हु की बीवी उनकी कसरते-शब बेदारी की शिकायत

करते हुए कहती हैं कि अल्लाह तआला ने सबके लिए रात को महल्ले-सुकून बनाया। लेकिन सुहैब रज़िअल्लाहु अन्हु के लिए नहीं क्योंकि सुहैब रज़िअल्लाहु अन्हु को जब जन्नत याद आती है तो उसके शौक़ में रात-रात भर नहीं सोते और इबादत करते रहते हैं। और जब दोज़ख़ याद आती है तो उनकी नींद ही उड़ जाती है। इब्ने-अबी हातिम ने इसको रिवायत किया है और फ़रमाया कि सूरज और चाँद अपने-अपने ज़ाब्ते और हिसाब से चलते रहते हैं, उनके क़ानूने-रफ़तार में ज़र्रा बराबर तग़य्युर नहीं होता। न इधर-उधर भटकते हैं। बल्कि हर एक की मनाज़िल मुक़र्रर हैं, सर्दियों और गर्मियों में अपने-अपने उसूल पर चलते रहते हैं और इसी मुरत्तिबा क़ायदे से दिन और रात घटते और बढ़ते रहते हैं। जैसा कि फ़रमाया, इसी ख़ुदा तआला ने सूरज को रौशन तर बनाया और चाँद को ठंडी रौशनी दी और इसके घटने बढ़ने की मनाज़िल क़रार दीं। और फ़रमाया कि न शम्स क़मर से टकराता है और न इससे आगे बढ़ जाता है कि रात को भी नमूदार होने लगे, न रात, दिन को पकड़ती है। हर सय्यारा अपने-अपने मदार और मुहीत पर गर्दिश में है। और फ़रमाया कि शम्स व क़मर और सब नुजूम अमरे-ख़ुदावन्दी ही के महकूम और मुसख़्ख़र हैं। और फ़रमाया कि ये ख़ुदाए अज़ीज़ व अलीम का क़रारदादह क़ानून है कि कोई उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं कर सकता। कोई चीज़ उसके इल्म से हट नहीं सकती, ख़्वाह ज़मीन व आसमान का कोई ज़र्रा ही क्यों न हो।

जहाँ कहीं अल्लाह तआला ने ख़ल्क़े-लैल व नहार और ख़ल्क़े-शम्स व क़मर का ज़िक्र फ़रमाया है तो कलाम को अज़ीज़ व अलीम ही के अल्फ़ाज़ पर ख़त्म फ़रमाया है। जैसा कि यहाँ भी है। और जैसा कि फ़रमाया, उनके यह भी एक नुक्ता है कि रात जिसके अन्दर से हम दिन निकालते हैं, वह उनके लिए कैसी तारीक रहती है और सूरज अपनी ही क़रारगाह पर हरकत कर रहा है। और अपने मुस्तक़र की तरफ़ जा रहा है। यह ख़ुदाए अज़ीज़ व अलीम का क़रार-दादह मेयार है। जब अल्लाह पाक ने अव्वल सूरा-हामीम

अस-सजदा में ख़लक़स्समावाति वल अर्ज़ि का ज़िक्र फ़रमाया तो इरशाद होता है कि हमने इस आसमान को चिराग़ों से मुज़य्यन कर रखा है। और यही चिराग़ दुनिया की हिफ़ाज़त का काम देते हैं। यह तक़दीर अज़ीज़ व अलीम है और फ़रमाया कि उसने तुम्हारे लिए सितारे बना रखे हैं ताकि तुम जब बहर व बर्र की तारीकियों में हो तो उनसे राह-शनासी का काम लो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ये सितारे एक तो आसमान की ज़ीनत हैं और दूसरे यह कि शैतान को इससे रज्म किया जाता है। और तीसरे यह कि इनसे ज़ुलुमाते-बर्र व बहर में रास्ता पहचाना जाता है। बाज़ सल्फ़ ने कहा है कि नुजूम का मक़सद सिर्फ़ यही तीन चीज़ें हैं, इससे ज़्यादा और कोई मक़सद अगर उनका कोई समझे तो उसने ख़ता की। ख़ुदा तआला की आयत पर इज़ाफ़ा किया फिर फ़रमाया कि हमने अपनी आयतें बहुत तफ़सील व वज़ाहत से बयान की हैं ताकि लोग कुछ अक़ल पकड़ें और हक़ को जानकर बातिल से इज्तिनाब करें।

﴾89﴿

وَهُوَ الَّذِيٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ्सिंव्वाहि-दतिन् फ़मुस्त-क़र्रुंव्-व मुस्तौदअ़्, क़द्फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यफ्क़हून। (98) व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माआ, फ़-अख़रज्ना बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़-अख़रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु-तराकिबा, व मिनन्नख़्लि मिन् तल्अिहा क़िन्वानुन्

दानियतुंव्-व जन्नातिम्-मिन् अअ्नाबिंव्-वज्जैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिह्, उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म-र व यन्अिह, इन्-न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून। (99)

तर्जमा : और वह ऐसा है जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया। फिर एक जगह ज़्यादा रहने की है और एक जगह चन्दे रहने की। बेशक हमने दलायल ख़ूब खोल-खोलकर बयान कर दिए उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं। और वह ऐसा है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हमने उसके ज़रिए से हर क़िस्म के नबातात को निकाला फिर हमने उससे सब्ज़ शाख़ निकाली कि इससे हम ऊपर-तले दाने चढ़े हुए निकालते हैं और खजूर के दरख़्तों से यानी उनके घपे में से, ख़ोशे हैं जो नीचे को लटके जाते हैं। और अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार के, बाज़ एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और कुछ एक दूसरे से मिलते-जुलते नहीं होते। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है और उसके पकने को देखो, इनमें दलायल हैं इन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

(पारा 7, अनआम 98-99)

तशरीह : अल्लाह पाक फ़रमाता है कि उसी ने तुम को एक रूह यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किया। जैसा कि फ़रमाया, ऐ लोगो! उस ख़ुदा तआला से डरो जिसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बनाया और उससे उसकी बीवी को और फिर उन दोनों से बेइन्तिहा मर्द और औरतें पैदा कीं। और फ़रमाया कि फिर तुम क़रार-पज़ीर होते हो और फिर दूसरी जगह सौंप दिए जाते हो।

इब्ने-मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु और इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु वग़ैरह कहते हैं कि मुस्तक़र से मुराद रहमे-मादर है और मुस्तौदअ से मुराद पुश्ते-पिदर है और बाज़ कहते हैं कि मुस्तक़र से मुराद क़रारगाहे-दुनिया और मुस्तौदअ से मुराद आख़िरत बाद अज़ मौत। सअद-बिन-जुबेर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि 'इस्तिक़रार फ़िलअर्ज़' और वदीअत बाद मर्ग मुराद है। हसन बसरी रहमतुल्लाहि

अलैहि कहते हैं कि मरने पर जो अमल रुक गए यह मुस्तक़र है और मुस्तौदअ दारे-आख़िरत है। लेकिन क़ौले-अव्वल ज़्यादा दुरुस्त है। हम समझनेवालों के लिए बात को किसी क़दर वाज़ेह करके बयान करते हैं। फिर फ़रमाया उसी ने आसमान से पानी बरसाया जो मुबारक है और बन्दों के लिए रिज़्क़ मुहैया करता है। मख़लूक़ की मदद करता है। उसी से हम हर क़िस्म की नबातात उगाते हैं। जैसा कि फ़रमाया कि पानी ही से हर शै ज़िन्दगी पाती है। उसी से ज़राअत और सरसब्ज़ दरख़्त उगते हैं। इन्हीं दरख़्तों में फिर दाने और फल पैदा होते हैं। हम इन्हीं के अन्दर से ऐसे दाने निकालते हैं जो एक से एक जुड़े होते हैं जिन्हें ख़ोशे और गुच्छे कहते हो। दरख़्ते-ख़ुरमा में ख़ोशे-दार डालियाँ होती हैं जो क़रीब-क़रीब और एक दूसरे के साथ जुड़े हैं और इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि छोटे-छोटे दरख़्ते-ख़ुरमा जिनके ख़ोशे ज़मीन से लगे हों मुराद है। फिर फ़रमाया कि अंगूर के बाग़ात हम ज़मीन पर पैदा करते हैं। ख़ुरमा और अंगूर का ज़िक्र फ़रमाया क्योंकि यही दोनों अहले-हिजाज़ के बेहतरीन समर समझे जाते हैं। बल्कि सारी दुनिया के बेहतरीन समर हैं। अल्लाह पाक अपने एहसान का ज़िक्र फ़रमाता है कि इन ख़ुरमा और अंगूर के फलों से तुम शराब बनाते हो। और अच्छी ग़िज़ा अपने लिए तैयार करते हो। और फ़रमाया कि ज़मीन में हमने ख़ुरमा और अंगूर के बाग़ात बनाए और फ़रमाया कि ज़ैतून और अनार के भी बाग़ात जो पत्तों और शक्ल के लिहाज़ से एक-दूसरे से मुतशाबेह और क़रीब हैं लेकिन फल और शक्ल और ज़ायक़े और तबीअत के लिहाज़ से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हैं। फिर फ़रमाया कि जब वह पक जाए तो उसके फल की तरफ़ देखो। यानी ख़ुदा तआला की क़ुदरत में तफ़क्कुर करो कि किस तरह इनको अदम से वुजूद में लाया। हालांकि फल बनने से पहले यह भी जलाने की लकड़ी थी। फिर यही लकड़ी ख़ुरमा और अंगूर और दूसरे मेवे बन गई, जैसा कि फ़रमाया कि ज़मीन पर गुंजान दरख़्त और अंगूर और ज़राअत के बाग़ात में जो ख़ोशा-दार भी हैं और ग़ैर ख़ोशे की भी सबको पानी

एक ही क़िस्म का मिलता है लेकिन खाने में एक बहुत अफ़ज़ल होता है दूसरे से, इसी लिए यहाँ फ़रमाया कि ऐ लोगो! इसमें ख़ुदा तआला की कमाले-क़ुदरत व हिकमत की कमाल दलालतें हैं। इसको ईमानदार लोग ही समझते हैं और ख़ुदा तआला व रसूल की तसदीक़ करते हैं।

﴾90﴿

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

व ज-अलू लिल्लाहि शु-रकाअल्-जिन्-न व .ख़-ल-क़हुम् व .ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम् बिग़ैरि अिल्म, सुब्हानहू व तआला अम्मा यसिफ़ून। (100)

तर्जमा : और लोगों ने शयातीन को अल्लाह का शरीक क़रार दे रखा है। हालाँकि इन लोगों ही ने पैदा किया है और इन लोगों ने अल्लाह के हक़ में बेटे और बेटियाँ बिला सनद तराश रखी हैं, और वह पाक व बरतर है उन बातों से जो ये करते हैं।

(पारा 7, अनआम 100)

तशरीह : यहाँ मुशरिकीन का रद्द है जो इबादत में ख़ुदा तआला के साथ ग़ैर को शरीक करते हैं और शैतान की परस्तिश करने लगते हैं। अगर यह कहा जाए कि वे असनाम की परस्तिश करते थे, फिर शैतान के बहकाने और उसकी इताअत करने की बिना पर जैसा कि फ़रमाया : वह ख़ुदा तआला को छोड़कर औरतों की परस्तिश करने लगे (यानी मलाइका को ख़ुदा तआला की बेटियाँ कह कर इन मलाइकाए-उनास को पूजने लगे) वे तो महज़ शैताने-सरकश की इबादत करते हैं। जिसने कहा था कि ऐ ख़ुदा मैं तेरे बन्दों का एक बड़ा हिस्सा अपनी तरफ़ खींच लूँगा। इन्हें गुमराह करूँगा। इनमें दूर-रस उम्मीदें पैदा करूँगा। मैं इन्हें हुक्म दूँगा। और वे मवेशियों के कान काट दिया करेंगे, मैं इन्हें ऐसा ही हुक्म करूँगा ताकि वे तेरी बनाई हुई सूरत को बिगाड़ दें। और जिसने ख़ुदा

तआला को छोड़ कर शैतान को अपना वली और सरपरस्त बना लिया, वह बहुत खुले ख़सारे में रहा। वह इन मुशरिकों से बड़े ख़ुश-आइन्द वादे करता है। दूर-रस तमन्नाएँ इनमें पैदा कराता है। और उसके सारे वादे धोका होते हैं। जैसा कि फ़रमाया कि क्या तुम शैतान और उसकी ज़ुर्रियत को अपनाते हो। हालाँकि तुमको तो मेरा दामन पकड़ना चाहिए था। और हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप से कहा था कि ऐ बाप क्या तुम शैतान की इबादत करते हो? शैतान तो रहमान का नाफ़रमान है। और जैसा कि फ़रमाया, ऐ बनी आदम! क्या मैंने तुम्हें न बता दिया था कि शैतान की इबादत न करना वह तुम्हारा दुश्मन है। तुम मेरी ही इबादत करो। यही सिराते-मुस्तक़ीम है। और मलाइका क़ियामत के रोज़ कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा वली है। ये मुशरिकीन अगरचे हमें बनाते, अल्लाह कह कर पूजते रहे लेकिन हमें इनसे कोई ताल्लुक़ नहीं। ये तो दरअस्ल शैतान को पूजते रहे। इसी लिए आयत ज़ेरे-ज़िक्र में फ़रमाया कि इन मुशरिकीन ने शयातीन को ख़ुदा तआला का शरीक बना दिया। हालाँकि इनको भी अल्लाह वाहिद ने ही पैदा किया है। पस वह ख़ुदा तआला के साथ ख़ुदा तआला की मख़लूक़ को भी कैसे पूजते हैं। जैसे कि इबराहीम अलैहिस्सलाम ने कहा था कि "क्या तुम इन्हीं चीज़ों को पूजने लगे हो जिनको ख़ुद अपने हाथों से बनाया, हालांकि तुम को भी और तुम्हारे इन मसनूआत को भी अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है। इसलिए चाहिए कि तुम मुफ़रिद बिलइबादत होकर ख़ुदाए-लाशरीक से ताल्लुक़ रखो। फिर फ़रमाया कि इन्होंने बे-समझी से ख़ुदा तआला के लिए बेटे और बेटियाँ बना डालीं। यहाँ औसाफ़े-ख़ुदावन्दी में गुमराह की गुमराही पर तंबीह की जा रही है। वह ख़ुदा तआला के लिए बेटा क़रार देते हैं। जैसे यहूद कहते हैं कि उज़ैर अलैहिस्सलाम ख़ुदा के बेटे हैं। हालाँकि वे पैग़म्बर हैं। और नसारा ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते हैं। और मुशरिकीने-अरब मलाइका को ख़ुदा तआला की बेटियाँ कहते थे। ये ज़ालिम जिस बात के क़ायल हैं ख़ुदा तआला इससे बहुत बालातर

है। मतलब यह हुआ कि वह जिनको शरीके-इबादत करते हैं। हालांकि ख़ुदाए-वाहिद ही ने इन्हें बिला शिरकते-ग़ैरे पैदा किया है वह हक़ीक़त से वाक़फ़ियत के बग़ैर ऐसा कहते हैं, अल्लाह तआला की अज़मत से जाहिल हैं। जो अल्लाह तआला है उसको बेटा, बेटी, बीवी, कैसे हो सकते हैं। इसी लिए फ़रमाया कि वह पाक है, इनके हफ़वात व बेहूदा-गोइयों से बालातर है।

﴾91﴿

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَنّٰى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

बदीउस्समावाति वल्अर्ज़, अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव्-व लम् तकुल्लहू साहि-बह्, व .ख-ल-क़ कुल्-ल शैइन्; व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम। (101)

तर्जुमा : वह आसमान व ज़मीन का मूजिद है, अल्लाह तआला के औलाद कहाँ हो सकती है, हालाँकि इसके कोई बीवी तो है नहीं। और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को पैदा किया और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (पारा 7, अनआम 101)

तशरीह : वह आसमान व ज़मीन का मूजिद है, ख़ालिक़ है। कोई मिसाल ज़मीन व आसमान की उसके सामने नहीं थी। चुनांचे बिदअत को बिदअत इसी लिए कहते हैं कि सल्फ़ में इसकी कोई नज़ीर नहीं होती है। लोग किसी अमल को अपनी तरफ़ से ईजाद करके इसको बज़ोमे-ख़ुद सवाब का काम समझने लगते हैं। उसका बेटा कैसे होता, उसके तो बीवी ही नहीं और बेटा तो शैईन मुतनासिबीन से पैदा होगा और अल्लाह तआला के मुनासिब व मुशाबेह तो कोई चीज़ भी नहीं। जैसा कि फ़रमाया कि वे कहते हैं कि रहमान ने अपना एक बेटा बना लिया है, यह बड़ी झूट बात है, उसी ने हर शैय पैदा की, फिर उसी की मख़लूक़ उसकी बीवी कैसे होगी, उसकी कोई नज़ीर नहीं, फिर इसका बेटा इसकी नज़ीर बन कर कैसे आ सकता है। ख़ुदा तआला की ज़ात इससे पाक है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۰۲﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۰۳﴾

ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम्, ला इला-ह इल्ला हु, .खालिकु कुल्लि शैइन् फ़अ्बुदूहु व हु-व अला कुल्लि शैइंव्-वकील।(102) ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु; व हु-व युद्रिकुल्-अब्सा-र, व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर। (103)

तर्जमा : यही है अल्लाह तआला तुम्हारा रब! उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, हर चीज़ का पैदा करनेवाला है, तो तुम उसकी इबादत करो और वह हर चीज़ का कारसाज़ है, उसको तो किसी की निगाह मुहीत नहीं हो सकती और वह सब निगाहों को मुहीत हो जाता है और वही बड़ा बारीक-बीन, बाख़बर है।

(पारा 7, अनआम 102, 103)

तशरीह : यही तुम्हारा रब है, जिसने हर शय पैदा की है, उसका कोई ख़ुदा नहीं, वही हर शैय का ख़लिक़ है। पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी वहदानियत का इक़रार करो। उसका न कोई लड़का है न कोई बाप, न बीवी न कोई उसका अदील व नज़ीर। वह हर शय पर हफ़ीज़ व रक़ीब है। हर चीज़ का मुदब्बिर है, वही रिज़्क़ देता है। रात और दिन उसी ने बनाए। उसको निगाहें पा नहीं सकतीं। एक तो यह कि अगरचे आँखें उसको आख़िरत में देख सकें, लेकिन दुनिया में नहीं देख सकतीं। नबी (सल्ल०) की अहादीस से बिलतवातुर यही साबित है। जैसा कि हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जिसने यह गुमान किया कि नबी (सल्ल०) ने ख़ुदा तआला को देखा था तो वह झूटा है। फिर आप रज़िअल्लाहु अन्हु ने यही आयत पढ़ी, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से उसके बरख़िलाफ़ मरवी है उन्होंने रूइयते-बारी तआला को

मुतलक़ रखा है और उनसे यह भी मरवी है कि आप (सल्ल.) ने अपने दिल की आँखों से ख़ुदा तआला को दो दफ़ा देखा है।

इब्ने उयेना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि दुनिया में निगाहें उसको नहीं देखेंगी और दूसरों ने कहा कि इसका मतलब यह है कि आँख भर कर उसको नहीं देख सकते। इससे तख़्सीस होती है इस रूइयत की जो मोमिनीन को दारुल-आख़िरत में हासिल होगी। क्योंकि अल्लाह तआला के क़ौल से यह बात साबित होती है। यानी अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ईमानदार लोगों के चेहरे उस रोज़ शगुफ़ता रहेंगे, और अपने रब की तरफ़ वह नज़र उठाए हुए होंगे। नीज़ काफ़िरों से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह अपने रब को देखने से हिजाब में होंगे यानी वे रब को नहीं देख सकेंगे। इससे इस बात पर दलालत होती है कि मोमिनीन के लिए रूइयते-बारी तआला में हिजाब नहीं होगा। और मुतवातिर अहादीस से भी साबित है कि मोमिनीन दारे-आख़िरत में ख़ुदा तआला को रौज़ाते-जन्नत में देखेंगे। ख़ुदा तआला अपने फ़ज़्ल से यह बात नसीब फ़रमाए, आमीन। अब जिस इदराक की यहाँ नफ़ी की गई है, यह इदराक किस क़िस्म का है। इसमें कई क़ौल हैं। जैसे मारिफ़ते-हक़ीक़त। और हक़ीक़त को जानने वाला तो बजुज़ ख़ुदा के और कोई नहीं हो सकता। अगरचे मोमिन को रूइयत होगी लेकिन हक़ीक़त और ही चीज़ है। चाँद को सब देखते हैं लेकिन इसकी हक़ीक़त इसकी ज़ात और कुहन तक किसी की रसाई नहीं हो सकती। पस ख़ुदा तआला तो बेमिस्ल है। इब्न अलैहिर्रहमा कहते हैं कि न देखना मख़सूस है दुनिया के अन्दर, यानी दुनिया में आँखों से कोई नहीं देख सकता, इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि किसी की निगाह ख़ुदा तआला को घेर नहीं सकती। इकरिमा रहमतुल्लाहि अलैहि से कहा गया कि 'ला तुदरिकुहुल अब्सार'। तो कहा कि क्या तुम आसमान को नहीं देख सकते हो? कहा कि हाँ देख सकते हैं। तो कहा, क्या पूरा आसमान बयक नज़र देखते हो। ग़रज़ यह कि उसकी शान इससे बालातर है कि इस पर निगाहें पड़

सकें। अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि मोमिनीन के चेहरे इस दरजे शगुफ़्ता होंगे और अपने रब को देखेंगे। लेकिन उसकी अज़मत की वजह से निगाहें इस पर मुहीत न हो सकेंगी। और इस आयत की तफ़सीर में हदीस वारिद है कि अगर तमाम जिन्न व इंस और शयातीन व मलाइका जब से कि पैदा किए गए हैं, सबकी एक सफ़ बनाई जाए तो भी इसका इहाता न हो सके, इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने अपने रब तआला को देखा था। जब कहा गया कि क्या अल्लाह तआला ने नहीं कहा है कि 'ला तुदरिकुहुल अब्सार'। तो कहा, आप (सल्ल०) भी तो ख़ुदा तआला का एक नूर ही हैं। लेकिन इस आयत का मतलब यह है कि अगर वह बतमाम अपने नूर के साथ तजल्ली करे तो आँखें उसको नहीं देख सकतीं। और बाज़ यह मतलब बयान करते हैं कि कोई शय उसके सामने क़ायम नहीं रह सकती। अल्लाह तआला न सोता है न सोना उसको सज़ावार है। वह मीज़ान क़ायम किए हुए है, दिन के आमाल रात होने से पहले और रात के आमाल दिन होने से पहले उसके सामने पेश हो जाते हैं। उसका हिजाब नूर है या नार है। अगर वह उठ जाए तो उसकी तजल्ली सारी दुनिया को जला डालेगी। कुतुबे-मुतक़द्दिमा में है कि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि ऐ मूसा! कोई ज़िन्दा मेरी तजल्ली पाकर ज़िन्दा नहीं रह सकता। और कोई ख़ुश्क चीज़ बग़ैर फ़ना हुए नहीं रह सकती। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने पहाड़ पर तजल्ली की तो वह शिकस्ता व सोख़्ता होकर रह गया। और (हज़रत) मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर पड़े। और जब होश में आए तो कहा। 'सुब्हान-क तुब्तु इलै-क व अना अव्वलुल-मोमिनीन। इदराक' ख़ास योमे-क़ियामत में रूइयत की नफ़ी नहीं करता है वह इबादे-मोमिनीन पर अपनी तजल्ली फ़रमाएगा। उसकी तजल्ली और जलाल व अज़मत उसके हस्बे-मंशा होगी। निगाहें उसको ब-तमामह इदराक नहीं कर सकतीं। इसी लिए उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हु आख़िरत में रूइयत की

क़ायल हैं। और दुनिया में रूइयत की नफ़ी करती हैं। उन्होंने भी एहतिजाज इसी आयत से किया है। पस जिस बात की नफ़ी इदराक करे कि उसके मानी रूइयते-अज़मत व जलाल के हैं वह बात कैसे मुमकिन है कि किसी बशर या किसी फ़रिश्ते से हो सके। फिर इरशाद होता है कि 'हु-व युदरिकुल अब्सार' यानी वह लोगों के अब्सार का इदराक और इहाता कर सकता है। क्योंकि उसी अब्सारे-इनसान को पैदा किया है। फिर वह कैसे इहाता न कर सके। इरशाद है कि क्या वह अपनी पैदा की हुई चीज़ को नहीं जानेगा। वह लतीफ़ व ख़बीर है। और कभी लफ़्ज़ अब्सार से मुबस्सिरीन मुराद होती है यानी मुबस्सिरीन उसको नहीं देख सकते, वह लतीफ़ है यानी किसी बात के इस्तिख़राज में बहुत बारीक बीन है और हर चीज़ के ठिकाने से बाख़बर है। जैसे कि लुक़मान अलैहिस्सलाम अपने बेटे को पिंद देते वक़्त कहते हैं :- 'या बुनय्या इन्नहा इन तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिन....' (यानी ऐ मेरे बच्चे अगर कोई भलाई या बुराई राई के दाने के बराबर भी हो, ख़्वाह पत्थर में हो या आसमानों में या ज़मीन में, अल्लाह तआला उसे ले आएगा। अल्लाह तआला निहायत बारीक बीन और ख़बरदार है।

﴾93﴿

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾

क़द् जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम्, फ़-मन् अब्स-र फ़लिनफ़्सिह, व मन् अमि-य फ़-अलैहा, व मा अ-न अलैकुम् बिहफ़ीज़। (104)

तर्जमा : अब बिला शुबहा तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ बीनी के ज़राए पहुँच चुके हैं, सो जो शख़्स देख लेगा वह अपना फ़ायदा करेगा और जो शख़्स अन्धा रहेगा। वह अपना नुक़्सान करेगा, और मैं तुम्हारा निगराँ नहीं हूँ।

(पारा 7, अनआम 104)

तशरीह : बसाइर यानी मुबैयिनात और निशानियाँ जो क़ुरआन में हैं और जो रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने पेश की हैं, पस जिसने बसीरत से काम लिया उसकी ज़ात को फ़ायदा पहुँचा। जैसे फ़रमाया कि जो हिदायत हासिल करेगा वह अपनी ज़ात के लिए करेगा और जो भटक जाएगा उसकी मुज़िर्रत उसी पर रहेगी। इसी लिए फ़रमाया कि जो अन्धा बनेगा उसका नुक़्सान उसी को पहुँचेगा। जैसे फ़रमाया कि आँखें अन्धी नहीं होती हैं बल्कि दिल अन्धे होते हैं और मैं तुम पर कुछ हाफ़िज़ व रक़ीब व निगराने-कार तो हूँ नहीं, बल्कि मैं तो सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ हूँ। हिदायत तो ख़ुदा तआला करता है जिसको चाहे और गुमराह होने देता है जिसको चाहे।

﴾94﴿

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ
ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا
تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम्-मअ्रूशातिंव्-व ग़ै-र मअ्रूशातिंव्- वन्नख़्-ल वज़्ज़र्-अ मुख़्तलिफ़न् उकुलुहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशा-बिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिह्, कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही; व ला तुस्रिफ़ू, इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन।(141) व मिनल्-अन्आमि हमूलतंव्-व फ़र्शा, कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतान, इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन। (142)

तर्जमा : और वही है जिसने बाग़ात पैदा किए वे भी जो टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और वे भी जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाए जाते और खजूर के दरख़्त और खेती जिनमें खाने की चीज़ें

मुख़्तलिफ़ तौर की होती हैं। और ज़ैतून और अनार जो बाहम एक-दूसरे के मुशाबेह भी होते हैं और एक-दूसरे के मुशाबेह नहीं भी होते, इन सबके फलों में से खाओ जब वह निकल आए और उसमें जो हक़ वाजिब है वह उसके काटने के दिन दिया करो और हद से मत गुज़रो। यक़ीनन वह हद से गुज़रनेवालों को नापसन्द करता है, और मवाशी में ऊँचे क़द के और छोटे क़द के पैदा किए। जो कुछ अल्लाह ने तुम को दिया है खाओ और शैतान के क़दम-बक़दम मत चलो, बिला शक वह तुम्हारा सरीह दुश्मन है।

(पारा 8, अनआम 141-142)

तशरीह : अल्लाह तआला हर शय का ख़ालिक़ है। ज़रूअ समार और अनआम जिन पर ये मुशरिकीन तसर्रुफ़ करते हैं। और अपनी फ़ासिद आरा से उसकी तक़सीम करके किसी को हलाल और किसी को हराम बना लेते हैं, ये सब ख़ुदा के पैदा किए हुए हैं। और यह छतों और मंडवे वाले और बे-सक़्फ़ बाग़ात जो टट्टियों पर चढ़े हुए नहीं हैं। सब उसी के पैदा करदा हैं। मारूशात तो वे बेलें हों और टट्टियों पर चढ़ाई हुई हों जैसे अंगूर व ग़ैर मारूशात व समर व दरख़्त जो जंगलों और पहाड़ों में उग आते हैं। जो यकसाँ भी होते हैं और जुदागाना भी। यानी देखने में यकसाँ और ज़ायक़े में जुदागाना। जब ख़ूब फल-फूल जाएँ तो उनके फल खाओ और खेत काटने के वक़्त ग़रीबों को देने का जो हक़ है वह भी अदा कर दो। बाज़ ने इससे ज़कात मफ़रूज़ा मुराद लिया है। जबकि वह पैदावार नापी या तौली जाए तो उसी रोज़ यह हक़ अदा कर दिया जाए। पहले लोग नहीं दिया करते थे। फिर शरीअत ने दसवाँ हिस्सा मुक़र्रर कर दिया और जो ख़ोशों में से गिर जाए वह भी मिस्कीनों का हक़ है। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जिसकी खजूरें दस वस्क़ से ज़्यादा हों तो वह एक ख़ोशा मसाकीन के लिए मस्जिद में लाकर लटका दे। हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा है कि यह हबूब व समार का सदक़ा है और ज़कात के सिवा ग़रीबों का एक मज़ीद हक़ है। और खेत काटने और ज़कात के सिवा यह दिया जाता था। और

जब मसाकीन उस रोज़ आ जाएँ तो उन्हें भी कुछ न कुछ ज़रूर देना चाहिए और कहा कि कम-अज़-कम एक एक मुट्ठी दिया जाए यह काश्त के रोज़ उसी तरह काटने के वक़्त भी एक-एक मुट्ठी भर गिरा पड़ा भी मसाकीन ही का हक़ है।

इब्ने-ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा है कि यह ज़कात के फ़र्ज़ होने से क़ब्ल की बात है कि मसाकीन के लिए मुट्ठी भर की मिक़दार थी। और जानवर के लिए चारा था और गिरा-पड़ा भी ग़रीबों का हक़ था। अल्लाह तआला ने उन लोगों की मज़म्मत की है जो खेत काट तो लेते हैं लेकिन ग़रीबों को उसमें से सदक़ा नहीं करते जैसा कि एक बाग़वालों का ज़िक्र सूरा 'नून' में किया गया है कि जब उन्होंने अहदो-पैमान किया कि सुब्ह होते ही जा कर खेत काट लेंगे, लेकिन इनशा-अल्लाह नहीं कहा था। तो रात ही उस खेत पर हवा चली कि सारा खेत बरबाद हो गया और वे सुब्ह तक सोते ही रहे। और खेत के सारे ही दरवाज़े काले जले हुए बन गए। पस जब सुब्ह को उठे तो कहने लगे कि सवेरे-सवेरे खेत को चलो जबकि तुम्हें खेत काटना ही है। चुनांचे वे चले और चुपके-चुपके बोलते जा रहे थे कि देखो ये ग़रीब-ग़ुरबा आ जाने न पाएँ। चुनांचे सुब्ह ही जल्दी पहुँच कर जब उन्होंने अपने बाग़ को देखा तो कहने लगे कि हम भटक कर शायद दूसरे बाग़ में आ निकले हैं। फिर कहने लगे, नहीं बाग़ हमारा ही है। मगर यह कि हम इस बाग़ से महरूम कर दिए गए हैं। इनमें के एक बेहतर आदमी ने कहा मैंने क्या तुमसे नहीं कहा था। फिर क्यों न तुम ख़ुदा की तस्बीह पढ़ते रहे, अब वे कहने लगे कि ऐ ख़ुदा तू पाक है। इस अम्र में ज़्यादती हमारी ही तरफ़ से हुई थी। अब हर एक-दूसरे को मलामत करने लगा और कहने लगा, अफ़सोस हम पर हमने ख़ुदा से सरकशी की थी। क्या अजब कि ख़ुदा हमको इससे भी बेहतर बाग़ इनायत फ़रमा दे। हम अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ करते हैं। देखो अज़ाबे-दुनियावी इस तरह होता है और अज़ाबे-आख़िरत तो इससे बड़ा है, बशर्तेकि ज़रा ग़ौर करें।

ऐसा फ़रमाया अल्लाह तआला ने कि जब पक जाएँ तो उसके फल खाओ और फ़सल काटने के वक़्त ग़रीबों को उनका हक़ भी दे दो और तुम उसके खाने में इसराफ़ से काम न लो क्योंकि ज़्यादा खाने में मज़र्रते-अक़्ल व बदन है। जैसा कि फ़रमाया खाओ-पियो लेकिन ज़्यादती न करो। सहीह बुख़ारी में है कि खाओ-पियो, पहनो लेकिन इन बातों में इसराफ़ न करो और शान न बनाओ। अल्लाह तआला का क़ौल 'मिनल अनआमि हमूलतवं-व-फ़रशन' यानी तुम्हारे लिए मवेशी पैदा कर दिए जो तुम्हारे लिए बारबरदारी का काम देते हैं और सवारी के काम में आते हैं। जैसे ऊँट हैं। और फ़र्श से छोटे मवेशी मुराद हैं या छोटी क़ामत के ऊँट। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि 'हमूलह' से ऊँट, घोड़े, ख़च्चर, गधे और हर जानवर जिस पर बारबरदारी हो मुराद है। और 'फ़र्श' से बकरे मुराद हैं। अब्दुर्रहमान-बिन-ज़ैद का ख़याल है कि हमूलतन सवारी का जानवर है और फ़र्श से वे मवेशी मुराद हैं जिन को ज़ब्ह करके खाते हैं। या इनका दूध पीते हैं। बकरी पर बोझ नहीं लादा जाता बल्कि उसका गोश्त खाया जाता है और उसके बालों से कम्बल और फ़र्श बनाए जाते हैं। यही वह मानी है जो अब्दुर्रहमान ने इस आयत की तफ़सीर में कहे। अल्लाह के इस क़ौल से भी तसदीक़ होती है कि "क्या वे नहीं जानते कि हमने ये चीज़ें उनके फ़ायदे के लिए पैदा कीं और इन जानवरों को बनाने में हमारे हाथों ने काम किया जिनके वे मालिक बने हुए हैं। हमने ये जानवर इन इनसानों के लिए मुसख़्ख़र कर दिये हैं कि बाज़ पर तो वे सवार होते हैं और बाज़ को ज़ब्ह करके खाते हैं।" और फ़रमाया कि इन जानवरों में तुम्हारे लिए बड़ी इबरत व नसीहत है। इनके ख़ून से बना हुआ दूध हम तुम्हें पिलाते हैं। यह ख़ालिस दूध पीनेवालों के लिए किस क़दर ख़ुशगवार होता है। और इनके बाल तुम्हारे लिए लिबास और ओढ़ने का काम देते हैं। और दूसरे अग़राज़ से इस्तेमाल में आते हैं। और फ़रमाया अल्लाह ने कि ये जानवर जो तुम्हारे लिए पैदा किए तुम इन पर

सवार होते हो, इन्हें खाते हो और तुम्हारे लिए और दीगर मसालेह भी हैं। और तुम अपने दिली मक़ासिद इनसे पूरे करते हो, तुम इन पर सवार होते हो। और जहाज़ों और कश्तियों में बारबरदारी और सवारी करते हो। अल्लाह तआला तुम्हें अपनी कितनी ही निशानियाँ पेश करता है। तुम ख़ुदा की किस-किस निशानी का इनकार करोगे। फिर फ़रमाया अल्लाह तआला ने कुलू मिम्मा र-ज़-क़-कुमुल्लाह यानी अल्लाह ने जो तुम्हें फल-फुलारी, हबूब व ज़रूअ और मवेशी वग़ैरह दिये हैं इन्हें चाहो तो खाओ, इन सबको अल्लाह ने पैदा किया है और तुम्हारा रिज़्क़ बना दिया है। और तुम शैतान के तरीक़ और अवामिर की पैरवी न करो। जैसे कि इन मुशरिकीन ने इत्तिबाअ की। जिन्होंने ख़ुदा के बाज़ रिज़्क़ को अपने ऊपर हराम कर लिया।

ऐ लोगो! शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। यानी ज़रा भी सोचो तो उसकी अदावत बिल्कुल ज़ाहिर है। तुम भी शैतान को अपना दुश्मन क़रार दे लो। वह अपना शैतानी लश्कर लेकर तुम पर हमलावर होता है ताकि अहले-दोज़ख़ में से हो जाओ। ऐ बनी आदम, शैतान तुमको फ़ितने में न डाले जैसा कि उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकाला और उनका लिबास उन पर से उतरवा दिया। और वह खुले दिखाई देने लगे और फ़रमाया, क्या तुम मुझे छोड़ कर शैतान और उसकी ज़ुर्रियत को अपने औलिया बनाओगे। ये शयातीन तो तुम्हारे दुश्मन हैं। ज़ालिमों के लिए बहुत बड़ी जज़ा है। क़ुरआन के अन्दर इस मौज़ूअ पर बहुत कसरत से आयतें हैं।

﴾95﴿

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۡ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۵﴾

व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् .ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ

बअ्ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ्ज़िन् द-रजातिल् लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम्, इन्-न रब्ब-क सरीअुल्-अिक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम। (165)

तर्जमा : और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया। और एक का दूसरे पर रुत्बा बढ़ाया ताकि तुमको आज़माए उन चीज़ों में जो तुमको दी हैं। बिलयक़ीन आपका रब जल्द सज़ा देनेवाला है। और बिलयक़ीन वह वाक़ई बड़ी मग़फ़िरत करनेवाल, महरबानी करनेवाला है। (पारा 8, अल-अनआम 165)

तशरीह : इरशाद होता है कि तुम यके बाद दीगरे ज़मीन में बस्तियाँ बसाते थे और अस्लाफ़ के बाद अख़लाफ़ का ज़माना आता रहता था। एक-दूसरे के जानशीन हुए जैसा कि फ़रमाया अगर हम चाहते तो तुम्हारे जानशीन तुम्हारी औलाद या किसी और को बनाने की बजाय फ़रिश्तों को बना देते और तुम्हारे बाद वह तुम्हारी जगह ले लेते और फ़रमाया कि यह ज़मीन उसने तुम्हें यके बाद दीगरे दी और फ़रमाया कि मैं ज़मीन में एक अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूँ और फ़रमाया, मुमकिन है कि अनक़रीब तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुमको उसकी जगह पर ला बिठाए और फिर यह देखे कि इसके बाद तुम आकर क्या किरदार पेश करते हो और फ़रमाया कि एक से ऊपर एक के दरजात बनाए गए हैं। यानी अरज़ाक़ और अख़लाक़ और महासिन और मसावी, मनाज़िर और अशकाल वालों में सब एक-दूसरे से कम ज़्यादा हैं। जैसा कि फ़रमाया, हमने उनकी दुनियावी ज़िन्दगी में उनकी बाहमी मईशत को तक़सीम कर दिया है। और बाज़ के दर्जे बाज़ से उँचे रखे हैं। कोई अमीर है कोई ग़रीब और कोई आक़ा है और कोई उसका नोकर। और फ़रमाया, ग़ौर तो करो कि हम किसी को किसी पर कैसी बरतरी और तरजीह देते हैं। लेकिन दुनियावी दरजात से क़तअ नज़र आख़िरत के दरजात बड़ी चीज़ हैं और बड़ी फ़ज़ीलत रखते हैं। और फ़रमाया कि ये तफ़रीक़े-मदारिज इसलिए है ताकि हम तुम्हें आज़माएँ। दौलतमन्द को दौलत देकर उससे पूछा जाएगा कि इस

दौलत का शुक्र किस तरह अदा किया था। और ग़रीब से पूछा जाएगा कि अपनी ग़ुरबत पर सब्र भी किया था या नहीं।

अबू-सईद ख़ुदरी रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि दुनिया शादाब व सरसब्ज़ है, अल्लाह ने दूसरों के बाद अब तुम को दुनिया से मुतमत्ते होने का मौक़ा दिया है। और तुम्हें इनका जानशीन बनाया। अब हम देखेंगे कि इनके बाद अब तुम क्या किरदार पेश करते हो। ऐ लोगो! दुनिया से डरो और औरतों से डरो, पहला फ़ितना जो बनी इसराईल में पैदा हुआ था वह औरतों ही से मुताल्लिक़ था। और फ़रमाया कि अल्लाह तआला जल्द तर सज़ा देनेवाला है। यानी दुनिया की ज़िन्दगी जल्द तर ख़त्म हो जाएगी और आक़िबत व सज़ा से साबिक़ा पड़ जाएगा। और वह बड़ा ग़फ़ूर और रहीम है।

यहाँ ख़ौफ़ भी दिलाया जा रहा है और तरग़ीब भी दी जा रही है कि इसका हिसाब और इक़ाब जल्द तर आ जाएंगे। और ख़ुदा की नाफ़रमानी और रसूलों की मुख़ालिफ़त करनेवाले माख़ूज़ हो जाएँगे। जिसने अल्लाह को दोस्त बनाया अल्लाह उसका वाली और ग़फ़ूर है और रहीम है। अक्सर जगह क़ुरआन में अल्लाह की ये दोनों सिफ़तें यानी ग़फ़ूर और रहीम हमेशा साथ-साथ आई हैं। जैसा कि फ़रमाया कि तुम्हारा रब अपने बन्दों के गुनाहों को बख़्शने के बारे में बड़ा साहिबे-मग़फ़िरत है। और उसके साथ उसकी पकड़ भी बड़ी सख़्त होती है। और फ़रमाया ऐ, नबी मेरे बन्दों से कह दो कि मैं ग़फ़ूर और रहीम हूँ। और मेरा अज़ाब भी बड़ा सख़्त अज़ाब है। तरग़ीब व तरहीब पर मुश्तमिल आयात बड़ी कसरत से हैं। कभी तो बन्दों को जन्नत की सिफ़ात बयान करके तरग़ीब देता है और कभी दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाकर उसके अज़ाब और क़ियामत की हौलनाकियों से डराता है। और कभी एक साथ दोनों का ज़िक्र फ़रमाता है। ख़ुदा अपने अहकाम में हमें अपना इताअत गुज़ार बनाए और गुनाहगारों के ज़िमरे से दूर रखे।

रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अगर मोमिन यह जान ले

कि ख़ुदा का अज़ाब कितना सख़्त होता है तो कोई जन्नत की तमअ तक न करेगा। कहेगा कि दोज़ख़ से छुटकारा पा जाऊँ तो बस है और अगर काफ़िर यह मालूम कर ले कि ख़ुदा का इस्तेहक़ाक़ ही नहीं है। अल्लाह तआला ने रहमत के सौ हिस्से रखे हैं उसमें से एक हिस्सा अपनी सारी मख़लूक़ात के दरम्यान तक़सीम कर दिया कि इसी के हिस्से रसदी के सबब दुनिया में लोग और जानवर एक-दूसरे पर रहम करते हैं और हमदर्दी करते हैं, और बाक़ी निन्यानवे हिस्से रहम के अल्लाह तआला ने अपने लिए रख लिए हैं। इससे अन्दाज़ा हो सकता है कि उसकी रहमत कैसी ज़बरदस्त होगी। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने जब मख़लूक़ को पैदा किया तो अपनी किताब लौहे-महफ़ूज़ में लिख दिया है जो उसके पास फ़ौक़ुल अर्श है कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी। इसी एक हिस्से की यह बरकत है कि जानवर, गाय, ऊँटनी वग़ैरह भी बच्चे को कुचल देने से बचती है। और बच्चा पाँव के नीचे आ रहा हो तो बचती और एहतियात करती है।

﴾96﴿

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी .ख-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्श, युग़्शिल्लैलन्नहा-र यत्लुबुहू हसीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू-म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिह, अला लहुल्-ख़ल्क़ु वल्अम्र्, तबा-र-कल्लाहु रब्बुल्-आलमीन। (54)

तर्जमा : बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छः रोज़ में पैदा किया है। फिर अर्श पर क़ायम

हुआ। वह शब से दिन को ऐसे तौर पर छिपा देता है कि वह शब इस दिन को जल्दी से आ लेती है, और सूरज और चाँद और दूसरे सितारों को पैदा किया ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबे हैं। याद रखो अल्लाह तआला ही के लिए ख़ास है ख़ालिक़ होना, और हाकिम होना, बड़ी ख़ूबियों से भरा हुआ है अल्लाह जो तमाम आलम का परवरदिगार है। (पारा 8, आराफ़ 54)

तशरीह : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि ख़ुदाए-पाक ज़मीन व आसमान का पैदा करनेवाला है। उसने ज़मीन व आसमान को छः दिन में पैदा किया है जिसका क़ुरआन में कई बार ज़िक्र आया है। वे छः दिन ये हैं। इतवार, पीर, मंगल, बुध, जुमेरात, जुमा। जुमा ही के रोज़ सारी मख़लूक़ मुज्तमा हुई। और उसी रोज़ आदम अलैहिस्सलाम पैदा किए गए। अय्याम के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि क्या दिन इन दिनों की तरह था। जैसा कि ज़हन फ़ौरन उसी ख़याल की तरफ़ मुंतक़िल होता है। या यह कि एक हज़ार सालवाला दिन था। अब रह गया हफ़्ते का दिन। उस दिन कुछ पैदा नहीं किया गया। पैदाइश उस रोज़ मुनक़तअ थी। इसलिए उस सातवें दिन यानी हफ़्ते के दिन को यौमुस्सब्त कहते हैं। और 'सब्त' के मानी क़तअ के हैं।

अबू-हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने मेरा हाथ थामा और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हफ़्ते के रोज़ ज़मीन पैदा की और इतवार के रोज़ पहाड़ पैदा किए। और पीर के रोज़ दरख़्त पैदा किए। बुराइयाँ और मकरूहात मंगल के रोज़, नूर बुध के रोज़, और तमाम जानवर और ज़ी रूह जुमेरात के रोज़, और आदम अलैहिस्सलाम को अस्र के बाद बरोज़ जुमा आख़िरी घंटे में अस्र और मग़रिब के दरमियान। इस हदीस से तो सातों दिन मसरूफ़ साबित होते हैं। और अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया कि छः दिन मसरूफ़ियत के थे, इन छः दिनों की मसरूफ़ियत के बाद वह अर्श पर जलवा अफ़रोज़ हो गया। इस मक़ाम पर बहुत कुछ लोगों ने ख़याल आफ़रीनियाँ की हैं। और

बहुत ख़यालात दौड़ाए हैं। हम इस बारे में सल्फ़ सालेहीन का मसलक इख़्तियार करते हैं। यानी मालिक, औज़ाई, सौरी, लैस-बिन-सअद, शाफ़ेई, अहमद और इस्हाक़ बिन राहविया वग़ैरह और नए पुराने अइम्मतुल मुस्लिमीन। और वह मसलक यह है कि इस पर यक़ीन कर लिया जाए बग़ैर किसी कैफ़ियत व तशबीह के और बग़ैर इस फ़ौरी ख़याल की तरफ़ ज़हन ले जाने के कि जिससे तश्बीह का अक़ीदा ज़ेहन में आता है और जो सिफ़ात ख़ुदा से बईद है। ग़र्ज़ जो कुछ ख़ुदा ने फ़रमाया है बग़ैर उस पर कुछ ख़यालआराई और शुब्हा करने के तस्लीम कर लिया जाए और चूँ व चराँ में न पड़ें। क्योंकि अल्लाह पाक किसी शै के मुशाबे और मुमासिल नहीं है। वह समीअ और बसीर है। जैसा कि मुजतहिदीन ने फ़रमाया जिनसे नईम-बिन-हम्माद अल-ख़ुज़ाई भी हैं जो बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि के उस्ताद हैं, कहा है कि जिसने अल्लाह तआला को किसी मख़लूक़ से तश्बीह दी वह कुफ़्र का मुर्तकिब हो गया। और अल्लाह पाक ने जिन सिफ़ात से अपने को मुत्तसिफ़ फ़रमाया उससे इनकार किया तो कुफ़्र किया। अल्लाह तआला और उसके रसूल ने जिन बातों से अल्लाह की तौसीफ़ नहीं की वैसी तौसीफ़ करना यही तश्बीह है। और जिसने अल्लाह के लिए वे औसाफ़ साबित किए जिनकी सराहत आयाते-इलाही में और अहादीसे-सहीहा में हुई है जो ख़ुदा के जलाल को साबित करती हैं और हर नक़ाइस से अल्लाह की ज़ात को बरी करती हैं। तो ऐसा ही शख़्स सही ख़याल पर है। इरशाद होता है कि वह ढाँकता है रात से दिन को यानी रात की तारीकी दिन की रौशनी से। और दिन की रौशनी रात की तारीकी से ढाँक देता है। और इस रात और दिन में से हर एक-दूसरे को बड़ी तेज़ी से पा लेते हैं यानी यह ख़त्म होने लगता है तो वह आ धमकता है और वह रुख़सत होने लगता है तो यह फ़ौरन आ पहुँचता है। जैसा कि फ़रमाया : 'उनके लिए इसमें निशानी है कि रात के ज़रिए दिन की पोस्त-कुनी होती है। और यकायक तारीकी फैल जाती है और सूरज अपनी क़रारगाह की तरफ़

दौड़ता है। यह अज़ीज़ व अलीम का मुक़र्रर-करदा उसूल है। क़मर के हमने मनाज़िल क़रार दे रखे हैं। वह घटता-बढ़ता रहता है हत्ता कि किसी रोज़ खजूर की सूखी टहनी की तरह बारीक हो जाता है। शम्स से यह नामुम्किन है कि वह क़मर से आगे बढ़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है, हर एक अपने मुक़र्ररह दायरे और मदार पर गर्दिश करते हैं। इसलिए फ़रमाया, 'सब चीज़ें उसके तहत तसर्रुफ़ में और उसी की तस्ख़ीर व मशीयत के अन्दर हैं। इसी लिए फ़रमाया कि मुल्क और तसर्रुफ़ उसी का हक़ है। अल्लाह तआला का फ़रमान 'तबारकल्लाहु रब्बुल आलमीन'। जैसा कि फ़रमाया 'तबारकल्लज़ी ज-अ-ल फ़िस्समाइ बुरूजन....' रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो अमले-सालेह करके ख़ुदा का शुक्र अदा न करे, बल्कि अपनी तारीफ़ करे उसने कुफ़्र किया और उसका अमल सल्ब कर लिया जाएगा। और जिसने गुमान किया कि अल्लाह तआला ने बन्दे को अपनी कोई हुकूमत या क़ुदरत मुन्तक़िल कर दी है, तो उसने कुफ़्र किया। क्योंकि फ़रमाया, 'अला लहुल ख़ल्क़ु वल अम्र, तबारकल्लाहु रब्बुल आलमीन'। दुआए-मासूरा में है कि यूँ दुआ माँगा करे 'अल्लाहुम-म लकलमुल्कु कुल्लुहु व-ल-कल हम्दु कुल्लुहु व इलै-क यरजिउल अम्रु कुल्लुहु अस-अलुका मिनलख़ैरि कुल्लिही व आउज़ुबि-क मिनश्शर्रि कुल्लिही।'

﴾97﴿

وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम् बै-न यदै रह्मतिही, हत्ता इज़ा अक़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक्नाहु लि-ब-लदिम् मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्-मा-अ फ़अख़्रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-मरात, कज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता लअल्लकुम् तज़क्करून। (57)

तर्जमा : और वह ऐसा है कि अपनी बाराने-रहमत से पहले हवाओं को भेजता है कि वे ख़ुश कर देती हैं, यहाँ तक कि जब वे हवाएँ भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी ख़ुश्क सरज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं। फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं। फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं। यूँ ही हम मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे ताकि तुम समझो।

(पारा 8, आराफ़-57)

तशरीह : अल्लाह पाक जब इस ज़िक्र से फ़ारिग़ हो चुका है कि वह ख़ालिक़े-अर्ज़ व समा है, मुतसर्रिफ़ और हाकिम और मुदब्बिर है, और दुआ माँगने के तरीक़े की भी जब तालीम दे दी, तो अब इस बात से आगाह फ़रमाता है कि वही राज़िक़ है। मरनेवाले को वही क़ियामत के रोज़ उठाएगा। हवाओं को वही भेजता है कि पानी भरे बादलों को हर चहार तरफ़ फैलाएँ जैसा कि फ़रमाया कि "हवाएँ बारिश की बशारत देती हैं। इरशाद होता है कि 'बैना यदै रहमतिही', यहाँ रहमत से मुराद बारिश है। जैसा कि फ़रमाया कि लोगों के नाउम्मीद हो चुकने के बाद वह बादल को भेजता है, जो उसकी रहमत को बरसाते हैं यानी पानी को, और फ़रमाया कि ख़ुदा के आसारे-रहमत पर नज़र डालो कि ज़मीन के मुर्दा हो जाने के बाद किस तरह उसको ज़िन्दा कर देता है। उसी तरह वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। और इरशाद होता है कि 'हवाएँ बोझल बादलों को उठाए होती हैं। क्यों कि उनमें वज़न दार पानी होता है जो ज़मीन से क़रीब-तर होती हैं। फिर इरशाद होता है कि 'सुक़नाहु लिबलदिंमयितिन' और हम मुर्दा और क़हतज़ंदा ख़ुश्क ज़मीन को सैराब करते हैं। जैसा कि फ़रमाया 'व आयतुल्लहुमुल अर्ज़ुल मैततु अह्यैनाहा।' इसलिए इरशाद होता है कि "जिस तरह हम ज़मीन को उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा करते हैं उसी तरह अजसाम को ख़ाक हो जाने के बाद भी बरोज़े क़ियामत ज़िन्दा करेंगे।' अल्लाह पाक आसमान से पानी बरसाएगा। और चालीस दिन तक ज़मीन पर बारिश होती रहेगी और अजसामे-इनसानी अपनी-अपनी क़बरों से

इस तरह उठने लगेंगे जैसे कि ज़मीन से दाना उगने लगता है, इस मज़मून की आयतें क़ुरआन में कसरत से हैं। अल्लाह तआला ने क़ियामत के रोज़ को बतौर मिसाल ज़िक्र फ़रमाया है। 'लअल्लकुम तज़क्करून' इस ग़रज़ से कि शायद तुम नसीहत व इबरत हासिल करो।

﴾98﴿

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ

وَأَنْ عَسٰى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝

अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-लकूतिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा अंय्यकू-न क़दिक़्त-र-ब अ-जलुहुम्, फ़बिअय्यि हदीसिम्- बअ्दहू युअ्मिनून। (185)

तर्जमा : और क्या इन लोगों ने ग़ौर नहीं किया आसमानों और ज़मीन के आलम में, और दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह ने पैदा की हैं, और इस बात में कि मुमकिन है कि इनकी अजल क़रीब ही आ पहुँची हो। फिर क़ुरआन के बाद कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे। (पारा 8, आराफ़ 185)

तशरीह : इरशाद होता है कि हमारी निशानियों को झुठलानेवाले क्या इस बात पर ग़ौर नहीं करते कि हमें कैसा ग़लबा हासिल है आसमानों और ज़मीन पर और इनमें जो कुछ है इन सब पर। इन्हें चाहिए था कि इस पर तदब्बुर व तफ़क्कुर करते और इबरत लेते और इस नतीजे पर पहुँचते कि ये सब उसका है जिसका कोई नज़ीर व शबीह नहीं वही इस बात का मुस्तहिक़ है कि इबादत और ख़ुलूस सिर्फ़ उसी से बरतें। और उसके रसूल की तसदीक़ करें, उसकी इताअत की तरफ़ झुक जाएँ, बुतों को निकाल फेंकें और इस बात से डरें कि मौत क़रीब है, अगर कुफ़्र ही पर मर जाएँगे तो अज़ाबे-अलीम के मुस्तहिक़ होंगे। फिर फ़रमाया कि अब इसके बाद फिर और कौन-सी तख़वीफ़ व तरहीब चाहिए कि जो धमकी आई

हुई है, वह ख़ुदा की तरफ़ से आई हुई है। अगर वह इस वह्य व क़ुरआन की तसदीक़ न करें जो मुहम्मद (सल्ल॰) ने पेश की है तो फिर किस बात की तसदीक़ करेंगे।

हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, शबें-मेराज में मैंने देखा कि आसमान हफ़्तम तक जब मैं पहुँचा तो ऊपर नज़र की तो रअद व बर्क़ देखे। और ऐसी क़ौम पर से मेरा गुज़र हुआ जिनके पेट मटकों की तरह फूले हुए थे, इनमें साँप भरे हुए थे जो बाहर से भी दिखाई दे रहे थे। मैंने जिबरील अलैहिस्सलाम से पूछा तो उन्होंने बताया कि ये सूद खानेवाले लोग हैं। और जब इस पहले आसमान पर उतरा तो मैंने अपने से नीचे की तरफ़ नज़र डाली तो एक धुन्ध और धुआँ था और शोर-ग़ोग़ा बरपा था। मैंने पूछा कि ऐ जिबरील यह क्या है? तो कहा ये वे शयातीन हैं जो इनसानों की आँखों के सामने घूमते रहते हैं और आड़ बन जाते हैं। ताकि अर्ज़ व समा के मलकूत में इनसान नज़र ही न कर सके। अगर ये हायल न होते तो इनसान आसमान की अजीब-अजाब बातें देखता।

﴾99﴿

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ
فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ
رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا
جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾

हुवल्लज़ी .ख़-ल-क़कुम् मिन्-नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा, फ़-लम्मा तग़श्शाहा ह-मलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत् बिह्, फ़-लम्मा अस्-क़लद्-द-अवल्ला-ह रब्बहुमा ल-इन्आतैतना सालिहल् ल-नकूनन्-न मिनश्- शाकिरीन। (189) फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा, फ़-तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून। (190)

तर्जमा : वह अल्लाह तआला ऐसा है जिसने तुमको एक तने-वाहिद से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह इस अपने जोड़े से उंस हासिल करे, फिर जब मियाँ ने बीवी से क़ुरबत की तो उसको हमल रह गया हल्का-सा। सो वह उसको लिए हुए चलती-फिरती रहीं, फिर जब वह बोझिल हो गई तो दोनों मियाँ-बीवी अल्लाह से, जो उनका मालिक है दुआ, करने लगे कि अगर तू ने हम को सही सालिम औलाद दे दी तो हम ख़ूब शुक्रगुज़ारी करेंगे। सो जब अल्लाह ने दोनों को सही सालिम औलाद दे दी तो अल्लाह की दी हुई चीज़ में वे दोनों अल्लाह के शरीक क़रार देने लगे, सो अल्लाह पाक है उनके शिर्क से।

(पारा 8, अल-आराफ़ 189-190)

तशरीह : इरशाद होता है कि दुनिया जहाँ के लोग आदम अलैहिस्सलाम की नसल से पैदा किए गए हैं और आदम अलैहिस्सलाम ही से उनकी बीवी हव्वा पैदा की गईं। इन्हीं दोनों से नसल बढ़ी जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और इतना बढ़ाया कि तुम लोग ख़ानदान और क़बीले बन गए, अब तुम्हें एक-दूसरे के हुक़ूक़ पहचानना चाहिए और ख़ुदा तआला की नज़रों में तुममें शरीफ़-तर वही होगा जो सबसे ज़्यादा मोहतात अमल करे। 'लियसकु-न इलैहा' के मानी हैं ताकि एक-दूसरे में उलफ़त पज़ीर रहे। इसी लिए फ़रमाया कि तुम दोनों के दिलों में मुहब्बत और रहमत डाल दी। दो रूहों में जो मुहब्बत व रहमत होती है वह रूहों की उलफ़त व मुवानिसत से बढ़कर नहीं हो सकती। इसी लिए तो अल्लाह तआला ने यह बयान फ़रमाया है कि साहिर अक्सर अपने सेहर के ज़रिए इस बात की कोशिश करते हैं कि मियाँ-बीवी में तिफ़रक़ा डाल दें। ग़रज़ शौहर जब अपनी बीवी के साथ फ़ितरी मुहब्बत की बिना पर मुवानिसत व क़ुरबत इख़्तियार करता है तो इब्तिदा वह अपने पेट में एक हल्का-सा बोझ महसूस करने लगती है। यह आग़ाज़े-हमल का ज़माना होता है। उस वक़्त तो औरत को

कोई तकलीफ़ का आग़ाज़ नहीं होता क्योंकि यह हमल तो अभी नुत्फ़ा या अलक़ा है यानी नुत्फ़ा या गोश्त का छोटा-सा लोथड़ा। अभी वह हल्की-फुल्की होती है। इब्ने-जरीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हमल लिए हुए आसानी से उठ-बैठ सकती है। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मतलब यह है कि इब्तिदाई ज़माना वह है जब कि ख़ुद उसको शक है कि मुझे हमल है भी कि नहीं। ग़रज़ यह कि इसके बाद जो औरत को बोझ अच्छा-ख़ासा महसूस होने लगता है और यक़ीने-हमल हो जाता है तो ये माँ-बाप ख़ुदा से तमन्ना करने लगते हैं कि अगर अल्लाह तआला इन्हें सही-सालिम बच्चा दे तो बड़ा एहसान है। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि माँ-बाप को डर लगा होता है कि कहीं जानवर की शकल या ग़ैर-सालिम बच्चा न हो जाए जैसा कि बाज़ मरतबा हो जाया करता है। हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि यह मतलब लेते हैं कि अगर ख़ुदा हमको लड़का दे, क्योंकि मौलूद में ज़्यादा सलाहियत वाला मौलूद लड़का ही होता है। ग़रज़ यह कि जब अल्लाह इनको सही सालिम बच्चा देता है तो उसको बुतों का हिस्सा बना डालते हैं। ख़ुदा की ज़ात ऐसे शिर्क से बेनियाज़ है। मुफ़स्सिरीन ने यहाँ बहुत-से आसार व अहादीस बयान की हैं जिनका हम ज़िक्र करेंगे, इन पर रौशनी डालेंगे, फिर इनशा-अल्लाह सही बात की तरफ़ रहनुमाई करेंगे। ख़ुदा ही पर भरोसा है।

नबी (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि हव्वा को जब वज़अ हमल हुआ तो इबलीस उनके पास आया। उनका बच्चा ज़िन्दा नहीं रहता था, तो हव्वा को मशवरा दिया कि बच्चे का नाम अब्दुल हारिस रखो तो वह ज़िन्दा रहेगा। चुनांचे बच्चे का नाम अब्दुल हारिस रखा गया और वह ज़िन्दा रहा। यह शैतान की तरफ़ की वह्य थी और हारिस शैतान का नाम होता है। इब्ने-जरीर कहते हैं कि यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का वाक़िआ नहीं, बल्कि बाज़ दूसरे मज़हब वालों का है। और यह भी मरवी है कि इससे मुराद बाज़ मुशरिकीन इनसान हैं जो ऐसा करते हैं। कहते हैं कि यह यहूद व नसारा का फ़ेल बयान

हुआ है कि अपनी औलाद को अपनी रविश पर डालते हैं। अब दूसरी अहादीस भी इस बारे में हैं, यह कि इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हव्वा के जो औलाद होती थी, इनको अल्लाह तआला की इबादत के लिए मख़सूस कर देती थीं। और उनका नाम अब्दुल्लाह और उबैदुल्लाह वग़ैरह रखती थीं। ये बच्चे मर जाते थे चुनांचे हज़रत आदम व हव्वा के पास इबलीस आया और कहने लगा कि अगर तुम अपनी औलाद का कुछ दूसरा नाम रखा करोगे तो वह ज़िन्दा रहेगा। अब हव्वा के बच्चा हुआ, माँ-बाप ने बच्चे का नाम अब्दुल-हारिस रखा। उसी से मुताल्लिक़ अल्लाह पाक फ़रमाता है कि 'हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम, तो आख़िर हव्वा को शक था कि हमल है या नहीं। ग़रज़ जब वे हमल से बोझिल हो गईं तो इन दोनों ने ख़ुदा से दुआ की कि अगर जीता-जागता सालेह बच्चा होगा तो हम बड़ा शुक्र करेंगे। अब शैतान इन दोनों के पास आया और कहने लगा तुम्हें क्या ख़बर कि कैसा बच्चा पैदा होगा, जानवर की शक्ल व सूरत का होगा या इनसान। एक ग़लत बात उनकी निगाहों में अच्छी बनाकर पेश की और शैतान तो धोका देनेवाला है ही, इससे पहले दो बच्चे हो चुके थे और मर चुके थे। शैतान ने उन्हें समझाया कि अगर तुम मेरे नाम पर इसका नाम न रखोगे तो न वह ठीक पैदा होगा और न ज़िन्दा रहेगा। चुनांचे उन्होंने इस बच्चे का नाम अब्दुल हारिस रखा। चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब अल्लाह तआला ने उनकी दुआ पर सही सालिम बच्चा दिया तो उसका नाम अब्दुल हारिस रख कर अल्लाह के साथ शिर्क किया। इन आयतों में इसी का बयान है और एक रिवायत में है कि पहली बार के हमल के वक़्त यह शैतान आया और इन्हें डराया कि मैं वही हूँ जिसने तुम्हें जन्नत से निकलवाया, अब तुम मेरी इताअत करो वरना मेरे करतब से इसके सींग पैदा हो जाएगा और वह पेट को फाड़कर निकलेगा और यह होगा वह होगा, ग़रज़ उन्हें बहुत ख़ौफ़ज़दा कर दिया, मगर उन्होंने उसकी बात न मानी। ख़ुदा की मस्लिहत बच्चा मुर्दा पैदा हुआ। दूसरा हमल हुआ फिर भी बच्चा

मुर्दा पैदा हुआ। अब की बार इबलीस ने आकर अपनी बहुत ख़ैरख़्वाही जताई। बच्चे की मुहब्बत ग़ालिब आ गई और उसका नाम उन्होंने अब्दुल हारिस रख दिया। इसी बिना पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया 'ज-अला लहू शु-र-का-अ फ़ीमा आतहुमा'। इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से इस हदीस को लेकर उनके शागिर्दों की एक जमाअत ने भी यही कहा है। जैसे सईद बिन जुबैर, मुजाहिद, इकरिमा, क़तादा, सुद्दी रहमतुल्लाहि अलैहि, लेकिन ज़ाहिर यह है कि यह वाक़िआ अहले-किताब से लिया गया है। लेकिन हम तो वही कहते हैं जो हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुशरिकों का अपनी औलाद में शरीके-ख़ुदा का बयान इन आयतों में है, न कि हज़रत आदम व हव्वा का, पस अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह तआला इस शिर्क से बुलन्द व बाला है।

﴾100﴿

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِن بَعْدِ إِذْنِهِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

इन्-न रब्बकुमुल्ला-हुल्लज़ी ख़-लक़स्स- मावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि युदब्बिरुल्-अम्-र, मा मिन् शफ़ीअिन् इल्ला मिम्- बअ्दि इज़्निह्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, अ-फ़ला तज़क्करून।(3)

तर्जमा : बिला शुब्ह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा कर दिया। फिर अर्श पर क़ायम हुआ, वह हर काम की तदबीर करता है। उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई उसके पास सिफ़ारिश करनेवाला नहीं। ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है, सो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नसीहत नहीं पकड़ते। (पारा 11, यूनुस 3)

तशरीह : इरशादे-बारी तआला है कि अल्लाह तआला तमाम

आलम का परवरदिगार है। उसने ज़मीनों और आसमानों को छः दिन में पैदा किया कहा गया है कि ये दिन हमारे दिनों के जैसे थे और यह भी कहा गया है कि हज़ार साल का एक दिन था। जिसका बयान आगे आएगा। फिर वह अर्शे-अज़ीम पर मुतमक्किन हो गया, और अर्श सब मख़लूक़ात में सबसे बड़ी मख़लूक़ है, वह सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ है। या यह कि वह भी ख़ुदा का एक नूर है। ख़ुदा सारे ख़लाइक़ का मुदब्बिर, सरपरस्त और कफ़ील है। उसकी निगहदाश्त से ज़मीन या आसमानों का एक ज़र्रा भी बचा या छूटा नहीं। एक तवज्जोंह उसको दूसरी तरफ़ की तवज्जोह से नहीं रोक सकती, उसके लिए कोई बात भी ग़लत तौर पर बाक़ी नहीं रह सकती। पहाड़ों, समुन्द्रों, आबादियों, जंगलों कहीं भी कोई बड़ी तदबीर छोटी तरफ़ ध्यान से उसको नहीं रोक सकती। कोई जानदार भी दुनिया में ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ ख़ुदा के ज़िम्मे न हो। एक चीज़ भी हरकत करती है, एक पत्ता भी गिरता है तो वह उसका इल्म रखता है। ज़मीन की तारीकियों में कोई ज़र्रा ऐसा नहीं और न कोई तर व ख़ुश्क ऐसा है जो उसकी लौहे-महफ़ूज़ यानी किताबे-इल्म में न हो। जिस वक़्त यह आयत उतरी 'इन्न रब्ब-कुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल अर्ज़ि'। मुसलमानों को एक बड़ा क़ाफ़िला आता दिखाई दिया। मालूम हो रहा था कि बदवी लोग हैं। लोगों ने पूछा, तुम कौन लोग हो? तो कहा हम जिन्न हैं। इस आयत के सबब हम शहर से निकल पड़े हैं। और अल्लाह तआला का क़ौल कि कोई उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की शिफ़ाअत न कर सकेगा। यह क़ौले-ख़ुदा उस क़ौल के मुताबिक़ है कि उन लोगों ने इबादत के लिए ख़ुदा ही की ज़ात को ख़ास कर लिया है और ऐ मुशरिको! तुम इबादत में अल्लाह तआला के साथ दूसरे ख़ुदाओं को भी शरीक कर लेते हो। हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि पैदा करनेवाला ख़ुदा एक ही है, उसके सिवा किसी की इबादत नहीं हो सकती। ख़ुद अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अगर तुम इनसे पूछो कि तुम्हें किसने पैदा किया? तो एतिराफ़ कर लेंगे कि अल्लाह

तआला ने, और अगर पूछो कि यह अर्शे-अज़ीम और सातों आसमानों का ख़ुदा कौन है? तो फ़ौरन बोल उठेंगे कि अल्लाह तआला है। तो इनसे पूछो कि फिर उस ख़ुदा से डरते क्यों नहीं हो और शिर्क क्यों करते हो?

﴾101﴿

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝

हुवल्लज़ी ज-अलश्शम्-स ज़ियाअंव्-वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्द-रहू मनाज़ि-ल लितअ्लमू अ-ददस्सिनी-न वल्हिसा-ब, मा .ख-लक़ल्लाहु ज़ालि-क इल्ला बिल्हक़्क़, युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्लमून। (5) इन्-न फ़िख़्तिला-फ़िल्लैलि वन्नहारि व मा .ख-लक़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यत्तक़ून। (6)

तर्जमा : वह अल्लाह तआला ऐसा है जिसने आफ़ताब को चमकता हुआ बनाया। और चाँद को नूरानी बनाया। और उसके लिए मंज़िलें मुक़र्रर कीं। ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह तआला ने ये चीज़ें बेफ़ायदा नहीं पैदा कीं। वह ये दलायल उनको साफ़-साफ़ बतला रहा है जो अक़्ल रखते हैं। बिला शुब्हा रात और दिन के यके बाद दीगरे आने में और अल्लाह तआला ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सब में उन लोगों के वास्ते दलायल हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं। (पारा 11, यूनुस 5-6)

तशरीह : अल्लाह पाक इस बात की ख़बर दे रहा है कि अल्लाह तआला ने अपने कमाले-क़ुदरत पर और अज़मते-सल्तनत पर दलालत करनेवाली कैसी-कैसी निशानियाँ पैदा कीं। जुरुमे-शम्स

से निकलनेवाली शुआओं को उसने तुम्हारे लिए ज़िया बनाया और क़मर की रौशनी को तुम्हारे लिए नूर बनाया। रौशनीए-शम्स अलग क़िस्म की है। और रौशनीए-क़मर अलग नौइयत की है। रौशनी एक ही है फिर भी दोनों में बड़ा फ़र्क़ है कि एक रौशनी दूसरी से मेल नहीं खाती। दिन में सूरज की बादशाहत है तो रात में चाँद की। अजरामे-समावी दोनों। लेकिन सूरज के मनाज़िल नहीं मुक़र्रर किए, और चाँद के मनाज़िल मुक़र्रर किए। पहली तारीख़ चाँद निकलता है तो बहुत ही छोटा होता है। फिर उसकी रौशनी भी बढ़ती जाती है और जुरुम भी बढ़ता है। हत्ता कि कामिल हो जाता है, गोल दायरा बन जाता है। उसके बाद फिर घटना शुरू होता है। और पूरे एक महीने बाद फिर अपनी हालते-अव्वल पर आ जाता है। जैसा कि फ़रमाया अल्लाह पाक ने कि क़मर के लिए हमने घटाव और बढ़ाव के मनाज़िल क़रार दिए हैं कि वह घट-घट कर पुरानी सूखी टहनी के मानिन्द हो जाता है। न तो सूरज चाँद को जा पकड़ता है। और न रात ही दिन से आगे बढ़ जाती है। हर एक अपने-अपने ज़ाबिते और क़ानून की रू से अपने-अपने मदार पर घूम रहे हैं। और अल्लाह तआला का क़ौल कि शम्स (सूरज) और क़मर (चाँद) का अपना-अपना हिसाब है। इस आयते-करीमा में बताया गया है कि शम्स के ज़रिए दिन पहचाने जाते हैं और क़मर की गर्दिश से महीनों और सालों का हिसाब लगता है। अल्लाह तआला ने इनको अबस नहीं पैदा किया है। बल्कि ख़ल्क़े-आलम में एक हिकमते-अज़ीमा पिनहां है। और उसकी क़ुदरत पर हुज्जते-बालिग़ा है। जैसा कि फ़रमाया गया कि हमने आसमान व ज़मीन व मा फ़ीहा को बातिल तौर पर नहीं पैदा किया। ये काफ़िरों का गुमान है। काफ़िरों पर दोज़ख़ की हलाकत है और अल्लाह तआला का क़ौल कि 'क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुमको अबस पैदा कर दिया, अबस पैदा होकर तुम अबस मर गए और फिर हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे।' अल्लाह तआला की ज़ात बुलन्द व बाला है। वह ख़ुदाए-वाहिद रब्बे-अर्शे-करीम है। आयात का मतलब है कि हम

हुज्जत व दलायल खोल-खोलकर बयान करते हैं ताकि समझनेवाले समझ जाएँ। इख़्तिलाफ़े-लैलो-नहार का मतलब यह है कि दिन जाता है तो रात आती है। और रात जाती है तो दिन आता है। एक-दूसरे पर ग़ालिब आकर क़रार-पज़ीर नहीं हो जाता। जैसा कि क़ौले-बारी तआला है कि रात दिन पर छा जाती है और दिन रात पर छा जाता है। मगर क्या मजाल कि सूरज चाँद से जा टक्कर खाए। अल्लाह तआला का क़ौल कि सुब्ह को पौ फटती है और रात सुकून से गुज़रती है। ख़ुदा तआला ने आसमान व ज़मीन में जो कुछ पैदा किया है वे इस बात की निशानियाँ हैं कि उसकी क़ुदरत कितनी अज़ीम है। जैसा कि क़ौले-ख़ुदावन्दी है कि ज़मीन व आसमान में ख़ुदा की कितनी ही निशानियाँ भरी पड़ी हैं। और यह कि ग़ौर करो कि आसमान व ज़मीन में क्या कुछ निशानियाँ नहीं हैं। और काफ़िरों को मुतनब्बेह करनेवाले क्या-क्या दलायल नहीं। नीज़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया, क्या वह आसमान व ज़मीन में इधर-उधर अपने आगे और पीछे नज़र नहीं डालते? ये निशानियाँ अक़्लवालों के लिए हैं और ख़ुदा तआला के इक़ाब व अज़ाब से बचनेवालों के लिए हैं।

﴾102﴿

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम्-मिनस्समा-इ वल्‌अर्ज़ि अम्-मंय्यम्लिकुस्सम्-अ वल्‌अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र, फ़-स-यक़ूलूनल्लाह, फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (31) फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़, फ़-माज़ा

वअ़्दल्-हक्कि इल्लज़लाल, फ़-अन्ना तुस्रफ़ून। (32)

तर्जमा : आप कहिए कि वह कौन है जो तुम को आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है? और वह कौन है जो ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है? और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है? ज़रूर वे यही कहेंगे कि 'अल्लाह', तो इनसे कहिए कि फिर क्यों नहीं डरते? सो यह है अल्लाह तआला जो तुम्हारा रबे-हक़ीक़ी है, फिर हक़ के बाद और क्या रह गया बजुज़ गुमराही के, फिर कहाँ फिरे जाते हो

(पारा 11, यूनुस 31-32)

तशरीह : मुशरिकीन पर अल्लाह तआला हुज्जत पेश करता है कि ख़ुदा की वहदानियत और रबूबियत का एतिराफ़ करना पड़ेगा। यानी ऐ नबी! पूछो कि वह कौन है जो आसमान से बारिश बरसाता है और अपनी क़ुदरत से ज़मीन को शिगाफ़ देता है, जिसके अन्दर से दाने, अंगूर, नीशकर, ज़ैतून, ख़ुरमा, घने-घने बाग़ और ख़ोशेदार मेवे पैदा करता है? क्या उसके साथ कोई और ख़ुदा हो सकता है? तो इन्हें मानना पड़ेगा कि ये ख़ुदा ही के काम हैं। अगर वह अपना रिज़्क़ रोक ले तो कौन है कि खोल दे? और जिसने कि यह सुनने और देखने की क़ुव्वत दी है कि अगर चाहे तो सल्ब कर ले। तुम ख़ुद कह दो कि ये सुनने और देखने की सारी इनसानी क़ुव्वतें अल्लाह ही ने पैदा की हैं। क्या तुम उसको नाराज़ करके पसन्द करोगे कि वह तुम्हारी सुनने और देखने की क़ुव्वत छीन ले। जो अपनी क़ुदरते-अज़ीमा से बेजान से ज़िन्दा को पैदा करता है और ज़िन्दा से बेजान को निकालता है, और कौन सारी कायनात का इन्तिज़ाम अपने हाथ में लिए हुए है कि जो कुछ होता है उसकी सवाबदीद और मर्ज़ी से। सबको वह पनाह देता है। इसके बरख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। वह सब पर मुतसर्रिफ़ और हाकिम है। उसके हुक्म के बाद किसी का हुक्म कोई

चीज़ नहीं, वह जिसको चाहे पूछे लेकिन उसको कौन पूछ सकता है। आसमान व ज़मीन की सारी मख़लूक़ात उसी की दस्ते-निगर हैं। हर वक़्त उसकी निराली शान है। आसमान व ज़मीन की सारी बादशाहत उसी की है। मलायका इंस व जिन्न सब उसके मोहताज हैं, उसके ग़ुलाम हैं। सबका जवाब उनके पास यही है कि ख़ुदा ही में ये सारी क़ुदरतें हैं। कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन इन सारी बातों को जानते हैं और मोतरिफ़ भी हैं। फिर तुम इनसे पूछो कि अच्छा फिर उससे डरते क्यों नहीं हो, अपनी ख़ुदसरी और जहालत से उसको छोड़कर किसी और की परस्तिश क्यों करते हो? सच्चा ख़ुदा तो यही ख़ुदा है जिसका तुमको आप एतिराफ़ है। फिर तो अफ़राद बिल-इबादह का मुस्तहिक़ वही हुआ। हक़ बात को समझ लेने के बाद फिर यह गुमराही कैसी? हर माबूद उसके सिवा बातिल है। तुम इबादते-हक़ छोड़कर इबादत मा-सिवा की तरफ़ किधर भटके जा रहे हो। इन सारे दलायल के बाद ख़ुदा की बात साबित व मुतहक़्क़िक़ हो चुकी है, यानी जिस तरह इन मुशरिकीन ने कुफ़्र क्या और कुफ़्र पर क़ायम रहे इसी तरह इन्होंने इस बात का एतिराफ़ भी कर लिया है कि वही पाक परवरदिगार ख़ालिक़ व राज़िक़ है, सारी कायनात में अकेला मुतसर्रिफ़ है। उसी ने अपने पैग़म्बरों को तौहीद देकर भेजा। ये मुस्लिम हैं कि ये अश्क़िया दोज़ख़ी हैं।

﴾103﴿

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَکُمُ الَّیْلَ لِتَسْکُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ
لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय-यस्मअून। (67)

तर्जमा : वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम इसमें आराम करो और दिन भी इस तौर पर बनाया कि

देखने-भालने का ज़रिआ है। तहक़ीक़ इसमें दलायल हैं। उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (पारा 11, यूनुस 67)

तशरीह : फिर इरशाद होता है कि अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए रात बनाई ताकि दिन भर की तकान से सुकून व राहत हासिल करें और दिन को हुसूले-मआश की ख़ातिर रौशन बनाया। वे दिन में सफ़र करते हैं और रौशनी के अन्दर उनके दीगर मसालेह हैं। इन दलायल को सुनकर इबरत हासिल करनेवालों के लिए इन आयतों में निशानियाँ हैं।

﴾104﴿

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۚ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हू, व इंय्युरिद्-क बिख़ैरिन् फ़ला राद्-द लिफ़ज़्लिह्, युसीबु बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिह्, व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम। (107)

तर्जमा : और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न कोई नफ़ा पहुँचा सके और न कोई ज़रर पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम इस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे। और अगर तुमको अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो बजुज़ उसके और कोई उसको दूर करनेवाला नहीं है और अगर वह तुमको कोई ख़ैर पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटानेवाला नहीं। वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहे निछावर कर दे, और वह बड़ी मग़फ़िरत, बड़ी रहमतवाला है।

(पारा 11, यूनुस 106-107)

तशरीह : यक़ीनन तुम सबको उसी की तरफ़ जाना है। फ़र्ज़ करो कि दर हक़ीक़त तुम्हारे माबूदे-बरहक़ हैं तो इनसे कहो कि मुझे

नुक़सान पहुँचाएँ, याद रखो कि इनमें मज़र्रत व नफ़ा पहुँचाने की कोई क़ुदरत नहीं है। नफ़ा व ज़रर तो ख़ुदाए-लाशरीक के हाथ में है। ऐ नबी! काफ़िरों से एराज़ करके बा-इख़लासे-तमाम ख़ुदा की इबादत में लग जाओ, शिर्क की तरफ़ ज़रा भी न झुकना। अगर मज़र्रत व नुक़सान के अन्दर ख़ुदा तुम्हें घेर ले तो कौन इस घेरे से तुमको बाहर निकाल सकता है। नफ़ा व ज़रर, ख़ैर व शर तो ख़ुदा की तरफ़ राजेअ है।

अनस-बिन-मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत (सल्ल॰) ने फ़रमाया, उम्र भर ख़ैर के तालिब रहो और ख़ुदा की नेमतों को दरपेश रखो। ख़ुदा की रहमतों की हवाएँ जिस ख़ुश-नसीब को पहुँच गई तो पहुँच गई, वह जिसको चाहे रहमत से सरफ़राज़ फ़रमाए, और अल्लाह पाक से दरख़ास्त करो कि तुम्हारी ऐबपोशी करता रहे और तुम्हें आफ़ाते-ज़माना और आफ़ाते-अनफ़ुस से अमन में रखे, वह ग़फ़ूरुर्रहीम है। कैसा ही गुनाह क्यों न हो, तौबा कर लो हत्ता कि शिर्क करके भी तौबा कर लो तो वह क़बूल कर ले।

﴾105﴿

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ۝٦

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद-अहा, कुल्लुन् फ़ी किताबिम्-मुबीन। (6)

तर्जमा : ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले जितने जानदार हैं सबकी रोज़ियाँ अल्लाह तआला पर हैं, वही उनके रहने-सहने की जगह को जानता है, और उनके सौंपे जाने की जगह को भी, सब कुछ वाज़ेह किताब में मौजूद है। (पारा 12, हूद 6)

तशरीह : अल्लाह तआला सारी मख़लूक़ात, जो छोटी-बड़ी या ख़ुश्की व तरी में है, उन सबके रिज़्क़ का ज़िम्मेदार है। वही उनके

चलने-फिरने, आने-जाने और ठहरने, रहने-सहने और जाए-मौत और रहम में रहने की जगह को जानता है। यह तमाम माजरा उस किताब में, जो अल्लाह तआला के पास है, लिखा हुआ है। और वही किताब उसकी तफ़सील बयान करती है। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि 'रूए-ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और परिन्दे जो अपने परों से उड़ते हैं, सब के सब तुम्हारी जैसी ही उम्मतें हैं। हमने किताब में कोई चीज़ लिखने से नहीं छोड़ी।' ये सब के सब अपने रब की तरफ़ इकट्ठे होंगे। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि 'ग़ैब की कुंजियाँ भी उसी के पास हैं और उन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। जो कुछ दरिया और जंगल में है उसे भी वही जानता है। और जो पत्ता झड़ता है उसके इल्म में है। ज़मीन की तारीकियों में कोई दाना और तर व ख़ुश्क में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो उसके इल्म में न हो।'

﴾106﴿

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अर्शुहू अलल्मा-इ लि-यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ-मला, व ल-इन् क़ुल्-त इन्नकुम्-मब्अूसू-न मिम्-बअ्दिल्-मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन। (7)

तर्जमा : अल्लाह ही वह है जिसने छः दिन में आसमान व ज़मीन पैदा किए और उसका अर्श पानी पर था ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुममें से अच्छे अमलवाला कौन है। अगर आप इनसे कहें कि तुम लोग मरने के बाद उठा खड़े किए जाओगे तो काफ़िर लोग पलट कर जवाब देंगे कि यह तो निरा साफ़-साफ़ जादू ही है।

(पारा 12, हूद 7)

तशरीह : अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि उसे हर चीज़ पर क़ुदरत है, आसमान व ज़मीन को उसने सिर्फ़ छः दिन में पैदा किया है। इससे पहले उसका अर्शे-करीम पानी पर था। मुसनद अहमद में है, रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया, ऐ बनू-तमीम! तुम ख़ुश ख़बरी क़बूल करो। उन्होंने कहा, ख़ुशख़बरियाँ तो आप ने सुना दीं, अब कुछ दिलवाइए। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, ऐ अहले-यमन तुम क़बूल करो। उन्होंने कहा हाँ हमें क़बूल है। मख़लूक़ की इब्तिदा तो हमें सुनाइए कि किस तरह हुई? आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, सबसे पहले अल्लाह था। उसका अर्श पानी के ऊपर था, उसने लौहे-महफ़ूज़ में हर चीज़ का तज़किरा लिखा। एक रिवायत में है अल्लाह था और उससे पहले कुछ न था। एक रिवायत में है कि उसके साथ कुछ न था। उसका अर्श पानी पर था। उसने हर चीज़ का तज़किरा लिखा फिर आसमान व ज़मीन को पैदा किया। मुस्लिम की हदीस में है, ज़मीन व आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह तआला ने मख़लूक़ात की तक़दीर लिखी। उसका अर्श पानी पर था। सहीह बुख़ारी में इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर एक क़ुदसी हदीस लाए हैं कि ऐ इनसान तू मेरी राह में ख़र्च कर, मैं तुझे दूँगा। और फ़रमाया, अल्लाह का हाथ पुर है। दिन-रात का ख़र्च इसमें कोई कमी नहीं लाता। ख़याल तो करो कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश से अब तक कितना ख़र्च क्या होगा, ताहम उसके दाहिने हाथ में जो था वह कम नहीं होता। उसका अर्श पानी पर था। उसके हाथ में मीज़ान है, झुकाता है, वह और ऊँचा करता है।

मुसनद में है, अबू-रज़ीन लक़ीत-बिन-आमिर मुनफ़क़ अक़ीली ने हुज़ूर (सल्ल.) से सवाल किया कि मख़लूक़ की पैदाइश करने से पहले हमारा परवरदिगार कहाँ था? आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, अमा में, नीचे भी हवा और ऊपर भी हवा। फिर अर्शे-ख़ुदावन्दी पानी पर था। वहब, ज़मरा, क़तादा, इब्ने-जरीर वग़ैरा भी यही कहते हैं, क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि अल्लाह तआला बतलाता है

कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पहले इब्तिदाए-मख़लूक़ किस तरह हुई। रबीअ बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि उसका अर्श पानी पर था। जब आसमान व ज़मीन को पैदा किया तो उस पानी के दो हिस्से कर दिए, निस्फ़ अर्श के नीचे, यही बहरे-मसजूर है। इब्ने-अब्बास रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, बवजहे-बुलन्दी के अर्श को अर्श कहा जाता है। सअद ताई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, कि अर्श सुर्ख़ याक़ूत का है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं अल्लाह उसी तरह था जिस तरह उसने अपने नफ़से-करीम का वस्फ़ किया इसलिए कि कुछ न था, पानी था, उस पर अर्श था। अर्श पर ज़ुल-जलाल वल इकराम ज़िल इज़्ज़त वस्सुल्तान ज़िलमुल्क वलक़द्र वर्रहमह वन्निअमह था। जो चाहे कर गुज़रनेवाला है। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से इस आयत के बारे में सवाल हुआ कि पानी किस चीज़ पर था। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि हवा की पीठ पर। फिर फ़रमाता है कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश तुम्हारे नफ़ा के लिए है और तुम इसलिए हो कि उसी एक ख़ालिक़ की इबादत करो। उसके साथ किसी को शरीक न करो। याद रखो, तुम बेकार पैदा नहीं किए गए आसमान व ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ें बातिल पैदा नहीं कीं। यह गुमान तो काफ़िरों का है। और काफ़िरों के लिए आग की वैल है। और आयत में है कि 'क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें अबस पैदा किया है। और तुम हमारी तरफ़ लौटाए न जाओगे? अल्लाह जो सच्चा मालिक है वही हक़ है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्शे-करीम का रब है।' और आयत में है, 'इनसानों और जिन्नों को मैंने सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए ही पैदा किया है।' वह तुम्हें आज़मा रहा है कि तुममें से अच्छे अमलवाले कौन हैं। यह नहीं फ़रमाया कि ज़्यादा अमलवाले कौन हैं? इसलिए अमले-हसन वह होता है जिसमें ख़ुलूस हो और शरीअते-मुहम्मदिया की ताबेदारी हो। इन दोनों बातों में से अगर एक भी न हो तो वह अमल बेकार और ग़ारत है। फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी ! अगर आप इन्हें कहें कि

तुम मरने के बाद भी जीनेवाले हो। जिस ख़ुदा ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह दोबारा भी पैदा करेगा। तो साफ़ कह देंगे कि हम इसे नहीं मानते। हालाँकि क़ायल भी हैं कि ज़मीन-आसमान का पैदा करनेवाला अल्लाह तआला ही है। ज़ाहिर है कि शुरू जिस पर गिराँ न गुज़रा उस पर दोबारा की पैदाइश कैसे गिराँ गुज़रेगी? यह तो बनिस्बत अव्वल बार के बहुत ही आसान है। फ़रमाने-ख़ुदा है कि उसी ने पहली पैदाइश शुरू में की, वही दोबारा पैदाइश करेगा और यह तो उस पर निहायत ही आसान है। और आयत में है कि तुम सबका बनाना और मार कर जिला देना मुझ पर ऐसा ही है जैसा एक का, लेकिन ये लोग उसे नहीं मानते थे और इसे खुले जादू से ताबीर करते थे। कुफ़्र व इनाद से उस क़ौल को जादू का असर ख़याल करने लग जाते हैं।

﴿107﴾

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝

अल्लाहुल्लज़ी र-फ़अस्समावाति बिग़ैरि अ-मदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मा, युदब्बिरुल्-अम्-र युफ़स्सिलुल्-आयाति लअल्लकुम् बिलिक़ा-इ रब्बिकुम् तूक़िनून। (2)

तर्जमा : अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बग़ैर सुतूनों के बुलन्द कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो। फिर वह अर्श पर क़रार पकड़े हुए है, उसी ने सूरज और चाँद को मातहती में लगा रखा है। हर एक मीआद मुअय्यन पर गश्त कर रहा है, वही काम की तदबीर करता है। वह अपने निशानात को खोल-खोल कर बयान कर रहा है कि तुम अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन कर लो।

(पारा 13, अर-रअ़्द 2)

तशरीह : कमाल क़ुदरत और अज़मत सल्तनते-ख़ुदा देखो कि बग़ैर सुतूनों के आसमान को उसने बुलन्द बाला और क़ायम कर रखा है, ज़मीन से आसमान को ख़ुदा ने कैसा ऊँचा किया और सिर्फ़ अपने हुक्म से उसे ठहराया, जिसकी इन्तिहा कोई नहीं पाता। आसमाने-दुनिया सारी ज़मीन को और जो इसके गिर्द है, पानी, हवा वग़ैरह सबको इहाता किए हुए है। और हर तरफ़ से बराबर ऊँचा है। ज़मीन से पाँच सौ साल की राह पर है। हर जगह से इतना ही ऊँचा है। फिर उसकी अपनी मोटाई और दल भी पाँच सौ साल के फ़ासले का है। फिर दूसरा आसमान उस आसमान को भी घेरे हुए है। और पहले से दूसरे तक का फ़ासला वही पाँच सौ साल का है। उसी तरह तीसरा, फिर चौथा, फिर पाँचवाँ, फिर छटा, फिर सातवाँ जैसे फ़रमाने-ख़ुदा है कि अल्लाह ने सात आसमान पैदा किए हैं। और उसी के मिस्ल ज़मीन।

हदीस शरीफ़ में है, सातों आसमान और उनमें और उनके दरमियान में जो कुछ है वह कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे कि चटियल मैदान में कोई हल्क़ा हो। और कुर्सी अर्श के मुक़ाबिले पर भी ऐसी ही है। अर्श की क़द्र अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के सिवा किसी को मालूम नहीं। बाज़ सल्फ़ का बयान है कि अर्श से ज़मीन तक का फ़ासिला पचास हज़ार साल का है। अर्श सुर्ख़ याक़ूत का है। बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि आसमान के सुतून तो हैं, लेकिन देखे नहीं जाते। लेकिन अयास-बिन-मुआविया फ़रमाते हैं, आसमान ज़मीन पर मिस्ल कुब्बे के है यानी बग़ैर सुतून के है। क़ुरआन के तर्ज़े-इबारत के लायक़ भी यही ज़ाहिर है। यानी पस आसमान बिला सुतून इस क़द्र बुलन्द है और तुम आप देख रहे हो, यह है कमाले-क़ुदरत।

उमैया-बिन-अबू सलत के अशआर में है, जिसके अशआर की बाबत हदीस में है कि उसके अशआर ईमान लाए हैं। और उसका दिल कुफ़्र करता है। और यह भी रिवायत है कि ये अशआर हज़रत

ज़ैद-बिन-उमर-बिन नुफ़ैल रज़िअल्लाहु अन्हु के हैं, जिनका तर्जमा इस तरह है कि –

यानी तू वह ख़ुदा है जिसने अपने फ़ज़्ल व करम से अपने नबी मूसा को मअ हारून के फ़िरऔन की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा और उनसे फ़रमा दिया कि इस सरकश को क़ायल करने के लिए उससे कहें कि इस बुलन्द व बाला बे-सुतून आसमान को क्या तूने बनाया है?

और इसमें सूरज, चाँद, सितारे तू ने पैदा किए हैं?

और मिट्टी से दानों को उगानेवाला फिर इन दरख़्तों में बालें पैदा करके इनमें दाने पकानेवाला क्या तू है?

क्या कुदरत की ये ज़बरदस्त निशानियाँ एक गहरे इनसान के लिए ख़ुदा हस्ती की दलील नहीं हैं।

फिर ख़ुदाए-तआला अर्श पर मुस्तवी हुआ। कैफ़ियते-तशबीह तअतील, तमसील से अल्लाह की ज़ात पाक है और बरतर व बुलन्द व बाला है, सूरज-चाँद उसके हुक्म के मुताबिक़ गर्दिश में हैं।

और वक़्त मौज़ूँ यानी क़ियामत तक बराबर इसी तरह लगे रहेंगे। जैसे फ़रमान है कि सूरज बराबर अपनी जगह चल रहा है।

उसकी जगह से मुराद अर्श के नीचे है जो ज़मीन के तले से दूसरी तरफ़ से मुलहिक़ है, ये और तमाम सितारे यहाँ तक पहुँच कर अर्श से और दूर हो जाते हैं क्योंकि सही बात जिस पर बहुत-सी दलीलें हैं यही है कि वह क़ुब्बा है, मुत्तसिल आलम बाक़ी आसमानों की तरह वह मुहीत नहीं, इसलिए कि उसके पाए हैं।

और उसके उठानेवाले हैं। और यह बात आसमान मुस्तदीर घूमे हुए आसमान में तसव्वुर में नहीं आ सकती। जो भी ग़ौर करेगा आयात व अहादीस का जाँचनेवाला, इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि

वलिल्लाहिल हम्दु वल-मिन्नह

सिर्फ़ सूरज चाँद का ही ज़िक्र यहाँ इसलिए है कि सातों सय्यारों में बड़े और रौशन यही दो हैं, पस जब कि ये दोनों मुसख़्ख़र हैं तो और तो बतौर औला मुसख़्ख़र हुए, जैसे कि

सूरज-चाँद को सजदा न करो से मुराद और सितारों को भी सजदा न करना है। फिर और रिवायत में तसरीह भी मौजूद है, फ़रमान है कि सूरज-चाँद और सितारे उसके हुक्म से मुसख़्ख़र हैं। वही ख़ल्क़ व अम्रवाला है, वही बरकतोंवाला है। वही रब्बुल आलमीन है। वह आयतों को, अपनी वहदानियत की दलीलों को बित्तफ़सील बयान फ़रमा रहा है कि तुम उसकी तौहीद के क़ायल हो जाओ और उसे मान लो कि वह तुम्हें फ़ना करके फिर ज़िन्दा कर देगा।

﴾108﴿

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ③ وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ④

व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ-ल फ़ीहा रवासि-य व अन्हारा, व मिन् कुल्लिस्स-मराति ज-अ-ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल्लै-लन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून। (3) व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-तउम्- मु-तजाविरातुंव्-व जन्नातुम्-मिन् अअ्नाबिंव्-व ज़रउंव्-व नख़ीलुन् सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहिद्, व नुफ़ज़्ज़िलु बअ्ज़हा अला बअ्ज़िन् फ़िल्उकुल्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय-यअ्क़िलून। (4)

तर्जमा : उसी ने ज़मीन फैलाकर बिछा दी है। और उसमें पहाड़ और नहरें पैदा कर दी हैं और इसमें हर क़िस्म के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा कर दिए हैं। वह रात को दिन से छिपा देता है। यक़ीनन ग़ौर-फ़िक्र करनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं। और ज़मीन में मुख़्तलिफ़ टुकड़े एक-दूसरे से लगते-लगाते हैं। और

अंगूरों के बाग़ात हैं। और खेत हैं। और खजूरों के दरख़्त हैं। शाख़दार और बाज़ ऐसे हैं जो बेशाख़ हैं। सब एक ही पानी पिलाए जाते हैं। फिर भी हम एक को एक पर फलों में बरतरी देते हैं। इसमें अक़लमन्दों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

(पारा 13, रुकूअ 3-4)

तशरीह : ऊपर की आयतों में आलमे-अलवी का बयान था। यहाँ आलमे-सिफ़ली का ज़िक्र हो रहा है। ज़मीन को तूल व अर्ज़ में फैला कर ख़ुदा ही ने बिछाई है। इसमें मज़बूत पहाड़ भी उसी के गाड़े हुए हैं। इसमें दरियाओं और चश्मों को भी उसी ने जारी किया है ताकि मुख़्तलिफ़ शक्ल व सूरत, मुख़्तलिफ़ ज़ायक़ों के फल-फूल के दरख़्त इससे सैराब हों। जोड़-जोड़ मेवे उसने पैदा किए, खट्टे-मीठे वग़ैरा, रात-दिन बराबर एक दूसरे के पै-दर-पै बराबर आते-जाते रहते हैं। एक का आना दूसरे का जाना है। पस मकान-सकान और ज़मान सब में तसर्रुफ़ उसी क़ादिरे-मुतलक़ का है। ख़ुदा की उन निशानियों को इन हिकमतों को और उन दलायल को जो ग़ौर से देखे वह हिदायत याफ़ता-हो सकता है। ज़मीन के टुकड़े मिले-जुले हुए हैं। फिर क़ुदरत को देखिए कि एक टुकड़े से तो पैदावार हो और दूसरे से कुछ न हो। एक की मिट्टी सुर्ख़, दूसरे की सफ़ेद, यह ज़र्द यह स्याह, यह पथरीली यह नर्म, यह मीठी यह शोर, एक रेतीली एक साफ़, ग़र्ज़ यह भी ख़ालिक़ की क़ुदरत की निशानी है और बतलाती है कि फ़ाइल ख़ुद मुख़्तार मालिकुल-मुल्क ला शरीक एक वही ख़ुदा ख़ालिक़े-कुल है। न उसके सिवा कोई माबूद न पालनेवाला। बरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक जड़ यानी एक तने में कई-एक शाख़दार दरख़्त खजूर होते हैं और एक तने पर एक ही होता है। यही सनवान है और ग़ैर सनवान। यही क़ौल और बुज़ुर्गों का भी है। हदीस में भी यह तफ़सीर है, अलग़रज़ क़िस्मों और जिंसों का इख़्तिलाफ़, रंग का इख़्तिलाफ़, एक बहुत मीठा, एक सख़्त कड़ुवा। एक निहायत ख़ुश ज़ायक़ा, एक बेहद बद मज़ा। रंग

किसी का ज़र्द, किसी का सुर्ख़, किसी का सफ़ेद, किसी का स्याह, उसी तरह ताज़गी और फल में भी इख़्तिलाफ़, हालाँकि ग़िज़ा के एतिबार से सब यकसाँ हैं। यह क़ुदरत की नीरंगियाँ एक होशयार शख़्स के लिए इबरतें हैं। और फ़ाइल मुख़्तार ख़ुदा की क़ुदरत का बड़ा ज़बरदस्त पता देती हैं कि वह जो चाहता है होता है, अक़्लमन्दों के लिए ये आयतें और ये निशानियाँ काफ़ी व दाफ़ी हैं।

﴾109﴿

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۗ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝

अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दाद, व कुल्लु शैइन् अिन्दहू बिमिक्दार। (8) आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल् कबीरुल्-मु-त-आल। (9)

तर्जमा : मादा अपने शिकम में जो कुछ रखती है उसे अल्लाह बख़ूबी जानता है और पेट का घटना-बढ़ना भी, हर चीज़ उसके पास अन्दाज़े से है। ज़ाहिर व पोशीदा का वह आलिम है, (सबसे) बड़ा और (सबसे) बुलन्द व बाला। (पारा 13, अर-रअद 8-9)

तशरीह : अल्लाह के इल्म से कोई चीज़ पोशीदा नहीं। तमाम जानदार मादाएँ हैवान हों या इनसान उनके पेट के बच्चों का। उनके हमल का ख़ुदा को इल्म है। पेट में क्या है? उसे ख़ुदा बख़ूबी जानता है। यानी मर्द है या औरत? अच्छा है या बुरा? नेक है या बद? उमर वाला है या बे उमर का? चुनांचे इरशाद है कि वह बख़ूबी जानता है जबकि तुम्हें ज़मीन से पैदा करता है, और जबकि तुम माँ के पेट में छिपे हुए होते हो। और फ़रमान है कि वह तुम्हें तुम्हारी माँ के पेट में पैदा करता है। एक के बाद दूसरी पैदाइश में, तीन-तीन अन्धेरियों में। इरशाद है कि हमने इनसान को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, नुत्फ़े को ख़ून-बस्ता किया, ख़ून-बस्ता को लोथड़ा गोश्त का किया, लोथड़े को हड्डी की शकल में कर दिया,

फिर हड्डी को गोश्त चढ़ाया। फिर आख़िरी और पैदाइश में पैदा किया। पस बेहतरीन ख़ालिक़ बाबरकत है।

सहीहैन की हदीस में फ़रमाने-रसूल (सल्ल॰) है कि तुममें से हर एक की पैदाइश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती रहती है, फिर इतने ही दिनों तक वह बसूरते-ख़ून-बस्ता रहता है, फिर इतने ही दिनों तक वह गोश्त का लोथड़ा रहता है। जिसे चार बातों के लिख लेने का हुक्म होता है। उसका रिज़्क़, उम्र और नेक व बद होना लिख लेता है। और हदीस में है वह पूछता है ख़ुदाया! मर्द होगा या औरत? शक़ी होगा या सईद? रोज़ी क्या है? उम्र कितनी है? अल्लाह तआला बतलाता है और वह लिख लेता है। हुज़ूर (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं जिन्हें बजुज़ अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर के और कोई नहीं जानता। कल की बात अल्लाह के सिवा और नहीं जानता। पेट क्या बढ़ते हैं और क्या घटते हैं, कोई नहीं जानता, बारिश कब बरसेगी इसका इल्म भी किसी को नहीं। कौन शख़्स कहाँ मरेगा उसे भी उसके सिवा कोई नहीं जानता। क़ियामत कब क़ायम होगी। उसका इल्म भी अल्लाह ही को है। पेट क्या घटाते हैं, इससे मुराद हमल का साक़ित हो जाना है। और रहम में क्या बढ़ रहा है, कैसे पूरा हो रहा है? यह भी अल्लाह को बख़ूबी इल्म रहता है। देख लो कोई औरत दस महीने लेती है, कोई नौ किसी का हमल घटता है किसी का बढ़ता है। नौ माह से घटना, नौ माह से बढ़ जाना अल्लाह के इल्म में है।

हज़रत ज़ुहहाक रहमतुल्लाहि अलैह का बयान है कि मैं दो साल माँ के पेट में रहा। जब पैदा हुआ तो मेरे अगले दो दाँत निकल आए थे। हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि हमल की इन्तिहाई मुद्दत दो साल की होती है। कमी से मुराद बाज़ के नज़दीक अय्यामे-हमल में ख़ून का आना और ज़्यादती से मुराद नौ माह ज़्यादा हमल का ठहरा रहना है। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं, नौ से पहले जब औरत ख़ून को देखे तो नव्वे से ज़्यादा हो जाते हैं। मिस्ले-अय्यामे-हैज़ के। ख़ून के गिरने से बच्चा अच्छा

हो जाता है। और न गिरे तो बच्चा पूरा पाठा और बड़ा होता है।

हज़रत मकहूल रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि बच्चा अपनी माँ के पेट में बिल्कुल बेग़म बेखटके और बाआराम होता है। उसकी माँ के हैज़ का ख़ून उसकी ग़िज़ा होता है, जो बेतलब, बाआराम उसे पहुँचता रहता है, यही वजह है कि माँ को उन दिनों हैज़ नहीं आता। फिर जब बच्चा पैदा होता है तो ज़मीन पर टिकते ही चिल्लाता है। उस अंजान जगह से उसे वहशत होती है। जब उसकी नाल कट जाती है तो अल्लाह तआला उसकी रोज़ी माँ के सीने में पहुँचा देता है। और अब भी बेतलब व बेजुस्तजू, बे रंज व ग़म, बेफ़िकरी के साथ उसे रोज़ी मिलती रहती है। फिर ज़रा बड़ा होता है। अपने हाथ खाने-पीने लगता है, लेकिन बालिग़ होते ही रोज़ी के लिए हाय-हाय करने लगता है। मौत और क़त्ल तक से रोज़ी हासिल होने का इम्कान हो तो पस व पेश नहीं करता। अफ़सोस ऐ इब्ने-आदम! तुझ पर हैरत है! जिसने तुझे तेरी माँ के पेट में रोज़ी दी, जिसने तुझे तेरी माँ की गोद में रोज़ी दी, जिसने तुझे बच्चे से बालिग़ बनाने तक रोज़ी दी, अब तू बालिग़ और अक़्लमन्द होकर यह कहने लगा कि हाय कहाँ से खाऊँगा? मौत हो या क़त्ल हो? फिर आप ने यही आयत पढ़ी। हर चीज़ उसके पास बाअन्दाज़ा है। रिज़्क़े-अजल सब मुक़र्रर-शुदा है।

हुज़ूर (सल्ल०) की एक साहबज़ादी साहिबा ने आप (सल्ल०) के पास आदमी भेजा कि मेरा बच्चा आख़िरी हालत में है, आपका तशरीफ़ लाना मेरे लिए ख़ुशी का बाइस है। आपने फ़रमाया, जाओ उनसे कह दो कि जो अल्लाह ले ले वह उसी का है, जो दे रखे वह भी उसी का है। हर चीज़ का सही अन्दाज़ा उसके पास है। इनसे कह दो कि सब्र करें और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रखें। ख़ुदाए-तआला हर उस चीज़ को भी जानता है जो बन्दों से पोशीदा है और उसे भी जो बन्दों पर ज़ाहिर है। उससे कुछ भी मख़फ़ी नहीं, वह सबसे बड़ा और हर एक से बुलन्द है। हर चीज़ उसके इल्म में है। सारी मख़लूक़ उसके सामने आजिज़ है। तमाम सिर उसके आगे

झुके हुए हैं। तमाम बन्दे उसके सामने आजिज़, लाचार और महज़ बेबस हैं।

﴾110﴿

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝

सवाउम्-मिन्कुम्-मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम् बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार। (10) लहू मुअक्क़ि-बातुम्-मिम्-बैनि यदैहि व मिन् .ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाह्, इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम्, व इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म-रद्-द लहू व मा लहुम्-मिन् दूनिही मिंव्वाल। (11)

तर्जमा : तुममें से किसी का अपनी बात को छिपा कर कहना और बाआवाज़ बुलन्द उसे कहना और जो रात को छिपा हुआ हो और जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर बराबर व यकसाँ है, उसके पहरेदार इनसान के आगे-पीछे मुक़र्रर हैं। जो अल्लाह के हुक्म से उसकी निगहबानी करते हैं। किसी क़ौम की हालत अल्लाह तआला नहीं बदलता जब कि कि वह ख़ुद उसे न बदले जो उनके दिलों में है। अल्लाह तआला जब किसी क़ौम की सज़ा का इरादा कर लेता है तो वह बदला नहीं करता। और उसके सिवा कोई भी उनका कारसाज़ नहीं। (पारा 13, अर-रअद 10-11)

तशरीह : इल्मे-अल्लाह तमाम मख़लूक़ को घेरे हुए है। कोई चीज़ उसके इल्म से बाहर नहीं। पस्त और बुलन्द हर आवाज़ वह सुनता है। छिपा-खुला सब जानता है। तुम छिपाओ या खोलो, उससे मख़फ़ी नहीं।

हज़रत सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, वह ख़ुदा पाक है जिसके सुनने ने तमाम आवाज़ों को घेरा हुआ है। क़सम ख़ुदा की अपने ख़ाविन्द की शिकायत लेकर आनेवाली औरत ने रसूलुल्लाह (सल्ल.) के इस तरह काना-फूसी की कि मैं पास ही घर में बैठी हुई थी लेकिन मैं भी पूरी तरह न सुन सकी, लेकिन अल्लाह तआला ने आयतें 'क़द समिअल्लाहु' उतारीं। उस औरत की ये तमाम सरगोशी अल्लाह तआला सुन रहा था। वह समीअ व बसीर है। जो अपने घर के तहख़ाने में रातों के अन्धेरे में छिपा हुआ हो वह और जो दिन के वक़्त खुल्लमखुल्ला आबाद रास्तों में चला जा रहा हो, वे इल्मुल्लाह में बराबर हैं। जैसे आयत 'अला ही-न यस्तग़शू-न सियाबहुम.... में फ़रमाया है और आयत मा तकूनु फ़ी शअनिन में इरशाद हुआ है कि तुम्हारे किसी काम के वक़्त हम इधर-उधर नहीं होते। कोई ज़र्रा हमारी मालूमात से ख़ारिज नहीं। ख़ुदा के फ़रिश्ते बतौर निगहबान और चौकीदार के बन्दों के इर्द-गिर्द मुक़र्रर हैं जो उन्हें आफ़तों से और तकलीफ़ों से बचाते रहते हैं। जैसे कि आमाल पर निगहबान फ़रिश्तों की और जमाअत है जो बारी-बारी पै-दर-पै आते-जाते रहते हैं। रात के अलग, दिन के अलग, और जैसे कि दो फ़रिश्ते इनसान के दाएँ-बाएँ आमाल लिखने पर मुक़र्रर हैं। दाहिनेवाला नेकियाँ लिखता है बाईं जानिबवाला बदियाँ लिखता है, इसी तरह दो फ़रिश्ते उसके आगे-पीछे हैं जो उसकी हिफ़ाज़त व हिरासत करते रहते हैं, पस हर इनसान हर वक़्त चार फ़रिश्तों में रहता है। दो कातिब आमाल दाएँ-बाएँ, दो निगहबानी करनेवाले आगे-पीछे। फिर रात के अलग दिन के अलग।

चुनांचे हदीस में है, तुममें फ़रिश्ते पै-दर-पै आते-जाते रहते हैं। रात के और दिन के, उनका मेल सुब्ह और अस्र की नमाज़ में होता है। रात गुज़ारनेवाले आसमान पर चढ़ जाते हैं। बावजूद इल्म के अल्लाह तबारक व तआला उनसे पूछता है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हालत में छोड़ा? वे जवाब देते हैं कि हम गए तो उन्हें नमाज़ में पाया और आए तो नमाज़ में छोड़ आए।

और हदीस में है, तुम्हारे साथ वे हैं जो सिवा पाख़ाने और जिमाअ के वक़्त तुमसे अलैहिदा नहीं होते, पस तुम्हें उनका लिहाज़ और उनकी शर्म और उनका इकराम और उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए पस जब ख़ुदा को कोई नुक़सान बन्दे को पहुँचाना मंज़ूर होता है, बक़ौल इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु मुहाफ़िज़-फ़रिश्ते उस काम को जो जाने देते हैं। मुजाहिद कहते हैं कि हर बन्दे के साथ ख़ुदा की तरफ़ से मुवक्किल है जो उसे सोते-जागते जिन्नात से, इनसान से ज़हरीले जानवरों और तमाम आफ़तों से बचाता रहता है। हर चीज़ को रोक देता है मगर वह जिसे ख़ुदा पहुँचाना चाहे। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये दुनिया के बादशाहों, अमीरों वग़ैरा का ज़िक्र है जो पहरे-चौकी में रहते हैं। ज़ह्हाक रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि सुल्तान अल्लाह की निगहबानी में होता है। मुमकिन है ग़रज़ इस क़ौल से यह हो कि जैसे बादशाहों, अमीरों की चौकीदारी सिपाही करते हैं उसी तरह बन्दे के चौकीदार ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर-शुदा होते हैं।

तफ़सीर इब्ने-जरीर में वारिद हुआ है कि हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहु अन्हु हुज़ूर (सल्ल०) के पास आए और आप से दरयाफ़्त किया कि फ़रमाइए, बन्दे के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक तो दाएँ जानिब नेकियों का लिखनेवाला जो बाईं जानिब वाले पर अमीर है, जब तू कोई नेकी करता है वह एक के बजाए दस लिख जाते हैं। जब तू कोई बुराई करे तो बाएँ वाला दाएँ वाले से उसके लिखने की इजाज़त तलब करता है, वह कहता है ज़रा ठहर जाओ, शायद तौबा व इस्तिग़फ़ार कर ले। तीन मरतबा वह इजाज़त माँगता है। तब तक भी अगर उसने तौबा न की तो यह नेकी का फ़रिश्ता उससे कहता है अब लिख ले। अल्लाह हमें इससे छुटाए, यह तो बड़ा बुरा साथी है। इसे ख़ुदा का लिहाज़ नहीं, यह उससे नहीं शरमाता। अल्लाह का फ़रमान है कि इनसान जो बात ज़बान पर लाता है उस पर निगहबान मुतययन और मुहैया हैं। और दो फ़रिश्ते तेरे आगे पीछे हैं। फ़रमाने-ख़ुदा है, लहु

मुअक़्क़िबातुन और एक फ़रिश्ता तेरे माथे के बाल थामे हुए है। जब तू ख़ुदा के लिए तवाज़ोअ और फ़रोतनी करता है, वह तुझे बुलन्द दरजा कर देता है और जब तू अल्लाह के सामने सरकशी और तकब्बुर करता है वह तुझे पस्त और आजिज़ कर देता है। और दो फ़रिश्ते तेरे होंटों पर हैं, जो दुरूद तू मुझ पर पढ़ता है उसकी वे हिफ़ाज़त करते हैं। एक फ़रिश्ता तेरे मुँह पर खड़ा है कि कोई साँप वग़ैरा जैसी चीज़ तेरे हलक़ में न चली जाए और दो फ़रिश्ते तेरी आँखों पर हैं, पस ये दस फ़रिश्ते हर बनी-आदम के साथ हैं। फिर दिन के अलग हैं और रात के अलग हैं। यूँ हर शख़्स के साथ बीस फ़रिश्ते मिनजानिब अल्लाह मुवक्किल हैं, इधर बहकाने के लिए दिन भर तो इबलीस की ड्यूटी रहती है और रात को उसकी औलाद की।

मुसनद अहमद में है, तुममें से हर एक के साथ जिन्न साथी है और फ़रिश्ता साथी है। लोगों ने कहा, आपके साथ भी? फ़रमाया हाँ, लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद की है, वह मुझे भलाई के सिवा कुछ नहीं कहता (मुस्लिम)। ये फ़रिश्ते बहुक्मे-ख़ुदा उसकी निगहबानी रखते हैं। कअ़ब रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि अगर इब्ने-आदम के लिए हर नरम व सख़्त खुल जाए तो अलबत्ता हर चीज़ उसे ख़ुद नज़र आने लगे और अगर अल्लाह की तरफ़ से ये मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर न हों, जो खाने-पीने और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं, तो वल्लाह तुम तो उचक लिए जाओ। अबू-उमामा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हर आदमी के साथ मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता है जो तक़दीरी उमूर के सिवा और तमाम बलाओं को उससे दफ़अ करता रहता है।

एक शख़्स क़बीला मुराद का हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु के पास आया। इन्हें नमाज़ में मशग़ूल देखा तो कहा कि क़बीला मुराद के आदमी आपके क़त्ल का इरादा कर चुके हैं। आप पहरा चौकी मुक़र्रर कर लीजिए। आपने फ़रमाया, हर शख़्स के साथ दो फ़रिश्ते उसके मुहाफ़िज़ मुक़र्रर हैं। बग़ैर तक़दीर के लिखे किसी बुराई को

इनसान तक पहुँचने नहीं देते। सुनो! अजल एक मज़बूत क़िला है और उम्दा ढाल है। और कहा गया है कि बहुक्मे ख़ुदा अम्रे-ख़ुदा से इसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं।

जैसे हदीस शरीफ़ में है, लोगों ने हुज़ूर अक़दस (सल्ल॰) से दरयाफ़्त किया कि ये झाड़-फूँक जो हम करते हैं, क्या इससे ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई तक़दीर टल जाती है? आपने फ़रमाया, वह ख़ुद अल्लाह की मुक़र्रर करदा है। इब्ने-अबी हातिम में है कि बनी इसराईल के नबियों में से एक की तरफ़ वह्य-ख़ुदा हुई कि अपनी क़ौम से कह दे कि जिस बस्तीवाले और जिस घरवाले ख़ुदा की इताअत गुज़ारी करते-करते ख़ुदा की मअसियत करने लगते हैं, अल्लाह तआला उनकी राहत की चीज़ों को उनसे दूर कर के उन्हें वे चीज़ें पहुँचाता है जो उन्हें तकलीफ़ देनेवाली हों। उसकी तसदीक़ क़ुरआन की आयत इन्नल्ला-ह ला युग़ैय्येरू से भी होती है। उमैर-बिन-अब्दुल मलिक कहते हैं कि कूफ़े के मिम्बर पर हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु ने हमें ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़रमाया कि अगर मैं चुप रहता तो हुज़ूर (सल्ल॰) बात शुरू करते और जब मैं पूछता तो आप मुझे जवाब देते। एक दिन आपने मुझसे फ़रमाया ख़ुदाए-तआला फ़रमाता है कि मुझे क़सम है अपनी इज़्ज़त व जलाल की, अपनी बुलन्दी की जो अर्श पर है कि जिस बस्ती के जिस घर के लोग मेरी नाफ़रमानियों में मुब्तला हों फिर उन्हें छोड़कर मेरी फ़रमाँबरदारी में लग जाएँ तो मैं भी अपने अज़ाब और दुख इनसे हटाकर अपनी रहमत और सुख इन्हें अता फ़रमाता हूँ।

﴾111﴿

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ
فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝

हुवल्लज़ी युरीकुमुल्-बर्-क़ .ख़ौफ़ंव्-व त-म-अंव्-व युन्शिउस्-

सहाबस्-सिक़ाल। (12) व युसब्बिहुर्रअ्दु बिहम्दिही वल्मलाइ-कतु मिन् .ख़ीफ़तिह्, व युर्सिलुस्सवाअि-क़ फ़युसीबु बिहा मंय्यशा-उ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाह, व हु-व शदीदुल्-मिहाल। (13)

तर्जमा : वह अल्लाह ही है जो तुम्हें बिजली की चमक डराने और उम्मीद दिलाने के लिए दिखाता है और भारी बादलों को पैदा करता है। गरज उसकी तस्बीह व तारीफ़ करती है और फ़रिश्ते भी, उसके .ख़ौफ़ से, वही आसमान से बिजलियाँ गिराता है और जिस पर चाहता है उस पर डालता है। कुफ़्फ़ार अल्लाह की बाबत लड़-झगड़ रहे हैं। और अल्लाह सख़्त क़ुव्वतवाला है। (पारा 13, रअद 12-13)

तशरीह : इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु ने एक साइल के जवाब में कहा था कि बर्क़ पानी है। मुसाफ़िर इसे देखकर अपनी ईज़ा और मशक़्क़त के .ख़ौफ़ से घबराता है और मुक़ीम बरकत व नफ़े की उम्मीद पर रिज़्क़ की ज़्यादती का लालच करता है। वही बोझल बादलों को पैदा करता है। जो ब-वजह पानी के बोझ के ज़मीन से क़रीब आ जाते हैं। पस इनमें बोझ पानी का होता है, फिर फ़रमाया कि कड़क भी उसकी तस्बीह व तारीफ़ करती है। और जगह है कि हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह व हम्द करती है।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला बादल पैदा करता है जो अच्छी तरह बोलते हैं और हँसते हैं, मुमकिन है बोलने से मुराद गरजना और हँसने से मुराद बिजली का ज़ाहिर होता हो। सअद-बिन-इबराहीम कहते हैं कि अल्लाह तआला बारिश भेजता है। और उससे अच्छी बोली और उससे अच्छी हँसी वाला कोई और नहीं, उसकी हंसी बिजली है और उसकी गुफ़तगू गरज है। मुहम्मद-बिन-मुस्लिम कहते हैं कि हमें यह बात पहुँची है कि बर्क़ एक फ़रिश्ता है जिसके चार मुँह हैं। एक इनसान जैसा, एक बैल, एक गधा, जैसा एक शेर जैसा, वह जब दुम हिलाता है तो बिजली ज़ाहिर होती है। आँहज़रत (सल्ल०) गरज-कड़क सुनकर यह दुआ पढ़ते कि 'अल्लाहुम्-म ला तक़तुलना बिग़ज़बि-क वला तुहलिकना

बिअज़ाबि-क व आफ़िना क़ब्-ल ज़ालि-क' (तिरमिज़ी) और रिवायत में यह दुआ है कि 'सुब्हा-न मंयुसब्बिहुर्रअदु बिहम्दिहि'। हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु गरज सुनकर पढ़ते सुब्हा-न मन सब्बह-त लहु इब्नि अबी ज़करिया फ़रमाते हैं जो शख़्स गरज-कड़क सुनकर कहे सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही उसपर बिजली नहीं गिरेगी। अब्दुल्लाह-बिन-ज़ुबैर रज़िअल्लाहु अन्हु गरज-कड़क की आवाज़ सुनकर बातें छोड़ देते और फ़रमाते, 'सुब्हानल्लाहिल्लज़ी युसब्बिहुर्रअदु बिहम्दिही वल-मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिही' और फ़रमाते कि इस आयत में और इस आवाज़ में ज़मीन वालों के लिए बड़ी डरावे की चीज़ है।

मुसनद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि तुम्हारा रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है कि अगर मेरे बन्दे मेरी पूरी इताअत करते तो मैं रातों को बारिशें बरसाता और दिन को सूरज चढ़ाता। और इन्हें गरज की आवाज़ तक न सुनाता। तबरानी में है कि आप फ़रमाते हैं, गरज सुनकर अल्लाह का ज़िक्र करो। क्योंकि ज़िक्र करनेवालों पर कड़ाका नहीं गिरता। वह कड़ाका भेजता है जिसे चाहे उस पर अज़ाब करता है। इसलिए आख़िर ज़माने में बकसरत बिजलियाँ गिरेंगी। मुसनद की हदीस में है कि क़ियामत के क़रीब बिजली बकसरत गिरेगी। यहाँ तक कि एक शख़्स अपनी क़ौम से आकर पूछेगा कि सुब्ह किस पर बिजली गिरी? वे कहेंगे, फ़लाँ-फ़लाँ पर।

अबू-याला रावी हैं कि आँहज़रत (सल्ल॰) ने एक शख़्स को एक मग़रूर सरदार के बुलाने को भेजा। उसने कहा, कौन रसूलल्लाह और कौन अल्लाह? अल्लाह सोने का है या चाँदी का? या पीतल का? क़ासिद वापस आया और हुज़ूर (सल्ल॰) से यह ज़िक्र किया कि देखिये मैंने तो आप से पहले ही कहा था वह मुतकब्बिर मग़रूर शख़्स है, आप उसे न बुलवाएँ। आप ने फ़रमाया। दोबारा जाओ और उससे यही कहो। उसने जाकर फिर बुलाया। लेकिन उस फ़िरऔन ने यही जवाब इस मरतबा भी दिया। क़ासिद ने वापस

आकर फिर हुज़ूर (सल्ल.) से अर्ज़ किया। आप (सल्ल.) ने तीसरी मरतबा भेजा। अबकी मरतबा भी उसने पैग़ाम सुनकर वही जवाब देना शुरू किया कि एक बादल उसके सिर पर आ गया। कड़का और उसमें से बिजली गिरी और उसके सिर से खोपड़ी उड़ा ले गई। उसके बाद यह आयत उतरी।

एक रिवायत में है कि एक यहूदी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के पास आया और कहने लगा, ख़ुदाए-तआला तांबे का है या मोती का या याक़ूत का। अभी इसका सवाल पूरा न हुआ था जो बिजली गिरी और वह तबाह हो गया और यह आयत उतरी। क़तादा रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं, मज़कूर है कि एक शख़्स ने क़ुरआन को झुठलाया और आँहज़रत (सल्ल.) की नुबूवत से इनकार किया। उसी वक़्त आसमान से बिजली गिरी और वह हलाक हो गया। और यह आयत उतरी।

इस आयत के शाने-नुज़ूल में आमिर-बिन-तुफ़ैल और अरबद-बिन-रबीआ का क़िस्सा भी बयान होता है कि ये दोनों सरदाराने-अरब मदीने में हुज़ूर (सल्ल.) के पास आए और कहा कि हम आपको मान लेंगे लेकिन इस शर्त पर कि आप हमें आधे-आधे का शरीक कर लें। आपने उन्हें इससे मायूस कर दिया। तो आमिर मलऊन ने कहा, वल्लाह मैं सारे अरब के मैदान को लशकर से भर दूँगा। आपने फ़रमाया, झूठा है ख़ुदा तुझे यह वक़्त ही नहीं देगा फिर ये दोनों मदीने में ठहरे रहे कि मौक़ा पाकर हुज़ूर (सल्ल.) को ग़फ़लत में क़त्ल कर दें, चुनांचे एक दिन इन्हें मौक़ा मिल गया। एक ने तो आपको सामने से बातों में लगा लिया। दूसरा तलवार लिए पीछे से आ गया लेकिन उस मुहाफ़िज़े-हक़ीक़ी ने आपको उनकी शरारत से बचा लिया। अब यहाँ से नामुराद होकर चले और अपने जले दिल के फफोले फोड़ने के लिए अरब को आपके ख़िलाफ़ उभारने लगे। इसी हाल में अरबद पर आसमान से बिजली गिरी, और उसका काम तो तमाम हो गया। आमिर ताऊन की गिल्टी से पकड़ा गया और उसी में बिलक-बिलक कर जान दी। और उसी

जैसों के बारे में यह आयत उतरी कि अल्लाह तआला जिस पर चाहे बिजली गिराता है। अरबद के भाई लबीद ने अपने भाई के इस वाक़िए को अशआर में ख़ूब बयान किया है। और रिवायत में है कि आमिर ने कहा कि अगर मैं मुसलमान हो जाऊँ तो मुझे क्या मिलेगा। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, जो सब मुसलमान का हाल वही तेरा हाल। उसने कहा फिर तो मैं मुसलमान नहीं होता। अगर आप के बाद इस अम्र का वाली मैं बनूँ तो दीन क़बूल करता हूँ। आपने फ़रमाया, यह अम्रे-ख़िलाफ़त तेरे लिए है न तेरी क़ौम के लिए, हाँ हमारा लश्कर तेरी मदद पर होगा। उसने कहा उसकी मुझे ज़रूरत नहीं, अब भी नजदी लश्कर मेरी पुश्त-पनाही पर है। मुझे तो कच्चे-पक्के का मालिक कर दें तो मैं दीने-इस्लाम क़बूल कर लूँ। आपने फ़रमाया, नहीं। ये दोनों आपके पास से चले गए। आमिर कहने लगा, वल्लाह मैं मदीने को चौतरफ़ से लश्करों से महसूर कर लूँगा। हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अल्लाह तेरा यह इरादा पूरा नहीं होने देगा। अब इन दोनों ने आपस में मशवरा किया कि एक तो हज़रत (सल्ल॰) को बातों में लगाए दूसरा तलवार से आप का काम तमाम कर दे, फिर इनमें से लड़ेगा कौन? ज़्यादा से ज़्यादा दीयत देकर पीछा छूट जाएगा। अब ये दोनों फिर आपके पास आए। आमिर ने कहा ज़रा आप उठकर यहाँ आइए, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। आप उठे। उसके साथ चले। एक दीवार तले वह बातें करने लगा। हुज़ूर (सल्ल॰) भी खड़े हुए सुन रहे थे। अरबद ने मौक़ा पाकर तलवार पर हाथ रखा, उसे नियाम से बाहर निकालना चाहा लेकिन ख़ुदाए-तआला ने उसका हाथ शल कर दिया। उससे तलवार निकली ही नहीं। जब काफ़ी देर लग गई और अचानक हुज़ूर (सल्ल॰) की नज़र पुश्त की जानिब पड़ी तो आपने यह हालत देखी और वहाँ से लौटकर चले आए। अब ये दोनों मदीने से चले। हिरा राक़िम में आकर ठहरे। लेकिन सअद-बिन-मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हु और उसैद बिन हुज़ैर रज़िअल्लाहु अन्हु वहाँ पहुँचे, और उन्हें वहाँ से निकाला। राक़िम में पहुँचे ही थे जो अरबद पर बिजली

गिरी। उसका तो वहीं ढेर हो गया। आमिर यहाँ से भागा-भागा चला लेकिन ख़रीम पहुँचा था जो उसे ताऊन की गिल्टी निकली। बनू सलूल क़बीले की एक औरत के हाँ यह ठहरा। वह कभी-कभी अपनी गरदन की गिल्टी को दबाता और ताज्जुब से कहता, यह तो ऐसी है जैसे ऊँट की होती है। अफ़सोस मैं सलूलिया औरत के घर पर मरूँगा। क्या अच्छा होता कि मैं अपने घर होता। आख़िर उससे न रहा गया। घोड़ा मँगवाया। सवार हुआ और चल दिया लेकिन रास्ते ही में हलाक हो गया। पस उनके बारे में ये आयतें अल्लाहु यअलमु से मिंव-वाल तक नाज़िल हुईं। इनमें आँ हज़रत (सल्ल०) की हिफ़ाज़त का ज़िक्र भी है। फिर अरबद पर बिजली गिरने का ज़िक्र है और फ़रमाया है कि ये अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं। उसकी अज़मत व तौहीद को नहीं मानते। हालाँकि ख़ुदाए-तआला अपने मुख़ालिफ़ों और मुनकिरों को सख़्त सज़ा और नाक़ाबिले-बरदाश्त अज़ाब देनेवाला है। पस यह आयत मिस्ल आयत 'व म-करू मकरंव-व मकरना मकरन वहुम ला यशउरून....' के है। यानी उन्होंने मकर किया और हमने भी, इस तरह कि इन्हें मालूम न हो सका। अब तू आप देख ले कि उनके मकर का अंजाम किया हुआ। हमने इन्हें और उनकी क़ौम को ग़ारत कर दिया। अल्लाह सख़्त पकड़ करनेवाला है, बहुत क़वी है। पूरी क़ुव्वत व ताक़तवाला है।

﴾112﴿

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِیَ فِی الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَیْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝

अल्लाहुल्लज़ी .ख-लक़स्समावाति वल्अर्-ज व अन्ज़-ल

मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़-ज बिही मिनस्स-म-राति रिज़्क़ल्लकुम्, व सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल्-क लितज्रि-य फ़िल्-बह्रि बि-अम्रिह्, व सख़्ख़-र लकुमुल्-अन्हार। (32) व सख़्ख़-र लकुमुश्शम्-स वल्-क़-म-र दाइबैन्, व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहार। (33) व आताकुम्-मिन् कुल्लि मा स-अल्तुमूह, व इन् तअुद्दू निअ्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्-इन्सा-न ल-ज़लूमुन् कफ़्फ़ार। (34)

तर्जमा : अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है। और आसमानों से बारिश बरसा कर उसके ज़रीए से तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले हैं। और कश्तियों को तुम्हारे बस में कर दिया है कि दरियाओं में उसके हुक्म से चलें-फिरें। उसी ने नदियाँ और नहरें तुम्हारे इख़्तियार में कर दी हैं। उसी ने तुम्हारे लिए सूरज-चाँद को मुसख़्ख़र कर दिया है कि बराबर ही चल रहे हैं और रात-दिन को भी तुम्हारे काम में लगा रखा है। उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी कुल चीज़ों में से दे रखा है। अगर तुम अल्लाह के एहसान गिनना चाहो तो उन्हें पूरे गिन भी नहीं सकते। यक़ीनन इनसान बड़ा ही बे-इनसाफ़ और नाशुक्रा है। (पारा 13, इबराहीम 32-34)

तशरीह : अल्लाह की तरह-तरह की बेशुमार नेमतों को देखो, आसमान को उसने एक महफ़ूज़ छत बना रखा है। ज़मीन को बेहतरीन फ़र्श बना रखा है। आसमान से बारिश बरसाकर ज़मीन से मज़े-मज़े के फल-खेतियाँ, बाग़ात तैयार कर देता है। उसी के हुक्म से कश्तियाँ पानी के ऊपर तैरती फिरती हैं कि तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे और एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुँचाएँ। तुम वहाँ का माल यहाँ, यहाँ का वहाँ ले जाओ, ले आओ, नफ़ा हासिल करो। तजरिबा बढ़ाओ। नहरें भी उसी ने तुम्हारे काम में लगा रखी हैं। तुम इनका पानी पियो-पिलाओ, उससे खेतियाँ करो। नहाओ-धोओ और तरह-तरह के फ़ायदे हासिल करो। दाइमन चलते-फिरते और कभी न थकते सूरज चाँद भी तुम्हारे फ़ायदे के कामों में मशग़ूल हैं। मुक़र्ररा चाल पर, मुक़र्ररा जगह पर गर्दिश में लगे हुए हैं। न उनमें

टक्कर हो, न आगा-पीछा हो। दिन-रात इन्हीं के आने-जाने से पै-दर-पै आते-जाते रहते हैं। सितारे उसी हुक्म के मातहत हैं, वह रब्बुल आलमीन बाबरकत है। कभी दोनों को बड़े कर देता है। कभी रातों को बढ़ा देता है। हर चीज़ अपने काम में सिर झुकाए मशग़ूल हैं। वह ख़ुदा अज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार है। तुम्हारी ज़रूरत की तमाम चीज़ें उसने तुम्हारे लिए मुहैया कर दी हैं। तुम अपने हाल व क़ाल से जिन-जिन चीज़ों के मोहताज थे, उसने सब कुछ तुम्हें दे दी हैं। माँगने पर भी वह देता है और बे माँगे भी। उसका हाथ नहीं रुकता। तुम भला रब की तमाम नेमतों का शुक्र तो क्या अदा करोगे? तुमसे तो उनकी पूरी गिनती भी मुहाल है। तलक़-बिन-हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का हक़ इससे बहुत भारी है कि बन्दे उसे अदा कर सकें और ख़ुदा की नेमतें उससे बहुत ज़्यादा हैं कि बन्दे उनकी गिनती कर सकें। लोगो सुब्ह-शाम इस्तिग़फ़ार करते रहो, सही बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाया करते थे, ख़ुदाया तेरे ही लिए सब हम्द व सना सज़ावार है। हमारी सनाएँ नाकाफ़ी हैं। पूरी और बेपरवाह करनेवाली नहीं। ख़ुदाया तू माफ़ फ़रमा।

बज़्ज़ार में आपका फ़रमान है कि क़ियामत के दिन इनसान के तीन दीवान निकलेंगे, एक में नेकियाँ लिखी हुई होंगी, दूसरे में गुनाह होंगे, तीसरे में ख़ुदा की नेमतें होंगी, अल्लाह तआला अपनी नेमतों में से सबसे छोटी नेमत से फ़रमाएगा कि उठ और अपना मुआवज़ा इसके नेक आमाल से ले ले, उससे उसके सारे ही अमल ख़त्म हो जाएँगे। फिर भी वह यकसू होकर कहेगी कि बारी तआला मेरी पूरी क़ीमत वसूल नहीं हुई। ख़याल कीजिए, अभी गुनाहों का दीवान यूँ ही अलग थलग रखा हुआ है। और तमाम नेमतों का दीवान भी यूँ ही रखा हुआ है। अगर बन्दे पर ख़ुदा का इरादा रहम व करम का हुआ तो अब वह उसकी नेकियाँ बढ़ा देगा। और उसके गुनाहों से तजावुज़ कर जाएगा और उससे फ़रमा देगा कि मैंने अपनी नेमतें तुझे बग़ैर बदले के बख़्श दीं।

मरवी है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला जल्ल व अला से दरियाफ़्त किया कि मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ? शुक्र करना ख़ुद भी तो तेरी एक नेमत है? जवाब मिला कि दाऊद अब तू शुक्र अदा कर चुका जबकि तूने यह जान लिया और उसका इक़रार कर लिया कि तू मेरी नेमतों की शुक्र की अदायगी से क़ासिर है।

इमाम शाफ़िई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं अल्लाह तआला ही के लिए तो हम्द है जिसकी बे-शुमार नेमतों में से एक नेमत का शुक्र भी बग़ैर एक नई नेमत के हम अदा नहीं कर सकते कि इस नई नेमत पर फिर एक शुक्र वाजिब हो जाता है, फिर इस नेमत की शुक्रगुज़ारी की अदायगी की तौफ़ीक़ पर फिर नेमत मिली जिसका शुक्र वाजिब हुआ। एक शाइर ने यही मज़मून अपने शेरों में बाँधा है कि रोंगटे-रोंगटे पर ज़बान हो तो भी तेरी एक नेमत का शुक्र भी पूरा अदा नहीं हो सकता, तेरे एहसानात और इनामात बेशुमार हैं।

﴾113﴿

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۶﴾ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿۱۷﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿۱۹﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿۲۰﴾

व ल-क़द् जअल्ना फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन। (16) व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्रजीम। (17) इल्ला मनिस्त-रक़स्सम्-अ फ़अत्ब-अहू शिहाबुम्-मुबीन। (18) वल्अर्-ज मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून। (19) व जअल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन। (20)

तर्जमा : यक़ीनन हमने आसमान में बुर्ज बनाए हैं और देखने

वालों के लिए इसे सजा दिया गया है। और उसे हर मरदूद शैतान से महफ़ूज़ रखा है। हाँ, मगर जो चोरी-छिपे सुनने की कोशिश करे उसके पीछे दहकता हुआ (खुला शोला) लगता है। और ज़मीन को हमने फैला दिया है। और उस पर अटल पहाड़ डाल दिए हैं और उसमें हमने हर चीज़ एक मुअय्यन मिक़दार से उगा दी है और उसी में हमने तुम्हारी रोज़ियाँ बना दी हैं। और जिन्हें तुम रोज़ी देने वाले नहीं हो।

(पारा 14, अल-हिज्र 16-20)

तशरीह : इस बुलन्द आसमान का जो ठहरे रहनेवाले और चलने फिरनेवाले सितारों से ज़ीनतदार है, पैदा करनेवाला अल्लाह तआला ही है। जो भी इसे ग़ौर-फ़िक्र से देखे वह अजायबाते-क़ुदरत और निशानाते-इबरत अपने लिए बहुत पा सकता है। बुरूज से मुराद यहाँ परस्तार हैं। जैसे और आयत में है 'तबारकल्लज़ी ज-अ-ल फ़िस्समाइ बुरूजन' बाज़ का क़ौल है कि मुराद सूरज चाँद की मंज़िलें हैं। अतिया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, वे जगहें जहाँ चौकी-पहरे हैं और जहाँ से सरकश शैतानों पर मार पड़ती है कि वे बुलन्द व बाला फ़रिश्तों की गुफ़्तगू न सुन सकें। जो आगे बढ़ता है शोला उसके जलाने को लपकता है। कभी तो यह नीचे वाले कान में डाल दे, इससे पहले ही उसका काम ख़त्म हो जाता है। कभी इसके ख़िलाफ़ भी होता है जैसे कि सही बुख़ारी की हदीस में सराहतन मरवी है कि जब अल्लाह तआला आसमान में किसी अम्र की बाबत फ़ैसला करता है तो फ़रिश्ते आजिज़ी के साथ अपने पर झुका लेते हैं। जैसे ज़ंजीर पत्थर पर, फिर जब उनके दिल मुत्मइन हो जाते हैं तो दरियाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे रब का क्या इरशाद हुआ, वे कहते हैं जो भी फ़रमाया हक़ है, और वही बुलन्द व बाला और बहुत बड़ा है। फ़रिश्तों की बातों को चोरी-चोरी सुनने के लिए जिन्नात ऊपर को चढ़ते हैं, और उसी तरह एक-पर-एक होता है। रावी हदीस हज़रत सफ़वान रज़िअल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ के इशारे से इस

तरह बतलाया कि दाहिने हाथ की उंगलियाँ कुशादा करके एक को एक परख लिया। इस सुननेवाले का काम शोला कभी तो उससे पहले ही ख़त्म कर देता है कि वह अपने साथी के कान में कह दे। उसी वक़्त वह जल जाता है। और कभी ऐसा भी होता है कि यह उसे और वह अपने से नीचेवाले को और उसी तरह मुसलसल पहुँचा दे। और वह बात ज़मीन तक आ जाए और जादूगर या काहिन के कान उससे आशना हो जाएँ, फिर तो वह उसके साथ सौ झूठ मिलाकर लोगों में दूँ की लेता है। जब उसकी वह एक बात जो आसमान की बात उसे इत्तिफ़ाक़न पहुँच गई थी। सुब्ह निकलती है तो लोगों में उसकी दानिशमन्दी के चर्चे होने लगते हैं कि देखो फ़लाँ ने फ़लाँ दिन यह कहा था। बिलकुल सच निकला। फिर अल्लाह तआला ज़मीन का ज़िक्र फ़रमाता है कि उसी ने उसे पैदा किया, फैलाया, इसमें पहाड़ बनाए, जंगल और मैदान क़ायम किए, खेत और बाग़ात उगाए और तमाम चीज़ें बाअन्दाज़ा और बमुनासिबत और बमौज़ूनियत हर-हर मौसम के हर-हर ज़मीन के हर-हर मुल्क के लिहाज़ से बिलकुल ठीक पैदा कीं जो बाज़ार की ज़ीनत और लोगों की ख़ुशगवारी की हैं। ज़मीन में क़िस्म-क़िस्म की मईशत उसने पैदा कर दी और उन्हें भी बना दिए जिनके रोज़ी-रसाँ तुम नहीं हो। यानी चौपाए और जानवर, लौंडी-ग़ुलाम वग़ैरह। पस क़िस्म-क़िस्म की चीज़ें, क़िस्म-क़िस्म के अस्बाब, क़िस्म-क़िस्म की राहत, हर तरह के आराम उसने तुम्हारे लिए मुहैया कर दिए। कमाई के तरीक़े तुम्हें सिखाए। जानवरों को तुम्हारे ज़ेरे-दस्त कर दिया कि खाओ भी सवारियाँ भी करो। लौंडी-ग़ुलाम दिए कि राहत व आराम हासिल करो। उनकी रोज़ियाँ भी कुछ तुम्हारे ज़िम्मे नहीं बल्कि उनका रज़्ज़ाक़ भी ख़ुदा तआला कि आलमे-परवरदिगारे-कुल है, नफ़ा तुम उठाओ, रोज़ी वह पहुँचाए, फ़सुब्हानहू मा आज़म शानुहू।

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۱﴾
وَاَرْسَلْنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَیْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَاۤ اَنْتُمْ
لَهٗ بِخٰزِنِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْیٖ وَنُمِیْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا
الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِیْنَ ﴿۲۴﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ
یَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۵﴾

व इम्मिन् शैइन् इल्ला अिन्दना .खज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़-दरिम्-मअ्लूम। (21) व अर्सल्नर्रिया-ह लवाक़ि-ह फ़-अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ माअन् फ़-अस्क़ैना-कुमूहु, व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन। (22) व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व नह्नुल्-वारिसून। (23) व ल-क़द् अलिम्नल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अलिम्नल्-मुस्तअ्ख़िरीन। (24) व इन्-न रब्ब-क हु-व यह्शुरुहुम्, इन्नहू हकीमुन् अलीम। (25)

तर्जमा : और जितनी भी चीज़ें हैं उन सबके ख़ज़ाने हमारे पास हैं और हम हर चीज़ को उसके मुक़र्ररा अन्दाज़े से उतारते हैं और हम भेजते हैं बोझिल हवाएँ, फिर आसमान से पानी बरसाकर वे तुम्हें पिलाते हैं और तुम उसका ज़ख़ीरा करनेवाले नहीं हो। हम ही जिलाते और मारते हैं और हम ही वारिस हैं। और तुममें से आगे बढ़नेवाले, पीछे हटनेवाले भी हमारे इल्म में हैं। आपका रब सब लोगों को जमा करेगा, यक़ीनन वह बड़ी हिकमतोंवाला बड़े इल्मवाला है। (पारा 14 अल-हिज्र 21-25)

तशरीह : तमाम चीज़ों का तनहा मालिक अल्लाह तआला ही है। हर काम उस पर आसान है। हर क़िस्म की चीज़ों के ख़ज़ाने उसके पास मौजूद हैं। जितना और जब जहाँ चाहता है नाज़िल फ़रमाता है। अपनी हिकमतों का वही आलिम है। बन्दों की मसलिहतों से भी वाक़िफ़ वही है। यह महज़ उसकी मेहरबानी है।

वरना कौन है जो उस पर जब्र कर सके। हज़रत अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हर साल बारिश बराबर ही बरसती है, हाँ तक़सीम ख़ुदा तआला के हाथ है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। हक्म बिन उऐना रहमतुल्लाहि अलैह से भी यही क़ौल मरवी है। कहते हैं कि बारिश के साथ इस क़दर फ़रिश्ते उतरते हैं जिनकी गिनती कुल इनसानों और जिन्नात से ज़्यादा होती है। एक-एक क़तरे का ख़याल रखते हैं कि वह कहाँ बरसा और उससे क्या उगा।

बज़्ज़ार में है, ख़ुदा तआला के पास के ख़ज़ाने क्या हैं? सिर्फ़ कलाम है। जब कहा हो जा, हो गया। हवा चलकर हम बादलों को पानी से बोझल कर देते हैं। उसमें से पानी बरसने लगता है। यही हवाएँ चल कर दरख़्तों को बारदार कर देती हैं कि पत्ते-कौंपलें फूटने लगती हैं। हवा चलती है, वह आसमान से पानी उठाती है और बादलों को पुर कर देती है। एक हवा होती है जो ज़मीन में पैदावार की क़ुव्वत पैदा करती है। एक हवा होती है जो बादलों को इधर-उधर से उठाती है। एक हवा होती है जो उन्हें जमा करके तह-ब-तह कर देती है। एक हवा होती है जो उन्हें पानी से बोझल कर देती है। एक हवा होती है जो दरख़्तों को फलदार होने के क़ाबिल कर देती है। इब्ने जरीर में एक हदीस मरवी है कि जुनूबी हवा जन्नती है, इसमें लोगों के मुनाफ़े हैं और उसी का ज़िक्र किताबुल्लाह में है। मुसनद हमीदी की हदीस में है कि हवाओं के सात साल बाद ख़ुदा तआला ने जन्नत में एक हवा पैदा की है। जो एक दरवाज़े से रुकी हुई है। उसी बन्द दरवाज़े से तुम्हें हवा पहुँचती रहती है। अगर वह खुल जाए तो ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें हवा से उलट-पलट हो जाएँ, तुम इसे जुनूबी हवा कहते हो। फिर फ़रमाता है कि उसके बाद हम तुम पर मीठा पानी बरसाते हैं कि तुम पियो और काम में लो। अगर हम चाहें तो इसे कड़ुवा और खारी कर दें। जैसे सूरा वाक़िआ में फ़रमान है कि जिस मीठे को तुम पिया करते हो, उसे बादल से बरसानेवाले भी क्या तुम ही हो?

या हम हैं। अगर हम चाहें तो उसे कडुवा कर दें ताज्जुब है कि तुम हमारी शुक्र-गुज़ारी नहीं करते। और तुम इसके ख़ाज़िन यानी मानेअ् और हाफ़िज़ नहीं हो। हम ही बरसाते हैं, हम जहाँ चाहते हैं पहुँचाते हैं, जहाँ चाहते हैं महफ़ूज़ कर देते हैं, अगर हम चाहें ज़मीन में धंसा दें। यह सिर्फ़ हमारी रहमत है कि इसे बरसाया, बचाया, मीठा किया, सुथरा किया कि तुम पियो, अपने जानवरों को पिलाओ, अपनी खेतियाँ और बाग़ात बसाओ, अपनी ज़रूरतें पूरी करो। हम मख़लूक़ की इब्तिदा, फिर इसके इआदे पर क़ादिर हैं। सबको अदम से वुजूद में लाए। सबको फिर मअदूम हम करेंगे। फिर क़ियामत के दिन सबको उठा बिठाएँगे। ज़मीन के और ज़मीनवालों के वारिस हम ही हैं। सब के सब हमारी तरफ़ लौटाए जाएँगे। हमारे इल्म की कोई इन्तिहा नहीं। अव्वल-आख़िर सब हमारे इल्म में है। पस आगेवालों से मुराद तो इस ज़माने से पहले के लोग हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक के और पिछलों से मुराद इस ज़माने के और आइन्दा ज़माने के लोग हैं। मरवान-बिन-हकम से मरवी है कि बाज़ लोग ब-वजह औरतों के पिछली सफ़ों में रहा करते थे पस यह आयत उतरी, इस बारे में एक हदीस भी वारिद है।

इब्ने-जरीर में इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक बहुत ख़ुश शक्ल औरत नमाज़ में आया करती थी। तो बाज़ मुसलमान इस ख़याल से कि वह निगाह न चढ़े, आगे बढ़ जाते थे और बाज़ उनके ख़िलाफ़ और पीछे हट आते थे। और सजदे की हालत में अपने हाथों तले से देखते थे, पस यह आयत। उतरी मुहम्मद बिन कअब रहमतुल्लाहि अलैह के सामने औन-बिन-अब्दुल्लाह जब यह कहते हैं तो आप फ़रमाते हैं यह मतलब नहीं बल्कि अगलों से मुराद वे हैं जो मर चुके और पिछलों से मुराद अब पैदा शुदा और पैदा होनेवाले हैं। तेरा रब तआला सबको जमा करेगा। वह हिकमत व इल्मवाला है। यह सुनकर हज़रत औन रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमाया, अल्लाह तआला आपको तौफ़ीक़ और जज़ाए-ख़ैर दे।

{115}

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَانَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

व ल-क़द् .खलक्नल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिम्-मिन् ह-मइम्-मस्नून। (26) वल्जान्-न .खलक्नाहु मिन् क़ब्लु मिन्-नारिस्समूम। (27)

तर्जमा : यक़ीनन हमने इनसानों को काली और सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा फ़रमाया है और इससे पहले जिन्नात को हमने लू वाली आग से पैदा किया। (पारा 14, अल-हिज्र 26-27)

तशरीह : सलसाल से मुराद मिट्टी है। इसी जैसी आयत 'ख़-ल-क़ल इनसा-न मिन सलसालिन कलफ़ख़्ख़ार व ख़-ल-क़ल जान-न मिंमारिजिम मिन नार' है। यह भी मरवी है कि बूदार मिट्टी को हमा कहते हैं। मसनून कहते हैं चिकनी को, इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं, तर मिट्टी। इनसान से पहले हमने जिन्नात को जला देनी वाली आग से पैदा किया है। समूम कहते हैं, आग की गर्मी को और हुरूर कहते हैं, दिन की गर्मी को। यह भी कहा गया है कि इस गर्मी की लपटें उस गर्मी का सत्तरवाँ हिस्सा हैं जिससे जिन्न पैदा किए गए हैं। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जिन्न आग के शोलों से बनाए गए हैं। यानी बहुत बेहतर आग से अम्र-बिन-दीनार रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं, सूरज की आग से। सहीह में वारिद है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गए और जिन्न शोलोंवाली आग से और आदम अलैहिस्सलाम उससे जो तुम्हारे सामने बयान कर दिया गया है। इस आयत से मुराद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत व शराफ़त और उनके उंसुर की पाकीज़गी और तहारत का बयान है।

{116}

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

.ख-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक्क़, तआला अम्मा युश्रिकून। (3) .ख-लक़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व .ख़सीमुम्-मुबीन। (4)

तर्जमा : उसी ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। वह उससे बरी है जो मुशरिक करते हैं। उसने इनसान को नुत्फ़े से पैदा किया फिर वह सरीह झगड़ालू बन बैठा।

(पारा 14, नहल 3-4)

तशरीह : आलमे-उलवी और सिफ़ली का ख़ालिक़ अल्लाह तआला करीम ही है बुलन्द आसमान और फैली हुई ज़मीन मअ तमाम मख़लूक़ के उसी की पैदा की हुई है। और यह सब बतौर हक़ है न कि बतौर अबस। नेकों को जज़ा और बदों को सज़ा होगी। वह तमाम और माबूदों और मुशरिकों से बरी और बेज़ार है। वाहिद है, लाशरीक है, अकेला ही ख़ालिक़े-कुल है। और इसलिए ही सज़ा और इबादत है। उसने इनसान का सिलसिला नुत्फ़े से जारी कर रखा है जो एक पानी है हक़ीर व ज़लील। यह जब ठीक-ठीक बना दिया जाता है तो अकड़ फूँ में आ जाता है। रब से झगड़ने लगता है। रसूलों की मुख़ालिफ़त पर तुल जाता है। बन्दा था, चाहिए था कि बन्दगी में लगा रहता लेकिन यह तो रिन्दगी करने लगा। और आयत में है कि अल्लाह तआला ने इनसान को पानी से बनाया, उसका नसब और ससुराल क़ायम किया। ख़ुदा क़ादिर है, रब के सिवा ये उनकी पूजा करने लगे हैं, जो बेनफ़ा और बेज़रर हैं। काफ़िर कुछ ख़ुदा से पोशीदा नहीं, सूरा यासीन में फ़रमाया, क्या इनसान नहीं देखता कि हमने उसे नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह तो बड़ा ही झगड़ालू निकला। हम पर भी बातें बनाने लगा और अपनी पैदाइश भूल गया। कहने लगा कि इन गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ नबी! तुम इनसे कह दो कि इन्हें वह ख़ालिक़े-अकबर पैदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया, वह तो हर तरह की मख़लूक़ की हर तरह की पैदाइश का पूरा आलिम है।

मुसनद अहमद और इब्ने माजा में है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने अपनी हथेली पर थूक कर फ़रमाया कि जनाब बारी तआला फ़रमाता है कि ऐ इनसान क्या तू मुझे आजिज़ कर सकता है? हालाँकि मैंने तो तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है। जब तू पूरा हो गया, ठीक-ठाक हो गया। लिबास-मकान मिल गया तो तू लगा समेटने और मेरी राह से रोकने? और जब दम गले में अटका तो तू कहने लगा कि अब मैं सदक़ा करता हूँ, राहे-लिल्लाह देता हूँ, बस अब सदक़े-ख़ैरात का वक़्त निकल गया।

﴾117﴿

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۭ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

वल्-अन्आ-म .ख-ल-क़हा, लकुम् फ़ीहा दिफ्उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्कुलून। (5) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून। (6) व तह्मिलु अस्क़ा-लकुम् इला ब-लदिल्-लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि, इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम। (7)

तर्जमा : उसी ने चौपाये पैदा किए जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी के लिबास हैं और भी बहुत से नफ़े हैं और बाज़ तुम्हारे खाने के काम आते हैं। और इनमें तुम्हारी रौनक़ भी है जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी और वे तुम्हारे बोझ उन शहरों तक उठा ले जाते हैं। जहाँ तुम बग़ैर आधी जान किए पहुँच ही नहीं सकते थे। यक़ीनन तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़ और निहायत मेहरबान है। (पारा 14, नहल 5-7)

तशरीह : जो चौपाए ख़ुदा तआला ने पैदा किए हैं और इनसान उनसे मुख़्तलिफ़ फ़ायदे उठा रहा है इस नेमत को रब्बुल आलमीन बयान फ़रमा रहा है। जैसे ऊँट, गाए, बकरी जिसका मुफ़स्सल बयान सूरा अनआम की आयत में आठ क़िस्मों से किया है। उनके बाल,

ऊन, सूफ़ वग़ैरह का गरम लिबास और जड़ अव्वल बनती है, दूध पीते हैं, गोश्त खाते हैं, शाम को जब वे चर-चुग कर वापस आते हैं भरी हुई कोखोंवाले भरे हुए थनोंवाले ऊँची कोहानोंवाले कितने भले मालूम होते हैं? और जब चरागाह की तरफ़ जाते हैं, कैसे प्यारे मालूम होते हैं? फिर तुम्हारे भारी-भारी बोझ एक शहर से दूसरे शहर तक अपनी कमर पर लाद कर ले जाते हैं कि तुम्हारा वहाँ पहुँचना बग़ैर आधी जान के मुश्किल था। हज के, उमरे के, जिहाद के, तिजारत के और ऐसे ही और सफ़र उन पर होते हैं तुम्हें ले जाते हैं, तुम्हारे बोझ ढोते हैं, जैसे आयत व 'इन्न लकुम फ़िल अनआमि ल-इबरतन' में है कि ये चौपाए जानवर भी तुम्हारी इबरत का बाइस हैं इनके पेट से हम तुम्हें दूध पिलाते हैं और इनसे बहुत से फ़ायदे पहुँचाते हैं। इनका गोश्त भी तुम खाते हो, इन पर सवारियाँ करते हो। समुन्दर की सवारी के लिए कश्तियाँ हमने बना दी हैं। और आयत में है 'अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल-अनआ-म ल-इबरतन' अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किए हैं कि तुम इन पर सवारी करो, इन्हें खाओ नफ़ा उठाओ, दिली हाजतें पूरी करो। और तुम्हें कश्तियों पर भी सवार कर दिया। और बहुत-सी निशानियाँ दिखाईं पस तुम किस-किस निशान का इनकार करोगे? यहाँ भी अपनी ये नेमतें जताकर फ़रमाया कि तुम्हारा वह रब जिसने इन जानवरों को तुम्हारा मुतीअ बना दिया है वह तुम पर बहुत ही शफ़क़त व रहमतवाला है। जैसे सूरा यासीन में फ़रमाया, क्या वे नहीं देखते कि हमने उनके लिए अपने हाथों चौपाए बनाए और उन्हें उनका मालिक कर दिया। और उन्हें उनका मुतीअ बना दिया कि बाज़ को खाएँ, बाज़ पर सवार हों। और आयत में कि 'व ज-अ-ल लकुम मिनलफ़ुल्कि वल अनआमि मा तरकबून' उस ख़ुदा ने तुम्हारे लिए कश्तियाँ बना दीं और चौपाए पैदा कर दिए कि तुम इन पर सवार होकर अपने रब का फ़ज़्ल व शुक्र करो। और कहो वह पाक है जिसने इन्हें हमारा मातहत कर दिया। हालाँकि हम में यह ताक़त न थी। हम मानते हैं कि हम उसकी जानिब लौटेंगे।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

वल-ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-नह्, व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून। (8)

तर्जमा : घोड़ों को, ख़च्चरों को, गधों को उसने पैदा किया कि तुम उनकी सवारी करो और वे बाइसे-ज़ीनत भी हैं। और भी वे ऐसी बहुत-सी चीज़ें पैदा करता है जिनका तुम्हें इल्म भी नहीं।

(पारा 14, अन-नहल 8)

तशरीह : अपनी एक और नेमत बयान फ़रमा रहा है कि ज़ीनत के लिए और सवारी के लिए उसने घोड़े, ख़च्चर और गधे पैदा किए हैं। बड़ा मक़सद इन जानवरों की पैदाइश से इनसान का ही फ़ायदा है। चूँकि इन्हें और चौपायों पर फ़ज़ीलत दी।

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु का बयान है कि पहले घोड़ों में वहशियत और जंगलियत थी, अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के लिए उसे मुतीअ कर दिया। वहब रहमतुल्लाहि अलैह ने इसराईली रिवायतों में बयान किया है कि जुनूबी हवा से घोड़े पैदा होते हैं।

हुज़ूर (सल्ल॰) को एक ख़च्चर हदये में दिया गया था, जिस पर आप (सल्ल॰) सवारी करते थे। हाँ, यह आप (सल्ल॰) ने मना फ़रमाया है कि घोड़ों को गधियों से मिलाया जाए, ये मुमानिअत इसलिए है कि नसल मुनक़तअ न हो जाए। हज़रत दहया कलबी रज़िअल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर (सल्ल॰) से दरयाफ़्त किया कि अगर आप (सल्ल॰) इजाज़त दें तो हम घोड़े और गधी के मिलाप से ख़च्चर लें और आप (सल्ल॰) इस पर सवार हों। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, यह काम वे लोग करते हैं जो इल्म से कोरे हैं।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩﴾

व अलल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरु, व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन (9)

तर्जमा : और अल्लाह पर सीधी राह का बता देना है। और बाज़ टेढ़ी राहें हैं। और अगर वह चाहता तो तुम सबको राहे-रास्त पर लगा देता। (पारा 14, नहल 9)

तशरीहः दुनियावी राहें तय करने के अस्बाब बयान फ़रमा कर अब दीनी राह चलने के अस्बाब बयान फ़रमाता है, महसूसात से मअनवीयात की तरफ़ रुजूअ करता है। क़ुरआन में अक्सर बयानात इस क़िस्म के मौजूद हैं। सफ़रे-हज के तोशे का ज़िक्र करके तक़्वा के तोशे का जो आख़िरत में काम दे बयान हुआ है। ज़ाहिरी लिबास का ज़िक्र फ़रमा कर लिबासे-तक़्वा की अच्छाई बयान की है। इसी तरह यहाँ हैवानात से दुनिया के कठिन रास्ते और दूर-दराज़ सफ़र तय होने का बयान फ़रमा कर आख़िरत के रास्ते, दीनी राहें बयान फ़रमाई कि हक़ का रास्ता ख़ुदा तआला से मिलानेवाला है। रब तआला की सीधी राह वही है, उसी पर चलो और रास्तों पर न लगो। वरना बहक जाओगे और सीधी राह से अलग हो जाओगे। फ़रमाया मेरी तरफ़ पहुँचने की सीधी राह यही है और वह दीने-इस्लाम है जिसे ख़ुदा तआला ने वाज़ेह कर दिया है और साथ ही और रास्तों की गुमराही भी बयान फ़रमा दी है। पस सच्चा रास्ता एक ही है। जो किताबुल्लाह और सुन्नते-रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित है, बाक़ी और राहें ग़लत राहें हैं, हक़ से यकसू हैं, लोगों की अपनी ईजाद हैं, जैसे यहूदियत, नसरानियत, मजूसियत वग़ैरह। फिर फ़रमाता है कि हिदायत रब तआला के क़ब्ज़े की चीज़ है। अगर चाहे तो रूए-ज़मीन के लोगों को नेक राह पर लगा दे, ज़मीन के तमाम बाशिन्दे मोमिन बन जाएँ। सब लोग एक ही दीन के आमिल हो जाएँ, लेकिन यह इख़्तिलाफ़ बाक़ी ही रहेगा मगर जिस पर ख़ुदा

तआला रहम फ़रमाए। इसी के लिए इन्हें पैदा किया है। तेरे रब तआला की बात पूरी होकर रहेगी कि जहन्नम व जन्नत इनसान व जिन्नात से भर जाए।

﴾120﴿

هُوَ الَّذِيٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअल्लकुम्-मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून। (10) युम्बितु लकुम् बिहिज़्ज़र्-अ-वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्-अअ्ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मरात्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून। (11)

तर्जमा : वही तुम्हारे फ़ायदे के लिए आसमान से पानी बरसाता है जिसे तुम पीते भी हो, और उसी से उगे हुए दरख़्तों को तुम अपने जानवरों को चराते हो। इसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है। बेशक उन लोगों के लिए तो इसमें बड़ी निशानी है जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं। (पारा 14, नहल 10-11)

तशरीह : चौपाए और दूसरे जानवरों की पैदाइश का एहसान बयान फ़रमा कर और एहसान बयान फ़रमाता है कि ऊपर से पानी वही बरसाता है जिससे तुम आप फ़ायदा उठाते हो और तुम्हारे फ़ायदे के जानवर भी इससे फ़ायदा उठाते हैं। मीठा साफ़-शफ़्फ़ाफ़ ख़ुशगवार, अच्छे ज़ायक़े का पानी तुम्हारे पीने के काम आता है। उसका एहसान न हो तो वह खारी और कड़ुवा बना दे। उसी आबे-बाराँ से दरख़्त उगते हैं और वह दरख़्त तुम्हारे जानवरों का चारा बनते हैं।

इब्ने-माजा की हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने सूरज निकलने से पहले चराने को मना फ़रमाया। फिर उसकी क़ुदरत देखो कि एक

ही पानी से मुख़्तलिफ़ मज़े के, मुख़्तलिफ़ शक्ल व सूरत के, मुख़्तलिफ़ ख़ुशबू के तरह-तरह के फल-फूल वह तुम्हारे लिए पैदा करता है। पस ये निशानियाँ एक शख़्स को ख़ुदा की वहदानियत जानने के लिए काफ़ी हैं। इसी का बयान और आयतों में इस तरह हुआ है कि आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़, बादलों से पानी बरसाने वाला, इनसे हरे-भरे बाग़ात पैदा करनेवाला, जिन के पैदा करने से तुम आजिज़ थे, अल्लाह तआला ही है, उसके साथ कोई और माबूद नहीं। फिर भी लोग हक़ से इधर-उधर हो रहे हैं।

﴾121﴿

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ
بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ
مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्क़-म-र, वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्- बिअम्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौ-मिंय्यअ्क़िलून। (12) व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्- लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून। (13)

तर्जमा : उसी ने रात-दिन और सूरज-चाँद को तुम्हारे लिए ताबेअ कर दिया है। और सितारे भी उसी के हुक्म के मातहत हैं। यक़ीनन इसमें अक़्लमन्द लोगों के लिए कई एक निशानियाँ मौजूद हैं। और भी बहुत-सी चीज़ें तरह-तरह के रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए ज़मीन पर फैला रखी हैं। बेशक नसीहत क़बूल करनेवालों के लिए इसमें बड़ी निशानी है। (पारा 14, नहल 12-13)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी और नेमतें याद दिलाता है कि दिन-रात बराबर तुम्हारे फ़ायदे के लिए आते-जाते हैं। सूरज-चाँद गर्दिश में हैं। सितारे चमक-चमक कर तुम्हें रौशनी पहुँचा रहे हैं। हर एक का एक ऐसा सही अन्दाज़ा ख़ुदा तआला ने मुक़र्रर कर रखा है जिससे वे न इधर-उधर हों, न तुम्हें कोई नुक़सान हो। हर एक रब

तआला की क़ुदरत में और उसके ग़लबे तले है। उसने छः दिन में आसमान-ज़मीन पैदा की फिर अर्श पर मुस्तवी हुआ, दिन रात बराबर पै-दर-पै आते रहते हैं। सूरज, चाँद, सितारे उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं, ख़ल्क़ व अम्र का मालिक वही है। वह रब्बुल-आलमीन बड़ी बरकतोंवाला है। जो सोच-समझ रखता हो उसके लिए तो इसमें क़ुदरत व सल्तनते-ख़ुदा की बड़ी निशानियाँ हैं। इन आसमानी चीज़ों के बाद अब तुम ज़मीनी चीज़ें देखो कि हैवान, नबातात, जमादात वग़ैरा मुख़्तलिफ़ रंग-रूप की चीज़ें, बेशुमार फ़ायदे की चीज़ें उसी ने तुम्हारे लिए ज़मीन पर पैदा कर रखी हैं। जो लोग ख़ुदा की नेमतों को सोचें और क़द्र करें उनके लिए तो ये ज़बरदस्त निशान है।

﴾122﴿

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَعَلٰمٰتٍ ۭ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

व हुवल्लज़ी सख़्ख़रल्-बह्-र लितअ्कुलू मिन्हु लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्य-तन् तल्बसूनहा, व तरल्फ़ुल्-क मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून। (14) व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व अन्हारंव्-व सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून। (15) व अ़लामात्, व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून।(16) अ-फ़मंय्यख़्लुक़ु कमल्-ला यख़्लुक़ु अ-फ़ला तज़क्करून। (17) व इन् तअ़ुद्दू निअ़्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्रहीम। (18)

तर्जमा : और दरिया भी उसी ने तुम्हारे बस में कर दिये हैं कि तुम इसमें से (निकला हुआ) ताज़ा गोश्त खाओ और उसमें से अपने पहनने के ज़ेवरात निकाल सको। और तुम देखते हो कि कश्तियाँ इसमें पानी चीरती हुई चलती हैं। और इसलिए भी कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और हो सकता है कि तुम शुक्रगुज़ारी भी करो। और उसने ज़मीन में पहाड़ गाड़ दिए हैं ताकि तुम्हें लेकर हिले न, और नहरें और राहें बना दीं ताकि तुम मंज़िले-मक़सूद को पहुँचो और भी बहुत-सी निशानियाँ मुक़र्रर फ़रमाईं। और सितारों से भी लोग राह हासिल करते हैं। तो क्या वह जो पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम बिल्कुल नहीं सोचते? और अगर तुम अल्लाह की नेमतों का शुमार करना चाहो तो तुम उसे नहीं कर सकते। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला मेहरबान है।

(पारा 14, नहल 14-18)

तशरीह : ख़ुदा तआला अपनी और मेहरबानी जताता है कि समुन्दर पर, दरिया पर भी उसने तुम्हें क़ाबिज़ कर दिया। बावजूद अपनी गहराई के और अपनी मौजों के वह तुम्हारा ताबेह है। तुम्हारी कश्तियाँ इसमें चलती हैं। इसी तरह इसमें से मछलियाँ निकाल कर इनके तरो-ताज़ा गोश्त तुम खाते हो। मछली हिल्लत की हालत में, एहराम की हालत में, ज़िन्दा हो या मुर्दा हो ख़ुदा की तरफ़ से हलाल है, लू-लू, और जौहर उसने तुम्हारे लिए इसमें पैदा किए हैं। जिन्हें तुम सहूलियत से निकाल लेते हो और बतौर ज़ेवर के अपने काम में लेते हो फिर इसमें कश्तियाँ हवाओं को हटाती, पानी को चीरती अपने सीनों के बल तैरती चली जाती हैं।

सबसे पहले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती में सवार हुए, इन्हीं को कश्ती बनाना ख़ुदाए-आलम ने सिखाया फिर लोग बराबर बनाते चले आए और उन पर तरी के लम्बे-लम्बे सफ़र तय होने लगे। इस पार की चीज़ें उस पार और उस पार की इस पार आने जाने लगीं। इसी का बयान इसमें है कि तुम ख़ुदा का फ़ज़्ल यानी अपनी रोज़ी

तिजारत के ज़रिए ढूँढो और उसकी नेमत व एहसान का शुक्र मानो और क़द्रदानी करो।

मुसनद बज़्ज़ार में हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अल्लाह तआला ने मग़रिबी दरिया से कहा कि मैं अपने बन्दों को तुझमें सवार करनेवाला हूँ, तू उनके साथ क्या करेगा? उसने कहा, डुबो दूँगा। फ़रमाया, तेरी तेज़ी तेरे किनारों पर है और इन्हें मैं अपने हाथ में ले चलूँगा। तुझे मैंने ज़ेवर और शिकार से महरूम किया। फिर मशरिक़ी समुन्दर से यही बात कही, उसने कहा मैं अपने हाथों पर इन्हें उठाऊँगा और जिस तरह माँ अपने बच्चे की ख़बरगीरी करती है मैं उनकी करता रहूँगा। पस इसे अल्लाह तआला ने ज़ेवर भी दिए और शिकार भी। इसके बाद ज़मीन का ज़िक्र हो रहा है कि उसके ठहराने और हिलने-जुलने की वजह से उस पर रहनेवालों की ज़िन्दगी दुश्वार न हो जाए। जैसे फ़रमान है, 'वलजिबा-ल अरसाहा'। हज़रत हसन का क़ौल है कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन बनाई तो वह हिल रही थी। यहाँ तक कि फ़रिश्तों ने कहा, इस पर तो कोई ठहर ही नहीं सकता। सुब्ह देखते हैं कि पहाड़ उस पर गाड़ दिए गए हैं। और उसका हिलना मौक़ूफ़ हो गया है। पस फ़रिश्तों को यह भी न मालूम हो सका कि पहाड़ किस चीज़ से पैदा किए गए। क़ैस-बिन-उबादा रहमतुल्लाहि अलैह से भी यही मरवी है। हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ज़मीन ने कहा कि तू मुझ पर बनी आदम को बसाता है जो मेरी पीठ पर गुनाह करेंगे और ख़बासत फैलाएंगे, वह कांपने लगी, पस अल्लाह तआला ने पहाड़ों को उस पर जमा दिया जिन्हें तुम देख रहे हो। और बाज़ को देखते ही नहीं हो, यह भी उसका करम है कि उसने नहरें, चश्मे और दरिया चारौतरफ़ बहा दिए, कोई तेज़ है कोई मन्दा, कोई लम्बा है कोई मुख़्तसर, कभी कम पानी है कभी ज़्यादा, कभी बिल्कुल सूखा पड़ा है। पहाड़ों पर, जंगलों में, रेते में, पत्थरों में, बराबर ये चश्मे बहते रहते हैं और रेल-पेल कर देते हैं। यह सब उसका फ़ज़्ल व करम, लुत्फ़ व रहम है। न उसके सिवा कोई

परवरदिगार, न उसके सिवा कोई लायक़े इबादत, वही रब है वही माबूद है, उसी ने रास्ते बना दिए हैं। ख़ुश्की में, तरी में, पहाड़ में, जंगल में, बस्ती में, उजाड़ में, हर जगह उसके फ़ज़्ल व करम से रास्ते मौजूद हैं कि इधर से उधर लोग जा आ सकें। कोई तंग रास्ता है, कोई वसीअ, कोई आसान, कोई सख़्त, और भी अलामतें उसने मुक़र्रर कर दीं। जैसे पहाड़ हैं, टीले हैं, वग़ैरा जिनसे तरी ख़ुश्की के रहरौ मुसाफ़िर राह मालूम कर लेते हैं। और भटके हुए सीधे रस्ते लग जाते हैं। सितारे भी रहनुमाई के लिए हैं। रात के अन्धेरे में इन्हीं से रास्ता और सम्त मालूम होती है। मालिक रहमतुल्लाहि अलैह से मरवी है कि नुजूम से मुराद पहाड़ हैं। फिर अपनी अज़मत व किबरियाई जताता है और फ़रमाता है कि लायक़े-इबादत उसके सिवा और कोई नहीं। ख़ुदा तआला के सिवा जिन-जिन की लोग इबादत करते हैं वे महज़ बेबस हैं, किसी चीज़ के पैदा करने की इन्हें ताक़त नहीं और ख़ुदा तआला सबका ख़ालिक़ है। ज़ाहिर है कि ख़ालिक़ और ग़ैर ख़ालिक़ यकसाँ नहीं फिर दोनों की इबादत करना किस क़दर सितम है? इतना भी बेहोश हो जाना शायाने-शाने-इनसानियत नहीं। फिर अपनी नेमतों की फ़रावानी और कसरते-बयान फ़रमाता है कि तुम्हारी गिनती में भी तो नहीं आ सकतीं। इतनी नेमतें मैंने तुम्हें दे रखी हैं, ये भी तुम्हारी ताक़त से बाहर है कि मेरी नेमतों की गिनती कर सको। अल्लाह तआला तुम्हारी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमाता रहता है, अगर अपनी तमाम-तर नेमतों का शुक्र भी तुमसे तलब करे तो तुम्हारे बस का नहीं। अगर इन नेमतों के बदले तुमसे चाहे तो तुम्हारी ताक़त से ख़ारिज है। सुनो, अगर वह तुम सबको अज़ाब करे तो भी वह ज़ालिम नहीं होने का लेकिन वह ग़फ़ूर व रहीम ख़ुदा तआला तुम्हारी बुराइयों को माफ़ फ़रमा देता है, तुम्हारी तक़सीरों से तजावुज़ कर लेता है। तौबा, रुजूअ, इताअत और तलबे-रज़ामन्दी के साथ जो गुनाह हो जाएँ उनसे चश्मपोशी कर लेता है। बड़ा ही रहीम है, तौबा के बाद अज़ाब नहीं करता।

﴾123﴿

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾

वल्लाहु यअ्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्लिनून। (19)

तर्जमा : और जो कुछ तुम छिपाओ और ज़ाहिर करो अल्लाह तआला सब कुछ जानता है। (पारा 14, नहल 19)

तशरीह : छिपा-खुला सब कुछ अल्लाह तआला जानता है, दोनों उस पर यकसाँ। हर आमिल को उसके अमल का बदला क़ियामत के दिन देगा, नेकों को जज़ा और बदों को सज़ा। जिन माबूदाने-बातिल से लोग अपनी हाजतें तलब करते हैं वे किसी चीज़ के ख़ालिक़ नहीं बल्कि वे ख़ुद मख़लूक़ हैं जैसे कि ख़लीलुर्रहमान हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि:

'अ-तअ-बुदू-न मा तनहितू-न वल्लाहु ख़-ल-क़कुम व मा तअ्मलून'

तुम इन्हें पूजते हो जिन्हें ख़ुद बनाते हो। दर हक़ीक़त तुम्हारा और तुम्हारे कामों का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह सुब्हानहु व तआला है। बल्कि तुम्हारे माबूद जो ख़ुदा तआला के सिवा हैं, जमादात हैं, बेरूह चीज़ें हैं, सुनते-देखते और शुऊर रखते नहीं। इन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि क़ियामत कब होगी। तो इनसे नफ़े की उम्मीद और सवाब की तवक़्क़ो कैसे रखते हो? ये तो उस ख़ुदा तआला से होनी चाहिए जो हर चीज़ का आलिम और तमाम कायनात का ख़ालिक़ है।

﴾124﴿

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्अर्-ज बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिक़ौमिंय-यस्मअून। (65)

तर्जमा : और अल्लाह आसमान से पानी बरसा कर उससे ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनें। (पारा 14, नहल 65)

तशरीह : इस क़ुरआन से किस क़दर मुर्दा दिल जी उठते हैं इसकी मिसाल मुर्दा ज़मीन और बारिश की है। जो लोग बात को सुनें समझें वे तो उससे बहुत कुछ इबरत हासिल कर सकते हैं।

﴾125﴿

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि लअिब्रह्, नुस्क़ीकुम्-मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-बनन् .ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन। (66) व मिन् स-मरातिन्नख़ीलि वल्अअ्नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-करंव्-व रिज़्क़न् ह-सना, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिक़ौ-मिंय्यअ्क़िलून। (67)

तर्जमा : तुम्हारे लिए तो चौपायों में बड़ी इबरत है कि हम तुम्हें इसके पेट में जो कुछ है इसी में से गोबर और लहू के दरमियान से ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीनेवालों के लिए सहता-पचता है। और खजूर और अंगूर के दरख़्तों के फलों से तुम शराब बना लेते हो और उम्दा रोज़ी भी। जो लोग अक़्ल रखते हैं उनके लिए तो उसमें बहुत बड़ी निशानी है। (पारा 14, नहल 66-67)

तशरीह : ऊँट, गाए, बकरियाँ वग़ैरा भी अपने ख़ालिक़ की क़ुदरत व हिकमत की निशानियाँ हैं। चौपाए भी हैवान ही हैं। इन हैवानों के पेट में जो अला-बला भरी हुई होती है इसी में से परवरदिगारे-आलम तुम्हें निहायत ख़ुश-ज़ायक़ा, लतीफ़ और ख़ुशगवार दूध पिलाता है। जानवर के बातिन में जो गोबर, ख़ून

वग़ैरा है उनसे बचाकर दूध तुम्हारे लिए निकालता है। न उसकी सफ़ेदी में फ़र्क़ आए, न हलावत में, न मज़े में, मेदे में ग़िज़ा पहुँची वहाँ से ख़ून रगों की तरफ़ दौड़ गया, दूध थन की तरफ़ पहुँचा, पेशाब ने मसाने का रास्ता पकड़ा गोबर अपने मख़रज की तरफ़ जमा हुआ, न एक दूसरे से मिले, न एक दूसरे को बदले, ख़ालिस दूध जो पीनेवाले के हलक़ में बआराम उतर जाए। उसकी ख़ास नेमत है।

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि शराब बनाते हो जो हराम है और तरह-तरह खाते-पीते हो जो हलाल है, मसलन ख़ुश्क खजूरें, किशमिश वग़ैरह और नबीज़, शरबत बनाकर, सिरका बनाकर और और तरह। पस जिन लोगों को अक़्ल का हिस्सा दिया गया है वह ख़ुदा तआला की कुदरत व अज़मत को उन चीज़ों और उन नेमतों से भी पहचान सकते हैं। दरअसल जौहरे-इनसानियत अक़्ल ही है, उसकी निगहबानी के लिए शरीअते मुतह्हिरह ने नशेवाली शराबें इस उम्मत पर हराम कर दीं। इसी नेमत का बयान सूरा यासीन की आयत 'व ज-अ-लना फ़ीहा जन्नातिन मिन नख़ीलिन'.... में है। यानी ज़मीन में हमने खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगा दिए और इनमें पानी के चश्मे बहा दिए ताकि लोग उसका फल खाएँ, ये इनके अपने बनाए हुए नहीं, क्या फिर भी ये शुक्र-गुज़ारी नहीं करेंगे? पाक ज़ात है वह जिसने ज़मीन की पैदावार में और ख़ुद इनसानों में और इस मख़लूक़ में जिसे ये जानते ही नहीं, हर तरह की जोड़-जोड़ चीज़ें पैदा कर दी हैं।

﴾126﴿

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا
يَعْرِشُوْنَ ۝ ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ
مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاۗءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्शजरि व मिम्मा यअ्रिशून। (68) सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स-मराति फ़स्लुकी सुबु-ल रब्बिकि ज़ुलुला, यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्-लिन्नासि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्- लिक़ौमिंय य-त-फ़क्करून (69)

तर्जमा : आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी कि पहाड़ों में, दरख़्तों और लोगों की बनाई हुई ऊँची-ऊँची टट्टियों में अपने घर बना और हर तरह के मेवे खा और अपने रब की आसान राहों में चलती-फिरती रह, इनके पेट से रंग-बिरंग का मशरूब निकलता है, जिसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं और जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। ग़ौर-फ़िक्र करनेवालों के लिए इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है। (पारा 14, नहल 68-69)

तशरीह : वह्य से मुराद यहाँ पर इल्हाम, हिदायत और इरशाद है। शहद की मक्खियों को ख़ुदा तआला की जानिब से यह बात समझाई गई है कि वे पहाड़ों में, दरख़्तों में और छतों में शहद के छत्ते बनाए, इस ज़ईफ़ मख़लूक़ के इस घर को देखिये कितना मज़बूत, कैसा ख़ूबसूरत और कैसी कुछ कारीगरी का होता है। फिर उसे हिदायत की और उसके लिए मुक़द्दर कर दिया कि ये फलों और फूलों के और घास-पात के रस चूसती फिरे और जहाँ चाहे जाए-आए लेकिन वापस लौटते वक़्त सीधी अपने छत्ते को पहुँच जाए। चाहे बुलन्द पहाड़ की चोटी हो चाहे बयाबान के दरख़्त हों चाहे आबादी के बुलन्द मकानात और वीराने के खंडर हों ये न रास्ते भूले, न भटकती फिरे। ख़्वाह कितनी ही दूर निकल जाए, लौट कर अपने छत्ते में, अपने बच्चों, अंडों और शहद में पहुँच जाए। अपने परों से मोम बनाए, अपने मुँह से शहद जमा करे और दूसरी जगह से बचे।

अबू-यअला मूसली में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि मक्खी की उमर चालीस दिन की होती है। सिवाए शहद की मक्खी

के और मक्खियाँ आग में हैं। शहद के रंग मुख़्तलिफ़ होते हैं, सफ़ेद, ज़र्द, सुर्ख़ वग़ैरह जैसे फल-फूल और जैसी ज़मीन। इस ज़ाहिरी ख़ुबी और रंग की चमक के साथ इसमें शिफ़ा भी है। बहुत-सी बीमारियों को ख़ुदा तआला इससे दूर कर देता है।

चुनांचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि किसी ने आकर रसूले-ख़ुदा (सल्ल॰) की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मेरे भाई का पेट छूट गया है। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, इसे शहद पिलाओ। वह गया शहद दिया फिर आया और कहा हुज़ूर इससे तो बीमारी और बढ़ गई। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, जा और शहद पिला। उसने जाकर फिर पिलाया, फ़िर हाज़िर होकर यही अर्ज़ किया कि दस्त और बढ़ गए। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ख़ुदा तआला सच्चा है। और तेरे भाई का पेट झूटा है, जा फिर शहद दे। तीसरी मरतबा शहद से बफ़ज़ले-ख़ुदा तआला शिफ़ा हासिल हो गई। बाज़ तबीबों ने कहा है मुमकिन है कि उसके पेट में फ़ुज़ले की ज़्यादती हो, शहद ने अपनी गरमी की वजह से उसकी तहलील कर दी। फ़ुज़ला ख़ारिज होना शुरू हुआ फिर शहद दिया। पेट साफ़ हो गया, बला निकल गई और कामिल शिफ़ा बफ़ज़ले-तआला हासिल हो गई और हुज़ूर (सल्ल॰) की बात, जो बाशारेह ख़ुदावन्दी थी, पूरी हो गई।

बुख़ारी व मुस्लिम और हदीस में है कि सरवरे-रुसुल (सल्ल॰) को मिठास और शहद से बहुत उलफ़त थी। आप (सल्ल॰) का फ़रमान है कि तीन चीज़ों में शिफ़ा है, पछने लगाने में, शहद के पीने में और दाग़ लगवाने में, लेकिन मैं अपनी उम्मत को दाग़ लगवाने से रोकता हूँ। बुख़ारी की हदीस में है कि तुम्हारी दवाओं में से किसी में अगर शिफ़ा है तो पछने लगाने में। शहद के पीने में, आग से दग़वाने में, जो बीमारी के मुनासिब हो लेकिन मैं इसे पसन्द नहीं करता। मुस्लिम की हदीस में है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता, बल्कि नापसन्द रखता हूँ। इब्ने-माजा में है कि तुम दोनों शिफ़ाओं की क़दर करते रहो शहद, और क़ुरआन।

फ़ायदा : इब्ने-जरीर में हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु का

फ़रमान है कि जब तुममें से कोई शिफ़ा चाहे तो क़ुरआन करीम की किसी आयत को किसी सहीफ़े पर लिख ले और उसे बारिश के पानी से धो ले और अपनी बीवी के माल से उसकी अपने रज़ामन्दी से पैसे लेकर शहद ख़रीद ले और उसे पी ले, पस उसमें कई वजह से शिफ़ा आ जाएगी। ख़ुदा तआला अज्ज़ व जल्ल का फ़रमान है :

'व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु-व शिफ़ाउंव व रहमतुल लिल-मोमिनीन'

यानी हमने क़ुरआन में वह नाज़िल फ़रमाया है जो शिफ़ा है और रहमत है मोमिनीन के लिए और आयत में है 'व अंज़लना मिनस्समाइ माअन मुबारकन' हम आसमान से बाबरकत पानी बरसाते हैं। और फ़रमान है—

'फ़इन तिब-न लकुम अन शैइम्मिनहू नफ़सन फ़कुलुहू हनीअंम-मरीआ'

यानी औरतें अपने माले-महर में से अपनी ख़ुशी से तुम्हें दे दें तो बेशक तुम उसे खाओ, पियो, सहता-बचता। शहद के बारे में फ़रमाने-ख़ुदा तआला है 'फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि' शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है। इब्ने-माजा में है हुज़ूर। (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुब्ह को शहद चाट ले उसे कोई बड़ी बला नहीं पहुँचेगी। इब्ने-माजा की और हदीस में आप (सल्ल॰) का फ़रमान है कि तुम सना और सनूत का इस्तेमाल किया करो, इनमें हर बीमारी की शिफ़ा है सिवाए साम के। लोगों ने पूछा साम क्या? फ़रमाया मौत। सनूत के मानी शब्त के हैं और लोगों ने कहा सनूत शहद है जो घी की मशक में रखा हुआ हो। शाइर के शेर में भी यह लफ़्ज़ इस मानी में आया है। फिर फ़रमाता है, मक्खी जैसी बेताक़त चीज़ का तुम्हारे लिए शहद और मोम बनाना, उसका इस तरह आज़ादी से फिरना, अपने घर को न भूलना वग़ैरह ये सब चीज़ें ग़ौर-फ़िक्र करनेवालों के लिए मेरी अज़मत, ख़ालिक़ीयत, मालिकीयत की बड़ी निशानियाँ हैं। इसी से लोग अपने ख़ुदा तआला के क़ादिर, हकीम, अलीम, रहीम होने पर दलील हासिल कर सकते हैं।

{127}

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् सुम्-म य-तवफ़्फ़ाकुम्; व मिन्कुम्-मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अुमुरि लिकैला यअ्‌ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैआ, इन्नल्ला-ह अलीमुन् क़दीर (70)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने ही तुम सबको पैदा किया है, वही फिर तुम्हें फ़ौत करेगा। तुममें ऐसे भी हैं जो बदतरीन उमर की तरफ़ लौटाए जाते हैं कि बहुत कुछ जानने-बूझने के बाद भी न जानें। बेशक अल्लाह दाना और तवाना है। (पारा 14, नहल 70)

तशरीह : तमाम बन्दों पर क़ब्ज़ा अल्लाह तआला का है, वही इन्हें अदम से वुजूद में लाया है, वही इन्हें फिर फ़ौत करेगा। बाज़ लोगों को बहुत बड़ी उमर तक पहुँचाता है कि वह फिर से बच्चों जैसे नातवाँ बन जाते हैं। हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, पचहत्तर साल की उमर में उमूमन इनसान ऐसा ही हो जाता है। ताक़त ताक़ हो जाती है, हाफ़िज़ा जाता रहता है, इल्म की कमी हो जाती है, आलिम होने के बाद बेइल्म हो जाता है। सही बुख़ारी में है कि आँ हज़रत (सल्ल०) अपनी दुआ में फ़रमाते थे कि 'ख़ुदाया बख़ीली से, आजिज़ी से, बुढ़ापे से, ज़लील उम्र से, क़ब्र के अज़ाब से, दज्जाल के फ़ित्ने से, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह तलब करता हूँ। ज़ुहैर बिन-अबू सलमा ने भी अपने मशहूर मअलिक़ा में इस उम्र को रंज व ग़म का मख़ज़न व मंबअ बताया है।

{128}

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

ल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्ज़कुम् अला बअ्ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि, फ़-मल्लज़ी-न फुज़्ज़िलू बिराद्दी रिज़्क़िहिम् अला मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउ, अ-फ़बिनिअ्-मतिल्लाहि यज्हदून। (71)

तर्जमा : अल्लाह तआला ही ने तुममें से एक को दूसरे पर रोज़ी में ज़्यादती दे रखी है, पस जिन्हें ज़्यादती दी गई है वे अपनी रोज़ी अपने मातहत ग़ुलामों को नहीं देते कि वह और ये उसमें बराबर हो जाएँ, तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमतों के मुनकिर हो रहे हैं?

(पारा 14, नहल 71)

तशरीह : मुशरिकीन की जहालत और उनके कुफ़्र का बयान हो रहा है कि बावजूद अपने माबूदों को ख़ुदा तआला के ग़ुलाम जानने के उनकी इबादत में लगे हुए हैं। चुनांचे हज के मौक़े पर वे कहा करते थे कि 'ख़ुदाया मैं तेरे पास हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं मगर वे जो ख़ुद तेरे ग़ुलाम हैं उनका और उनकी मातहत चीज़ों का असली मालिक तू ही है। पस अल्लाह तआला इन्हें इल्ज़ाम देता है कि अब तुम अपने ग़ुलामों को मेरी ख़ुदाई में कैसे शरीक ठहरा रहे हो? यही मज़मून आयत 'ज़-र-ब लकुम मसलमिन अनफ़ुसिकुम'.... में बयान हुआ है कि जब तुम अपने ग़ुलामों को अपने माल में, अपनी बीवियों में, अपना शरीक बनाने से नफ़रत करते हो तो फिर मेरे ग़ुलामों को मेरी ख़ुदाई में कैसे शरीक समझ रहे हो? यही ख़ुदा की नेमतों से इनकार है कि ख़ुदा तआला के लिए वह पसन्द करना जो अपने लिए भी पसन्द न हो। यह है मिसाल माबूदाने-बातिल की जब तुम आप उससे अलग हो, फिर ख़ुदा तआला तो उससे बहुत ज़्यादा बेज़ार है। रब तआला की नेमतों का कुफ़्र और क्या होगा? कि खेतियाँ और चौपाये ख़ुदा तआला एक के पैदा किए हुए और तुम इन्हें उसके सिवा औरों के नाम करो।

हज़रत उमर-बिन-ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू-मूसा अशअरी रज़िअल्लाहु अन्हु को एक ख़त लिखा कि अपनी रोज़ी पर क़नाअत इख़्तियार करो, अल्लाह तआला ने एक को एक से ज़्यादा

अमीर कर रखा है, यह भी उसकी तरफ़ से एक आज़माइश है कि वह देखे कि अमीर उमरा किस तरह शुक्रे-ख़ुदा तआला अदा करते हैं और जो हुक़ूक़ दूसरों के इन पर जनाबे-बारी तआला ने मुक़र्रर किए हैं कहाँ तक इन्हें अदा करते हैं।

﴾129﴿

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝

वल्लाहु ज-अ-ल लकुम्-मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ-ल लकुम्-मिन् अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह-फ़-दतंव्-व र-ज़-क़कुम्-मिनत्तय्यिबात्, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून। (72)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तुममें से ही तुम्हारी बीवियाँ पैदा कीं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दीं। क्या फिर भी लोग बातिल पर ईमान लाएंगे? और अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री करेंगे? (पारा 14, नहल 72)

तशरीह : अपने बन्दों पर अपना एक और एहसान जताता है कि इन्हीं की जिंस से इन्हीं की हम शक्ल, हम वज़अ औरतें हमने इनके लिए पैदा कीं। अगर जिंस और होती तो दिली मेल-जोल मुहब्बत व मुवद्दत क़ायम न रहती। लेकिन अपनी रहमत से उसने मर्द-औरत हम जिंस बनाए फिर इस जोड़े से नस्ल बढ़ाई, औलाद फैलाई, लड़के हुए, लड़कों के लड़के हुए। 'ह-फ़-दत' के एक मानी तो यही पोतों के हैं, दूसरे मानी ख़ादिम और मददगार के हैं। पस लड़के और पोते भी एक तरह के ख़िदमतगुज़ार होते हैं, और अरब में यही दस्तूर भी था। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इनसान [illegible] [illegible] [illegible] अगली घर की औलाद इसकी नहीं होती।

'ह-फ़-दत' उस शख़्स को भी कहते हैं जो किसी के सामने उसके लिए काम-काज करे। ये मानी भी किए गए हैं कि इससे मुराद इमादी रिश्ता है। मानी के तहत में ये सब दाख़िल हैं। चुनांचे क़ुनूत में जुमला आता है कि 'हमारी सई और कोशिश और ख़िदमत तेरे लिए ही है।'

﴾130﴿

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ۭ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

वल्लाहु अख़्र-ज-कुम्-मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्लमू-न शैअंव्-व ज-अ-ल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त लअल्लकुम् तश्कुरून। (78) अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समा-इ, मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून। (79)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाए कि तुम शुक्रगुज़ारी करो। क्या इन लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा जो ताबेअ फ़रमान होकर फ़िज़ा में हैं, जिन्हें बजुज़ अल्लाह तआला के कोई और थामे हुए नहीं, बेशक इसमें ईमान लानेवाले लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

(पारा 14, नहल 78-79)

तशरीह : अल्लाह तआला अपने कमाल इल्म और कमाल क़ुदरत को बयान फ़रमा रहा है कि ज़मीन-आसमान का ग़ैब वही जानता है, कोई नहीं जो ग़ैबदाँ हो। ख़ुदा तआला जिसे चाहे जिस चीज़ पर चाहे इत्तिलाअ दे दे, हर चीज़ उसकी क़ुदरत में है, न कोई

उसके ख़िलाफ़ कर सके न कोई उसे रोक सके, जिस काम का जब इरादा करे क़ादिर है, पूरा होकर ही रहता है। आँख बन्द करके खोलने में तो तुम्हें कुछ देर लगती होगी लेकिन हुक्मे-ख़ुदा तआला के पूरे होने में इतनी देर भी नहीं लगती। क़ियामत का आना भी इस पर ऐसा ही आसान है, वह भी हुक्म होते ही आ जाएगी। एक का पैदा करना और सबका पैदा करना उस पर यकसाँ है। अल्लाह तआला का एहसान देखो कि उसने लोगों को माओं के पेटों से निकाला, ये महज़ नादान थे, फिर इन्हें कान दिए जिनसे सुनें। आँखें दीं जिन से देखें। दिल दिए जिससे सोचें-समझें। अक़्ल की जगह दिल है और दिमाग़ भी कहा गया है। अक़्ल से ही नफ़ा-नुक़सान मालूम होता है। यह क़वी और यह हवास इनसान को बतदरीज थोड़े-थोड़े होकर मिलते हैं। उम्र के साथ ही साथ इसकी बढ़ोत्तरी भी होती रहती है। यहाँ तक कि कमाल को पहुँच जाएँ। यह सब इसलिए है कि इनसान अपनी इन ताक़तों को ख़ुदा तआला की मारिफ़त और इबादत में लगाए रहे।

सहीह बुख़ारी में हदीस क़ुदसी है कि जो मेरे दोस्तों से दुश्मनी करता है वह मुझे लड़ाई का एलान देता है। मेरे फ़रीज़े की बजा-आवरी से जिस क़दर बन्दा मेरी नज़दीकी हासिल करता है उतनी किसी और चीज़ से नहीं कर सकता। नवाफ़िल बकसरत पढ़ते-पढ़ते बन्दा मेरे नज़दीक और मेरा महबूब हो जाता है, जब मैं इससे मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं ही उसके कान बन जाता हूँ जिनसे वह सुनता है और उसकी निगाह बन जाता हूँ जिससे वह देखता है। और उसके हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह थामता है और उसके पैर बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है। वह अगर मुझसे माँगे मैं देता हूँ, अगर दुआ करे मैं क़बूल करता हूँ, अगर पनाह चाहे मैं पनाह देता हूँ। और मुझे किसी करने के काम में इतना तरद्दुद नहीं होता जितना मोमिन की रूह के क़ब्ज़ करने में वह मौत को नापसन्द करता है, मैं उसे नाराज़ करना नहीं चाहता, और मौत ऐसी

चीज़ ही नहीं जिससे किसी ज़ी रूह को नजात मिल सके। इस हदीस का मतलब यह है कि जब मोमिन इख़लास और इताअत में कामिल हो जाता है तो उसके तमाम अफ़आल महज़ अल्लाह के लिए हो जाते हैं, वह सुनता है। अल्लाह के लिए, देखता है अल्लाह के लिए यानी शरीअत की बातें सुनता है शरअ ने जिन चीज़ों का देखना जायज़ किया है उन्हीं को देखता है। उसी तरह उसका हाथ बढ़ाना, पाँव चलाना भी अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के कामों के लिए ही होता है। अल्लाह तआला पर उसका भरोसा होता है, उसी से मदद चाहता है। तमाम काम उसके अल्लाह तआला की रज़ाजोई के ही होते हैं। इसलिए बाज़ हदीसों में यह भी आया है कि फिर वह मेरे लिए ही सुनता है और मेरे लिए ही देखता है और मेरे लिए ही पकड़ता है और मेरे लिए ही चलता-फिरता है। आयत में बयान है कि माँ के पेट से वह निकालता है, कान, आँख, दिल व दिमाग़ वह देता है ताकि तुम शुक्र अदा करो और आयत में फ़रमान है कि 'अल्लाह तआला ही ने तुम्हें पैदा किया है। और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। लेकिन तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो। उसी ने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया है। और उसी की तरफ़ तुम्हारा हश्र किया जानेवाला है।' फिर अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है कि इन परिन्दों की तरफ़ देखो जो आसमान व ज़मीन के दरम्यान फ़िज़ा में परवाज़ करते फिरते हैं, इन्हें परवरदिगार ही अपनी क़ुदरत कामिला से थामे हुए हैं। यह क़ुव्वते-परवाज़ उसी ने इन्हें दे रखी है और हवाओं को उनका मुतीअ बना रखा है। सूरा मुल्क में भी यही फ़रमान है कि क्या वह अपने सिरों पर उड़ते हुए परिन्दों को नहीं देखते जो पर खोले हुए हैं और पर समेटे हुए भी हैं। इन्हें बजुज़ अल्लाह रहमान व रहीम के कौन थामता है? वह ख़ुदा तआला तमाम मख़लूक़ को बख़ूबी देख रहा है। यहाँ भी ख़ातिमे पर फ़रमाया कि इसमें ईमानदारों के लिए बहुत-से निशान हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ
بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا
وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا
خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ
تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

वल्लाहु ज-अ-ल लकुम्-मिम्-बुयूतिकुम् स-कनंव्-व ज-अ-ल लकुम्-मिन् जुलूदिल्-अन्आमि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ्निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आरिहा असासंव्-व मताअन् इला हीन।(80) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम्-मिम्मा .ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ-ल लकुम्-मिनल् जिबालि अक्नानंव्-व ज-अ-ल लकुम् सराबी-ल तक़ीकुमुल्हर्-र व सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्सकुम्, कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अलैकुम् लअल्लकुम् तुस्लिमून। (81)

तर्जमा : और अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में सुकूनत की जगह बना दी है और उसी ने तुम्हारे लिए चौपायों की खालों के घर बना दिए हैं। जिन्हें तुम हल्का-फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने ठहरने के दिन भी, और उनकी ऊन और रोओं और बालों से भी उसने बहुत से सामान और एक वक़्त मुक़र्ररह तक के लिए फ़ायदे की चीज़ें बनाईं। अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से साए बनाए हैं। और उसी ने तुम्हारे लिए पहाड़ों में ग़ार बनाए हैं। और उसी ने तुम्हारे लिए कुरते बनाए हैं जो तुम्हें गर्मी से बचाएँ। और ऐसे कुरते भी जो तुम्हें लड़ाई के वक़्त काम आएँ, वह उसी तरह अपनी पूरी नेमतें दे रहा है कि तुम हुक्म-बरदार बन जाओ। (पारा 14, नहल 80-81)

तशरीह : क़दीम और बहुत बड़े अनगिनत एहसानात व इनआमात वाला ख़ुदा अपनी और नेमतें इज़हार फ़रमा रहा है। उसी ने बनी आदम के रहने-सहने, आराम और राहत हासिल करने के लिए इन्हें मकानात दे रखे हैं। इसी तरह चौपाए जानवरों की खालों के ख़ेमे, डेरे, तम्बू उसने अता फ़रमा रखे हैं कि सफ़र में काम आएँ। न ले जाना दूभर, न लगाना मुश्किल, न उखेड़ने में कोई तकलीफ़। फिर बकरियों के बाल, ऊँटों के बाल, भेड़ों और दुंबों की ऊन तिजारत के लिए माल की शकल में उसने बना दी है। वह घर के बरतने की चीज़ भी है, उससे कपड़े भी बनते हैं। फ़र्श भी तैयार होते हैं। तिजारत के तौर पर माले-तिजारत है फ़ायदे की चीज़ जिससे लोग मुक़र्ररह वक़्त तक सूदमन्द होते हैं। दरख़्तों के साये उसने तुम्हारे फ़ायदे और राहत के लिए बनाए हैं। पहाड़ों पर ग़ार, क़िले वग़ैरह उसने तुम्हें दे रखे हैं कि इनमें पनाह हासिल करो। छिपने और रहने सहने की जगह बना लो। सूती, ऊनी बालों के कपड़े उसने तुम्हें दे रखे हैं कि पहन कर सरदी-गर्मी के बचाव के साथ ही अपना सतर छिपाओ और ज़ेब व ज़ीनत हासिल करो। और उसने तुम्हें ज़िरहें, ख़ुद बक्तर अता फ़रमाए हैं जो दुश्मनों के हमले और लड़ाई के वक़्त तुम्हें काम दें। इसी तरह वह तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत की पूरी-पूरी नेमतें दिए चला जाता है कि तुम राहत व आराम पाओ और इत्मीनान से अपने मुनइमे-हक़ीक़ी की इबादत में लगे रहो। बेशक जंगल में बियाबान भी ख़ुदा तआला की बड़ी नेमत है? इसी लिए इन नेमतों और रहमतों के इज़हार के बाद ही फ़रमाता है कि अगर अब भी ये लोग मेरी इबादत और तौहीद के और मेरे बेपायाँ एहसानों के क़ायल न हों तो तुझे उनकी ऐसी क्या पड़ी है, छोड़ दे अपने काम में लग जा, तुझ पर तो सिर्फ़ तबलीग़ ही है वह किए जा। ये ख़ुद जानते हैं कि अल्लाह तआला ही नेमतों का देनेवाला है। और इसकी बेशुमार नेमतें इनके हाथों में हैं लेकिन बावजूद इल्म के मुनकिर हो रहे हैं, और उसके साथ दूसरों की इबादत करते हैं। बल्कि उसकी नेमतों को दूसरों की तरफ़ मंसूब

करते हैं, समझते हैं कि मददगार फ़लाँ है, रिज़्क़ देनेवाला फ़लाँ है। ये अक्सर लोग काफ़िर हैं। ख़ुदा तआला के नाशुक्रे हैं। इब्ने-अबी-हातिम में है कि एक ऐराबी रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के पास आया। आप (सल्ल॰) ने इस आयत की तिलावत उसके सामने की कि अल्लाह तआला ने तुम्हें रहने-सहने की जगह के लिए घर और मकानात दिए। उसने कहा सच है। फिर आप (सल्ल॰) ने पढ़ा, कि उसने तुम्हें चौपायों की खालों के ख़ेमे दिए। उसने कहा यह भी सच है। इसी तरह आप (सल्ल॰) इन आयतों को पढ़ते गए और वह हर हर नेमत का इक़रार करता रहा। आख़िर में आप (सल्ल॰) ने पढ़ा इसलिए कि तुम मुसलमान और मुतीअ हो जाओ। इस वक़्त वह पीठ फेर कर चल दिया, तो अल्लाह तआला ने आख़िरी आयत उतारी कि इक़रार के बाद इनकार करके काफ़िर हो जाते हैं।

﴾132﴿

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

अ-व लम् यरल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्क़न् फ़-फ़तक़्नाहुमा, व जअल्ना मिनल्मा-इ कुल्-ल शैइन् हय्यि, अ-फ़ला युअ्मिनून। (30) व जअल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व जअल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-लअल्लहुम् यह्तदून। (31) वजअल्नस्-समा-अ सक्फ़म्-मह्फ़ूज़ंव्-व हुम् अन् आयातिहा मुअ्रिज़ून।(32) व हुवल्लज़ी ख़-लक़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्-क़-म-र, कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून। (33)

तर्जमा : क्या काफ़िर लोगों ने यह नहीं देखा कि आसमान व ज़मीन बाहम मिले-जुले थे फिर हमने इन्हें जुदा किया और हर ज़िन्दा चीज़ को हमने पानी से पैदा किया। ये लोग फिर भी ईमान नहीं लाते और हमने ज़मीन में पहाड़ बना दिए ताकि वह मख़लूक़ को हिला न सके और हमने उसमें कुशादा राहें बना दीं ताकि वे रास्ता हासिल करें। आसमान को महफ़ूज़ छत भी हमने ही बनाया है। लेकिन लोग उसकी क़ुदरत के नमूनों पर ध्यान ही नहीं धरते। वही अल्लाह है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को पैदा किया है। इनमें से हर एक अपने-अपने मदार में तैरते फिरते हैं।

(पारा 17, अंबिया 30-33)

तशरीह : अल्लाह तआला इस बात को बयान फ़रमाता है कि उसकी क़ुदरत पूरी है और उसका ग़लबा ज़बरदस्त है। फ़रमाता है कि जो काफ़िर अल्लाह के सिवा औरों की पूजा-पाठ करते हैं, क्या इन्हें इतना इल्म नहीं कि तमाम मख़लूक़ का पैदा करनेवाला अल्लाह ही है और सब चीज़ का निगहबान भी वही है। फिर उसके साथ दूसरों की इबादत तुम क्यों करते हो? इब्तिदाअन ज़मीन व आसमान मिले-जुले एक दूसरे से पैवस्त तह-ब-तह थे, अल्लाह तआला ने इन्हें अलग-अलग किया। ज़मीनों को नीचे आसमानों को ऊपर फ़ासले से और हिक्मत से क़ायम किया, सात ज़मीनें पैदा कीं और सात ही आसमान बनाए। ज़मीन और पहले आसमान के दरमियान जोफ़ और ख़ला रखा, आसमान से पानी बरसाया और ज़मीन से पैदावार उगाई। हर ज़िन्दा चीज़ पानी से पैदा की। क्या ये तमाम चीज़ें जिनमें से हर एक सानेअ की ख़ुदमुख़तारी, क़ुदरत और वहदत पर दलालत करती है, अपने सामने मौजूद पाते हुए भी ये लोग ख़ुदा की अज़मत के क़ायम होकर शिर्क को नहीं छोड़ते।

फ़फ़ी कुल्लि शैइल-लहु आयतुन तदुल्लु अला अन्नहू वाहिदुन

यानी हर चीज़ में ख़ुदा की ख़ुदाई और उसकी वहदानियत का निशान मौजूद है। हज़रत इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से सवाल हुआ कि पहले रात थी या दिन? तो आपने फ़रमाया कि पहले

ज़मीन व आसमान मिले-जले तह-ब-तह थे तो ज़ाहिर है कि इनमें अन्धेरा होगा और अन्धेरे का नाम ही रात है। तो साबित हुआ कि रात पहले थी। इब्ने-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से जब इस आयत की तफ़सीर पूछी गई तो आपने फ़रमाया, तुम (हज़रत) इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से सवाल करो और जो जवाब दें मुझसे भी कहो। हज़रत इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ज़मीन व आसमान सब एक साथ थे, न बारिश बरसती थी न पैदावार उगती थी। जब अल्लाह तआला ने ज़ी रूह मख़लूक़ पैदा की तो आसमान को फाड़ कर उसमें से पानी बरसाया और ज़मीन को चीर कर उसमें पैदावार उगाई। जब साइल ने हज़रत इब्ने-उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से जवाब बयान किया तो आप बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे, आज मुझे और भी यक़ीन हो गया कि क़ुरआन के इल्म में (हज़रत) अब्दुल्लाह बहुत ही बढ़े हुए हैं। मेरे जी में कभी ख़याल आता था कि ऐसा तो नहीं इब्ने-अब्बास की जुरअत बढ़ गई हो लेकिन आज वह वसवसा दिल से जाता रहा। आसमान को फाड़कर सात आसमान बनाए, ज़मीन के मजमूए को चीर कर सात ज़मीनें बनाईं। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह की तफ़सीर में यह भी है कि ये मिले हुए थे यानी पहले सातों आसमान एक साथ थे। और इसी तरह सातों ज़मीनें भी मिली हुई थीं। फिर जुदा-जुदा कर दी गईं। हज़रत सअदिया रहमतुल्लाहि अलैह की तफ़सीर है कि ये दोनों पहले एक ही थे फिर अलग-अलग कर दिए गए। ज़मीन व आसमान के दरम्यान ख़ला रख दिया गया, पानी को तमाम जानदारों की असल बना दी।

हज़रत अबू-हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा आँहज़रत (सल्ल०) से कहा हुज़ूर! जब मैं आपको देखता हूँ मेरा जी ख़ुश हो जाता है और मेरी आँखें ठण्डी होती हैं, आप हमें तमाम चीज़ों की असलियत से ख़बरदार कर दें। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया! अबू-हुरैरा! तमाम चीज़ें पानी से पैदा की गई हैं। और रिवायत में है कि फिर मैंने कहा या रसूलुल्लाह मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए

जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, लोगों को सलाम किया करो और खाना खिलाया करो और सिलह-रहमी करते रहो और रात को जब लोग सोए हुए हों तुम तहज्जुद की नमाज पढ़ा करो ताकि सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ। ज़मीन को बारी अज़्ज़ व जल्ल ने पहाड़ों की मेख़ों से मज़बूत कर दिया ताकि वह हिल-जुल कर लोगों को परेशान न करे, मख़लूक़ को ज़लज़ले में न डाले, ज़मीन की तीन चौथाइयाँ तो पानी में हैं। और सिर्फ़ एक चौथाई हिस्सा सूरज और हवा के लिए खुला हुआ है ताकि लोग आसमान को और उसके अजायबात का बचश्मे-ख़ुद मुलाहज़ा कर सकें। फिर ज़मीन में ख़ुदाए-तआला ने अपनी रहमते-कामिला से राहें बना दीं कि लोग बआसानी अपने सफ़र तय कर सकें और दूर-दराज़ मुल्कों में भी पहुँच सकें। शाने-ख़ुदा देखिए इस हिस्से और इस टुकड़े के दरम्यान बुलन्द पहाड़ी हायल है। यहाँ से वहाँ पहुँचना बज़ाहिर सख़्त और दुश्वार मालूम होता है लेकिन क़ुदरते-ख़ुदा ख़ुद इस पहाड़ में रास्ता बना देती है कि यहाँ के लोग वहाँ और वहाँ के लोग यहाँ पहुँच जाएँ और अपने काम-काज पूरे कर लें। आसमान को ज़मीन पर मिस्ल क़ुब्बे के बना दिया जैसे फ़रमान है कि हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम वुसअत और कुशादगीवाले हैं। फ़रमाता है क़सम है आसमान की और उसकी बनावट की! इरशाद है, क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनके सिरों पर आसमान को किस कैफ़ियत का बनाया है और किस तरह ज़ीनत दे रखी है। और लतीफ़ यह है कि इतने बड़े आसमान में कोई सूराख़ तक नहीं। बिना कहते हैं, क़ुब्बे और ख़ेमे के खड़ा करने को जैसे रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाते हैं। इस्लाम की बिनाएँ पाँच हैं, जैसे पाँच सुतूनों पर कोई क़ुब्बा या ख़ेमा खड़ा हुआ हो। फिर आसमान जो मिसले-छत के है, यह है भी महफ़ूज़ बुलन्द पहरे चौकी वाला कि कहीं से उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। बुलन्द व बाला ऊँचा और साफ़ है।

जैसे हदीस में है कि किसी शख़्स ने हुज़ूर (सल्ल॰) से सवाल

किया कि यह आसमान क्या है? आपने फ़रमाया रुकी हुई मौज है। लेकिन लोग ख़ुदा की इन ज़बरदस्त निशानियों से भी बेपरवा हैं जैसे फ़रमान है आसमान व ज़मीन की बहुत-सी निशानियाँ हैं जो लोगों की निगाहों तले हैं। लेकिन फिर भी वे इनसे मुँह मोड़े हुए हैं। कोई ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते, कभी नहीं सोचते कि कितना फैला हुआ, कितना बुलन्द, किस क़दर अज़ीमुश्शान यह आसमान हमारे सिरों पर बग़ैर सुतून के ख़ुदाए-तआला ने क़ायम कर रखा है। फिर इसमें किस ख़ूबसूरती से सितारों का जड़ाव हो रहा है। इनमें भी कोई ठहरा हुआ है, कोई चलता फिरता है। फिर सूरज की चाल मुक़र्रर है, इसकी मौजूदगी दिन है, इसका न नज़र आना रात है, पूरे आसमान का चक्कर सिर्फ़ एक दिन रात में पूरा कर लेता है। इसकी चाल को, इसकी तेज़ी को बजुज़ ख़ुदा के कोई नहीं जानता। यूँ अटकलें और अन्दाज़े करना और बात है। बनी-इसराईल के आबिदों में से एक ने अपनी तीस साल की मुद्दते-इबादत पूरी कर ली। मगर जिस तरह और आबिदों पर तीस साल की इबादत के बाद अब्र का साया हो जाया करता था उस पर न हुआ तो उसने अपनी वालिदा से यह हाल बयान किया? उसने कहा, बेटे तुमने अपनी इस इबादत के ज़माने में कोई गुनाह कर लिया होगा? उसने कहा, अम्माँ एक भी नहीं। कहा, फिर तुम ने किसी गुनाह का पूरा क़सद किया होगा। जवाब दिया कि ऐसा भी मुतलक़न नहीं हुआ। माँ ने कहा, बहुत मुमकिन है कि तुमने आसमान की तरफ़ नज़र की हो और ग़ौर व तदब्बुर के बग़ैर हटा ली हो। आबिद ने जवाब दिया, ऐसा तो बराबर होता रहा। फ़रमाया, बस यही सबब है। फिर अपनी क़ुदरते-कामिला की बाज़ निशानियाँ बयान फ़रमाता है कि रात और उसके अन्धेरे को देखो, दिन और उसकी रौशनी पर नज़र डालो। फिर एक के बाद दूसरे का पै-दर-पै इन्तिज़ाम और एहतिमाम के साथ आ-जाना देखो, एक का कम होना दूसरे का बढ़ना देखो, सूरज चाँद को देखो सूरज का नूर एक मख़सूस नूर है। और उसका आसमान, उसका ज़माना, उसकी हरकत, उसकी चाल अलाहिदा है।

चाँद का नूर अलग है फ़लक अलग है, चाल अलग है, अन्दाज़ और है। हर एक अपने-अपने फ़लक में गोया तैरता फिरता है और हुक्मे-ख़ुदा की बजाआवरी में मशग़ूल है। जैसे फ़रमान है, वही सुब्ह का रौशन करनेवाला है वही रात को पुर सुकून बनानेवाला है। वही सूरज-चाँद का अन्दाज़ा मुक़र्रर करनेवाला है। वही ज़ी-इज़्ज़त, ग़लबेवाला और ज़ी-इल्मवाला है।

﴾133﴿

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

व ल-क़द् .ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम्-मिन तीन।(12) सुम्-म जअल्नाहु नुत्फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन। (13) सुम्-म .ख़लक़्नन्-नुत्फ़-त अ-ल-क़तन् फ़-.ख़लक़्नल् अ-ल-क़-त मुज़्-ग़तन् फ़-.ख़लक़्नल्-मुज़्ग़-त अिज़ामन् फ़-कसौनल्-अिज़ा-म लह्मन्; सुम्-म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख-र्, फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-.ख़ालिक़ीन। (14) सुम्-म इन्नकुम् बअ्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून। (15) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्असून। (16)

तर्जमा : यक़ीनन हमने इनसान को मिट्टी के जौहर से पैदा किया फिर उसे नुत्फ़ा बनाकर महफ़ूज़ जगह में क़रार दे दिया। फिर नुत्फ़े को हमने जमा हुआ ख़ून बना दिया। फिर उस ख़ून के लोथड़े को गोश्त का टुकड़ा कर दिया। फिर गोश्त के टुकड़े को हड्डियाँ बना दीं, फिर हड्डियों को हमने गोश्त पहना दिया, फिर दूसरी बनावट में उसको पैदा कर दिया। बरकतोंवाला है वह अल्लाह जो सबसे बेहतरीन पैदा करनेवाला है। उसके बाद फिर तुम सब यक़ीनन

मर जानेवाले हो। फिर क़ियामत के दिन बिला शुब्हा तुम सब उठाए जाओगे।

(पारा 18, मोमिनून 12-16)

तशरीह : अल्लाह तआला इनसान की पैदाइश की इब्तिदा बयान करता है कि असल आदम मिट्टी से है जो कीचड़ की और बजनेवाली मिट्टी की सूरत में थी। फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पानी से उनकी औलाद पैदा हुई जैसे फ़रमान है, ख़ुदा तआला ने तुम्हें मिट्टी से पैदा करके फिर इनसान बनाकर ज़मीन पर फैला दिया।

मुसनद में है, अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ख़ाक की एक मुट्ठी से पैदा किया जिसे तमाम ज़मीन पर से ली थी। पस इसी एतिबार से औलादे-आदम अलैहिस्सलाम के रंग-रूप मुख़्तलिफ़ हुए। कोई सुर्ख़ है, कोई सफ़ेद है। कोई सियाह है कोई और रंग का है। इनमें नेक हैं और बद भी हैं। और आयत में है

"इनसान के लिए एक मुद्दत मुइय्यन तक इसकी माँ का रहम ही ठिकाना होता है।" जहाँ एक हाल से दूसरी हालत की तरफ़ और एक सूरत से दूसरी सूरत की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहता है। फिर नुत्फ़े की जो एक उछलनेवाला पानी है, जो मर्द की पीठ से और औरत के सीने से निकलता है शकल बदल कर सुर्ख़ रंग की बोटी की शक्ल में बदल जाता है। फिर उसे गोश्त के एक टुकड़े की सूरत में बदल दिया जाता है जिसमें कोई शक्ल और कोई ख़त नहीं होता। फिर इनमें हड्डियाँ बना दीं, सिर, हाथ, पाऊँ, हड्डी, रग पटठे वग़ैरह बनाए। पीठ की हड्डी बनाई। रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, इनसान का तमाम जिस्म गल-सड़ जाता है सिवाय रीढ़ की हड्डी के। उसी से पैदा किया जाता है। और उसी से तरकीब दी जाती है। फिर इन हड्डियों को वह गोश्त पहनाता है ताकि वे पोशीदा और क़वी रहें। फिर उसमें रूह फूँकता है जिससे वह हिलने-जुलने, फिरने के क़ाबिल हो जाए और एक जानदार इनसान बन जाए। देखने की, सुनने की, समझने की और हरकत व सुकून की क़ुदरत अता फ़रमाता है। वह बाबरकत ख़ुदा सबसे अच्छी

पैदाइश का पैदा करनेवाला है।

हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब नुत्फ़े पर चार महीने गुज़र जाते हैं तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजता है। जो तीन-तीन अन्धेरों में इसमें रूह फूँकता है। यही मानी है कि हम फिर इसे दूसरी ही पैदाइश में पैदा करते हैं। यानी दूसरी क़िस्म की इस पैदाइश से मुराद रूह का फूँका जाना है। पस एक हालत से दूसरी और दूसरी से तीसरी की तरफ़ माँ के पेट में ही हेर-फेर होने के बाद बिल्कुल ना-समझ बच्चा पैदा होता है। फिर वह बढ़ता जाता है यहाँ तक कि वह जवान बन जाता है। फिर उसे उधेड़पन आता है फिर बूढ़ा हो जाता है। फिर बिल्कुल ही बूढ़ा हो जाता है। अलग़रज़ रूह का फूँका जाना और फिर इन इनक़िलाबात का आना शुरू हो जाता है सादिक़ व मसदूक़ आँ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि तुममें से हर एक की पैदाइश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती है फिर चालीस दिन तक वह ख़ून बसले की सूरत में रहता है फिर चालीस दिन तक वह गोश्त के लोथड़े की शकल में रहता है फिर अल्लाह तआला फ़रिश्ते को भेजता है जो उसमें रूह फूँकता है और बहुक्मे-ख़ुदा चार बातें लिख ली जाती हैं, रोज़ी अजल-अमल और नेक या बद, बुरा या भला होना। पस क़सम है उसकी जिसके सिवा कोई माबूदे-बरहक़ नहीं कि एक शख़्स जन्नती का अमल करता रहता है यहाँ तक कि जन्नत से सिर्फ़ एक हाथ दूर रह जाता है लेकिन तक़दीर का वह लिखा ग़ालिब आ जाता है और ख़ातिमे के वक़्त दोज़ख़ी काम करने लगता है और उसी पर मरता है और जहन्नम रसीद होता है। इसी तरह एक इनसान बुरे काम करते-करते दोज़ख़ से हाथ भर के फ़ासले पर रह जाता है लेकिन फिर तक़दीर का लिखा आगे बढ़ जाता है और जन्नत के आमाल पर ख़ातिमा होकर दाख़िले-फ़िरदौसे-बरीं हो जाता है। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह) हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं नुत्फ़ा जब रहम में पड़ता है तो वह हर हर बाल और नाख़ुन की जगह पहुँच जाता है फिर चालीस दिन के

बाद उसकी शक्ल जमे हुए ख़ून जैसी हो जाती है। मुसनद अहमद में है कि हुज़ूर (सल्ल०) अपने असहाब से बातें बयान कर रहे थे जो एक यहूदी आ गया, तो कुफ़्फ़ारे-क़ुरैश ने उससे कहा, ये नुबूवत के दावेदार हैं। उसने कहा, अच्छा मैं इनसे एक सवाल करता हूँ जिसे नबियों के सिवा और कोई नहीं जानता। आपकी मजलिस में आकर बैठकर पूछता है कि बताओ इनसान की पैदाइश किस चीज़ से होती है? आपने फ़रमाया, मर्द-औरत के नुत्फ़े से मर्द का नुत्फ़ा ग़लीज़ और गाढ़ा होता है उससे हड्डियाँ और पटठे बनते हैं और औरत का नुत्फ़ा रक़ीक़ और पतला होता है, उससे गोश्त और ख़ून बनता है। उसने कहा आप सच्चे हैं। अगले नबियों का भी यही क़ौल है। रसूललुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं, जब नुत्फ़े को रहम में चालीस दिन गुज़र जाते हैं तो एक फ़रिश्ता आता है और अल्लाह तआला से दरयाफ़्त करता है कि ख़ुदाया यह नेक होगा या बद? मर्द होगा या औरत? जो जवाब मिलता है वह लिख लेता है और अमल और उमर और नर्मी-गर्मी सब कुछ लिख लेता है फिर दफ़्तर लपेट लिया जाता है। इसमें फिर किसी कमी-बेशी की गुंजाइश नहीं रहती।

बज़्ज़ार की हदीस में है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला ने रहम पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया है जो अर्ज़ करता है ख़ुदाया अब नुत्फ़ा है, ख़ुदाया अब लोथड़ा है, ख़ुदाया अब गोश्त का टुकड़ा है। जब जनाब बारी उसे पैदा करना चाहता है, वह पूछता है ख़ुदाया मर्द हो या औरत, शक़ी हो या सई, रिज़्क़ क्या है, अजल क्या है, इसका जवाब दिया जाता है और ये सब चीज़ें लिख ली जाती हैं। इन सब बातों और अपनी कामिल क़ुदरतों को बयान फ़रमाया कि सबसे अच्छी पैदाइश करनेवाला अल्लाह बरकतोंवाला है। हज़रत उमर-बिन-ख़त्तात रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने रब की मुवाफ़िक़त चार बातों में की है, जब यह आयत उतरी कि हमने इनसान को बजती मिट्टी से पैदा किया है तो बेसाख़्ता मेरी ज़बान से 'फ़तबारकल्लाहु अहसनुल-ख़ालिक़ीन' निकला, और वही फिर उतरा। ज़ैद बिन-साबित अनसारी रज़िअल्लाहु अन्हु को

जब रसूल करीम (सल्ल.) ऊपरवाली आयतें लिखवा रहे थे। और 'सुम्मा अनशअनाहु ख़ल्क़न आख़रा' तक लिखवा चुके तो हज़रत मुआज़ रज़िअल्लाहु अन्हु ने बेसाख़्ता कहा 'फ़-त'बारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन' उसे सुनकर अल्लाह के नबी (सल्ल.) हँस दिए। हज़रत मुआज़ रज़िअल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़्त फ़रमाया, रसूलुल्लाह (सल्ल.) आप कैसे हँसे। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, इस आयत के ख़ातिमे पर भी यही है। इस पहली पैदाइश के बाद तुम मरनेवाले हो फिर क़ियामत के दिन दूसरी दफ़ा पैदा किए जाओगे फिर हिसाब किताब होगा, ख़ैर व शर का बदला मिलेगा।

﴾134﴿

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝

तर्जमा : हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाए हैं और हम मख़लूक़ात से ग़ाफ़िल नहीं हैं। (पारा 18, मोमिनून 17)

व ल-क़द् ख़लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ तराइ-क़ व मा कुन्ना अनिल्-ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन।(17)

तशरीह : इनसान की पैदाइश का ज़िक्र करके आसमानों की पैदाइश का बयान हो रहा है जिनकी बनावट इनसानी बनावट से बहुत बड़ी और बहुत भारी और बहुत बड़ी सनअतवाली है। सूरा सजदा में भी इसी का बयान है जिसे हुज़ूर (सल्ल.) जुमे के दिन सुब्ह की नमाज़ की अव्वल रकअत में बढ़ा करते थे। वहाँ पहले आसमान व ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र है फिर इनसानी पैदाइश का ज़िक्र किया है। जैसे फ़रमान है :-

'तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्उ वल अर्ज़ु व मन फ़ीहिन्ना....'

सातों आसमान और सब ज़मीनें और उनकी सब चीज़ें अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करती हैं। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने किस तरह ऊपर-तले सातों आसमानों को बनाया। अल्लाह तआला वह है जिसने सात आसमान बनाए और इन्हीं जैसी ज़मीनें। इसका हुक्म इनके दरमियान नाज़िल होता है

ताकि तुम जान लो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है और तमाम चीज़ों को अपने वसीअ इल्म से घेरे हुए है। अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं है। जो चीज़ ज़मीन में जाए जो ज़मीन से निकले अल्लाह के इल्म में है। आसमान से जो उतरे और जो आसमान की तरफ़ चढ़े वह जानता है, जहाँ भी तुम हो वह तुम्हारे साथ है। और तुम्हारे एक-एक अमल को वह देख रहा है। आसमान की बुलन्द व बाला चीज़ें और ज़मीन की पोशीदा चीज़ें, पहाड़ों की टीलों की, रेत की समुन्दरों की, मैदानों की, दरख़्तों की सब की उसे ख़बर है। दरख़्तों का कोई पत्ता नहीं गिरता जो उसके इल्म में न हो, कोई दाना ज़मीन की अन्धेरियों में ऐसा नहीं जाता जिसे वह जानता न हो, कोई तर ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो खुली किताब में न हो।

﴾135﴿

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् बि-क़-दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्‌अर्ज़ि; व इन्ना अला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून। (18) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम्-मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्नाब्, लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून। (19) व श-ज-रतन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल्-लिल्आकिलीन। (20) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब्-रह्, नुस्क़ीकुम्-मिम्मा फ़ी

बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु क़सी-रतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून। (21) व अलैहा व अलल्-फुल्कि तुह्मलून।(22)

तर्जमा : हम एक सही अन्दाज़ से आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर उसे ज़मीन में ठहरा देते हैं। और हम उसके ले जाने पर यक़ीनन क़ादिर हैं। उसी पानी के ज़रिए से हम तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर देते हैं, कि तुम्हारे लिए इनमें बहुत से मेवे होते हैं। इन्ही में से तुम खाते भी हो, और वह दरख़्त जो तूरे-सीना पहाड़ से निकलता है, जो तेल निकालता है और खानेवाले के लिए सालन है। तुम्हारे लिए चौपायों में भी बड़ी भारी इबरत है, इनके पेटों में से हम तुम्हें दूध पिलाते हैं। और भी बहुत से नफ़ा तुम्हारे लिए इनमें हैं, उनमें से बाज़-बाज़ को तुम खाते भी हो और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार कराए जाते हो।

(पारा 18, सूरा मोमिनून 18-22)

तशरीह : अल्लाह तआला की यूँ तो बेशुमार और अनगिनत नेमतें हैं लेकिन चन्द बड़ी-बड़ी नेमतों का यहाँ ज़िक्र हो रहा है कि वह आसमान से बक़द्रे-हाजत व ज़रूरत बारिश बरसाता है, न तो बहुत ज़्यादा कि ज़मीन ख़राब हो जाए और पैदावार सड़-गल जाए, न बहुत कम कि फल-अनाज वग़ैरा पैदा ही न हो, बल्कि इस अन्दाज़े से कि खेती सरसब्ज़ रहे। बाग़ात हरे-भरे रहें, हौज़, तालाब, नहरें, नदियाँ नाले, दरिया बह निकलीं, न पीने की कमी हो न पिलाने की यहाँ तक कि जिस जगह ज़्यादा बारिश की ज़रूरत होती है, ज़्यादा होती है और जहाँ कम की, कम होती है और जहाँ की ज़मीन इस क़ाबिल ही नहीं होती वहाँ पानी नहीं बरसता लेकिन नदियों और नालों के ज़रिए वहाँ क़ुदरत बरसाती पानी पहुँचा कर वहाँ की ज़मीन को सैराब कर देती है। जैसे कि मिस्र के इलाक़े की ज़मीन जो दरियाए-नील की तरी से सरसब्ज़ व शादाब हो जाती है। उसी पानी के साथ सुर्ख़ मिट्टी खिंच कर जाती है। जो हब्शा के इलाक़े में होती है, वहाँ की बारिश के साथ वह मिट्टी बह कर पहुँचती है जो ज़मीन पर ठहर जाती है और ज़मीन क़ाबिले-ज़राअत

हो जाती है। वरना वहाँ की शोर ज़मीन खेती बाड़ी के क़ाबिल नहीं। सुब्हानल्लाह! इस लतीफ़ व ख़बीर ग़फ़ूर व रहीम ख़ुदा की क्या-क्या क़ुदरतें और हिकमतें हैं, ज़मीन में ख़ुदा पानी को ठहरा देता है।

ज़मीन में उसके चूस लेने और जज़्ब कर लेने की क़ाबिलयत ख़ुदा तआला पैदा कर देता है ताकि दानों को और गुठलियों को अन्दर ही अन्दर वह पानी पहुँचा दे। फिर फ़रमाता है, हम उसके ले जाने और दूर कर देने पर यानी न बरसाने पर भी क़ादिर हैं। अगर चाहें शोर संगलाख़ ज़मीन पर और पहाड़ों और बेकार बनों में बरसा दें। अगर चाहें पानी को कड़वा कर दें। न पीने के क़ाबिल रहे न पिलाने के, न खेत और बाग़ात के मतलब का रहे न नहाने-धोने के मक़सद का। अगर चाहें ज़मीन में वह क़ुव्वत ही न रखें कि वह पानी को जज़्ब कर ले, चूस ले बल्कि ऊपर ही ऊपर तैरता फिरे। यह भी हमारे इख़्तियार में है कि ऐसी दूर-दराज़ झीलों में पानी पहुँचा दें कि तुम्हारे लिए बेकार हो जाए और तुम कोई फ़ायदा उससे न उठा सको। यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम और उसका लुत्फ़ व रहम है कि वह बादलों से मीठा, उम्दा, हलका और ख़ुश-ज़ायक़ा पानी बरसाता है, उसे ज़मीन में पहुँचाता है और इधर-उधर रेल-पेल कर देता है। खेतियाँ अलग पकती हैं, बाग़ात अलग तैयार होते हैं, ख़ुद पीते हो अपने जानवरों को पिलाते हो, नहाते-धोते हो, पाकीज़गी और सुथराई हासिल करते हो, फ़लहम्दुलिल्लाह आसमानी बारिश से रब्बुलआलमीन तुम्हारे लिए रोज़ियाँ उगाता है। लहलहाते हुए खेत हैं, कहीं सरसब्ज़ बाग़ हैं जो अलावा ख़ुशनुमा और ख़ुशमंज़र होने के मुफ़ीद और फ़ैज़ वाले हैं।

खजूर अंगूर जो अहले-अरब का दिल-पसन्द मेवा है और इसी तरह हर मुल्कवालों के लिए अलग-अलग तरह-तरह के मेवे उसने पैदा कर दिए हैं जिनकी पूरी शुक्रगुज़ारी भी किसी के बस की नहीं। बहुत मेवे तुम्हें उसने दे रखे हैं जिनकी ख़ूबसूरती भी तुम देखते हो और ख़ुशज़ायक़ी से भी फ़ायदा उठाते हो। फिर ज़ैतून के दरख़्त का ज़िक्र फ़रमाया। तूरे-सीना वह पहाड़ है जिस पर ख़ुदा तआला ने

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बात-चीत की थी और उसके इर्द-गिर्द की पहाड़ियाँ। तूर उस पहाड़ को कहते हैं जो हरा और दरख़्तों वाला हो वरना उसे जबल कहेंगे, तूर नहीं कहेंगे। पस तूर सीना में जो दरख़्त ज़ैतून पैदा होता है उसमें से तेल निकलता है जो खानेवालों को सालन का काम देता है।

हदीस में है, ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ, वह मुबारक दरख़्त में से निकलता है। (अहमद) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु के हाँ एक साहब आशूरे की शब को मेहमान बन आए तो आप ने इन्हें ऊँट की सिरी और ज़ैतून खिलाया और फ़रमाया उस मुबारक दरख़्त का तेल है जिसका ज़िक्र ख़ुदा तआला ने अपने नबी (सल्ल॰) से किया है। फिर चौपायों का ज़िक्र हो रहा है और उनसे जो फ़वायद इनसान उठा रहे हैं इन नेमतों का इज़हार हो रहा है कि इनका दूध पीते हैं, इनका गोश्त खाते हैं, इनके बालों और ऊन से लिबास वग़ैरह बनाते हैं, उन पर सवार होते हैं, उन पर अपना सामाने-असबाब लादते हैं और दूरदराज़ तक पहुँचते हैं कि अगर ये न होते तो वहाँ तक पहुँचने में जान आधी रह जाती। बेशक अल्लाह तआला बन्दों पर मेहरबान और रहमतवाला है, जैसे फ़रमान है :-

'अ-व-लम यरौ अन्ना ख़लक़ना लहुम....'

क्या वे नहीं देखते कि ख़ुद हमने इन्हें चौपायों का मालिक बना रखा है कि ये उनके गोश्त खाएँ, उन पर सवारियाँ लें और तरह-तरह के नफ़े हासिल करें। क्या अब भी उन पर हमारी शुक्रगुज़ारी वाजिब नहीं! ये ख़ुश्की की सवारियाँ हैं फिर तरी की सवारियाँ कश्ती, जहाज़ वग़ैरह अलग हैं।

﴾136﴿

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩ وَهُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ
قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَ

إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

व हुवल्लज़ी अन्श-अ लकुमुस्सम्-अ वल्-अबसा-र वल्-अफ्इ-दह, क़लीलम्-मा तश्कुरून। (78) व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून। (79) व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्- लैलि वन्नहारि, अ-फ़ला तअ्क़िलून। (80) बल् क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून। (81) क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून। (82) ल-क़द् वुअिद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन। (83)

तर्जमा : वह अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किए, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और वही है जिसने तुम्हें पैदा करके ज़मीन में फैला दिया और उसी की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे और यह वही है जो जिलाता है और मारता है और रात-दिन के रद्दो-बदल का मुख़्तार भी वही है। क्या तुमको समझ बूझ नहीं? बल्कि उन लोगों ने भी वैसी ही बात कही जो अगले कहते चले आए कि क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डी हो जाएँगे, क्या फिर भी हम ज़रूर उठाए जाएँगे? हम से और हमारे बाप दादों से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं ये तो सिर्फ़ अगले लोगों के अफ़साने हैं। (पारा 18, मोमिनून 78-83)

तशरीह : फ़रमाता है कि हमने उन्हें उनकी बुराइयों की वजह से सख़्तियों और मुसीबतों में भी मुब्तला किया लेकिन ताहम न तो उन्होंने अपना कुफ़्र छोड़ा न ख़ुदा की तरफ़ झुके बल्कि कुफ़्र व ज़लालत पर अड़े रहे, न उनके दिल नरम हुए न ये सच्चे दिल से हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए, न दुआ के लिए हाथ उठाए। जैसे फ़रमान है :- 'फ़लौला इज़ जाअहुम बअ्सुना तज़र्रऊ'

'हमारे अज़ाबों को देख कर यह हमारी तरफ़ आजिज़ी से क्यों न झुके? बात यह है कि उनके दिल सख़्त हो गए हैं।'

इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस आयत में उस क़हतसाली का ज़िक्र है जो क़ुरैश पर हुज़ूर (सल्ल०) के न मानने के सिले में आई थी जिसकी शिकायत ले कर अबू-सुफ़ियान रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए थे और आप (सल्ल०) को ख़ुदा की क़स्में देकर रिश्तेदारियों के वास्ते दिलाकर कहा था कि हम तो अब लीद और ख़ून खाने लगे हैं। सहीहैन में है कि क़ुरैश की शरारतों से तंग आकर रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने इन पर बद्दुआ की थी कि जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में सात साल की क़हतसाली आई थी ऐसे ही क़हत से ख़ुदाया तू उन पर मेरी मदद फ़रमा।

इब्ने-अबी हातिम में है कि हज़रत वहब-बिन-मुनब्बह रहमतुल्लाह अलैहि को क़ैद कर दिया गया। वहाँ एक नौ उम्र शख़्स ने कहा, मैं आपको जी बहलाने के लिए कुछ अशआर सुनाऊँ? तो आपने फ़रमाया, इस वक़्त हम अज़ाबे-ख़ुदा में हैं और क़ुरआन ने उनकी शिकायत की है, जो ऐसे वक़्त भी ख़ुदा की तरफ़ न झुकें-फिर आप ने तीन रोज़े बराबर रखे। उनसे सवाल किया गया कि ये बीच में इफ़तार किए बग़ैर रोज़े कैसे? तो जवाब दिया कि एक नई चीज़ इधर से हुई। यानी क़ैद तो एक नई चीज़ हम ने की यानी ज़्यादती इबादत। यहाँ तक कि हुक्मे ख़ुदा आन पहुँचा, अचानक वक़्त आ गया और जिन अज़ाबों का ख़ाब व ख़याल भी न था वह आ पड़े तो तमाम ख़ैर से मायूस हो गए, आस टूट गई और हैरतज़दा रह गए। अल्लाह की नेमतों को देखो, उसने कान दिए, आँखें दीं, दिल दिए, अक़्ल व फ़हम अता फ़रमाई कि ग़ौर व फ़िक्र कर सको, ख़ुदा की वहदानियत को, उसकी बाइख़्तियारी को समझ सको। लेकिन जूँ-जूँ नेमतें बढ़ीं शुक्र कम हुए जैसे फ़रमान है तो गो हिर्स कर लेकिन उनमें से अक्सर बेईमान हैं। फिर अपनी अज़ीमुश्शान सल्तनत और क़ुदरत का बयान फ़रमा रहा है कि मख़लूक़ को उसने पैदा करके वसीअ ज़मीन पर बाँट दिया है फिर

क़ियामत के दिन उन बिखरे हुओं को समेटकर अपने पास जमा करेगा। अब भी उसी ने पैदा किया है, फिर भी वही जिलाएगा। कोई छोटा-बड़ा आगे-पीछे का बाक़ी न बचेगा। वही बोसीदा और खोखली हड्डियों का ज़िन्दा करनेवाला और लोगों को मार डालनेवाला है। उसी के हुक्म से दिन चढ़ता है, रात आती है। एक निज़ाम से एक के बाद एक आता-जाता है, न सूरज चाँद से आगे निकले न रात दिन पर सबक़त करे। क्या तुम में इतनी भी अक़्ल नहीं कि इतने बड़े निशानात को देख कर अपने ख़ुदा को पहचान लो? और उसके ग़लबे और उसके इल्म के क़ायल बन जाओ। बात यह है कि उस ज़माने के काफ़िर हों या अगले ज़मानों के, दिल उनके सब यकसाँ हैं। ज़बानें भी एक ही हैं, वही बकवास जो अगलों की थी पिछलों की है कि मर कर मिट्टी हो जाने और सिर्फ़ बोसीदा हड्डियों की सूरत में बाक़ी रह जाने के बाद भी नई पैदाइश में पैदा किए जाएँ। यह समझ से बाहर है। हम से भी यही कहा गया, हमारे बाप दादाओं को भी उसी से धमकाया गया लेकिन हमने तो किसी को मर कर ज़िन्दा होते देखा नहीं, हम तो जानते हैं कि यह सिर्फ़ बकवास है। दूसरी आयत में है कि उन्होंने कहा, क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएंगे उस वक़्त भी फिर ज़िन्दा किए जाएँगे? जनाब बारी तआला ने फ़रमाया, जिसे तुम अनहोनी बात समझ रहे हो वह तो एक आवाज़ के साथ हो जाएगी और सारी दुनिया अपनी क़बरों से निकल कर एक मैदान में हमारे सामने आ जाएगी। सुरा यासीन में भी यह एतिराज़ और जवाब है कि क्या इनसान देखता नहीं कि हमने नुत्फ़े से पैदा किया। फिर वह ज़िद्दी, झगड़ालू बन बैठा और अपनी पैदाइश को भूल-बिसर गया और हम पर एतिराज़ करते हुए मिसाल देने लगा कि इन बोसीदा हड्डियों को कौन जिलाएगा? ऐ नबी! तुम इन्हें जवाब दो कि इन्हें नए सिरे से वह ख़ुदा पैदा करेगा जिसने उन्हें अव्वल बार पैदा किया है और जो हर चीज़ की पैदाइश का आलिम है।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ
قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

कुल्-लि-मनिल्-अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून।(84) स-यक़ूलू-न लिल्लाह्, क़ुल् अ-फ़ला तज़क्करून। (85) क़ुल् मर्रब्बुस्समावातिस्-सब्अि व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम। (86) स-यक़ूलू-न लिल्लाह्, क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून। (87) क़ुल् मम्-बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व हु-व युजीरु व ला युजारु अलैहि इन् कुन्तुम् तअ्लमून। (88) स-यक़ूलू-न लिल्लाह्, क़ुल् फ़-अन्ना तुस्हरून। (89)

तर्जमा : पूछिए तो सही कि ज़मीन और उसकी कुल चीज़ें किस की हैं? बतलाओ अगर जानते हो? फ़ौरन जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं हासिल करते। दरयाफ़्त कीजिए कि सातों आसमानों का और बहुत बाअज़मत अर्श का रब कौन है? वे लोग जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते? पूछिए कि तमाम चीज़ों का इख़्तियार किसके हाथ में है? जो पनाह देता है और जिसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दिया जाता, अगर तुम जानते हो तो बतला दो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए, फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो? (पारा 18, मोमिनून 84-89)

तशरीह : अल्लाह तआला जल्ल व अला अपनी वहदानियत ख़ालिक़ियत, तसर्रुफ़ और मिल्कीयत का सुबूत देता है ताकि मालूम हो जाए कि माबूदे-बरहक़ सिर्फ़ वही है, उसके सिवा किसी और की

इबादत न करनी चाहिए। वह वाहिद है और बेशरीक है, पस अपने मुहतरम रसूल (सल्ल॰) को हुक्म देता है कि आप उन मुशरिकीन से दरयाफ़्त फ़रमाएँ तो वह साफ़ लफ़्ज़ों में अल्लाह के रब होने का इक़रार करेंगे। और उसमें किसी को शरीक नहीं बतलाएँगे। आप इन्हीं के जवाब को लेकर इन्हें क़ायल-माक़ूल करें कि जब ख़ालिक़-मालिक सिर्फ़ अल्लाह है, उसके सिवा कोई नहीं, फिर माबूद भी तन्हा वही क्यों न हो? उसके साथ दूसरों की इबादत क्यों की जाए? वाक़िआ यही है कि वह अपने माबूदों को भी मख़लूक़ ख़ुदा और ममलूक ख़ुदा जानते थे लेकिन इन्हें मुक़र्रबान ख़ुदा समझ कर इस नीयत से उनकी इबादत करते थे कि वह हमें भी मुक़र्रबे-बारगाह ख़ुदा बना देंगे। पस हुक्म होता है कि ज़मीन और ज़मीन की तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ मालिक कौन है? इसकी बाबत इन मुशरिकों से सवाल करो। इनका जवाब यही होगा कि अल्लाह 'वहदहु ला शरीक लहु'। अब तुम फिर उनसे कहो कि क्या अब भी इस इक़रार के बाद भी तुम इतना नहीं समझते कि इबादत के लायक़ भी वही है क्योंकि ख़ालिक़ व राज़िक़ वही है। फिर पूछो कि इस बुलन्द व बाला आसमान का उसकी मख़लूक़ का ख़ालिक़ कौन है जो अर्श जैसी ज़बरदस्त चीज़ का रब है? जो मख़लूक़ की छत है। जैसे कि हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया है कि अल्लाह की शान बहुत बड़ी है। उसका अर्श आसमानों पर इस तरह है और आप (सल्ल॰) ने अपने हाथ से क़ुबा की तरह बनाकर बतलाया। (अबू-दाऊद)

और हदीस में है सातों आसमान सातों ज़मीन और उनकी कुल मख़लूक़ कुर्सी के मुक़ाबले पर ऐसी है जैसे किसी चटयल मैदान में कोई हलक़ा पड़ा हो। और कुर्सी अपनी तमाम चीज़ों समेत अर्श के मुक़ाबले में भी ऐसी ही है। बाज़ सल्फ़ से मनक़ूल है कि अर्श की एक जानिब से दूसरी जानिब की दूरी पचास हज़ार साल की मुसाफ़त की है। और सातवें ज़मीन से उसकी बुलन्दी पचास हज़ार साल की मुसाफ़त की है। अर्श का नाम अर्श उसकी बुलन्दी की वजह से ही है। कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैह से मरवी है कि

आसमान अर्श के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे कोई क़िन्दील आसमान व ज़मीन के दरम्यान हो। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन बमुक़ाबला अर्शे-ख़ुदावन्दी ऐसे हैं जैसे कोई छल्ला किसी वसीअ चटयल मैदान में पड़ा हो। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अर्श की क़दर व अज़मत का कोई भी बजुज़ अल्लाह तआला के सही अन्दाज़ा नहीं कर सकता, बाज़ सल्फ़ का क़ौल है कि अर्श सुर्ख़ रंग याक़ूत का है।

इब्ने-मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि तुम्हारे रब के पास रात-दिन कुछ नहीं, उसके अर्श का नूर उसके चेहरे के नूर से है। अलग़र्ज़ इस सवाल का जवाब भी वे यही देंगे कि आसमान और अर्श का रब अल्लाह तआला है तो तुम कहो कि फिर तुम उसके अज़ाबों और उसकी सज़ाओं से क्यों नहीं डरते? कि उसके साथ दूसरों की इबादतें कर रहे हो।

किताबुत्-तफ़क्कुर वल-एतिबार में इमाम अबू-बकर इब्ने अबिद्दुनिया रहमतुल्लाहि अलैह एक हदीस लाए हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) उमूमन उस हदीस को बयान फ़रमाया करते थे कि जाहिलीयत के ज़माने में एक औरत पहाड़ की चोटी पर बकरियाँ चराया करती थी, उसके साथ उसका लड़का भी था। एक मर्तबा उसने अपनी माँ से दरयाफ़्त किया कि अम्माँ जान तुम्हें किस ने पैदा किया है? उसने कहा, अल्लाह ने। कहा, मेरे वालिद को किसने पैदा किया। कहा, अल्लाह ने। पूछा, मुझे किसने पैदा किया? उसने कहा, अल्लाह ने। बच्चे ने पूछा, और उन आसमानों को? उसने कहा अल्लाह ने। पूछा और ज़मीन को? उसने जवाब दिया, अल्लाह ने। पूछा और उन पहाड़ों को अम्माँ किसने बनाया है? माँ ने जवाब दिया, उनका ख़ालिक़ भी अल्लाह तआला ही है पूछा और इन हमारी बकरियों का ख़ालिक़ कौन है? माँ ने कहा अल्लाह ही है। उसने कहा, सुब्हानल्लाह! अल्लाह अल्लाह की इतनी बड़ी शान है? बस इस क़दर अज़मत उसके दिल में अल्लाह तआला की समा गई कि

वह थर-थर काँपने लगा और पहाड़ से गिर पड़ा और जान बहक़ तसलीम कर दी। दरयाफ़्त करकि तमाम मुल्क का मालिक हर चीज़ का मुख़्तार कौन है? हुज़ूर(सल्ल॰) की क़सम उमूमन उन लफ़्ज़ों में होती थी कि उसकी क़सम जिसके हाथ मैं मेरी जान है। और जब कोई ताकीदी क़िस्म खाते तो फ़रमाते उसकी क़सम जो दिलों का मालिक और उनका फेरनेवाला है। फिर यह पूछ कि वह कौन है जो सब को पनाह दे और उसकी दी हुई पनाह को काई तोड़ न सके और उसके मुक़ाबले पर कोई पनाह दे न सके, किसी की पनाह का वह पाबन्द नहीं? यानी इतना बड़ा सैयद व मालिक कि तमाम ख़ल्क़, मुल्क, हुकूमत उसी के हाथ में है। बतलाओ वह कौन है? अरब में दस्तूर था कि सरदार क़बीला अगर किसी को पनाह दे दे तो सारा क़बीला उसका पाबन्द है। लेकिन क़बीले में से कोई किसी को अपनी पनाह में ले ले तो सरदार पर उसकी पाबन्दी नहीं। पस यहाँ ख़ुदा की अज़मत व सल्तनत बयान हो रही है कि वह क़ादिर मुतलक़ हाकिमे-कुल है, उसका इरादा कोई बदल नहीं सकता, उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता, उससे कोई बाज़पुर्स कर नहीं सकता। उसकी चाहत के बग़ैर पत्ता हिल नहीं सकता। वह सबसे बाज़पुर्स कर ले लेकिन किसी की मजाल नहीं कि उससे कोई बाज़पुर्स कर ले, किसी की मजाल नहीं कि उससे कोई सवाल कर सके। उसकी अज़मत, उसकी किबरियाई, उसका ग़लबा, उसका दबाव, उसकी क़ुदरत, उसकी इज़्ज़त, उसकी हिकमत, उसका अदल बेपायाँ और बेमिस्ल है। मख़लूक़ सब उसके सामने आजिज़, पस्त और लाचार है। रब सारी मख़लूक़ की बाज़ पुर्स करनेवाला है। इस सवाल का जवाब भी उनके पास बजुज़ उसके और नहीं कि वह इक़रार करें कि इतना बड़ा बादशाह ऐसा ख़ुदमुख़्तार अल्लाह, वाहिद ही है, कह दे कि फिर तुम पर क्या टपकी पड़ी है? ऐसा कौन-सा जादू तुम पर हो गया है कि बावजूद उस इक़रार के फिर भी दूसरों की परस्तिश करते हो। हम तो उनके सामने हक़ ला चुके, तौहीदे-रबूबियत के

साथ-साथ तौहीदे-उलूहियत बयान कर दी, सही दलीलें और साफ़ बातें पहुँचा दें और उनका ग़लतगो होना ज़ाहिर कर दिया कि ये शरीक बनाने में झूठे हैं और उनका झूठ ख़ुद उनके इक़रार से ज़ाहिर व बाहर है जैसे कि सूरत के आख़िर में फ़रमाया कि ख़ुदा के सिवा दूसरों के पुकारने की कोई सनद नहीं। सिर्फ़ बाप-दादों की तक़लीद पर अड़े और यही वे कहते भी थे कि हमने अपने बुज़ुर्गों को उसी पर पाया और हम उनकी तक़लीद नहीं छोड़ेंगे।

﴾138﴿

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ
الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾

अ-फ़-हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ-बसंव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जऊन। (115) फ़-तआलल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु, ला इला-ह इल्ला हु, रब्बुल् अर्शिल्-करीम। (116)

तर्जमा : क्या तुम ये गुमान किए हुए हो कि हमने तुम्हें यूँ ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौटाए ही न जाओगे। अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह बड़ी बुलन्दीवाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही बुज़ुर्ग अर्श का मालिक है।

(पारा 18, मोमिनून 115-116)

तशरीह : रसूलुल्लाह (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि जब जन्नती और दोज़ख़ी अपनी-अपनी जगह पहुँच जाएँगे तो जनाबे-बारी अज़्ज़ व जल्ल मोमिनीन से पूछेगा कि तुम दुनिया में कितनी मुद्दत रहे? वे कहेंगे यही कोई एक-आध दिन। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, फिर तो तुम बहुत ही अच्छे रहे कि इतनी सी देर की नेकियों का यह बदला पाया कि मेरी रहमत, रज़ामन्दी और जन्नत हासिल कर ली, जहाँ हमेशगी है। फिर जहन्नमियों से यही सवाल होगा, वे भी इतनी ही मुद्दत बतलाएँगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा तुम्हारी तिजारत बड़ी घाटेवाली कि इतनी-सी मुद्दत में तुमने मेरी नाराज़गी, ग़ुस्सा

और जहन्नम ख़रीद लिया जहाँ तुम हमेशा पड़े रहोगे। क्या तुम लोग ये समझे हुए हो कि तुम बेकार, बेक़सद व इरादा पैदा किए गए हो? कोई हिकमत तुम्हारी पैदाइश में नहीं? महज़ खेल के तौर पर तुम्हें पैदा कर दिया गया है कि मिस्ल जानवरों के तुम उछलते-कूदते फिरो? सवाब व अज़ाब के मुस्तहिक़ न हो? यह गुमान ग़लत है, तुम इबादत के लिए, अल्लाह तआला के हुक्मों की बजाआवरी के लिए पैदा किए गए हो। क्या तुम यह ख़याल करके निश्चिन्त हो गए हो कि तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना ही नहीं? यह भी ग़लत ख़याल है। जैसे फ़रमाया, 'अयहसबुल इनसानु अंयुतर-क सुदा' क्या लोग यह गुमान करते हैं कि वे मुहमिल छोड़ दिए जाएँगे? अल्लाह की ज़ात उससे बुलन्द व बरतर है कि वह कोई अबस काम करे, बेकार बनाए-बिगाड़े, वह सच्चा बादशाह उससे पाक है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्शे-अज़ीम का मालिक है जो तमाम मख़लूक़ पर मिस्ल छत के छाया हुआ है, वह बहुत भला और बहुत उमदा है, ख़ुश शक्ल और नेक-मंज़र है जैसे फ़रमान है, ज़मीन में हमने हर भली जोड़ को पैदा कर दिया है। ख़लीफ़तुल मुसलिमीन अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर-बिन-अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद फ़रमाया कि लोगो तुम बेकार और अबस पैदा नहीं किए गए और तुम मोहमिल नहीं छोड़ दिए गए, याद रखो वादे का एक दिन है जिसमें ख़ुद ख़ुदाए तआला फ़ैसले करने और हुक्म फ़रमाने के लिए नाज़िल होगा। वह नुक़्सान में पड़ा, उसने ख़सारा उठाया, वह बेनसीब और बद बख़्त हो गया वह महरूम और ख़ाली हाथ रहा जो ख़ुदा की रहमत से दूर हो गया और जन्नत से रोक दिया गया, जिसकी चौड़ाई मिस्ल कुल ज़मीनों और आसमानों के है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि क़ियामत के दिन वह अज़ाबे-ख़ुदा से बच जाएगा जिसके दिल में उस दिन का ख़ौफ़ आज है और जो उस फ़ानी दुनिया को उस बाक़ी आख़िरत पर क़ुरबान कर रहा है। उस थोड़े को उस बहुत के हासिल करने के लिए बेतकान ख़र्च कर रहा है।

और अपने उस ख़ौफ़ को अमन से बदलने के अस्बाब मुहैया कर रहा है। क्या तुम नहीं देखते कि तुमसे अगले हलाक हुए जिनके क़ायम-मक़ाम अब तुम हो उसी तरह तुम भी मिटा दिए जाओगे और तुम्हारे बदले आइन्दा आनेवाले आएँगे। यहाँ तक कि एक वक़्त आएगा कि सारी दुनिया समेट कर उस ख़ैरुलवारिसीन के दरबार में हाज़िरी देगी, लोगो, ख़याल तो करो कि तुम दिन-रात अपनी मौत से क़रीब हो रहे है और अपने क़दमों, अपनी गोर की तरफ़ जा रहे हो, तुम्हारे फल पक रहे हैं, तुम्हारी उम्मीदें ख़त्म हो रही हैं। तुम्हारी उम्रें पूरी हो रही हैं। तुम्हारी अजल नज़दीक आ गई है। तुम ज़मीन के गढ़ों में दफ़न कर दिए जाओगे जहाँ न कोई बिस्तर होगा न तकिया, दोस्त अहबाब छूट जाएँगे हिसाब किताब शुरू हो जाएगा। आमाल सामने आ जाएँगे, जो छोड़ आए हो वह दूसरों का हो जाएगा, जो आगे भेज चुके उसे सामने पाओगे, नेकियों के मुहताज होगे। बदियों की सज़ाएँ भुगतोगे। ऐ अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से डरो, उसकी बातें सामने आ जाएँ उससे पहले मौत तुम को उचक ले जाए, उससे पहले जवाबदही के लिए तैयार हो जाओ। इतना कहा था जो रोने के ग़लबे ने आवाज़ बुलन्द कर दी। मुँह पर चादर का कोना डालकर रोने लगे और हाज़िरीन की भी आह-वज़ारी शुरू हो गई।

इब्ने-अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु के पास आया तो आपने 'अ-फ़-हसिबतुम' से सूरत के ख़त्म तक की आयतें उसके कान में तिलावत फ़रमाई। वह अच्छा हो गया, जब नबी (सल्ल॰) से उसका ज़िक्र आया तो आप ने फ़रमाया, अब्दुल्लाह तुमने उसके कान में क्या पढ़ा था? आपने बतला दिया, तो हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया तुमने ये आयतें इसके कान में पढ़कर इसे जिला दिया। वल्लाह इन आयतों को अगर कोई बाईमान बिलयक़ीन शख़्स किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाए। अबू-नुएम रहमतुल्लाहि अलैह ने रिवायत नक़ल की है कि हमें रसूल करीम (सल्ल॰) ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुब्ह व

शाम 'अ-फ़-हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़नाकुम अबसंव व इन्नकुम इलैना ला तुरजऊन' पढ़ते रहें। हमने बराबर इसकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी, अलहम्दुलिल्लाह! हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे। हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं, मेरी उम्मत का डूबने से बचाव कश्तियों में सवार होने के वक़्त यह कहना है।

'बिस्मिल्लाहिल मलिकुल हक़ व मा क़दरुल्लाहि हक़्क़ क़दरिही वल-अर्ज़ जमीअंव क़ब्ज़तत यौमल क़ियामति वस्समावाति मुतवैतुन बियमीनिही सुब्हानहु तआला अम्मा युशरिकून। बिस्मिल्लाहि मजरेहा व मुरसाहा इन्ना रब्बी ल-ग़ुफ़ुरुर्रहीम'

﴾139﴿

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

व मंय्यद्अु मअल्लाहि इलाहन् आख़-र ला बुर्हा-न लहू बिही फ़-इन्नमा हिसाबुहू अिन्-द रब्बिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून। (117) व क़ुर्रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्-त ख़ैरुर्- राहिमीन। (118)

तर्जमा : जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को पुकारे जिसकी कोई दलील उसके पास नहीं, पस उसका हिसाब तो उसके रब के ऊपर ही है। बेशक काफ़िर लोग नजात से महरूम हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब, तू बख़्श और रहम कर और तू सब मेहरबानों से बेहतर मेहरबानी करनेवाला है।

(पारा 18, मोमिनून 117-118)

तशरीह : मुशरिकीन को ख़ुदाए-वाहिद डरा रहा है और बयान फ़रमा रहा है कि उनके पास उनके शिर्क की कोई दलील नहीं, यानी उसका हिसाब अल्लाह के वहाँ है, काफ़िर उसके पास कामयाब नहीं हो सकता। वे नजात से महरूम रह जाते हैं। एक शख़्स से

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू किस-किस को पूजता है? उसने कहा, अल्लाह को और फ़लाँ-फ़लाँ को। आपने दरयाफ़्त किया कि उनमें से ऐसा किसे जानता है कि तेरी मुसीबतों में तुझे काम आए? उसने कहा, सिर्फ़ अल्लाह तआला जल्ले-शानुहु को। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, जब काम आनेवाला अल्लाह ही है तो फिर उसके साथ उन दूसरों की इबादत की क्या ज़रूरत? क्या तेरा ख़्याल है कि वह सिर्फ़ तुझे काफ़ी न होगा? उसने कहा, यह तो नहीं कह सकता अलबत्ता इरादा यह है कि औरों की इबादत करके उसका पूरा शुक्र बजा ला सकूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! इल्म के साथ यह बेइल्मी? जानते हो और फिर अनजान बने जाते हो। अब कोई जो अब बन न पड़ा, चुनांचे वह मुसलमान हो जाने के बाद कहा करते थे कि मुझे हुज़ूर (सल्ल०) ने क़ायल कर दिया। फिर एक दुआ तालीम फ़रमाई गई।

﴾140﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَٰٓفّٰتٍ ۖ كُلٌّ
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ात्, कुल्लुन् क़द् अलि-म सला-तहू व तस्बी-हहू, वल्लाहु अलीमुम् बिमा यफ़्अलून। (41) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़, व इलल्लाहिल्-मसीर।(42)

तर्जमा : क्या आपने नहीं देखा कि आसमानों और ज़मीन की कुल मख़लूक़ और पर फैलाए उड़नेवाले कुल परिन्द अल्लाह की तस्बीह में मशग़ूल हैं। हर एक की नमाज़ और तस्बीह उसे मालूम है। लोग जो कुछ करें उससे अल्लाह बख़ूबी वाक़िफ़ है। और ज़मीन

व आसमान की बादशाहत अल्लाह ही की है और अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौटना है। (पारा 18, नूर 41-42)

तशरीह : कुल के कुल इनसान और जिन्नात और फ़रिश्ते और हैवान यहाँ तक कि जमादात भी अल्लाह की तस्बीह के बयान में मशग़ूल हैं। और मक़ाम पर है कि सातों आसमान और सब ज़मीनें और उनमें जो हैं सब अल्लाह तआला की पाकीज़गी के बयान में मशग़ूल हैं। अपने परों से उड़नेवाले परिन्द भी अपने रब तआला की इबादत और पाकीज़गी के बयान में हैं। उन सबको जो-जो तस्बीह लायक़ थी ख़ुदा तआला ने उन्हें सिखा दी है। सबको अपनी इबादत के मुख़्तलिफ़ जुदागाना तरीक़े सिखा दिए हैं। और ख़ुदा तआला पर कोई काम मख़फ़ी नहीं, वह आलिमे-कुल है। हाकिम मुतसर्रिफ़, मालिक मुख़्तारे-कुल, माबूदे-हक़ीक़ी, आसमान व ज़मीन का बादशाह सिर्फ़ वही है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसके हुक्मों को कोई टालनेवाला नहीं। क़ियामत के दिन सबको उसी के सामने हाज़िर होना है, वह जो चाहेगा अपनी मख़लूक़ात में हुक्म फ़रमाएगा। बुरे लोग बदले पाएँगे, नेक नेकियों का फल हासिल करेंगे। ख़ालिक़-मालिक वही है। दुनिया और आख़िरत का हाकिम वही है और उसी की ज़ात लायक़े-हम्द व सना है।

﴾141﴿

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युज़्जी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अलुहू रुकामन् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु

मिन् ख़िलालिह्, व युनज़्ज़िलु मिनस्समा-इ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशा-उ व यस्रिफ़ुहू अम्-मंय्यशा-उ, यकादु सना बऱ्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार।(43) युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लअिब्-रतल्- लिउलिल्-अब्सार। (44)

तर्जमा : क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह तआला बादलों को चलाता है फिर उनहें मिलाता है फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर आप देखते हैं कि उनके दरमियान में से मेंह बरसाता है। फिर जिन्हें चाहे उनके पास उन्हें बरसाए और जिनसे चाहे उनसे उन्हें हटा दे। बादल ही से निकलनेवाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि गोया अब आँखों की रौशनी ले चली, अल्लाह तआला ही दिन और रात को रद्दो-बदल करता रहता है। आँखोंवालों के लिए तो उसमें यक़ीनन बड़ी-बड़ी इबरतें हैं। (पारा 18, नूर 43-44)

तशरीह : पतले धुएँ जैसे बादल अव्वल तो ख़ुदा तआला की क़ुदरत से उठते हैं फिर मिल-जुलकर वे जसीम हो जाते हैं। और एक दूसरे के ऊपर जम जाते हैं, फिर उनमें से बारिश बरसती है, हवाएँ चलती हैं। ज़मीन को क़ाबिल बनाती हैं। फिर अब्र को उठाती हैं फिर उन्हें मिलाती हैं फिर वे पानी से भर जाते हैं फिर बरस पड़ते हैं। फिर आसमान से ओलों के बरसाने का ज़िक्र है कि आयत के मानी ये किए जाएँगे, ओलों के पहाड़ आसमान पर हैं। इसके बाद के जुमले का यह मतलब है कि बारिश और ओले जहाँ नहीं चाहते नहीं जाते। या यह मतलब है कि ओलों से जिनकी चाहे खेतियाँ और बाग़ात ख़राब कर देता है और जिन पर मेहरबानी फ़रमाए उन्हें बचा लेता है। फिर बिजली की चमक की क़ुव्वत बयान हो रही है कि क़रीब है वह आँखों की रौशनी खो दे। दिन-रात का तसर्रुफ़ भी उसी के क़ब्ज़े में है, जब चाहता है दिन को छोटा और रात बड़ी कर देता है। और जब चाहता है रात छोटी करके दिन को बड़ा कर देता है। ये तमाम निशानियाँ हैं जो क़ुदरते क़ादिर को ज़ाहिर करती हैं। ख़ुदा तआला की अज़मत को आशकारा करती हैं। जैसे फ़रमान है

कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश, रात-दिन के इख़्तिलाफ़ में अक़लमन्दों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

﴾142﴿

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾

वल्लाहु .ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम्-मिम्-माइन्, फ़-मिन्हुम्-मंय्यम्शी अला बत्निही, व मिन्हुम् मंय्यम्शी अला रिज्लैन, व मिन्हुम् मंय्यम्शी अला अर्-बअ्, यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (45)

तर्जमा : तमाम के तमाम चलने-फिरने वाले जानदारों को अल्लाह तआला ही ने पानी से पैदा किया है, उनमें से बाज़ तो अपने पेट के बल चलते हैं। बाज़ दो पावँ पर चलते हैं। बाज़ चार पावँ पर चलते हैं। अल्लाह तआला जो चाहता है पैदा करता है। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (पारा 18, नूर 45)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी कामिल क़ुदरत और ज़बरदस्त सल्तनत का बयान फ़रमाता है कि उसने एक ही पानी से तरह-तरह की मख़लूक़ पैदा कर दी है। साँप वग़ैरह को देखो जो अपने पेट के बल चलते हैं। इनसान और परिन्द को देखो, उनके दो पावँ होते हैं जिन पर चलते हैं, हैवानों और चौपाओं को देखो, वे चार पावँ पर चलते हैं। वह बड़ा क़ादिर है। जो चाहता है हो जाता है। जो नहीं चाहता हरगिज़ नहीं हो सकता, वह क़ादिरे-कुल है।

﴾143﴿

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾

ल-क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-मुबय्यिनात, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम। (46)

तर्जमा : बिला शक व शुब्हा हमने रौशन और वाज़ेह आयतें उतार दी हैं, अल्लाह तआला जिसे चाहे सीधी राह दिखा देता है।

(पारा 18, नूर 46)

तशरीह : ये हिकमत भरे एहकाम, ये रौशन मिसालें इस कुरआन करीम में अल्लाह तआला ही ने बयान फ़रमाई हैं। अक़्लमन्दों को इनके समझने की तौफ़ीक़ दी है। रब तआला जिसे चाहे अपनी सीधी राह पर लगाए।

﴾144﴿

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَاۙ ① الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ②

तबा-रकल्लज़ी नज़्ज़-लल्-फ़ुर्क़ा-न अला अब्दिही लि-यकू-न लिल्आलमी-न नज़ीरा। (1) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्-मुल्कि व .ख-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द्-रहू तक़्दीरा।(2)

तर्जमा : बहुत बाबरकत है वह अल्लाह तआला जिसने अपने बन्दे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह तमाम लोगों के लिए आगाह करनेवाला बन जाए। उसी अल्लाह की सल्तनत है आसमानों और ज़मीन की और वह कोई औलाद नहीं रखता, न उसकी सल्तनत में कोई उसका साझी है। और हर चीज़ को उसने पैदा करके एक मुनासिब अन्दाज़ा ठहरा दिया है। (पारा 18, फ़ुरक़ान 1-2)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी रहमत का बयान फ़रमाता है ताकि लोगों पर उसकी बुज़ुर्गी अयाँ हो जाए कि उसने इस पाक कलाम को अपने बन्दे हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर नाज़िल फ़रमाया है। सूरह कहफ़ के शुरू में भी अपनी हम्द व वस्फ़ बयान किया। यहाँ लफ़्ज़ 'नज़्ज़-ल' फ़रमाया जिससे बार-बार बकसरत उतरना साबित होता है। जैसे फ़रमान है :-

'वलकिताबल्लज़ी नज़्ज़-ल अला रसूलिही वल किताबल्लज़ी उन्ज़ि-ल मिन क़ब्लु'

पस पहली किताबों को लफ़्ज़ अंज़ला से और इस आख़िरी किताब को लफ़्ज़ 'नज़्ज़-ल' से बयान फ़रमाना इसी लिए है कि पहली किताब एक साथ उतरती रहीं और क़ुरआन करीम थोड़ा-थोड़ा करके हस्बे-ज़रूरत उतारता रहा। कभी कुछ आयतें कभी, कुछ सूरतें कभी कुछ अहकाम, इसमें एक बहुत बड़ी हिकमत यह भी थी कि लोगों को इस पर अमल मुश्किल न हो और ख़ूब याद हो जाए और मान लेने के लिए दिल खुल जाए। जैसे कि इसी सूरत में फ़रमाया है कि काफ़िरों का एक एतिराज़ यह भी है कि क़ुरआन करीम इस नबी (सल्ल०) पर एक साथ क्यों न उतरा। जवाब दिया गया है कि इस तरह इसलिए उतरा कि तेरी दिलबस्तगी रहे। और हमने ठहरा-ठहराकर नाज़िल फ़रमाया। ये जो भी बात बनाएँगे हम उसका सही और जँचा तुला जवाब देंगे। जो ख़ूब तफ़सीलवाला होगा। यही वजह है कि यहाँ इस आयत में इसका नाम फ़ुरक़ान रखा। इसलिए कि यह हक़ व बातिल में, हिदायत व गुमराही में फ़र्क़ करनेवाला है। इससे भलाई बुराई में, हलाल व हराम में तमीज़ होती है। क़ुरआन करीम की यह पाक सिफ़त बयान फ़रमा कर जिस पर क़ुरआन उतरा उनकी एक पाक सिफ़त बयान की गई है कि वे ख़ास उसकी इबादत में लगे रहनेवाले हैं। उसके मुख़लिस बन्दे हैं। यह वस्फ़ सबसे आला वस्फ़ है। उसी लिए बड़ी-बड़ी नेमतों के बयान के मौक़े पर आँहज़रत (सल्ल०) का यही वस्फ़ बयान फ़रमाया गया है। जैसे मेराज के मौक़े पर फ़रमाया, सुब्हानल्लज़ी असरा बिअब्दिही और जब बन्दए-ख़ुदा तआला यानी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा तआला की इबादत करने खड़े होते हैं। यही वस्फ़ क़ुरआन करीम के उतरने और आप (सल्ल०) के पास बुज़ुर्ग फ़रिश्ते के आने के इकराम के बयान के मौक़े पर बयान फ़रमाया। फिर इरशाद हुआ कि इस पाक किताब का आप (सल्ल०) की तरफ़ उतरना इसलिए है कि आप

(सल्ल॰) तमाम जहान के लिए आगाह करनेवाले बन जाएँ। ऐसी किताब जो सरासर हिकमत व हिदायत वाली है, जो मुफ़स्सल, मुअज़्ज़म मुबीन और मुहकम है। जिसके आस-पास भी बातिल फटक नहीं सकता। जो हकीम व हमीद ख़ुदा तआला की तरफ़ से उतारी हुई है। आप (सल्ल॰) उसकी तबलीग़ दुनिया भर में कर दें। हर सुर्ख़ व सफ़ेद को, हर दूर व नज़दीक वाले को, ख़ुदा तआला के अज़ाबों से डरा दें। जो भी आसमान के नीचे और ज़मीन के ऊपर है उसकी तरफ़ आप (सल्ल॰) की रिसालत है जैसे कि ख़ुद हुज़ूर (सल्ल॰) का फ़रमान है कि मैं तमाम सुर्ख़ व सफ़ेद इनसानों की तरफ़ भेजा गया हूँ और फ़रमान है कि मुझे पाँच बातें ऐसी दी गईं हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गई थीं, इनमें से एक यह है कि हर नबी अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा है। लेकिन मैं तमाम दुनिया की तरफ़ भेजा गया हूँ। ख़ुद क़ुरआन में है, ऐ नबी! ऐलान कर दो कि ऐ दुनिया के लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ ख़ुदा तआला का पैग़म्बर हूँ। फिर फ़रमाया कि मुझे रसूल बनाकर भेजनेवाला मुझ पर यह पाक किताब उतारनेवाला वह ख़ुदा तआला है जो आसमान व ज़मीन का तन्हा मालिक है, जो जिस काम को करना चाहे उसे कह देता है कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाता है, वही मारता और जिलाता है, उसकी कोई औलाद नहीं, न उसका कोई शरीक है, हर चीज़ उसी की मख़लूक़ और उसी के ज़ेरे-परवरिश है, सबका ख़ालिक़, मालिक, राज़िक़, माबूद, रब वही है। हर चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर करनेवाला और तदबीर करनेवाला वही है।

﴾145﴿

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝

वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतल्-ला यख़्लुक़ू-न शैअंव् व

हुम् युख्लकू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव्-व ला हयातंव्-व ला नुशूरा। (३)

तर्जमा : इन लोगों ने अल्लाह के सिवा जिन्हें अपने माबूद ठहरा रखे हैं वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं, ये तो अपनी जान के नुक़सान नफ़े का भी इख़्तियार नहीं रखते, और न मौत व हयात के और न दोबारा जी उठने के वे मालिक हैं।

(पारा 18, फ़ुरक़ान ३)

तशरीह : मुशरिकों की जिहालत बयान हो रही है कि वह ख़ालिक़-मालिक, क़ादिर-मुख़्तार बादशाह को छोड़कर उनकी इबादतें करते हैं जो एक मच्छर का पर भी नहीं बना सकते बल्कि वे ख़ुद ख़ुदा तआला के बनाए हुए और उसी के पैदा किए हुए हैं। वे अपने तईं भी किसी नफ़े-नुक़सान के पहुँचाने के मालिक नहीं, चे जाए कि दूसरे का भला कर दें। या दूसरे का नुक़सान कर दें या दूसरी कोई बात कर सकें। वह अपनी मौत ज़ीस्त का या दोबारा जी उठने का भी इख़्तियार नहीं रखते, फिर अपनी इबादत करनेवालों की उन चीज़ों के मालिक वे कैसे हो जाएँगे? बात यही है कि इन तमाम कामों का मालिक अल्लाह तआला ही है। वही जिलाता और मारता है, वही अपनी तमाम मख़लूक़ को क़ियामत के दिन नए सिरे से पैदा करेगा। उस पर यह काम मुश्किल नहीं। एक का पैदा करना और सबको पैदा करना, एक को मौत के बाद ज़िन्दा करना और सबको करना उस पर यकसाँ और बराबर है। एक आँख झपकाने में उसका हुक्म पूरा हो जाता है। सिर्फ़ एक आवाज़ के साथ तमाम मरी हुई मख़लूक़ ज़िन्दा होकर उसके सामने एक चटियल मैदान में खड़ी हो जाएगी। और आयत में फ़रमाया है, सिर्फ़ एक दफ़ा की एक आवाज़ होगी कि सारी मख़लूक़ हमारे सामने हाज़िर हो जाएगी। वही माबूदे-बरहक़ है। उसके सिवा न कोई रब तआला है, न लायक़े-इबादत है। उसका चाहा हुआ होता है, बे उसके चाहे कुछ भी नहीं होता। वह माँ-बाप से, लड़की लड़कों से, अदील व बदील

से, वज़ीर व नज़ीर से, शरीक व सहीम से पाक है। वह अहद व समद है, वह 'लम यलिद वलम यूलद' है, उसका कुफ़ू कोई नहीं।

﴾146﴿

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

अलम् त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-ल, व लौ शा-अ ल-ज-अ-लहू साकिना, सुम्-म जअल्नश्शम्-स अलैहि दलीला। (45) सुम्-म क़बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा। (46) व हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्-वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अलन्नहा-र नुशूरा। (47)

तर्जमा : क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने साए को किस तरह फैला दिया है? अगर चाहता तो उसे ठहरा हुआ ही कर देता। फिर हमने आफ़ताब को उस पर दलील बनाया, फिर हमने उसे आहिस्ता-आहिस्ता अपनी तरफ़ खींच लिया, और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए परदा बनाया और नींद को राहत बनाई और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त। (पारा 19, फ़ुरक़ान 45-47)

तशरीह : अल्लाह तआला के वुजूद और उसकी क़ुदरत पर दलीलें बयान हो रही हैं कि मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद चीज़ों को वह पैदा कर रहा है। साये को वह बढ़ाता है। कहते हैं कि यह वक़्त सुब्ह सादिक़ से लेकर सूरज के निकलने तक का है, अगर वह चाहता तो उसे एक ही हालत पर रख देता। जैसे फ़रमान है कि अगर वह रात ही रात रखे तो कोई दिन नहीं कर सकता। और अगर दिन ही दिन करे तो कोई रात नहीं ला सकता। अगर सूरज न निकलता तो साये का हाल ही न मालूम होता। हर चीज़ अपनी ज़िद से पहचानी जाती है। साये के पीछे धूप, धूप के पीछे साया, यह भी क़ुदरत का इन्तिज़ाम है। फिर सहज-सहज हम उसे यानी साये को

या सूरज को अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। एक घटता जाता है। दूसरा बढ़ता जाता है और यह इनक़िलाब सुरअत से होता जाता है। कोई जगह सायेदार बाक़ी नहीं रहती, सिर्फ़ घरों के छप्परों के और दरख़्तों के नीचे साया रह जाता है और उनके भी ऊपर धूप खिली हुई होती है। आहिस्ता-आहिस्ता थोड़ा करके हम उसे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। उसी ने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया है कि वह तुम्हारे वुजूद पर छा जाती है और उसे ढाँप लेती है। जैसे फ़रमान है, क़सम है रात की जब कि ढाँप ले। उसी ने नींद को सबबे-राहत व सुकून बनाया है कि उस वक़्त हरकत मौक़ूफ़ हो जाती है। और दिन भर के काम-काज से जो थकन चढ़ गई थी वह उस आराम से उतर जाती है। बदन को और रूह को राहत हासिल हो जाती है। फिर दिन को उठ खड़े होते हो, फैल जाते हो और रोज़ी की तलाश में लग जाते हो, जैसे फ़रमान है कि उसने अपनी रहमत से रात-दिन मुक़र्रर कर दिया है कि तुम सुकून व आराम भी हासिल कर लो और अपनी रोज़ियाँ भी तलाश कर लो।

﴾147﴿

وَهُوَ الَّذِيٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً طَهُوْرًا ﴿48﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ
كَثِيْرًا ﴿49﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا
كُفُوْرًا ﴿50﴾

व हुवल्लज़ी अर्-सलर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही, व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् तहूरा। (48) लिनुह्यि-य बिही बल्द-तम् मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा .ख़लक़्ना अन्आमंव्-व अनासिय्-य कसीरा। (49) व ल-क़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू; फ़-अबा अक्स-रुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा। (50)

तर्जमा : और वही है जो बाराने-रहमत से पहले ख़ुशख़बरी

देनेवाली हवाओं को भेजता है, और हम आसमान से पाक पानी बरसाते हैं ताकि उसके ज़रिए से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और उसे हम अपनी मख़लूक़ात में से बहुत से चौपायों और इनसानों को पिलाते हैं और बेशक हमने उसे इनके दरम्यान तरह-तरह से बयान किया ताकि वे नसीहत हासिल करें, मगर फिर भी अक्सर लोगों ने सिवाय नाशुकरी के माना नहीं। (पारा 19, फ़ुरक़ान 48-50)

तशरीह : अल्लाह तआला अपनी एक और क़ुदरत बयान फ़रमा रहा है कि वह बारिश से पहले बारिश की ख़ुशख़बरी देनेवाली हवाएँ चलाता है। इन हवाओं में रब तआला ने बहुत से ख़वास रखे हैं। बाज़ बादलों को परागन्दा कर देती हैं, बाज़ उन्हें उठाती हैं, बाज़ इन्हें ले चलती हैं, बाज़ ख़ुनक और भीगी हुई चल कर लोगों को बाराने-रहमत की तरफ़ मुतवज्जेह कर देती हैं, बाज़ इससे पहले ज़मीन को तैयार कर देती हैं। बाज़ बादलों को पानी से भर देती हैं। और इन्हें बोझल कर देती हैं। आसमान से हम पाक-साफ़ पानी बरसाते हैं कि वह पाकीज़गी का आला बने। हज़रत साबित बनानी रहमतुल्लाहि अलैह का बयान है कि मैं हज़रत अबूल-आलिया रहमतुल्लाहि अलैह के साथ बारिश के ज़माने में निकला। बसरा के रास्ते उस वक़्त बड़े गन्दे हो रहे थे। आपने ऐसे रास्ते पर नमाज़ अदा की, मैंने आपको तवज्जोह दिलाई तो आपने फ़रमाया, उसे आसमान के पाक पानी ने पाक कर दिया। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हम आसमान से पाक पानी बरसाते हैं। हज़रत सईद-बिन-मुसैयिब रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने उसे पाक उतारा है, उसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती।

हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा गया कि बीरे-बज़ाआ से वुज़ू कर लें? यह एक कुँवाँ है जिसमें गन्दगी और कुत्तों के गोश्त फेंके जाते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया पानी पाक है उसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती।

अब्दुल मलिक-बिन मरवान के दरबार में एक मरतबा पानी का

ज़िक्र छिड़ा तो ख़ालिद-बिन-यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैह ने कहा, बाज़ पानी आसमान के होते हैं। बाज़ पानी वह होता है जिसे अब्र समुन्दर से पीता है और उसे गरज कड़क और बिजली मीठा कर देती है। लेकिन उससे ज़मीन में पैदावार नहीं होती, हाँ आसमानी पानी से पैदावार उगती है। इकरिमा रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि आसमान के पानी के हर क़तरे से चारा-घास वग़ैरह पैदा होता है। या समन्दर में लुअ्-लुअ् और मोती पैदा होते हैं। यानी ज़मीन में गेहूँ और समुन्दर में मोती। फिर फ़रमाया कि उसी से हम ग़ैर आबाद बंजर ख़ुश्क ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं, वह लहलहाने लगती है, और तरोताज़ा हो जाती है जैसे फ़रमान है, 'फ़-इज़ा अंज़लना अलैहल माअहतज़्ज़त व रबत....' अलावा मुर्दा ज़मीन के ज़िन्दा हो जाने के ये पानी हैवानों और इनसानों के पीने में आता है। उनके खेतों और बाग़ात को पिलाया जाता है जैसे फ़रमान है कि वह ख़ुदा तआला वही है जो लोगों की कामिल नाउम्मीदी के बाद इन पर बारिशें बरसाता है और आयत में है कि ख़ुदा तआला के आसारे-रहमत को देखो कि किस तरह मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है। फिर फ़रमाता है, साथ ही मेरी क़ुदरत का एक नज़ारा यह भी देखो कि अब्र उठता है, गरजता है लेकिन जहाँ-जहाँ मैं चाहता हूँ बरसता है, इसमें भी हिकमत व हुज्जत है। इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि कोई साल से किसी साल कम व बेश बारिश का नहीं लेकिन अल्लाह तआला जहाँ चाहे बरसाए, जहाँ से चाहे फेर ले। पस चाहिए था कि इन निशानात को देख कर ख़ुदा तआला की इन ज़बरदस्त हिकमतों को और क़ुदरतों को सामने रख कर इस बात को भी मान लेते कि बेशक हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे और यह भी जान लेते कि बारिशें हमारे गुनाहों की शामत से बन्द कर ली जाती हैं तो हम गुनाह छोड़ दें लेकिन इन लोगों ने ऐसा न किया बल्कि हमारी नेमतों पर और नाशुक्री की।

एक हदीस इब्ने-अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं बादल की निस्बत कुछ

पूछना चाहता हूँ। हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, बादलों पर जो फ़रिश्ता मुक़र्रर है वह यह है कि आप (सल्ल॰) इनसे जो चाहें दरयाफ़्त फ़रमा लें। उसने कहा, या रसूलुल्लाह! हमारे पास तो ख़ुदा तआला का हुक्म आता है कि फ़लाँ-फ़लाँ शहर में इतने-इतने क़तरे बरसाओ, हम तामीले-इरशाद कर देते हैं। बारिश जैसी नेमत के वक़्त अक्सर लोगों के कुफ़्र का एक तरीक़ा यह भी है कि वे कहते हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ सितारे की वजह से ये बारिश बरसाए गए। चुनांचे सही हदीस में है कि एक मरतबा बारिश बरस चुकने के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया, लोगो जानते हो तुम्हारे रब तआला ने क्या फ़रमाया? उन्होंने कहा, अल्लाह तआला और उसका रसूल ख़ूब जाननेवाला है। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, सुनो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे बन्दों में से बहुत-से मेरे साथ मोमिन हो गए और बहुत-से काफ़िर हो गए। जिन्होंने कहा कि सिर्फ़ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से यह बारिश हम पर बरसी है वह तो मेरे साथ ईमान रखनेवाले और सितारों से कुफ़्र करनेवाले हुए और जिन्होंने कहा कि हम पर फ़लाँ-फ़लाँ तारे के असर से पानी बरसाया गया वह मेरे साथ काफ़िर हुए और तारों के साथ मोमिन हुए।

﴾148﴿

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِينَ وَجَاهِدْهُم بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

व लौ शिअ्ना ल-बअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्-यतिन्-नज़ीरा।(51) फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा। (52) व हुवल्लज़ी म-रजल्-बह्रैनि हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन्, व ज-अ-ल बैनहुमा बर्-ज़ख़ंव्-व हिज्रम्-मह्जूरा। (53) व हुवल्लज़ी

.ख-ल-क़ मिनल्-मा-इ ब-शरन् फ़-ज-अ-लहू न-सबंव्-व् सिह्रा, व का-न रब्बु-क क़दीरा। (54)

तर्जमा : अगर हम चाहते तो हर हर बस्ती में एक डरानेवाला भेज देते। पस आप काफ़िरों का कहना न मानें और क़ुरआन के ज़रिए इनसे पूरी ताक़त से बड़ा जिहाद करें। और वही है जिसने दो समुन्दर आपस में मिला रखे हैं, यह है मीठा और मज़ेदार और यह है खारी कड़वा, और इन दोनों के दरम्यान एक हिजाब और मज़बूत ओट कर दी। वह वह है जिसने पानी से इनसान को पैदा किया, फिर उसे नसब वाला और ससुराली रिश्तोंवाला कर दिया। बिला शुब्हा आप का परवरदिगार (हर चीज़ पर) क़ादिर है।

(पारा 19, फ़ुरक़ान 51-54)

तशरीह : अगर रब तआला चाहता तो हर-हर बस्ती में एक-एक नबी भेज देता। लेकिन उसने तमाम दुनिया की तरफ़ सिर्फ़ एक ही नबी भेजा है। और फिर उसे हुक्म दे दिया है कि इस क़ुरआन का वाज़ सबको सुना दे। जैसे फ़रमान है कि मैं इस क़ुरआन से तुम्हें और जिस-जिस को यह पहुँचे होशयार कर दूँ। और उन तमाम जमाअतों में से जो भी उससे कुफ़्र करे उसके वादे की जगह जहन्नम है और फ़रमान है कि तू मक्कावालों को और चौतरफ़ के लोगों को आगाह कर दे, और आयत में है कि ऐ नबी! आप (सल्ल०) कह दीजिए कि ऐ तमाम लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ रसूलुल्लाह बन कर आया हूँ।

सहीहैन की हदीस में है कि मैं सुर्ख़ व स्याह सबकी तरफ़ भेजा गया हूँ। बुख़ारी व मुस्लिम की और हदीस में है कि तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते रहे और मैं आम लोगों की तरफ़ मबऊस किया गया हूँ। फिर फ़रमाया, काफ़िरों का कहना न मानना और इस क़ुरआन के साथ इनसे बहुत बड़ा जिहाद करना। जैसे इरशाद है कि 'ऐ नबी! काफ़िरों से और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करते रहो।' उसी रब तआला ने पानी को दो तरह का कर दिया है, मीठा और खारी। नहरों, चश्मों और कुँवों का

पानी उमूमन शीरीं साफ़ और ख़ुश-ज़ायक़ा होता है। बाज़ ठहरे हुए समुन्दरों का पानी खारी और बद मज़ा होता है। अल्लाह तआला की इस नेमत पर भी शुक्र करना चाहिए कि उसने मीठे पानी की चौतरफ़ रेल-पेल कर दी कि लोगों को नहाने-धोने और अपने खेत और बाग़ात को पानी देने में आसानी रहे। मशरिक़ और मग़रिब में मुहीत समुन्दर खारी पानी के उसने बहा दिए जो ठहरे हुए हैं। इधर-उधर बहते नहीं लेकिन मौजें मार रहे हैं। तलातुम कर रहे हैं। बाज़ में मद्द व जज़्र रहे, हर महीने की इब्तिदाई तारीख़ों में तो उनमें ज़्यादती और बहाव होता है फिर चाँद के घटने के साथ वह घटता जाता है। यहाँ तक कि आख़िर में अपनी हालत पर आ जाता है, फिर जहाँ चाँद चढ़ा यह भी चढ़ने लगा। चौदह तारीख़ तक बराबर चाँद के साथ चढ़ता रहा फिर उतरना शुरू हुआ। इन तमाम समुन्दरों को उसी ख़ुदा तआला ने पैदा किया है, वह पूरी और ज़बरदस्त क़ुदरतवाला है। खारी और गरम पानी गो पीने के काम नहीं आता लेकिन हवाओं को साफ़ कर देता है जिससे इनसानी ज़िन्दगी हलाकत में न पड़े, इसमें जो जानवर मर जाते हैं उनकी बदबू दुनियावालों को सता नहीं सकती और खारी पानी के सबब से उसकी हवा सेहत-बख़्श और उसका मज़ा पाक तैयब होता है।

आँहज़रत (सल्ल॰) से जब समुन्दर के पानी की निस्बत सवाल हुआ कि क्या हम इससे वुज़ू कर लें? तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, उसका पानी पाक है और इसका मुर्दा हलाल है। फिर इसकी क़ुदरत को देखो, वह महज़ अपनी ताक़त से और अपने हुक्म से एक को दूसरे से जुदा रखता है। न खारी मीठे में मिल सके न मीठा खारी में मिल सके। जैसे फ़रमाया है कि उसने दोनों समुन्दर जारी कर दिए कि दोनों मिल जाएँ और इन दोनों के दरम्यान एक हिजाब क़ायम कर दिया है कि हद से न बढ़ें। फिर तुम अपने रब तआला की किस नेमत के मुनकिर हो? और आयत में है कौन है वह जिसने ज़मीन को जाए-क़रार बनाया और इसमें जगह-जगह दरिया जारी कर दिए, इस पर पहाड़ क़ायम कर दिए और दो समुन्दरों के दरम्यान

ओट कर दी। क्या अल्लाह तआला के साथ और कोई माबूद भी है? बात यह है कि इन मुशरिकीन के अक्सर लोग बेइल्म हैं, उसने इनसान को ज़ईफ़ नुत्फ़े से पैदा किया है फिर उसे ठीक-ठीक और बराबर बनाया है और अच्छी पैदाइश में पैदा करके फिर उसे मर्द या औरत बनाया। फिर उसके लिए नसब के रिश्तेदार बना दिए, फिर कुछ मुद्दत बाद ससुराली रिश्ते क़ायम कर दिए। इतने बड़े क़ादिर ख़ुदा तआला की क़ुदरतें तुम्हारे सामने हैं।

﴾149﴿

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى
رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝٥٥ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٥٦ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝٥٧ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٨
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٩

व यअ़बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़उहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्, व कानल्-काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा। (55) व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा। (56) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला। (57) व तवक्कल् अ़लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही, व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अिबादिही ख़बीरा। (58) अल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, अर्रह्मानु फ़स्अल् बिही ख़बीरा। (59)

तर्जमा : ये अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जो न तो इन्हें कोई नफ़ा दे सकें न कोई नुक़सान पहुँचा सकें। और

काफ़िर तो है ही अपने रब के ख़िलाफ़ (शैतान की) मदद करनेवाला। हमने तो आपको ख़ुशख़बरी और डर सुनानेवाला बनाकर भेजा है। कह दीजिए कि मैं क़ुरआन के पहुँचाने पर तुम से कोई बदला नहीं चाहता मगर जो शख़्स अपने रब की तरफ़ राह पकड़ना चाहे। उस हमेशा ज़िन्दा रहनेवाले अल्लाह पर तवक्कुल करें जिसे कभी मौत नहीं और उसकी तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते रहें। वह अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार है, वही है जिसने आसमानों और ज़मीन और उनके दरम्यान की सब चीज़ों को छः दिन में पैदा कर दिया है। फिर अर्श पर मुस्तवी हुआ, वह रहमान है, आप उसके बारे में किसी ख़बरदार से पूछ लें।

(पारा 19, फ़ुरक़ान 55-59)

तशरीह : मुशरिकों की जहालत बयान हो रही है कि वे बुत-परस्ती करते हैं और बिला दलील व हुज्जत उनकी पूजा करते हैं जो न नफ़े के मालिक, न नुक़्सान के। सिर्फ़ बाप दादों की देखा-देखी नफ़्सानी ख़ाहिशात से उनकी मुहब्बत व अज़मत दिल में जमाए हुए हैं और ख़ुदा तआला और रसूल (सल्ल.) से दुश्मनी और मुख़ालिफ़त रखते हैं। शैतानी लश्कर में हो गए हैं और ख़ुदाई लश्कर के मुख़ालिफ़ हो गए हैं लेकिन याद रखें कि अंजामे-कार ग़लबा अल्लाह वालों को ही होगा। ये इस उम्मीद में हैं कि ये माबूदाने बातिल उनकी इमदाद करेंगे। हालांकि महज़ ग़लत है, यह ख़ाह-मख़ाह उनकी तरफ़ से सीना सिपर हो रहे हैं, अंजामे-कार मोमिनों के ही हाथ रहेगा। दुनिया व आख़िरत में उनका परवरदिगार उनकी इम्दाद करेगा। इन काफ़िरों को तो शैतान सिर्फ़ ख़ुदा तआला की मुख़ालिफ़त पर उभार देता है और कुछ नहीं। सच्चे ख़ुदा तआला की अदावत इनके दिल में डाल देता है। शिर्क की मुहब्बत बिठा देता है। ये ख़ुदाई अहकाम से पीठ फेर लेते हैं। फिर अल्लाह तआला अपने रसूल (सल्ल.) से ख़िताब करके फ़रमाता है कि हमने तुम्हें मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और काफ़िरों को डरानेवाला बनाकर भेजा है। इताअत-गुज़ारों को जन्नत की बशारत दीजिए और

नाफ़रमानों को जहन्नम के अज़ाबों से मुत्तलअ फ़रमा दीजिए। लोगों में आम तौर पर एलान कर दीजिए कि मैं अपनी तबलीग़ का बदला, अपने वाज़ का मुआवज़ा तुम से नहीं चाहता। मेरा इरादा इससे सिवाए ख़ुदा तआला की रज़ामन्दी की तलाश के और कुछ नहीं। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुममें से जो राहे-रास्त पर आना चाहे उसके सामने सही रास्ता नुमायाँ कर दूँ। ऐ पैग़म्बर, अपने तमाम कामों में उस ख़ुदा तआला पर भरोसा रखिए जो हमेशगी और दवामवाला है, जो मौत व फ़ौत से पाक है, जो अव्वल व आख़िर, ज़ाहिर व बातिन और हर चीज़ से आलिम है, जो दाइम, बाक़ी, सरमदी, अबदी, हय्यी व क़य्यूम, जो हर चीज़ का मालिक और रब तआला है उसको अपना माद्दी मलजा ठहराइए। उसी की ज़ात ऐसी है कि उस पर तवक्कुल किया जाए, हर घबराहट में उसी की तरफ़ झुका जाए। वह काफ़ी है, वही नासिर है, वही मुईद व मुज़फ़्फ़र है, जैसे फ़रमान है, ऐ नबी! जो कुछ आप की तरफ़ से आप के रब तआला की जानिब से उतारा गया है उसे पहुँचा दीजिए। अगर आपने यह न किया तो आपने हक़्क़े-रिसलत अदा नहीं किया। आप बेफ़िक्र रहिए, ख़ुदा तआला आपको लोगों के बुरे इरादे से बचा लेगा।

एक हदीस में है कि मदीना तैयिबा की किसी गली में हज़रत सलमान रज़िअल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह (सल्ल॰) को सजदा करने लगे तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ऐ सलमान! मुझे सजदा न कर। सजदे के लायक़ वह है जो हमेशा की ज़िन्दगीवाला है, जिस पर कभी मौत नहीं। और उसकी तस्बीह व हम्द करता रह। चुनांचे हुज़ूर (सल्ल॰) इसकी तामील में फ़रमाया करते थे— सुब्हानकल्लाहुम-म रब्बना व बिहम्दि-क। मुराद उससे यह है कि इबादत अल्लाह तआला ही की, कर तवक्कुल सिर्फ़ उसी की ज़ात पर कर। जैसे फ़रमान है, मशरिक़ व मग़रिब का रब तआला वही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, तू उसी को अपना कारसाज़ समझ। और जगह है उसी की इबादत कर, उस पर भरोसा रख, और आयत में है कि ऐलान कर दे कि उसी रहमान के बन्दे हैं और उसी पर हमारा कामिल भरोसा है। उस

पर बन्दों के करतूत ज़ाहिर हैं। कोई ज़र्रा उससे पोशीदा नहीं, कोई भेद की बात भी उससे मख़फ़ी नहीं। वही तमाम चीज़ों का ख़ालिक़, मालिक, क़ाबिज़ है, वही हर जानदार का रोज़ी-रसाँ है, उसने अपनी कुदरत व अज़मत से आसमान व ज़मीन जैसी ज़बरदस्त मख़लूक़ को छः दिनों में पैदा कर दिया है, फिर अर्श पर क़रार पकड़ा है। कामों की तदबीरों का अंजाम उसी की तरफ़ से और उसी के हुक्म और तदबीर से है। उसका फ़ैसला सच्चा और अच्छा ही होता है, जो ज़ात ख़ुदा तआला से आलिम है, जो सिफ़ाते-ख़ुदा तआला से आगाह हो तो ऐसे से उसकी शान दरयाफ़्त करे। यह ज़ाहिर है कि ख़ुदा तआला की ज़ात की पूरी ख़बरदारी रखनेवाले उसी ज़ाति से पूरे वाक़िफ़ आँ हज़रत (सल्ल॰) ही थे जो दुनिया और आख़िरत में तमाम औलादे-आदम के अलल-इतलाक़ सरदार थे, जो एक बात भी अपनी तरफ़ से नहीं कहते थे बल्कि जो फ़रमाते थे वह फ़रमूदाते-ख़ुदा तआला ही होता था। आप (सल्ल॰) ने जो-जो सिफ़तें ख़ुदा तआला की बताई हैं सब हक़ हैं। आप (सल्ल॰) ने जो ख़बरें दीं सब सच हैं सच्चे इमाम आप (सल्ल॰) ही हैं। तमाम झगड़ों का फ़ैसला आप (सल्ल॰) ही के हुक्म से किया जा सकता है। जो आप (सल्ल॰) की बात बतलाए वह सच्च, जो आप (सल्ल॰) के ख़िलाफ़ कहे वह मरदूद, ख़ाह कोई भी हो, ख़ुदा तआला का फ़रमान यक़ीन के क़ाबिल खुले तौर से सादिर हो चुका है। यानी तुम अगर किसी चीज़ में झगड़ो तो उसे अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्ल॰) की तरफ़ लौटाओ। और फ़रमान है, तुम जिस चीज़ में भी इख़्तिलाफ़ करो उसका फ़ैसला अल्लाह तआला की तरफ़ है, और फ़रमान है कि तेरे रब तआला की बातें जो ख़बरों में सच्ची और हुक्म व मुमानिअत में अद्ल की हैं, पूरी हो चुकीं। यह भी मरवी है कि मुराद इससे क़ुरआन है। मुशरिकीन ख़ुदा तआला के सिवा औरों को सजदे करते थे, उनसे जब रहमान को सजदा करने को कहा जाता था तो कहते थे कि हम रहमान को नहीं जानते। वे उससे मुनकिर थे कि ख़ुदा तआला का नाम रहमान है जैसे हुदैबियावाले

साल हुज़ूर (सल्ल०) के कातिब से फ़रमाया 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' लिख तो मुशरिकीन ने कहा कि न हम रहमान को जानें न रहीम को, हमारे रिवाज के मुताबिक़ 'बिस्मिकल्लाहुम' लिख, इसके जवाब में यह आयत उतरी 'क़ुलिदउल्ला-ह अविदउर्रहमान' यानी कह दो कि अल्लाह तआला को पुकारो या रहमान को जिस नाम से चाहो उसे पुकारो, उसके बहुत से बेहतरीन नाम हैं। वही अल्लाह तआला है, वही रहमान है। पस मुशरिकीन कहते थे कि क्या सिर्फ़ तेरे कहने से हम ऐसा कर लें, अलग़रज़ वे और नफ़रत में बढ़ गए। बर ख़िलाफ़ मोमिनों के कि वे अल्लाह तआला की इबादत करते हैं। जो रहमान व रहीम है उसी को इबादत के लायक़ समझते हैं और उसी के लिए सजदे करते हैं।

﴾150﴿

تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ۝

तबा-रकल्लज़ी ज-अ-ल फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज-अ-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-मरम्-मुनीरा। (61) व हुवल्लज़ी ज-अलल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़-तल्-लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा। (62)

तर्जमा : बाबरकत है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें आफ़ताब बनाया और मुनव्वर महताब भी, और उसी ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-जानेवाला बनाया, उस शख़्स की नसीहत के लिए जो नसीहत हासिल करने या शुक्रगुज़ारी करने का इरादा रखता हो। (पारा 19, सूरा फ़ुरक़ान 61-62)

तशरीह : अल्लाह तआला की बड़ाई, अज़मत, रफ़अत को देखो कि उसने आसमान में बुर्ज बनाए, इससे मुराद या तो बड़े सितारे हैं या चौकीदारी के बुर्ज हैं। पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है और हो

सकता है कि बड़े-बड़े सितारों से मुराद भी यही बुर्ज हों। और आयत में है कि आसमाने-दुनिया को हमने सितारों के साथ मुज़ैयन बनाया। जैसे फ़रमान है, और हमने रौशन चिराग़ यानी सूरज बनाया। और चाँद बनाया जो मुनव्वर और रौशन है दूसरे नूर से जो सूरज के सिवा है। जैसे फ़रमान है, उसने सूरज को रौशन बनाया और चाँद को नूर बनाया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया, क्या तुम देख नहीं रहे कि ख़ुदाए-तआला ने ऊपर-तले सात आसमान पैदा किए और इनमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को चिराग़ बनाया। दिन-रात एक-दूसरे के पीछे आने-जानेवाले हैं, उसकी क़ुदरत का निज़ाम है, यह जाता है वह आता है, उसका जाना उसका आना। जैसे फ़रमान है उसने तुम्हारे लिए सूरज-चाँद पै-दर-पै आने-जानेवाले बनाए हैं। और जगह है, रात-दिन को ढांप लेती है और जल्दी-जल्दी इसे तलब करती आती है, न सूरज चाँद से आगे बढ़ सके न रात दिन से सबक़त कर सके। इसी से इसकी इबादतों के वक़्त उसके बन्दों को मालूम होते हैं? रात का फ़ौत-शुदा अमल दिन में पूरा कर लें, दिन का रह गया हुआ अमल रात को अदा कर लें।

सहीह हदीस शरीफ़ में है, अल्लाह तआला रात को अपने हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनाहगार तौबा कर ले और दिन को हाथ फैलाता है कि रात का गुनहगार तौबा कर ले। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु ने एक दिन ज़ुहा की नमाज़ में बड़ी देर लगा दी। सवाल पर फ़रमाया कि रात का मेरा वज़ीफ़ा कुछ बाक़ी रह गया था तो मैं ने चाहा कि उसे पूरा या क़ज़ा कर लूँ। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

﴾151﴿

أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞

अम्-मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि व मंय्युर्सिलुर्-रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही, अ-इलाहुम्-मअल्लाहि, तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून। (63)

तर्जमा : क्या वह जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में राह दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुशख़बरियाँ देनेवाली हवाएँ चलाता है, क्या अल्लाह तआला के साथ कोई और माबूद भी है जिन्हें ये शरीक करते हैं, इन सबसे अल्लाह बुलन्द व बालातर है। (पारा 20, नमल 63)

तशरीह : आसमाम व ज़मीन में ख़ुदा तआला ने ऐसी निशानियाँ रख दी हैं कि ख़ुश्की और तरी में जो राह भूल जाए वह इन्हें देख कर राहे-रास्त इख़्तियार कर ले। जैसे फ़रमाया है कि सितारों से लोग राह पाते हैं, समुन्दरों में और ख़ुश्की में इन्हें देख कर अपना रास्ता ठीक कर लेते हैं, बादल पानी भरे बरसें और इससे पहले ठंडी और भीनी-भीनी हवाएँ वह चलाता है जिससे लोग समझ लेते हैं कि अब रब की रहमत बरसेगी। ख़ुदा के सिवा इन कामों का करनेवाला कोई नहीं, न कोई इन पर क़ादिर है, तमाम शरीकों से वह अलग है और पाक है सबसे बुलन्द है।

﴿152﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۷۰﴾

व रब्बु-क यख़्लुक़ु मा यशा-उ व यख़्तार, मा का-न लहुमुल् ख़ि-य-रहू, सुब्हानल्लाहि व तआला अम्मा युश्रिकून। (68) व रब्बु-क यअ्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्लिनून।(69) व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हू,

लहुल्-हम्दु फ़िल्-ऊला वल्-आख़िरह, व लहुल-हुक्मु व इलैहि तुर्जऊन। (70)

तर्जमाः और आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है, इनमें से किसी को कोई इख़्तियार नहीं, अल्लाह ही के लिए पाकी है, वह बुलन्द तर है हर उस चीज़ से कि लोग शरीक करते हैं। इनके सीने जो कुछ छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, आपका रब सब कुछ जानता है। वही अल्लाह है उसके सिवा कोई लायक़े-इबादत नहीं, दुनिया और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है। उसी के लिए फ़रमाँरवाई है और उसी की तरफ़ तुम सब फेरे जाओगे। (पारा 20, अल-क़सस 68-70)

तशरीह : सारी मख़लूक़ का ख़ालिक़, तमाम इख़्तियारात वाला अल्लाह तआला ही है, न इसमें कोई उससे झगड़नेवाला न उसका शरीक न साझी, जो चाहे पैदा करे, जिसे चाहे अपना ख़ास बन्दा बना ले, जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता हो ही नहीं सकता। तमाम उमूर सब ख़ैर व शर उसी के हाथ है, सबकी बाज़गश्त उसी की जानिब है, किसी को कोई इख़्तियार नहीं। यानी ख़ुदा पसन्द करता है उसे जिसमें भलाई हो।

हज़रत इब्ने-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु वग़ैरह से मरवी है यह आयत उसी बयान में है कि मख़लूक़ की पैदाइश में तक़दीर के मुक़र्रर करने में इख़्तियार रखने में ख़ुदा तआला ही अकेला है, और नज़ीर से पाक है। इसी लिए आयत के ख़ातिमे पर फ़रमाया कि जिन बुतों वग़ैरह को वह शरीके-ख़ुदा ठहरा रहे हैं, जो न किसी चीज़ को बना सकें न किसी तरह का इख़्तियार रखें, अल्लाह तआला उन सबसे पाक और बहुत दूर है। फिर फ़रमाया, सीनों और दिलों में छिपी हुई बातें भी ख़ुदा तआला जानता है। और वह सब भी उस पर उसी तरह ज़ाहिर हैं जिस तरह खुल्लम-खुल्ला और ज़ाहिर बातें। पोशीदा बात कहो, या एलान से कहो वह सबका आलिम है। रात में और दिन में जो हो रहा है उस पर पोशीदा नहीं, उलूहियत में भी वह यकता है, उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी तरफ़ मख़लूक़

अपनी हाजतें ले जाए, जिससे मख़लूक़ आजिज़ी करे, जो मख़लूक़ का मावा मलजा हो, जो इबादत के लायक़ हो। ख़ालिक़, मुख़्तार, रब, मालिक वही है। वह जो कुछ कर रहा है सब लायक़े-तारीफ़ है, उसका अद्ल व हिक्मत उसी के साथ है। उसके हुक्मों को कोई रद्द नहीं कर सकता, उसके इरादों को कोई टाल नहीं सकता। ग़लबा व रहमत उसी की ज़ात पाक में है, तुम सब क़ियामत के दिन उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। वह सबको उनके आमाल का बदला देगा। उस पर तुम्हारे कामों में से कोई काम छिपा हुआ नहीं, नेकों को जज़ा बदों को सज़ा।

वह उस रोज़ देगा और अपनी मख़लूक़ में फ़ैसले फ़रमाएगा।

﴾153﴿

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अलल्लाहु अलैकुमुन्नहा-र सर्-मदन् इला यौमिल्- क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू-न फ़ीहि, अ-फ़ला तुब्सिरून। (72)

तर्जमा : पूछिए कि यह भी बता दो कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह तआला के कोई माबूद है जो तुम्हारे पास रात ले आए? जिसमें तुम आराम हासिल करो, क्या तुम देख नहीं रहे हो?

(पारा 20, अल-क़सस 72)

तशरीह : अल्लाह तआला का एहसान देखो कि बग़ैर तुम्हारी कोशिश और तदबीर के दिन-रात बराबर आगे-पीछे आ रहे हैं। अगर रात ही रात रहे तो तुम आजिज़ आ जाओ, तुम्हारे काम रुक जाएँ, तुम पर ज़िन्दगी वबाल हो जाए। तुम थक जाओ, उकता जाओ, किसी को न पाओ जो तुम्हारे लिए दिन निकाल सके कि तुम उसकी

रौशनी में चलो-फिरो, देखो-भालो अपने काम-काज कर लो। अफ़सोस! तुम सुन-सुनाकर अन-सुना कर देते हो! इसी तरह अगर वह तुम पर दिन ही दिन रखे, रात आए ही नहीं तो भी तुम्हारी ज़िन्दगी तल्ख़ हो जाए। बादल का निज़ाम उलट-पलट हो जाए, थक जाओ, तंग आ जाओ, कोई नहीं जिसे क़ुदरत हो कि वह रात ला सके जिसमें तुम राहत व आराम कर सको लेकिन तुम आँखें रखते हुए ख़ुदा तआला की इन निशानियों और महरबानियों को देखते ही नहीं हो।

﴾154﴿

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞

व मिर्रह्मतिही ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र लितस्कुनू फ़ीहि व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअल्लकुम् तश्कुरून।(73)

तर्जमा : उसी ने तो तुम्हारे लिए अपने फ़ज़्ल व करम से दिन-रात मुक़र्रर कर दिए हैं कि तुम रात में आराम करो और दिन में उसी की भेजी हुई रोज़ी तलाश करो, यह इसलिए कि तुम शुक्र अदा करो। (पारा 20, अल-क़सस 73)

तशरीह : यह भी उसी का एहसान है कि उसने दिन-रात दोनों पैदा कर दिए हैं कि रात को तुम्हें सुकून व आराम हासिल हो और दिन को तुम काम-काज, तिजारत, ज़राअत, सफ़र, शग़ल कर सको। तुम्हें चाहिए कि तुम उस मालिके-हक़ीक़ी उस क़ादिरे-मुतलक़ का शुक्र अदा करो दिन को, रात को उसकी इबादतें करो। रात के क़ुसूर की तलाफ़ी दिन में और दिन के क़सूरों की तलाफ़ी रात में कर लिया करो, ये मुख़्तलिफ़ चीज़ें क़ुदरत के नमूने हैं, और इसलिए हैं कि तुम नसीहत व इबरत सीखो और रब का शुक्र करो।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

बदीउस्समावाति वल्अर्ज़, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून। (117)

तर्जमा : वह ज़मीन और आसमानों का इब्तिदाअन पैदा करनेवाला है, वह जिस काम को करना चाहे कह देता है कि हो जा, बस वह वहीं हो जाता है। (पारा 1, बक़रह 117)

तशरीह : यह और इसके साथ की आयत नसरानियों की रद्द में है और इसी तरह इन जैसे यहूदियों और मुशरिकीन के रद्द में जो ख़ुदा की औलाद बताते थे। उनसे कहा जाता है कि ज़मीन व आसमान वग़ैरह तमाम चीज़ों का तो ख़ुदा तआला मालिक है, इनका पैदा करनेवाला, इन्हें रोज़ियाँ देनेवाला, इनके अन्दाज़े मुक़र्रर करनेवाला, इन्हें क़ब्ज़े में रखनेवाला, इनमें हेर-फेर करनेवाला अल्लाह तआला ही है, फिर भला इस मख़लूक़ में से कोई उसकी औलाद कैसे हो सकता है, न उज़ेर अलैहिस्सलाम, न ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा के बेटे बन सकते हैं। जैसे कि यहूद व नसारा का ख़याल था, न फ़रिश्ते उसकी बेटियाँ बन सकते हैं जैसे मुशरिकीने-अरब का ख़याल था। इसलिए कि दो बराबर के मुनासिबत रखनेवाले हम जिंस से औलाद होती है, और अल्लाह तआला का न कोई नज़ीर, न उसकी अज़मत व किबरियाई में उसका कोई शरीक, न उसकी जिंस का कोई और। वह तो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करनेवाला है, उसकी औलाद कैसे होगी? उसकी कोई बीवी भी नहीं, वह हर चीज़ का ख़ालिक़ और हर चीज़ का आलिम है। यह रहमान की औलाद बताते हैं, ये कितनी बोदी और वाही बात तुम कहते हो, यह इतनी बुरी बात ज़बान से निकालते हो कि उससे आसमानों का फट जाना और ज़मीन का शक़ हो जाना और पहाड़ों का रेज़ा-रेज़ा हो

जाना मुमकिन है। इनका दावा है कि अल्लाह तआला साहिबे-औलाद है, अल्लाह तआला की औलाद तो कोई हो ही नहीं सकती, उसके सिवा जो भी है उसकी मिल्कीयत है। ज़मीन व आसमान की कुल हस्तियाँ उसकी ग़ुलामी में हाज़िर होनेवाली हैं जिन्हें एक-एक करके उसने घेर रखा है और शुमार कर रखा है। उनमें से हर एक उसके पास क़ियामत के दिन तन्हा-तन्हा पेश होनेवाला है, पस ग़ुलाम औलाद नहीं बन सकता, मिल्कीयत और वल्दीयत दो मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद हैसियतें हैं। और जगह पूरी सूरत में इसकी नफ़ी फ़रमाई, इरशाद हुआ कि 'कहो ख़ुदा एक ही है, अल्लाह बेनियाज़ है, उसकी न औलाद है न माँ-बाप, उसका हम-जिंस कोई नहीं, और इन जैसी और आयतों में इसकी ख़ालिक़े कायनात ने अपनी तस्बीह व तक़दीस बयान की, अपना बेनज़ीर, अपना बेमिस्ल और लाशरीक होना साबित किया और इन मुशरिकीन के गन्दे अक़ीदे का बतलान किया और बताया कि वह तो सबका ख़ालिक़ व रब है, फिर उसकी औलाद और बेटे-बेटियाँ कहाँ होंगी?

सूरा बक़रा की इस आयत की तफ़सीर में सहीह बुख़ारी की एक क़ुदसी हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, मुझे इब्ने-आदम झुठलाता है, इसे यह लायक़ न था, मुझे वह गालियाँ देता है उसे यह नहीं चाहिए था, उसका झुटलाना तो यह है कि वह ख़याल कर बैठता है कि मैं इसे मार डालने के बाद फिर ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं हूँ और उसका गालियाँ देना यह है कि वह मेरी औलाद बताता है, हालाँकि मैं पाक हूँ और बुलन्द व बाला हों उससे कि मेरे औलाद अैर बीवी हो। यही हदीस दूसरी सनदों से और किताबों में भी बा इख़्तिलाफ़ अलफ़ाज़ मरवी है।

सहीहैन में है हुज़ूर (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, बुरी बातें सुनकर सब्र करने में अल्लाह तआला से ज़्यादा कोई नहीं, लोग उसकी औलादें बताएँ और वह इन्हें रिज़्क़ व आफ़ियत देता रहे : फिर फ़रमाया, हर चीज़ उसकी इताअत-गुज़ार है, उसकी ग़ुलामी की इक़रारी है, उसके

लिए इख़्लास करनेवाली है, उसकी सरकार में क़ियामत के रोज़ दस्त-बस्ता खड़ी होनेवाली और दुनिया में इबादत-गुज़ार है, जिसको कहे यूँ हो, इस तरह बन! वह उसी तरह हो जाती है और बन जाती है, इस तरह हर एक उसके सामने पस्त व मुतीअ है, कुफ़्फ़ार भी गो न चाहे लेकिन उनके साये ख़ुदा के सामने झुकते रहते हैं। क़ुरआन ने और जगह फ़रमाया, वलिल्लाहि यसजुदु...., आसमान व ज़मीन की कुल चीज़ें ख़ुशी व नाख़ुशी अल्लाह तआला को सजदा करती हैं। उनके साये सुब्ह व शाम झुकते रहते हैं। फिर फ़रमाया, वह आसमान व ज़मीन को बग़ैर नमूने के पहले ही बार की पैदाइश में पैदा करनेवाला है। लुग़त में बिदअत के मानी नौपैद करने, नया बनाने के हैं।

इब्ने-जरीर रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं, मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला औलाद से पाक है, वह आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ों का मालिक है, हर चीज़ उसकी वहदानियत की दलील है, हर चीज़ उसकी इताअत-गुज़ारी की इक़रारी है। सबका पैदा करनेवाला, बनानेवाला, मौजूद करनेवाला, बग़ैर अस्ल और मिसाल के वुजूद में लानेवाला, एक वही रब्बुल आलमीन है, उसकी गवाही हर चीज़ देती है। ख़ुद मसीह अलैहिस्सलाम भी उसके गवाह और बयान करनेवाले हैं। जिस रब ने इन तमाम चीज़ों को बग़ैर नमूने के और बग़ैर माद्दे और असल के पैदा किया, उसने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी बे-बाप के पैदा कर दिया। फिर कोई वजह नहीं कि तुम इन्हें ख़्वाह मख़्वाह का बेटा मान लो : फिर फ़रमाया कि उस ख़ुदा की क़ुदरत व सल्तनत व सतवत व शौकत ऐसी है कि जिस चीज़ को जिस तरह बनाना और पैदा कर चाहे उसे कह देता है कि इस तरह और ऐसी हो जा, वह उस वक़्त हो जाती है, शाइर कहता है कि -

'इज़ा मा अरदल्लाहु अम्रन फ़इन्नमा
यक़ूलु लहू कुन क़ौल-त फ़यकून'

मतलब सबका यह है, इधर ख़ुदा का इरादा किसी चीज़ का हो और उसने कहा हो जा, वहीं हो गया। इसके इरादे से मुराद जुदा नहीं पस मन्दरजा बाला आयत में ईसाइयों को लतीफ़ पैराये से यह भी समझा दिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसी कुन कहने से पैदा हुए हैं। यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल अल्लाह तआला के नज़दीक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जैसी है जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर फ़रमाया हो जा, वे हो गए।

﴾156﴿

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ

व इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिद्, ला इला-ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम। (163)

तर्जमा : तुम सबका माबूद एक ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूदे-बरहक़ नहीं, वह बहुत रहम करनेवाला और बड़ा महरबान है।

(पारा 2, बक़रा 163)

तशरीह : यानी ख़ुदाई में वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, न उस जैसा कोई है, वह वाहिद और अहद है। वह फ़र्द और समद है। उसे सिवा इबादत के लायक़ कोई नहीं, वह रहमान और रहीम है। सूरह फ़ातिहा के शुरू में उसकी पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है।

रसूलुल्लाह (सल्ल.) फ़रमाते हैं, इस्मे-आज़म इन दोनों आयतों में है। एक यह आयत और दूसरी आयत 'अलिफ़-लाम-मीम अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम'। इसके बाद इस तौहीद की दलील हो रही है, उसे भी तवज्जोह से सुनिये, फ़रमाता है।

﴾157﴿

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي
تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ

فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۠ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

इन्-न फ़ी .ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बहूरि बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिवं-व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्-समा-इ वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून। (164)

तर्जमाः आसमानों और ज़मीन की पैदाइश, रात-दिन का हेर-फेर, कश्तियों का लोगों को नफ़ा देनेवाली चीज़ों को लिए हुए समुन्दरों में चलना, आसमान से पानी उतारकर मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देना, उसमें हर क़िस्म के जानवरों को फैला देना, हवाओं के रुख़ बदलना, और बादल जो आसमान और ज़मीन के दरम्यान मुसख़्ख़र हैं, इनमें अक़्लमन्दों के लिए क़ुदरते-इलाही की निशानियाँ हैं।

(पारा 2, बक़रा 164)

तशरीह : मतलब यह है कि उस ख़ुदा की ख़ुदाई और उसकी तौहीद पर दलील एक तो यह आसमान है जिसकी बुलन्दी, लताफ़त, कुशादगी, जिसके ठहरे हुए और चलने-फिरनेवाले रौशन सितारे तुम देख रहे हो। फिर ज़मीन की पैदाइश जो कसीफ़ चीज़ है, जो तुम्हारे क़दमों तले बिछी हुई है, जिसमें बुलन्द-बुलन्द चोटियों के सर बफ़लक पहाड़ हैं, जिसमें मौजें मारनेवाले बेपायाँ समुन्दर हैं, जिसमें अनवाअ व अक़्साम के ख़ुश रंग बेल-बूटे हैं, जिसमें तरह-तरह की पैदावार होती है जिस पर तुम रहते-सहते हो और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ आरामदेह मकान बनाकर बसते हो और जिससे सदहा तरह का नफ़ा उठाते हो, फिर रात-दिन का आना-जाना, रात गई दिन आया, दिन गया रात आ गई, न वह उस पर सबक़त करे न यह

उस पर, हर एक अपने सही अन्दाज़े से आए और जाए। कभी के दिन बड़े, कभी की रातें, कभी दिन का कुछ हिस्सा रात में जाए कभी रात का कुछ दिन में आ जाए, फिर कश्तियों को देखो जो ख़ुद तुम्हें और तुम्हारे माल व अस्बाब और तिजारती चीज़ों को लेकर समुन्दर में इधर-उधर आती-जाती रहती हैं। इस मुल्कवाले उस मुल्कवालों से और उस मुल्कवाले उस मुल्कवालों से राबिता और लेन-देन कर सकते हैं, यहाँ की चीज़ें वहाँ और वहाँ की यहाँ पहुँच सकती हैं, फिर अल्लाह तआला का अपनी रहमते-कामिला से बारिश बरसाना और इससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देना, उससे अनाज और खेतियाँ पैदा करना, चौतरफ़ा रेल-पेल कर देना, ज़मीन में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के छोटे-बड़े कारआमद जानवरों को पैदा करना, इन सबकी हिफ़ाज़त करना, उनके लिए रोज़ी पहुँचाना, इनके लिए सोने-बैठने, चरने-चुगने की जगह तैयार करना, हवाओं को पुरवा-पछवा चलाना, कभी ठंडी, कभी गरम, कभी कम कभी ज़्यादा बादलों को ज़मीन और आसमान के दरम्यान मुसख़्ख़र करना, इन्हें एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ ले जाना, ज़रूरत की जगह बरसाना वग़ैरा, ये सब ख़ुदा की क़ुदरत की निशानियाँ हैं जिनसे अक़्लमन्द अपने ख़ुदा के वुजूद को और उसकी वहदानियत को पा लेते हैं, जैसे और जगह फ़रमाया कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश और रात-दिन के हेर-फेर में अक़्लमन्दों के लिए निशानियाँ हैं जो उठते-बैठते, लेटते अल्लाह तआला का नाम लिया करते हैं और ज़मीन व आसमान की पैदाइश में ग़ौर से काम लेते हैं और कहते हैं कि ऐ हमारे रब तूने इन्हें बेकार नहीं बनाया, तेरी ज़ात पाक है, तू हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।

हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरैश रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए और कहने लगे कि आप अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि वे सफ़ा पहाड़ को सोने का बना दे। हम उससे घोड़े और हथयार वग़ैरह ख़रीदें और तेरा साथ दें

और ईमान भी लाएँ। आपने फ़रमाया, यह पुख़्ता वादा करते हो? उन्होंने कहा, हाँ पुख़्ता वादा है। आपने अल्लाह तआला से दुआ की, हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम आए और फ़रमाया तुम्हारी दुआ तो क़बूल है लेकिन अगर ये लोग फिर भी ईमान न लाए तो उन पर ख़ुदा का वह अज़ाब आएगा जो आज से पहले किसी पर न आया हो। आप काँप उठे और अर्ज़ करने लगे, नहीं ख़ुदाया! तू इन्हें यूँ ही रहने दे, मैं इन्हें तेरी तरफ़ बुलाता रहूँगा। क्या अजब आज नहीं कल और कल नहीं परसों इनमें से कोई न कोई तेरी तरफ़ झुक जाए। इस पर यह आयत उतरी कि अगर इन्हें क़ुदरत की निशानियाँ देखनी हैं तो क्या ये निशानियाँ कुछ कम हैं? एक और शाने-नुज़ूल भी मरवी है कि जब आयत 'व इलाहुकुम' उतरी तो मुशरिकीन कहने लगे एक ख़ुदा तमाम जहाँ का बन्दोबस्त कैसे करेगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि वह ख़ुदा इतनी बड़ी क़ुदरतवाला है। बाज़ रिवायतों में है कि ख़ुदा का एक होना सुनकर उन्होंने दलील तलब की जिस पर यह आयत नाज़िल हुई और निशानहाए-क़ुदरत इन पर ज़ाहिर किए गए।

﴾158﴿

هُوَ الَّذِیۡ یُصَوِّرُکُمۡ فِی الۡاَرۡحَامِ کَیۡفَ یَشَآءُ ؕ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۶﴾

हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै-फ़ यशाउ, ला इला-ह इल्ला हुवल् अज़ीज़ुल् हकीम। (6)

तर्जमा : वह माँ के पेट में तुम्हारी सूरतें जिस तरह की चाहता है बनाता है। उसके सिवा कोई माबूदे-बरहक़ नहीं, वह ग़ालिब है, हिक्मतवाला है। (पारा 3, आले-इमरान 6)

तशरीह: अल्लाह ख़बर देता है कि आसमान व ज़मीन के ग़ैब को वह बख़ूबी जानता है, उस पर कोई मख़फ़ी नहीं, वह तुम्हें तुम्हारी माँ के पेट में सूरतें इनायत फ़रमाता है जिसकी तरह की

चाहता है, अच्छी बुरी नेक बद। उसके सिवा इबादत के लायक़ कोई नहीं। वह ग़ालिब है, हिक्मतवाला है जबकि सिर्फ़ उसी एक ने तुम्हें बनाया और पैदा किया, फिर इबादत दूसरे की क्यों करो? वह लाज़वाल इज़्ज़तोंवाला, ग़ैर-फ़ानी हिक्मतोंवाला, अटल हुक्मोंवाला है। इसमें इशारा बल्कि तसरीह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी ख़ुदा तआला ही के पैदा किए हुए और उसकी चौखट पर झुकनेवाले थे जिस तरह कुल इनसान हैं। इन्हीं इनसानों में से एक आप भी हैं, वह भी माँ के रहम में बनाए गए और मेरे पैदा करने से पैदा हुए फिर ख़ुदा कैसे बन गए जैसे कि इस लानती जमाअत नसारा ने समझ रखा है हालाँकि वह तो एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ रग व रेशे में इधर-उधर फिरते फिराते रहे, जैसे और जगह है कि वह ख़ुदा तआला तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों में पैदा करता है, एक पैदाइश के बाद दूसरी तरह की बनावट तीन-तीन अंधेरियों में होती है।

﴿159﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

कुलिल्लाहुम्-म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क मन् तशा-उ व तन्ज़िअुल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ व तुअिज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशाअ, बि-यदिकल्-ख़ैर, इन्न-क अला कुल्लि शैइन्क़दीर। (26) तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व तुख़्रिजुल् मय्यि-त मिनल्हय्यि व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब। (27)

तर्जमा : आप कह दीजिए कि ऐ अल्लाह! ऐ तमाम जहानों के मालिक! तू जिसे चाहे बादशाही दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, तेरे ही हाथ में सब भलाइयाँ हैं, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है, तू ही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में ले जाता है, तू ही बेजान से जानदार पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान पैदा करता है, तू ही है जिसे चाहता है बेशुमार रोज़ी देता है।

(पारा 3, आले-इमरान 26-27)

तशरीह : अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप अपने रब तआला की ताज़ीम के तौर पर और उसका शुक्रिया बजा लाने के लिए और उसे अपने तमाम काम सौंप देने के लिए और उसकी ज़ात पाक पर भरोसा करते हुए इन अलफ़ाज़ में उसकी बड़ाइयाँ बयान कीजिए जो ऊपर बयान हुईं यानी ऐं अल्लाह! मालिकुलमुल्क तू, तमाम मुल्क तेरी मिल्कीयत में है, जिसे तू चाहे दे और जिससे चाहे दिया हुआ भी ले ले, तू ही देने लेनेवाला है, तू जो चाहता है हो जाता है और जो न चाहे हो ही नहीं सकता। इस आयत में इस बात की तंबीह-इस नेमत के शुक्र का भी हुक्म है जो आँहज़रत (सल्ल०) और आप (सल्ल०) की उम्मत को मरहमत फ़रमाई गई कि नुबुव्वत बनी-इसराईल से हटाकर नबीए-अरबी क़ुरैशी उम्मी मक्की हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) को दे दी गई। आप (सल्ल०) को अलल इतलाक़ नबियों के ख़त्म करनेवाले और तमाम इनसान व जिन्न की तरफ़ रसूल बनकर आनेवाले बनाकर भेजा, तमाम अगलों की ख़ूबियाँ आप (सल्ल०) में जमा कर दीं और वे फ़ज़ीलतें आप (सल्ल०) को दी गईं जिनसे और तमाम अंबिया भी महरूम रहे ख़्वाह वह ख़ुदा तआला के इल्म की बाबत हो या उस रब तआला की शरीअत के मामले में हों या हो चुकी और आनेवाली ख़बरों के मुताल्लिक़ हों। आप (सल्ल०) पर ख़ुदाए-तआला ने आख़िरत के कुल हक़ायक़

खोल दिए। आप (सल्ल॰) की उम्मत को मशरिक़ से मग़रिब तक फैला दिया। आप (सल्ल॰) के दीन और आप (सल्ल॰) की शरीअत को तमाम दीनों और कुल मज़हबों पर ग़ालिब कर दिया। अल्लाह तआला का दुरूद आप (सल्ल॰) पर नाज़िल हो, अब से लेकर क़ियामत तक जब तक रात दिन की गर्दिश बाक़ी रहे ख़ुदा तआला आप (सल्ल॰) पर अपनी रहमतें दवाम के साथ नाज़िल फ़रमाता रहे, आमीन! पस फ़रमाया कि कहो, ख़ुदाया! तू ही अपने ख़ल्क़ में हेर-फेर करता रहता है, जो चाहे कर गुज़रता है। जो लोग कहते थे कि इन दो बस्तियों में से किसी बहुत बड़े शख़्स पर ख़ुदा तआला ने अपना कलाम क्यों नाज़िल न किया? उसका रद्द करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क्या तेरे रब की रहमत के बाँटनेवाले ये हैं, जब उनकी रोज़ियों तक के हम मालिक हैं जिसे चाहे कम दें जिसे चाहे ज़्यादा दें तो फिर हम पर हुकूमत करनेवाले ये कौन? कि फ़लाँ को नबी क्यों न बनाया। नुबुव्वत भी हमारी मिल्कीयत की चीज़ है, हम ही जानते हैं कि उसके लिए जाने के क़ाबिल कौन है जैसे और जगह है कि जहाँ कहीं अल्लाह तआला अपनी रिसालत नाज़िल फ़रमाता है उसे वही सबसे बेहतर जानता है। और जगह फ़रमाया कि देख ले कि हमने किस तरह इनमें आपस में एक को दूसरे पर बरतरी दे रखी है। फिर फ़रमाया कि तू ही रात की ज़्यादती को दिन के नुक़सान में बढ़ा कर दिन-रात को बराबर कर देता फिर उधर का हिस्सा उधर देकर दोनों को छोटा बड़ा कर देता। फिर बराबर कर देता। ज़मीन व आसमान पर सूरज-चाँद पर पूरा-पूरा क़ब्ज़ा और तमाम तर तसर्रुफ़ तेरा ही है। इसी तरह जाड़े को गर्मी से और गर्मी को जाड़े से बदलना भी तेरी क़ुदरत में है, बहार व ख़िज़ाँ पर क़ादिर तू ही है, तू ही है कि ज़िन्दे से मुर्दे को और मुर्दे से ज़िन्दा को निकाले। खेती दाने से और दाना खेती से, दरख़्ते-खजूर गुठली से और गुठली खजूर से तू ही पैदा करता है, मोमिन को काफ़िर के हाँ और काफ़िर को मोमिन के हाँ तू ही पैदा करता है। मुर्ग़ी अंडे से

और अंडा मुर्ग़ी से और इसी तरह की तमाम तर चीज़ें तेरे ही क़ब्ज़े में हैं, तू जिसे चाहे इतना माल दे दे जो न गिना जाए न इहाता किया जाए और जिसे चाहे भूख के बराबर रोटी भी न दे। हम मानते हैं कि ये काम हिकमत से पुर हैं। और तेरे इरादे और तेरी चाहत से होते हैं।

तबरानी की हदीस में है कि ख़ुदा तआला का इस्मे-आज़म इस आयत *'क़ुल्लिल्लाहुम-म....'* में है कि जब इस नाम से उससे दुआ की जाए तो वह क़बूल फ़रमा लेता है।

• • •